

ଷା ଅନ୍ୟାର ଅନ୍	चै			ाणिका. ज्यनी अनुकमणिका		
BAR ABAR	अनुकम. विषय. १ प्रंथाकर्त्ता श्री देवेंद्रसूरितुं मंगलाचरण	गाथा. १	पानुं. १	अनुकम. विषय २ त्रग निसीहि कया स्थानके करवी	गाथा	पान्तुं
ž	२ बालावबोध कत्तीनुं मंगलाचरग	१-२	· ?	तथा त्रण मदक्षिणा केवी रीते करव	6	6
202	३ चैत्यवंदननी विधि चोत्रीस द्वारे सचत्राय	छे	4	३ त्रीज़ं प्रणापत्रिकनुं स्वरुप	९	
ିବେଟ୍	ते चोवीस द्वारनां नाम	२ थी ५	२	४ चोथुं पूजात्रिकनुं स्वरुप	१०	Q
00000000000000000000000000000000000000	४ निसीहि आदिक दशत्रिकनुं जे पे हे छं द्वार तेना उत्तर भेद सहित संविस्तर	•		५ पांचग्रं अवस्थात्रिकनुं स्वरुप ६ छठुं त्रणदिशि जोवाथी निवर्त्तवानुं	११-१२	२ः
anaras.	स्वरुप तथा तेमांना कया भेद क्यां करवा ते	। दयी?९	4	त्रिक तथा सातग्रुं पदभूमि प्रमार्जन		
3	१ दशत्रिकनां नाम	9	4	त्रिक तेनं स्वरुप	१३	१

	७ आठमुं आऌंबनत्रिक अने नवमु मुद्रात्रिकनुं स्वरुप	१४थी१८	१४	१० अग्यारमुं पांच दंडकनुं द्वार अने बारमुं पांच दंडकने विषे देववांदवाना बार		
	८ दशमा प्रणिधान त्रिकनुं स्वरुप	26	१७	अधिकार आवे छे तेनुंदार	४१थी४९	३८
ц	पांच प्रकारना अभिगमनुं बीजुंद्वार	२०-२१	36	११ तेरमुं चार वांदवा योग्यनुं द्वार तथा		
	वे दिशिनुं त्रीजुंद्वार तथा त्रण अवग्रहनुं			चौदमुं सम्यगुद्रष्टि देवने स्मरवा		
	चोथुंद्वार	२२	39	योग्यनुंद्वार	40	४५
9	त्रण प्रकारे चैत्यवंदन करवानुं पांचमुंद्वार	23-28	20	१२ पंदरग्रुं चार प्रकारना जिननुं द्वार	42	૪૬
6	छहुं प्रणिपातद्वार तथा सातमुं			१३ सोळ्मुं चार थोयोनुं द्वार	५२	୪७
	नमस्कारद्वार	२५	20	१४ सतरमं देववांदवाना आठ निमित्तनुंद्वार	ૡર	85
९	सातमुं देववंदन अधिकारे जे नवकार				५४	४९
	प्रमुख नव सूत्रां आवे छे तेमना हल वा			? (ओगणीसमुं सोल आगारनुं द्वार	ષષ	६०
	भारे अक्षरोनी संख्यानुं आठमुं द्वार	1		१७ वीसमुं काउसग्गना ओगणीस दोषनुंद्वार		49
	तथा पद संख्यानुं नवसुं द्वार अने			१८ एकवीसमुं काड्सग्गना प्रमाणनुं तथा	••	
	संपदानुं दसमुंद्वार	२६थी४०	રર	बावीसमुं श्री वीतरागनुं स्तवन केवा		

भकारे कहेवुं तेतुं द्वार १९ तेवीसम्रं एक दिवसमां चैत्यवंदन केटली वार करवुं तेतुं द्वार	પ ૮ ५९	ષ્ _ર પપ	२० चोचीसम्रं दश्तथी मांडी चोरासी आशा- तनाओ परिहार करवानुं द्वार २१ देव वांदवानो विधि	ક્ષ્ ક્ર	در له قو ز
	बंदन ज	ाष्यनी	ञनुकमणिका.	•	• •
१ त्रण प्रकारज्ञुं वंदन तथा वांदणां देवाज़ुं कारण २ वांदणानां पांच नाम ३ वांदणानां वावीसद्वार ४ पहेळुं वांदणानां पांच नामजुंद्वार	१ मी ४ ९ मी ७ [,] ७ मी ९ १०	६ ६ ६ ६ ६	 पांचम़ं चारजणा पासे वांदणा न देव- राववा तेनुं तथा चारजण पासे मायः वांदणां देवराववां तेनुं छठुं द्वार ९ सातमुं पांच स्थानके वांदणा न देवां 	१४	ଓଟ୍
० पहुछ पादणाना पाप नानुद्वार ५ बीजुं वंदन कर्म उपर पांच द्रष्टांतनुंद्वार ६ त्रीजुं पासध्थादिक पांच अवंदनीकनुंद्वार	22	६७ ७०	तेनुं द्वार १० आठमुं चार स्थानके वादणां देवां	१५	୰୰
७ चोथुं आचार्यादिक पांच वांदवा योग्य	१२	હજ	तेचुं द्वार २२ नवम्रं आठ कारणे वांदगा देवां तेचुंद्वार	१६	৩৩ ১৩

	दशमुं वांदणा देतां पचीस आवश्यक सचवाय तेनुं द्वार	26	હલ	१९ सतरमुं वांदणानां सूत्रांना अक्षरनी		
१३	अगीयारमुं म्रुहपत्तिनी पचीस पढि-			संख्यानुं तथा पदनी संख्यानुं अढारमुंदार	३२	९४
	लेहणानुं द्वार	२०ं	८१	२० ओगणीसम्रं वांदणाना दायकना छ		
१४	बारग्रं शरीरनी पचीस पडिलेहणानुंद्वार	२१–२८	८३	स्थानकनुं द्वार	३३	९६
१५	तेरमुं वांदणांमां बत्रीस दोष त्यागवा			२१ वीसमुं वांदणांना छ स्थानकमां छ		
	तेना नामनुं द्वार	२३थी२ ६	୵ଷ୍	गुरुवचन होय तेनुं द्वार	३४	९७
१६	चैादमुं वांदणां देतां छ गुण उगजे			२२ एकवीसमुं तेत्रीस आज्ञातना न		
	तेचं द्वार	ર૭	९०	लगाडवी तेचुं द्वार	ર પ્થી ર ૭	९८
१७	पंदरम्रं वांदणामां गुरुनी स्थापना केम			२३ वावीसमुं प्रभाते ने सांजे वे वंदनक		
	करवी तेना स्वरुपनुं द्वार	२८थी३०	९१	विधिन्नं द्वार	३८-४१	१०२
	•					

	पचस्ताण	नाष्यनी	अनुकमणिका .		
१ पच्चख्खाणनां नवद्वारनां नाम	Ş	305	भेद सहित	79-11	१२९
२ पहेळुं उत्तरगुण पत्रख्लाणना दश	a strand		७ छटुं छ भक्ष्य विगयना निवियाता		
भेदनुंद्वार	2-3	२०७	त्रीस कराय छे तेनुंद्रार तेमां निवि-		
३ बीजुं पचल्खाण करवाना पाठरुप	• • • • • •		यातानो अधिकार सविस्तर वर्णव्योछे	३२	१४२
चार प्रकारना विधिनुं द्वार	३-१ २	११२	८ सातमुं पचख्खाणनां मूळखण उत्तर-		
४ त्रीजुं चार प्रकारनां आहारना	у		गुणरुप बे भांगानुं द्वार	४१	१५३
स्वरुपतुं द्वार	૧ ૨–૧૯	१२०	९ आठमुं पत्त्रत्वाण छ शुद्धिए सफळ		
५ चोधुं नवकारकी प्रमुखना आगारनी		×	थाय तेना नामतुं द्वार	४६	१५९
संख्यानं द्वार	१६-२८	228	१० नवम्रं पच्च ख्ताणनुं फळ इहल्रोक तथा		
६ पांचमुं छ भक्ष तथा चार अमक्ष			परलोक आश्रमी बे प्रकारे थाय	80	१६१
मळी दक्ष विगयनुं द्वार भेद प्रति			तेनुं द्वार द्रष्टांत सहित		

Jain Education Internation

For Personal & Private Use Only

S www.jainelibrary.org

प्रस्तावना.

A Section of the sect

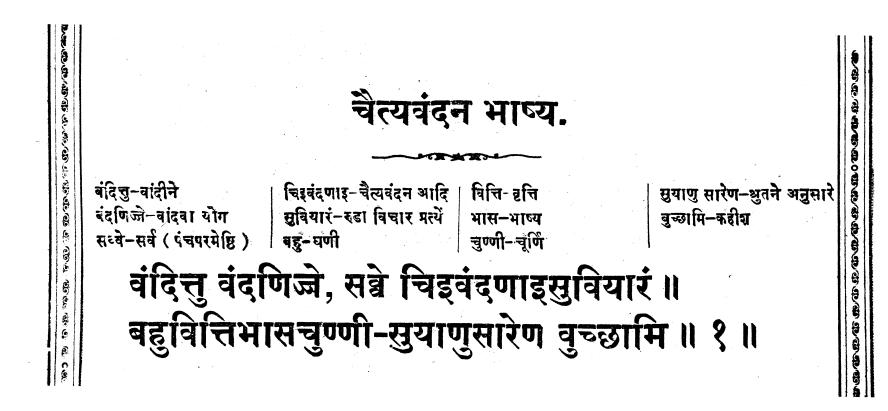
व्यवहारिक तथा धार्मिक कोइपए जातनी किया तेनुं संपूर्ण स्वरुप, हेतु, विधि तथा फळ समज्या विना करवामां आवे तो तेनो जोइए तेटलो लान मळी राकतो नथी, तो धर्म पामवानां जे मुख्य अंग देवगुरुवी जक्ति अवं तपस्या हे. तेनुं दरेक जातनुं ज्ञान थवा माटे आ प्रंथ ह-पाववामां आव्यो हे. जो के शा. जीमशी माणेक तथा अमदावाद विद्याशाळा तरफथी हपाएली प्रतिक्रमण अने प्रकरणमाळामां आ विषयोनो समावेश हे. तोपण ते पुस्तको मोटी किंमतना तथा घणा विषयोने लीधे मोटा कदमां होत्राधी दरेक माणसने दरेक स्थळे लन्य नथी तथा शा. वेगीचंद सूरचंद तरफची वपाएली जाष्य जो के एक अलायदी हती तोपण ते खपी गइ वे अने तेथी मळती नथी. माटे आ विषयोना सुलज ज्ञानने माटे तथा अन्यासी ग्रीनी साच-वणीने सुगम करवा माटे आ लघु अंथनी आवश्यकता धारी हे.

मणनाराउने शब्द बोध साथे अर्थ शीखवा सुगम परे तेटला माटे आ पुस्तकमां प्रथम दरेक गाथाना मथाळे तेना ढुटा शब्देानो अर्थ लखी पढो गाथा लखवामां आवेली ढे. अने ते पढी तेनो टुंकामां शब्दार्थ तथा पढी विस्तार साथे अर्थ मूकवामां आवेलो ढे.

श्चा त्रण जाष्यो मध्ये वेर्द्वी जे पचरकाण जाष्य वे ते पन्यासजी महाराज श्री श्री श्री 200 श्रीदानविजयजी महाराजे घणोज श्रम खइ सुधारी वे तेथी तेउ साहेबोनो उपकार मानवामां आवेबे.

आ प्रंथ वपाववामां गुरुणीजी साहेब जीनश्रीजीना तथा कमळश्रीजीना उपदेशयी जे जे पुरुषोए मदद आपी वे तेर्टनां नाम आ पुस्तकना वेख्ना पाने आपेखां वे.

आवी रीते बीजा पेण सदगृहस्थो आवा ज्ञानखातामां मदद आपी ज्ञाननो फेखावो करशे तो जैन कोमनी दिनप्रतिदिन धार्मिक वृत्तिउ सुधारवाना आलंबनजूत यशे.



प्रणम्य प्रणतानंद कारकं विघ्नवारकं ॥ **चि**०भा**०** ৰী০মা০ श्रीमद्विजय देवाह्नं लसछावण्य धारकं ॥ १ ॥ मेरु धीरं स्फुर द्वीरं, गंभीरं नीरधीशवत्॥ भाष्य त्रयार्थ बोधाय, बालबोधो विधीयते ॥ २॥ श्च-दार्थ---वंदन करवा योग्य एवा सर्वे (पांच) परमेष्ठीने बांदीने चैत्यवंदन, गुरुवंदन अने पचख्खाणना उत्तम विan ch an an ण करवावाळा एवा श्रीमद्विजयदेवप्तरी नामना ग्रुरु महाराजने तेमज वळी ।। १ ॥ श्रब्दार्थ-मेरु पर्वतना जेवा धैर्यवान, अने स्वयंधु रमण समुद्र जेवा मंभीर, अने देदीप्यमान् एवा बीरभगवानने नमस्कार करीने प्रणभाष्यना अर्थनो बोध यवा माटे बालावबोध करवामां आवे छे. ॥ २ ॥

50 B		2000
জে ৫৫০ জন লি ৫৫০ জন	र्थ्यिः-वंदनीयान् एटले वांदवा योग्य एवा जे सर्वे श्रीतीर्थंकरदेव व्यथवा श्री व्यरिहंता- दिक सर्वे पांचे परमेष्ठी तेमने वंदित्वा एटले वांदीने चैत्यवंदनादिक एटले चैत्यवंदन तथा व्यादि	
ক্ষাৰ্ক্ত কাৰ্য্য কে জাত কে আঁ কে জাত কে আঁ কে জাত লে আঁ জাত কে বিহ আঁ কাৰ্য কাৰ্য্য কে জাত কে তাত কে জাত কে বাহ পাঁৱ কে বাহ	राब्दथी गुरुवंदन छने पच्चस्काण पण लेवां ते रूप सुविचारं एटले रूमा विचारप्रत्ये घणा	.
ৰচ জ জ		8
50 CD	कहीश, परंतु महारी मतिकब्पनायें नहीं कहीश. एटले धर्मरुचि जीवोने पंचांगी सम्मत चैत्य- वंदनादिकनो विधि कहीश. कारण के समकितनुं बीज तो शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनुं	୍ଟ୍ରେ
AD AD	वदनादिकना विवि कहारा. कारण के समाकतेषु वाज ता राष्ट्र देवे, राष्ट्र उठ अने राष्ट्र पनेषु स्वरूप जाणवुं, अने सहृहवुं वे ते माटे प्रथम छढार दाष रहित, निष्कलंक एवा जे श्रीछरिहंत	30-00-00
() () () () () () () () () () () () () (देव हे, ते शुद्ध देव हे. तेना स्थापनादिक चारे निक्तेपा वांदवा योग्य हे तो इहां चैत्यशब्दे श्री	100-00-V
10 AD	छरिइंत तथा श्रीछरिइंतनी प्रतिमा तेनी जे वंदना करवी, ते विधि सहित करवी ते विधि	205
ार्ट्	कहीश ॥ इति ॥ १ ॥ हवे ते चैत्यवंदननो विधि मूल तो चोवीश घारे सचवाय ढे, ते चोवीशना वली उत्तर	11-12-12-C
10 March		

चै०भा० भार॥ शर्ण	नेद २०९४ थाय हे. माटें चोवीश घारनां नाम, प्रत्येक घारना उत्तर नेदनी संख्या सहित चार गाथायें करी कहे हे. चार गाथाथी २४ द्वार कहेडे.	चै०भा०
ଅନିକ୍ଷ ହୋଇ ହୋଲି ଅନିକ୍ଷ ହୋଇ	दह-दज्ञ तिग त्रीक अहिगम-अभिगम पणगं-पंचक पणिवाय-अभिगम पणगं-पंचक दहातिगअहिगम पणगं, दुदिसिनिदुगाहतिहाउ वंदणया॥ दहातिगअहिगम पणगं, दुदिसितिहुगाहतिहाउ वंदणया॥ पणिवायनमुकारा, वण्णा सोलस्यसीयाला॥ २॥ घडतालीग्र अद्याप्र पणिवायनमुकारा, वण्णा सोलस्यसीयाला॥ २॥ घब्दार्थ-१ नैपेधिक आदि दग्जिक, २ पांच अभिगम, ३ स्त्री पुरुषने उभा रहेवानी वे दिगा, ४ जघन्य मध्यम, उत्कृष्ट त्रण अवग्रह, ५ त्रण मकारकुं चैत्यवंरन, ६ पांच अंगे प्रणियान, ७ नमस्कार, ८ नवकार प्रमुख नव सूत्रना सो- तसाने सुडतावीग्र अक्षर-॥ २॥	11 2 11
lain Education International	Ear Dereand & Drivete Lies Only	

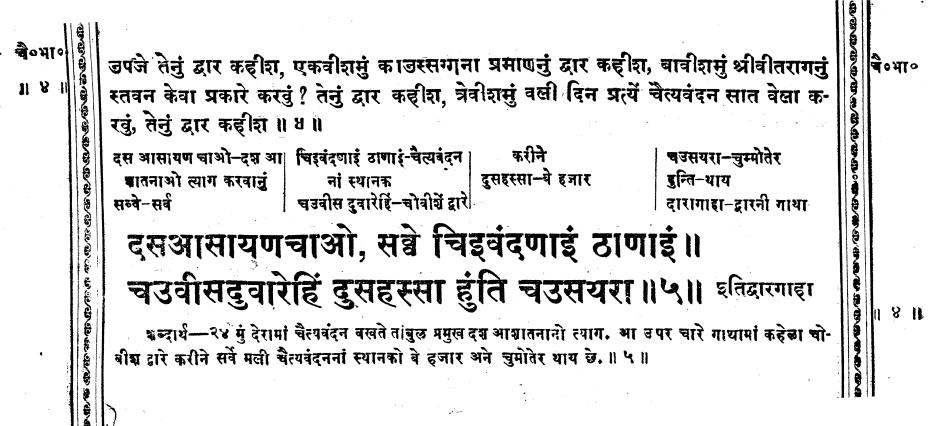
www.jainelibrary.org

द्व ावरताराच-प्रथ		त्र्यादिक दइा त्रिक साचव ंी	
हु। कद्दाश, बाजु छाजिगम		ामनुं द्वार कहीशः त्रीजुं देव	
हु दिशायं अने पुरुषने		हेवुं जोझ्ये, ते दिदिशि ए	
है कहीरा, चोथुं जघन्य,		वात्रण प्रकारना अवग्रहनुं	
हु त्रिधातुवंदनया एटले		दना करवी, तेनुं दार कही	U
all ni= sin nome-		सातमुं नमस्कार करवार	नं तार्रे स्वील जारामं
🦉 🛛 पाच व्यग आखपति व	भ्या, तमु खार महारा,	तातनु गणरकार करवार्	3 खार कहारा, आठमु
हु। पाच अग आखपात व हे। देववंदनना अधिकारें	जे नवकार प्रमुख नव र	सूत्रां आवे हे, तेना वर्ष ए	टले अक्तर ते सोलशें
हे पाच अग आखपात व देववंदनना अधिकारें देवं सुमतालीश थाय,	त्वा, तुनु द्वार कहार, जे नवकार प्रमुख नव र तेने गणी देखामवानुं द्व	सूत्रां आ वे बे, तेना वर्ष ए	टले अहारा, आठनु टले अक्तर ते सोलरों
है देववंदनना अधिकारें है ने सुमतालीश थाय,	जे नवकार प्रमुख नव र तेने गणी देखामवानुं द्र	सूत्रां व्यावे डे, तेना वर्ष ए ।र कहीश ॥ १ ॥	टले अक्तर ते सोलशें
	जे नवकार प्रमुख नव र तेने गणी देखामवानुं द्र	सूत्रां आ वे बे, तेना वर्ष ए	टले आक्तर ते सोलरों सरणिज्ज-स्मरण करवा योग

০০ক্রকেরেরে একেরে ব্যক্ত সা সি ॥	इगसीइसयं तु पया, सग नउइ संपयाउ पणदंडा ॥ बारअहिगार चउवं-दणिजसरणिजचउहजिणा ॥ ३ ॥ भव्दार्थ-नकी ९ मुं नवकार मम्रुल नव सूत्रना एकसोने एकामी पर, १० ए नवसूत्रनी सत्ताणु संपदा, ११ नम्रुथ्यु- णादि पांच दंडक, १२ बार अधिकार, १३ चार वांदवा योग्य, १४ भरण करवा योग्य १५ नामस्थापनादिक चार मका- रना जिन-॥ ३ ॥ विस्तार्ग्य-स्वयं नेवनंतराज्य जाफिकरों जनवरा साल्य नव स्वयोने एकम्प्यी प्रदो भाष	い (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)	[[•
ு குரு குரு குரு குரு குரு க ம	विस्तारार्थ-नवमुं देववंदनना अधिकारें नवकार प्रुख नव सूत्रोनां एकसोने एक्यासी पदो थाय øे, ते देखामवानुं द्वार कहीश, दशमुं एज नव सूत्रांतां सप्तनवति एटले सत्ताणुं संपदार्ठ थाय øे, ते देखामवानुं द्वार कहीश, अगीयारमुं नमुत्थुणादिक पांच दंमकनुं द्वार कहीश, बारमुं चैत्यवंदनने विषे पांच दंमकमां बार अधिकार आवे øे, तेनुं द्वार कहीश, तेरमुं चार वांदवा योग्य तेनुं द्वार कहीश, चौदमुं उपडव टालवा निमित्तें एक स्मरण करवा योग्य जे सम्यग्दष्टि देवो तेमनुं द्वार कहीश, पन्नरमुं नामस्थापनादक चार प्रकारना जिननुं द्वार कहीश ॥ ३ ॥	arente tatente anticato a	ξ 11

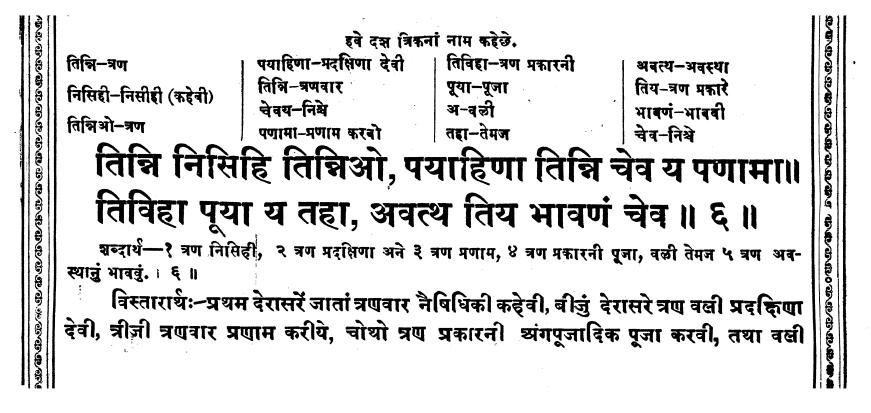
	चार स्तुति क दे वानुं अ-वब निमित्त आठ सोक		णबीस दोस-ओगणीश दोव		
6 MINUS-1		थागारा-कोळ था- उ गारतं	प्सग्गमाण−काउरसग्गना प्रमाण <u>न</u> ुं	अवली सगवेखा-सातवेढा करई	i l
6 11			•		
e 4	उरो थुइ निमि	नराष्ठ-मारह स	হতস মাতে জ	गागारा ॥	
8 	णवीसदोसउस		नं च मगवेत	n Q n T	
भू भुबदा १ पवादयी स १ रोज सात	र्थ१६ चार प्रकारनी स्त्	रति, १७ पापसपणादिक अ	गाठ निमित्त, १८ फल स	ाधवाना बार हेतु अने १९	अ-
है। प्वादयी स		गमां आंगणीश दोष, २१	काउरसग्गतु ममाण, २२	वीतरागनी स्तुति अने २३ व	₹ ₹-
	वखत चैत्यवंदन-॥ ४॥		• • •	·	
है विस्ता हे आठ हे, है रामुं अप	रार्थ-सोलमुं चार स्तु।	त कईवानुं दार कहीश	,सत्तरमु दव वादवाम	ां पापक्तपणादिक निमि सर कहीश, वली <mark>उ</mark> ंगप	नत्त

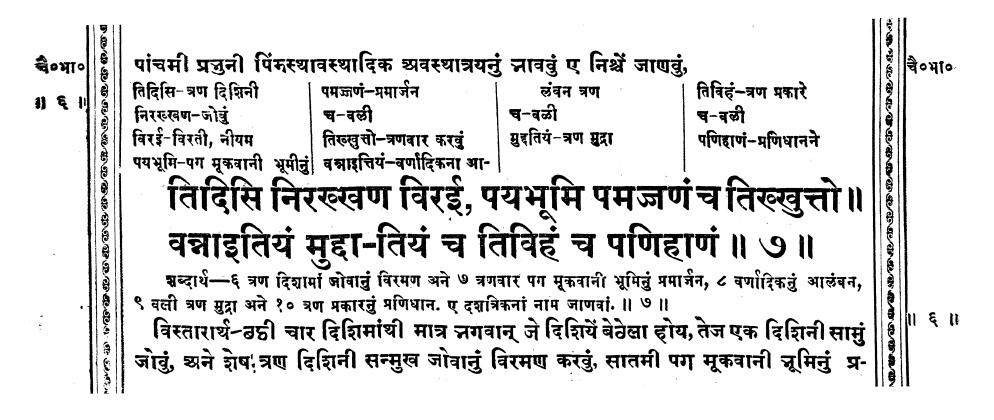
www.jainelibrary.org

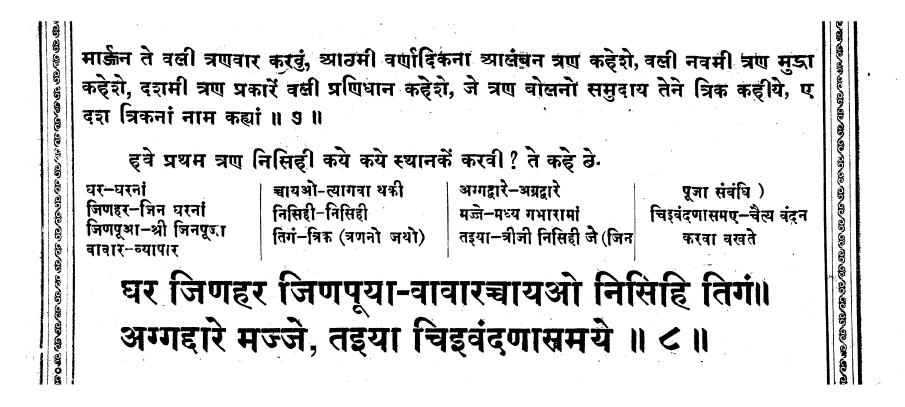


विस्तारार्थ-चोवीसमुं देव	वंटन का	तां देरा	सरमां तांबूल प्रमुख दश छ।	शातनान	ो त्याग
करवो, तेनुं दार कहीश, एम स	न्वें चैरय	वंदननां	स्थानक ते चोवीश द्वारे करीनें ब	ो इजारन	नी जपर
चुम्मोतेर थाय ॥ ५ ॥ ए द्वारन	री गाथाः	ने चार	जाणवी ॥		
चोवीश क	रनां ज	तर जेव	द सहित यंत्रनो स्थापना.		
श्रंक मृलद्वारनांनाम.उत्तरन्नेदनी	सं ख्या.स	रवासो.	श्रंक मूलद्वारनांनाम.जत्तरज्ञेदन	ीसंख्या.स	तरवास्रो
१ नैषेधिकादिक दशत्रिकनुं द्वार		হ ত	थ त्रण प्रकारें वंदना करवी तेनुं		8
२ पांच अजिगम साचववानुं हा ३ देववांदतां स्त्री पुरुषने जजा रहे	र. ५	ર્ય			ย
वानी बे दिशार्टनुं द्वार.	र २	39	९ नमस्कार करवानुं द्वार.	र	ຽາ
४ जधन्य, मध्यमादि त्रण व्यवग्र		•	ण नवकार प्रमुख नवसूत्रानां	व	
इनुं घार.	3	Bo	र्णोनुं द्वार.	୧୧୪ସ	१६ए

चै॰भा॰ है	ए नवकार प्रमुख नव सूत्रानां	१६ चार शुइ कहेवानुं द्वार. ४	२००७ २००७ २०२० २०३६	
5	पदसंख्यानुं द्वार. १०१ १०९३	१९ देव वांदवाना श्राठ निमित्तनुंद्वार.७	२००७	चै॰भा•
1 4 1 2	१ ० नवकार प्रमुख नवसूत्रानी संप	१० देव वांदवाना बार हेतुनुं दार. १२	হ০২০ ট্ট	
۲ = می می می می	दानुं द्वार. एष १ए७०	१ए काउस्सग्गनासोलञ्चागारनुंद्वार.१६	२०३६ [
te ce c	११ नमोत्युणादि पांच दंत्रकनुं द्वार. ५ १७७५			
	१२ देव वांदवाना बार छधिकारनुं	द्वार. १ए	१०५५	
5000	द्वार. ११ १ए०९	११काउस्सग्गना प्रमाणनुं दार १	2028 2028 2028 2028 2028	
	१३ चार वंदनीयनुं दार. ४ १७७१	११ स्तवन केम करवुं? तेनुं दार. १	2012	
30	१४ स्मरण करवा योग्यनुं द्वार. १ १७७१		হ০হ৪ 👸	
. 5	१ ५ नामादि चार प्रकारे जिननुं द्वार. ४ १७७६		8098	
8	हवे ए चोवीजे द्वारना उत्तर जेदनं स्वरू	प अनकमें देखाकतो थको प्रथम दश	त्रिकोनुं 🎼	11 4 11
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	दार कहेतो बतो वे गायायें करी दश त्रिकोनां	नाम कहे हे.	त्रिकोनुं ।	
50 C			(B)	·
			1 2	







ৰ্ষী০মাৰ্ 45 40 37 40 38 39 49 49 49 49 49 49 49 49 49 49 49 गढा वारणामां, गभारामां अने चैत्यवंदनने अवसरे एम त्रण निसिद्दि साचववी. ॥ ८ ॥ 0 11 विस्तारार्थः~जे सावद्य व्यापारनो मन, वचन छने कायायें करी निषेध करवो, तेने निसिद्दी क-344 इीये, ते एक पोताना घरनां, बीजी जिनघर ते देरासरनां, त्रीजी श्रीजिनेश्वरनी पूजानां जे व्या-पार एटले ए त्रणना जे व्यापार तेने त्यागवायकी नैषिधिकीत्रिक थाय, तेमां प्रथम निसिहि ते पोताना घर, हाट, परिवारादिक संबंधी जे सावद्य व्यापार ते सर्व निवर्त्ताववा माटे श्रीजिनमं-दिरने अग्रद्धारें कहे. एटले देरासरनां मूल बारणे दरवाजामां पेसतांज कहे, पण इहां श्रीजिन-घरने पूंजवा समारवा संबंधि तथा पूजा संबंधि सर्व व्यापार आदरे, तथा बीजी निसिद्दी ते जि-नघर संबंधी व्यापारथी निवर्त्तवा रूप देरासरनी मध्य गजारामां पेसतां कहे, तिहां देरासर पम्या त्र्याखम्यानी चिंतानो तथा देरासरमां पूंजवादिकनो त्याग करीने डव्य पूजादिकनो प्रारंज करे, 9 11 एम सर्व प्रकारनी प्रूजा विधिसहित साचवी रह्या पठी त्रीजी निसिद्दी जे जिनप्रूजा संबंधि व्या-

S-ED-ED-	पारना त्याग रूप ठे ते. जिनपूजा व्यापार त्याग तो चैत्यवंदन करवाना व्यवसरें कहे इहां डव्य
ત્રી હાય છે. પ્લી	पूजा व्यापार सर्व निवर्त्तावीने कैवख्य जावपूजारूप चैत्यवंदन स्तवनादिकनो एकाग्र चित्ते करी
50.05	पाठ करे, ए रीते त्रण निसिही साचवे.
30-CD	अथवा मन, वचन छने कायायें करी घर संबंधी व्यापार निषेधवारूप त्रण निसिद्दी देरा-
<u>ଥି</u>	सरना अप्रदारमां कहेवी, अने तेज प्रमाणे मनादिक त्रणे योगें देरासर संबंधी व्यापार त्यागवा
600	आश्रयी त्रण निसिही गजारामां कहेवी, तथा वली चैत्यवंदनादि कहेवाने व्यवसरें पण मन
	वचन कायांधें करी जिनपूजा व्यापार त्यागरूप त्रण निसिद्दी कहेवी, ए रीतें दरेक वखतें मन,
500	वचन छने कायाना योगें करी त्रण त्रण निसिही कहेवी,
30-60	कहेवी. परंतु घर संबंधी देरा संबंधी छने जिनपूजा संबंधी व्यापार निषेध करीयें वैथें, एम स
ana conco	मजीने देरासरमां पेसतांज त्रणे निसिही कही देवी नहीं. ए तात्पर्य वे ए प्रथम निसिही
Dec	त्रिक कह्य ॥ ७ ॥
a de la	त्रिक कह्यु ॥ ७ ॥

.

<b>भि</b> ० मा० ॥ ८ ॥ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७	📲 हवे बीजुं प्रदक्तिणात्रिकनुं नाम प्रथम सामान्यें ठंठी गांथामां कईख़ें ठे, तना प्रगट व्यथ					चै०भा०
<b>Q</b>	हवे त्रीजुं प्रणामत्रिक कहे ठे.				60	
ತ್ರಾ ಮಾತ್ರಾ ನದು ಪು	अंजलिवंधो−अंजलिबद्ध अद्धोणओ−−अर्धावनत अ-वली	पंचंगओ−पंचांग प्रणाम तिपणामा−त्रण प्रणाम सव्वत्थ−सघऌे ठेकाणे	1	नमणे−नमाडवेंकरी पणाम−प्रणाम तियं−त्रिक	19.00 CD CD CD CD	
10 20 20 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40		ो अद्वो-णओ अ तिवारं, सिराइ			ୢ୵ଊଊୠ୶ଽ୶ୠୄଊଊ	    <    

www.jainelibrary.org

शब्दार्थ-१ अंजलीबद्ध मगाम, २ अर्द्धावनत प्रणाम, अने २ पंचांग प्रणाम ए त्रणप्रणाम जाणवा. अथवा सर्व प्रणाम करवाने वसते त्रणवार मस्तक नमाववुं ए पण त्रण प्रणाम जाणवा. ॥ ९ ॥ विस्तारार्थः-श्री जिन प्रतिमा देखी वे हाथ जोकी निद्वाके खगाकी प्रणाम करीयें ते प्रथम अंजलिवंध प्रणाम कहीये, तथा कटिदेशथी उपरखुं अर्धु शरीर तेने लगारेक नमाकी प्रणाम करीये, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानके रह्यां थकां कांइक शिर नमाकीये, तथा शिर करादिकें करी जूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते एक छंगथी मांकीने चार छंग पर्यंत नमाम्वुं ते बीजो अर्द्धावनत प्रणाम कहीयें, तथा वली वे जानु, वे कर छने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच छंग नमाकी खमासमण आधीयें, ते त्रीजो पंचांग प्रणाम जाणवो. ए त्रण प्रणाम जाणवा. अथवा सर्वत्र प्रणाम करवासमये त्रण वार मस्तकादिक नमाक्वे करी एटखे शिर, कर मंत्रिक कद्युं ॥ ए ॥
विस्तारार्थः-श्री जिन प्रतिमा देखी वे हाथ जोनी निह्वाने लगानी प्रणाम करीयें ते प्रथम
है अंजलिबंध प्रणाम कहीये, तथा कटिदेशथी उपरखुं अर्धुं शरीर तेने लगारेक नमामी प्रणाम
है करीये, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानके रह्यां थकां कांइक हािर नमामीये, तथा शिर करादिकें करी है ज्रूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते एक अंगथी मांसीने चार अंग पर्यंत नमामवुं ते बीजो
द्वी जूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते एक छंगथी मांकीने चार छंग पर्यंत नमामवुं ते बीजो छर्छावनत प्रणाम कहीयें, तथा वली बे जानु, बे कर छने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच छंग नमाकी खमासमण छापीयें, ते त्रीजो पंचांग प्रणाम जाणवो. ए त्रण प्रणाम जाणवा ज्ययवा मर्वच प्रणाम करवासमये त्रण वार मस्तकादिक नमामवे करी एटले शिर, कर
है ए पांच अंग नमाभी खमासमण आधीयें, ते त्रीजो पंचांग प्रणाम जाणवो. ए त्रण प्रणाम
हैं जाणवा. अथवा सर्वत्र प्रणाम करवासमये त्रण वार मस्तकादिक नमामवे करी एटले शिर, कर
अंजली प्रमुखे करी जे त्रण वार नमन आवर्त्त करवुं ते प्रणामत्रिक जाणवुं. ए त्रीजुं प्रणा-
हैं मत्रिक कह्युं ॥ ए ॥

हवे चोथुं पूजात्रिक कहे ठे. 50 CE CE 9 8 **चै**०भा० **ৰী**০মা০ अंगग्ग-अंग अने अग्र पूजा पुष्फाहार थुइहि-पुष्प केसर पंचोवयारा- पंचोपचार सन्वो वयारा-सर्वेापचारा 99999999 आहार फल तथा स्तुति करवे अद्योवयार-अष्टोपचार भाव-भाव पूजा वा-अथवा पूर्यतिगं-पूजात्रिक भेय-भेद थको अंगग्गभावभेया, पुष्फाहारथुइहिं पूर्यातेगं ॥ पंचोवयारा अहो-वयार सबोवयारा वा॥ १०॥ कब्हार्थ-पुष्प केशरादिके करीने अंगपूजा, फलादि मूकवाथी अप्रपूजा अने स्टुतिथी भावपूजा एम त्रग जातनी 9 पूजा थायछे. अथवा पंचोपचार पूजा, अष्टोपचार पूजा अने सर्वोपचार पूजा ए पूजात्रिक थाय छे. ॥ १० ॥ विस्तारार्धः-अंगने अग्र एटले पहेली अंगपूजा अने बीजी आगल ढोवारूप 90 90 90 90 **90** अग्रपुजा, तथा त्रीजी चैत्यवंदनरूप जावपूजा ए त्रए जेदथकी अनुकमें पुष्पाहारस्तुतिजिः एटले पहेलो

पुष्प केसरादिके श्रने बीजी आहार फलादि ढोकने तथा त्रीजी स्तुति करवे करीने पूजा त्रिक चाय हे. तेमां प्रथम श्रंगपूजा ते श्रीवीतरागनी पूजा अवसरे मनःशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, वस्त्रज्ञुद्धि, नीतिनुं धन, पूजाना जपकरणनी ज्ञुद्धि, जूमिगुद्धि, ए सातवानां ज्ञुद्ध करी धवल निर्मल सुपोत धोतीयां पुरुष पहेरे, अने जेनो आठपनो मुलकोश थाय, एइवी एक सामी उत्त-रासंगनी धरे, एवी रीतें पुरुषें पूजा अवसरें वे वस्त्र राखवां, अने स्त्रीनें तो विशेष वस्त्रादिकनी शोजा जोइयें, तथापि इमणां संप्रदायें त्रण वस्त्र पहेरी पूजा करे, ए रीतें वस्त्र पहेरी आशातना टालतो थको प्रथम पूंजणीयें करी श्रीजिनबिंबने पूंजे, पूंजवाथी मांनी पर्वने विषे त्रण, पांच, सात, कुसुमांजलि प्रद्येप करे. न्हवण, अंगुलूहणां धरतो, विलेपन, जूषण, अंगीरचन, पुष्प च-मावतो जिनइस्तमां नारिकेरादिक धूपाद्तेप, सुगंधवासक्तेपणादिक करतो पूजा करे. ए सर्व श्चंगपूजा जाणवी.

www.jainelibrary.org

बीजी श्वग्रपूजा; तेमां धूप, दीप, नेवेद्यादि शब्दे आहार ढोकन पुष्प प्रकर, गंथिम, वेढिम, पूरिम, संघातिमादि जेदें जल, लवणोत्तारण, आरती, मंगलदीपक, अष्टमंगलजरण, ए सर्व बीजी अग्रपूजा जाणवी.

त्रीजी जावपूजामध्यें स्तुति, गीत, गान, नाटक, बत्र, चामर, विंजवादि तथा देवडव्य व धारवा प्रमुख सर्व जावपूजा:जाणवी. ए पूजात्रिक कद्युं. व्यथवा करवा, कराववा व्यने व्यनुमो-दवारूप ए पण त्रिविध पूजा जाणवी.

अथवा एक विद्योपशामिनी, बीजी अन्युदय साधनी, त्रीजी निवृत्तिदायिनी, ए पूजात्रिक जाणवुं. यडुक्तं ॥ विग्घोवसायिगेगा, अप्जुदयसाइणि जवे बीया ॥ निव्वुइकरणी तझ्या, फलयाउ जदह नामेहिं ॥ १ ॥ इत्यावइयकनिर्युक्तिवचनात् ॥

अथवा पंचोपचारा पूजा ते १ गंध, १ माख्य, ३ अधिवास, ४ धूप, ८ दीप. अथवा १ कु-सुम, १ अक्तत, ३ गंध, ४ धूप, ८ दीप ए पांच प्रकारें पण प्रथम अंगपूजा जाणवी. 30 IF

Ì

and a contraction of the contraction of the

**ന്നാൻ സ്ത്രങ്ങളും പുറയും പുറത്തില്ലാം** പ്രത്യം

चै०भा०

# 20

	बाज। अष्टोपचार एटले १ कुसुम २ स्कह ३ गंध ४ पईव ४ धूव ६ नैवेज ९ जल ए फ-
रेखें प्र ति मि प्रिंब रेट होते	तेहि पुणो, ॥ अठविइ कम्म महणी, अठुवयारा हवइ पूया ॥ १ ॥ इति आवइयकनिर्युक्तिवचनं
Q	र आठ प्रकारें पूजा जाणवी.
	त्रीजी सर्वोपचारा एटले सर्वोपचारपणे पूजा ते प्रणाम मात्रादिक सर्व लोकोपचार विनय
ति	ो सर्वपूजा जाणवी. ऋथवा जेटली वस्तु मले तेणें करीने पूजा करवी, ते सर्वोंपचारपूजा जाणवी.
	तेहां १ न्हवण, १ विलेपन, ३ देवछुष्यवस्त्र, तथा चक्तुयुगल, ४ वासपूजा, ४ फूलपगर, ६ फूल-
Ŧ	नाल, 9 ढूटां फूल, 0 चूर्णघनसारादि, तथा आंगी रचनादि, ७ ध्वजारोपण, १० आजरण, ११
g	हलघर, ११ फूलनो मेघ, १३ अष्टमंगल रचना, १४ धूप दीप आरती मंगल दीपादिक नैवेद्य ढो-
्व	हन, १५ गीतगान, १६ नाटक, १७ वाजित्र. ए सत्तर प्रकारें पूजा, तथा वली ११ प्रकारें पूजा,
<b> </b> ] रे	तनां नाम कहे हे. १ स्नात्र, १ विलेपन, ३ जूषण, ४ फल, ८ वास, ६ धूप, ७ दीप, ७ फूल, ए
ति	दुल, १० पत्र, ११ पूगी, ११ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ ठत्र, १६ चामर, १९ वाजित्र, १०

चै०भा० ॥ ११॥	गीत, १ए नृत्य, १० स्तुति, ११ देवडव्यकोशवृद्धि, एवं एकवीश जेद, तथा एकशो आठ प्रका- रादि ए सर्व बहुविध पूजा जाणवी. ए रीतें पंचोपचार, अष्टोपचार अने सर्वोपचार मली त्रण जेदें पूजा जाणवी. ए चोधुं पूजात्रिक कह्युं ॥ १० ॥	ৰীতমাত
	हवे पांचमुं, व्यवस्थात्रिक कहे ठेः—	
<b>क्रिक क्र क्रिक क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्</b>	भाविज्ञ-भाव्य अवध्यतियं-त्रण अवस्था एवडध्य-पदस्या रूवरहियत्तं-रूगरहित एवडध्य-पिंडस्थावस्था एवडध्य-पिंडस्थावस्था एवडध्य-पिंडस्थावस्था छउमध्य-छद्मस्थावस्थाये चेव-निश्चे भाविज्ञ अवत्थतियं, पिंडत्थ पयत्थ रूवरहियत्तं ॥ छउमत्थकेवारित्तं, सिद्धत्तं चेव तस्सत्थो ॥ ११॥	11 22 11

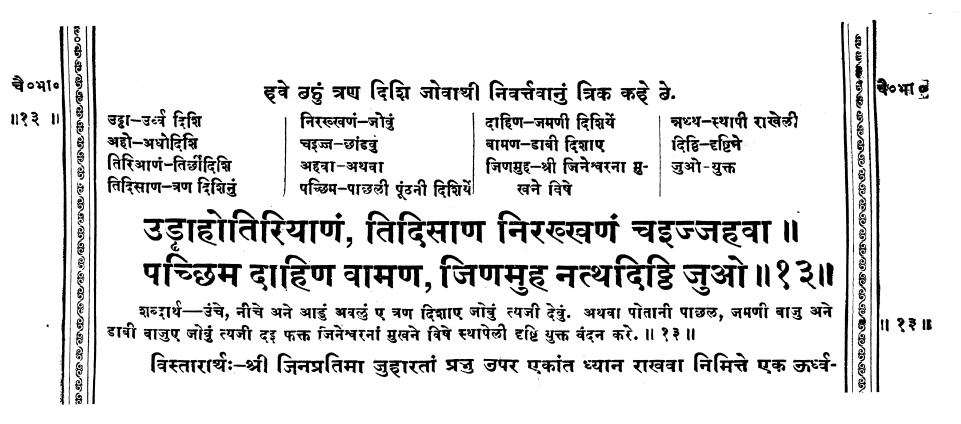
N-D-W	विस्तारार्थः-हे ज्ञब्वजीव ! तुं ज्ञाब्य. श्री जगवंतनी त्रग व्यवस्था प्रत्यें एटले त्रण व्यव-	ନଦେଇ
<b>֎ՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠ</b>	स्थानी जावना जावियें, ते कहे हे. प्रथम पिंकस्थावस्था जावीयें, बीजी पदस्थ व्यवस्था जावीयें,	ଜ ଏକ ଅନ୍ଧାରେ ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟାନ ଅନ୍ୟ
60.00	त्रीजी रूपरहितःवं एटले रूपरहित एवी रूपातीत व्यवस्था जावीयें, तिहां जे पिंमस्थावस्था ते	୍ଷ
. Co C	विग्नस्थावस्थायें जावियें, तीर्थंकर पदनां पिंम जे शरीर तीर्थंकर नाम कर्मयोग्य वे, ते पिंमस्था-	66
2000	वस्था वे छने पदस्यावस्था ते केवलज्ञान छवस्थायें जावीयें एटले केवलज्ञान पाम्या पठी प्रजु	30-30
0023	पदस्य थया ते, तथा रूपातीतावस्था ते सिद्धरवं एटले सिद्धपणानी व्यवस्थायें जाववी, कारण	୍ଟ୍ର
	के सिद्धपणुं जे <b>ठे, ते रूप</b> यकी व्यतीत ठे, माटे सिद्धरूपपणुं जावतां रूपातीत जावना कहीयें. ए निश्चे ते पिंमस्थादिक त्रण व्यवस्थानो व्यर्थ जाणवो ॥ ११ ॥	
600	ए निश्च ते पिर्मस्थादिक त्रेण अवस्थाना अय जाणवा ॥ ८८ ॥ ॥ हवे ए त्रेणे अवस्था क्यां क्यां जाववी ? तेनां ठाम कहे हे.	30 - 90 - 90 1
ાજી	ण्हवणचगेहिं-न्हवण गूजा वखत किवलियं-केवलीपणानी अव- उस्सग्गेहिं-काउस्सग्गीयाने जिणस्स-जिनन्नं	9990 Q
Solo	छडमथ्यवथ्य-छद्गस्थावस्था स्था भावीयें आकारें भाविज्ज-भाववी	ander 1
C.C.C.	पडिद्वारगेहिं-मातिहार्ये करी पछियं क-पछांठीवालीने बेठेला य-वली सिद्धत्तं-सिद्धपगानी अवस्था	99
		90 OF

.

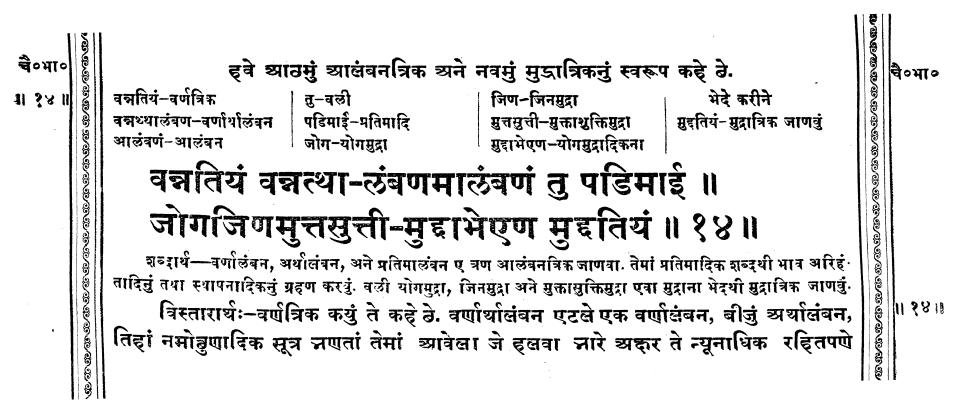
s. www.jainelibrary.org

ৰীগ্দাগ ण्हवणचगेहिं छउम-त्थवत्थ पडिहारगेहिं केवलियं ॥ चै०भा ॰ 11 82 1 पलियं कुस्सग्गेहि य, जिणस्स भाविज सिद्धत्तं ॥१२॥ 60 00 00 00 शब्दार्थ--जिनराजनी न्हवण, पखाल अने पूजा अवसरे छद्मस्थावस्था भाववी; आठ पातिहार्ये करीने केवली अव-स्था भाववी अने पर्टोठीवालीने काउस्सग्गने आकारे देखीने सिद्धावस्था भाववी ॥ १२ ॥ विस्तारार्थः-स्नपनार्चकैः एटले न्हवण, पखाल, अर्चादि पूजाना अवसरें, पूजा करनारा, पूजक पुरुषोयें श्रीजिनेश्वरनी ठग्नस्थावस्थाने जाववी, ते ठग्नस्थावस्थाना त्रण जेद ठे, एक उत्त न्मावस्था, वीर्जी राज्यावस्था अने त्रीजी श्रमणावस्था, तेमां प्रजुने न्हवण अर्चादिक प्रकालन करतां जन्मावस्था जाववी, अने मेरुपर्वतनी उपर जे जन्म महोत्सव जाववो ते पण जन्माव-स्थाज जाणवी. तथा मालाधारादि, पुष्प, केशर, चंदन अने अलंकारादि चढावतां राज्यावस्था न्नाववी.

वली जगवंतने अपगत शिरकेश, शीर्ष, झ णावस्थानी जावना जाववी. ए प्रथम उ	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
तथा किंकली, कुसुमवृष्टि अने दिव्य हार्य युक्त जगवानने देखीने बीजी पदस्थ	वनि प्रमुख आठ महा	ाप्रातिहार् <del>ये</del> करीने एटले प्रा
तथा पर्यंकासने करी सहित एटले वली जिननुं बिंब देखवे करीने सिद्धत्व प	टले सिद्धपणानी अवस्य	या अर्थात् रूपातीतपणानी व
वस्था प्रत्यें जाववी. केम के ? केटलाएक माटें ज्योतिरूप व्यवगाहना जाववी. व्या पांचमुं व्यवस्थात्रिक कह्युं ॥ १२ ॥		



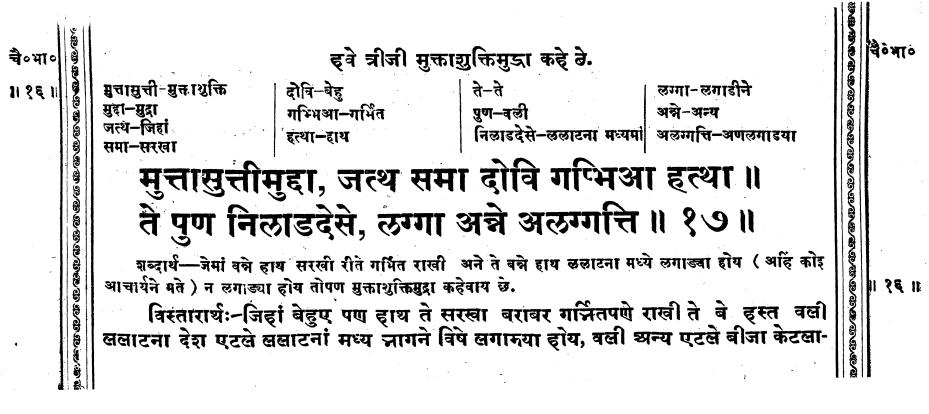
<b>സന്ത്യ നേഖം നേന്നും പെന്നും നേത്തും നേത്തും നേത്തും</b> നേന്ത്രം നേന്ത്രം നേന്ത്രം നേന്ത്രം നേന്ത്രം നേന്ത്രം നേന്ത്ര സംഭംഘം നേന്ത്രം നേന്ത്ര	दिशि, बीजी अधोदिशि अने त्रीजी तिठीं दिशि, ते आठुं अवद्युं ए त्रण दिशिनुं जोवुं ठौमवुं एटले वर्जन करवुं. अथवा पाठली पुंठनी दिशियें जमणी दिशियें तथा मावी दिशियें एटले जे दिशायें श्री जगवंतनी प्रतिमा होय, ते दिशि टालीने शेष पुंठनी बाजु तथा जमणी बाजु अने मावी बाजु, ए त्रण दिशायें जोवानुं वर्जन करवुं, मात्र श्री जिनेश्वरना मुखनेविषे पोतानी दृष्टिने न्यस्त एटले स्थापी राखेली होय. तेणे करी युक्त एटले सहित एवो थको वंदन करे. एटले जिनप्रतिमा उपर पोतानां लोचन थापी एकाग्र मन करे, परंतु आठुं अवलुं अरहुं परहुं जुवे नहीं. ए ठठुं त्रण दिशि निरखण वर्क्जवानुं त्रिक कद्युं ॥ १३ ॥ हवे सातमुं पदन्नूमिप्रमार्जनत्रिक कहे ठे, ते आवी रीतें केः-श्री जिनवंदनायें इरियावहि पनिक्कमतां तथा चैत्यवंदन करतां जीवयत्नने अर्थें रूके प्रकारें दृष्टिवमे जोइने पद स्पापवानी न्रूमि त्रण वार पुंजवी. तिहां गृहस्थ होय तो वस्त्रांचले करी पुंजे, अने साधु होय तो रजोद्दरणे करी पुंजे. ए सातमुं त्रिक थयुं.	<b>ମାନ ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା</b> ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା ଅନ୍ୟା
Ŕ		ě

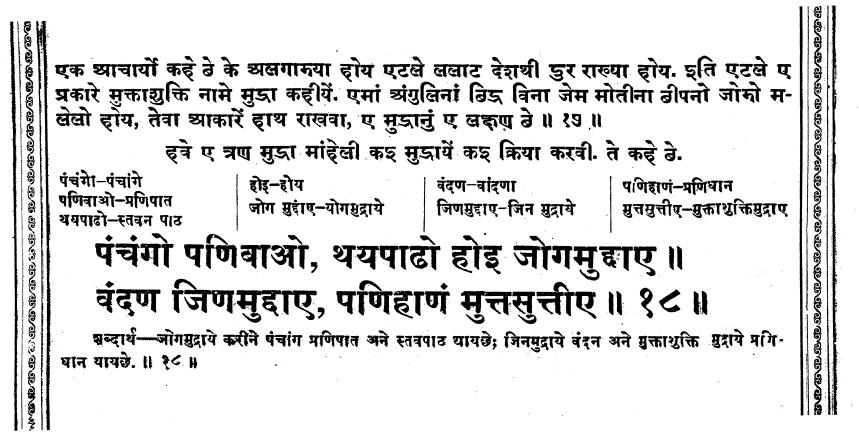


CE CE A	
50.00	यथास्थित बोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं बराबर चिंतन राखवुं, ते प्रथम वर्णालंबन जाणवुं, अने 📲
	जे नमोहुणं प्रमुख सूत्रो जणतां तेना अर्थ हृदयमां जाववा, ते बीजुं अर्थालंबन जाणवुं, तथा 📳
ي دوي روي ا	आलंबन ते वली हुं कहीयें तो के प्रतिमादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदि शब्द थकी जाव
রত/জেও জেও জে/জেও জেও	अरिइंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं पण ग्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप आलंबन धारवुं, ते त्रीजुं 👫
	प्रतिमालंबन जाणवुं ए आठमुं आलंबनत्रिक कह्युं.
2003	यथास्थित बोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं बरावर चिंतन राखवुं, ते प्रथम वर्णासंबन जाणवुं, अने जे नमोह्रणं प्रमुख सूत्रो जणतां तेना अर्थ हृदयमां जाववा, ते बीजुं अर्थालंबन जाणवुं, तथा आलंबन ते वली शुं कहीयें तो के प्रतिमादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदि शब्द थकी जाव अरिइंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं पण प्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप आलंबन धारवुं, ते त्रीजुं प्रतिमालंबन जाणवुं ए आठमुं आलंबनत्रिक कहुं. हिंवे नवमुं मुद्रात्रिक कहे ठे. एक योगमुद्रा, बीजी जिनमुद्रा अने त्रीजी मुक्ताशुक्ति मुद्रा,
500	ए योग मुद्रादिकना जेर्दे करीने मुद्रात्रिक जाणवुं ॥ १४ ॥
୩୦.୭୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩	हवे प्रथम योगमुद्धानुं स्वरूप कृहे ठेः-
le con	अञ्जुण्णंतरि अंगुल्लि-बे हाथनी नी पेठे दत्ते अंगुल्लिने अंतरीत करीने दोईिंहत्थोहिं-बे हाथे करीने कुप्परि-कोणी जोगग्रुइत्ति-योगग्रुद्रा पवी रीते है कोसागारेहिं-कमल्लना डोडा-
300	अञुण्णतार अगुछि-ब हाथना नी घठे पिट्टावीर-पट उपरे सठिएाह-स्थापनि दत्ते अंगुछिने अंतरीत करीने दोहिंहत्थेहिं-बे हाथे करीने कुप्परि-कोणी जोगग्रुइत्ति-योगग्रुद्रा एवी रीते हैं कोसागारेहिं-कमल्लना ढोडा-
0090	
16	

tion of the अन्नुण्णंतरिअंगुलि-कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ॥ चै०भा० ৰি০মা০ 112411 पिद्दोवरि कुप्परि सं-ठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति॥ १५॥ शब्दार्थ—परस्पर बन्ने ढ्राथनी दसे आंगुली अंतरित करेला कपलना ढोडाना आकारवाला तेमज पेटनी उपर बन्ने कोणीओ मूकेली एवा बे हाथ करीने रहेवुं. ते योगमुदा कहेवाय छे. ॥ १५ ॥ विस्तारार्थः-अन्योन्यांतरितांगुलि एटले वे हाथनी दर्शे अंगुलिने अन्योन्य ते मांहोमाहो **अंतरित करी**ढे जिहां एवी अने कमलना मोमाने आकारें जोमीने कीधा एवा बे हाथे करीने, ते बेहु द्दाय केवा ? तो के पेट उपरें कोणी ते संस्थित एटले रही हे जेनी एवा प्रकारें रहेवे करी योगमुझा इति एटले योगमुझा एम होय. ए पहेली योगमुझानुं स्वरूप कह्युं ॥ १५ ॥ 112411 हवे बीजी जिनसुद्रानुं लक्तण कहे हे.

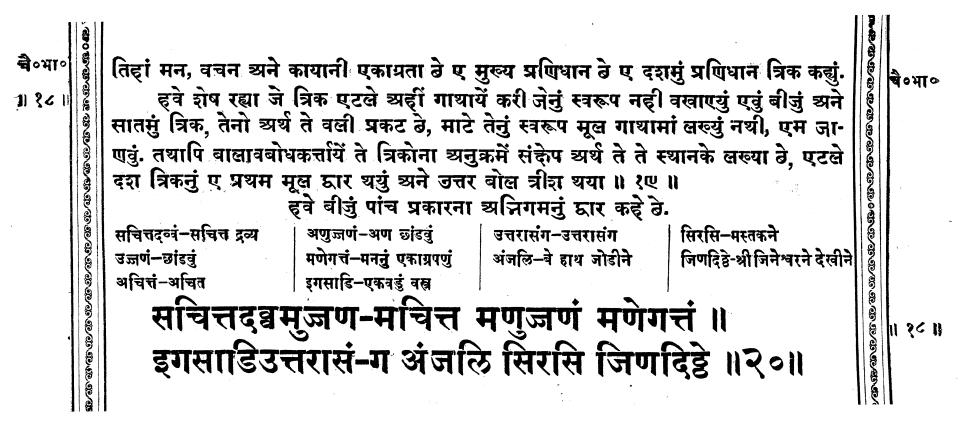
3		
100 A	चत्तारि-चार उणाइं-जणो पायाणं-पगना पुण-बलो	
Sec	अंगुलाइं-आंगळनुं जत्थ-जिहां उस्सग्गो-काउस्सग्ग करीये जिणग्रुदा-जिनग्रुद्रा	
സത്തന്തരം	पुरओ-आगल पच्छिमओ-पाछलनी पानीनी एसा-ए प्रकारे होइ-होय	
90 AD	चत्तारि अंगुलाइं, पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ ॥ 📲	
9	पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥	
90 C 90	भूबरार्थ—वल्ली जेमां पगना आगला पहोंचाने परस्पर चार आंगलनो आंतरो राखीने अने पाछल्ली पानीनी बाजुनो कांइ ओछो आंतरो राखीने जे काउस्सग्ग करवो ए जिनमुदा होयल्ले.	
1		
9	विस्तारार्थः–यत्र एटले जिहां पगना जे छागलना छंगुलिनी बाजु तरफना पहोंचाने मांहोमांहे 🛛	
aran ar	चार छांगुलनो छांतरो राख्यो होय, छने पगना पाठलनी पानीनी बाजुना जागमां मांहोमांहे 📲	
te a	चार आंग्रुलयी कांइक ऊणो आंतरो राख्यो होय. ए रीतें पग राखीने काउस्सग्ग करीये ए प्रकारें 🎼	
	वली जिनमुद्धा होय ॥ १६ ॥	
32		





विस्तारार्थः-एक इन्नामि खमासमणनो पाठ तेने पंचांग प्रणिपात कहीयें. बीजो स्तवपाठ **चै**ंभा ० ते श्रीजिनेश्वरता गुणनी स्तुति ते स्तवनादिनो पाठ करवो ते योगमुझायें करीने होय, तथा वां-दणा देवां अने काजस्सग्ग जे अरिहंतचेझ्याणं इत्यादि सर्व जिनमुझायें करीने थाय, तथा जा-1120 ଅକ୍ଟ ଅକ୍ଟ ଅଭିକ୍ତ ଅଭିକ वंति चेइआइं, जावंत केविसाहु अने जयवीयराय ए त्रणे प्रणिधानसंज्ञामां आवे. पण इहां ते संप्रदायगत एकज जयवीयरायने कहीयें ठेयें, ते मुक्ताग्रुक्ति मुद्रायें कहीयें ॥ १० ॥ इहां श्रीसं-घाचार जाष्यमध्ये मुकाग्रुक्ति मुझाये स्त्रीने स्तनादिक अवयवो प्रगट देखाय तेम न चतुं जो-इयें, एवा हेतु माटे स्त्रीने उंचा खखाटदेशे हाथ लगामवा कह्या नची. ए नवमुं मुझात्रिक कह्युं॥ 88 हवे दशमा प्रणिधानत्रिकनुं स्वरूप कहे ठे. पत्थणासरुवं-मार्थना स्वरूप तियत्थो-त्रिकनो अर्थ पणिहाण-प्रणिधान काय-कायतं वा-अथवा एगत्तं-एकाग्र उ−बळी मण-मनतु से स-बाकी पयडुत्ति-मगट छे

पणिहाणतिगं चेइय-मुणिवंदण पत्थणासरूवं वा॥ and a contract मण वय काएगत्तं, सेस तियत्थो उ पयडुत्ति ॥१९॥ वारं १॥ भब्दार्थ---चैत्यवंदन, मुनिवंदन अने पार्थनास्वरूप ए त्रण पणिधानात्रिक जाणवुं. अथवा मन, वचन अने कायानुं एकाग्रपणुं करवुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहेवाय. बाकी बीजा अने सातमा त्रिकनो अर्थ तो प्रगटज छे. ॥ १९ ॥ विस्तारार्थः-प्रणिधार्नंत्रिक, ते कयुं ? ते कहे वे. तिहां जावंति चेझ्छाई ए गाथा चैत्य वां-दवारूप ते प्रथम प्रणिधान जाणवुं. तथा जावंत केविसाहु ए गाया मुनि वांदवा रूप, ते बीजुं प्रणिधान जाणवुं. तथा जयवीयराय आजवमखंमा पर्यंत ए गाथा प्रार्थनास्वरूप ते त्रीजुं प्र-600000 णिधान जाणवुं. अथवा एक मननुं बीजुं वचननुं अने त्रीजुं कायानुं एकत्व एटले एकाप्रपणुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहीयें. इहां शिष्य पूढे ठे के चैत्यवंदनायें प्रणिधान आवे ठे, अने बीजी शेष and the second वंदना तो प्रणिधान विनाज थाय हे, तिहां ए बोख सचवाता नथी ते केम ? तेने गुरु कहे हे के



きき शब्दार्थ-- १ सचित्त द्रव्यमो त्याग, २ अचित्त वस्तुने न तजवानी अनुज्ञा, ३ मननुं एकाग्रपणुं, ४ एकसाडी उत्त-रासंग अने ५ जिनेश्वरनां दर्शन थये माथा उपर अंजलि जोडवी. ए पांच अभिगम जाणवां. ॥ २० ॥ 60.00 विस्तारार्थः-चैत्यादिकने विषे प्रवेश करवानो विधि तेने अजिगम कहीयें. ते पांच प्रकारें ġ **୧୫୦୦ ଅ**୦୯୬ ଅନୁସା ଅନିକା ଅନିକା ଅନିକା ଅନିକା ଅନିକା ଅନିକା वे. तिहां देहरे जातां सचित्त डव्य जे पोताना अंगे आश्रित कुसुमादिक, फलादिक होय, तेनुं ढांमवुं, ते प्रथम अन्निगम, तथा अचित पदार्थ जे डव्यनाणादिक तथा आजरणादिक वस्त्रादिक वस्तु तेनुं छणगांगवुं एटले पोतानी पासें राखवानी अनुज्ञा ते बीजो अजिगम तथा मननुं ए-कामपणुं करवुं, ते त्रीजो अन्निगम. तथा एकपछुं वस्त्र बेंहु ठेमायें सहित होय तेनो उत्तरासंग करवो, ते चोथो अन्निगम. तथा श्रीजिनेश्वरने दूर थकी नजरें दीठे थके बे हाथ जोमीने मस्त-कने विषे लगामवा एटले अंजलिवद्ध प्रणाम करेवो, ते पांचमो अनिगम जाणवो ॥ १० ॥ म्रुच्चंति–म्रुके रायचिन्हाइं- राजानां चिन्ह चमरे-चामर इय-ए छत्त-छत्र पंचविहाभिगमो-पांच प्रकारे उवाणह-पगनी मोजडी अ–अने अभिगम खग्गं-खड्ग मउडं- मुकुट पंचमए-पांचमुं अहवा-अथवा

90 CO CI चै॰भा • चै०भा० इय पंचविहाभिगमो, अहवा मुचंति रायचिन्हाइं ॥ 112911 8 खग्गं छत्तोवाणह, मउडं चमरे अ पंचमए ॥ २१ ॥ शब्दार्थः-ए पूर्वे कहेला पांच मकारना अभिगम देवगुरु पासे आवतां साचववां. अथवा राजचिन्द त्यजी देवां. ते 00000000 राजाचिन्ह आ प्रमाणे. १ खङ्ग, २ छत्र, ३ मोजडी, ४ मुकुट, अने ५ चामर. ॥ २१ ॥ विस्तारार्थः--ए पूर्वेली गाथामां कह्या जे पांच प्रकारें अजिगम ते देव तथा गुरु पालें आवतां 00 00 00 00 60 60 60 60 60 साचववा अथवा वंदना करनार आवक जो पोतें राजादिक होय तो ते ए पांच अन्निगम सा-चवे, अने वली बीजां राजानां पांच चिह्न वे ते प्रत्यें मूके एटले बांके तेनां नाम कहे वे, एक खड़, बीजुं ठत्र, त्रीजुं जपानह एटले मोजनी, चोथो माथानो मुकुट अने पांचमुं चामर, ए पए पांच ತಾಡಾಡಾ 1 39 IE **10** 10 00 अत्रिगम जाणवां ॥ २१॥ एटले पांच अत्रिगमनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं ॥ उत्तर बोल पांत्रीश थया. हवे बे दिशिनुं त्रीज़ुं द्वार, तथा त्रए अवग्रइनुं चोयुं द्वार कहे हे॥ é

For Personal & Private Use Only

Jain Education Internationa

6					8
9 AB AD	वंदंति–वांदे	डिया-रहीने	नवकर-नव हाथ	जिद्व−उत्कृष्ट	୩୨୩୦୦୩୧୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦
(U) (U) (U) (U) (U) (U) (U) (U) (U) (U)	जिणे−श्री जिनने	पुरिस-पुरुषे।	जहन्तु-जघन्य	मज्झुगगहो-मध्यम अवग्रह	600
මාද	दाहिण-दक्षिण	वामदिसि-डावे पासें	सहिकर-साठ् हाथ	सेसो-शेष	8
ತಾರ್ತ ಭಾರ್	दिसि-दिशाए	नारी-स्त्रीजन			Se la
	तंत्रंति जिगो	टाहिण-हिमि	विश्वा प्रक्रिम त	ामदिसि नारी॥	i i i i i i i i i i i i i i i i i i i
66 6					6
ସତ ଏହି ସହ ଏହି ସହ	नवकाजहन्द	न महि-करजिः	इ मझगाहो मे	सो ॥२२॥ दारं॥३-४॥	5
ୁଚ୍ଚ			an a		.ଅତ୍ୟ
_8				ा करे अने वामदिशा एटले डाबी	200
200	वाजुए उभा रहान स्रायां वव	रना कर. मधुथा नवहाथ दूर	रहवाथां जवन्य, साठ हाथ	रहेवाथी उत्क्रुष्ट अने नव तथा सा-	8
50		वम अवग्रह थाय छे. ॥ २२			000
6				ी जमणी दिशायें रह्या थका	1903
A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	पुरुषो वांदे एटले चैत्य	वंदना करे, छने मूल	नायकने माबे पासें रही	थकी स्त्रीजन वांदे, एटले	666
22					
	1				114.11

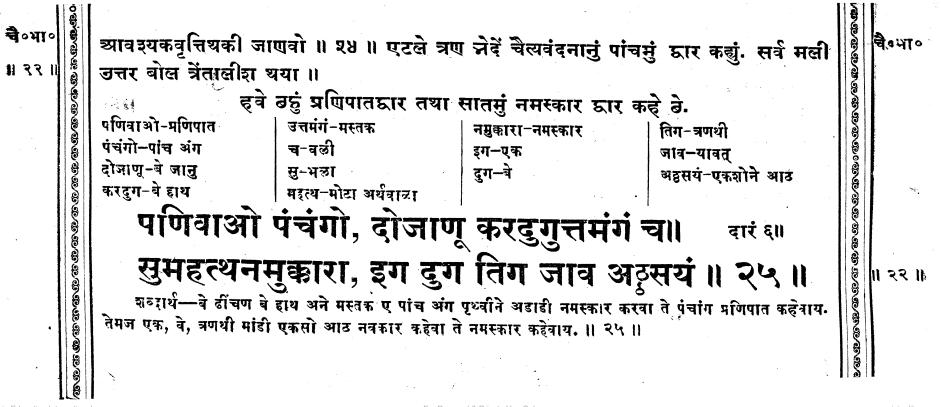
.

		S
ন্বী৽মা৽	🖁 चैेत्यवंदना करे. इहां चैःयवंदना पूजाना  अधिकार माटें प्रसंगयी जमणी पासें दीपक थापवो,	8 १ १ १
अ २०॥	💈 छने माबी पासें धूपादिक नाणुं, फलादिक, जिन आगलें तथा इस्तें आपीयें. ए बे दिशिनुंत्रीजुं	
	🖗 🛛 द्वार थयुं. छने उत्तर बोल सामत्रीश थया.	10 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 0
	💈 🛛 हवे त्रण व्यवग्रहनुं चोयुं दार कहे ठे. तिहां जगवंतयकी नव हाय वेगला रहीने चैत्यवं-	
	🖁 दना करवी, ते प्रथम जघन्य व्यवग्रह जाएवो. तथा जगवंतथकी षष्ठिकर एटले शांठ हाथ वे-	8
	🖁    गला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते बीजो ज्येष्ठ एटले उत्क्रप्ट व्यवग्रह जाणवो, व्यने शेष जे नव	6
	ी हाथथी उपर अने ज्ञाठ हाथनी मांहेली कोरें एटली वेगलाइयें रही चैत्यवंदना करवी, ते सर्व	200
	🖁 त्रीजेा मध्यम अवग्रह जाएवो. तथा केटलाएक आचार्य बार प्रकारना अवग्रह कहे वे के ॥ उ-	0.000
	🖏 कोस सठि पन्ना, चत्ता तीसा दसठ पणदसगं ॥ दस नव ति छ एगर्ड, जिणुग्गह वारसवि-	50 S
	🖁 नियं ॥ १ ॥ एटले ६०, ५०, ४०, ३०, १८, १८, १०, ए, ३, १, १, ०॥ ए बार व्यवग्रह थया एटले	हुँ ॥२० ॥ हु
	हैं जियं ॥ १ ॥ एटले ६०, ५०, ४०, ३०, १८, १८, १०, ७, ३, १, १, ०॥ ए बार अवग्रह थया एटले अर्द्धा इाथथी मांमीने ज्ञाठ हाथ पर्यंत श्रीजिनगृहे तथा गृहचैत्यादिकें श्वासोह्वासादि आज्ञा-	60 AB
		3 (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
		NO.

		रना करवी, तेनुं पांचमुं द्वार	िकहे हे.
नमुकारेण-एक नमस्क	ारवडे मज्झ-मध्यम	जुअला-युगल	थय-स्तवने
जहना-जघन्य	दंड-दंडक	पण दंड−पांच दंडके	पणिहाणेहिं-प्रणिधाने
चिइवंदण-चैत्यवंदन	थुइ–स्तुति	थुइचउकग-स्तुति चतुष्क	उकोसा−उत्कृष्टथी
		इवंदण मज्झ दंड यपणिहाणेहिं उक्क	-

विस्तारार्थः-एक नमस्कार श्ठोकादिकरूप तथा नमो अरिहंताणं कहीने अथवा हाथ जोमी **चै**०भा० चै०भा० मस्तक नमामवे करी अथवा नमो जिनाय कही नमवे करी अथवा एक श्ठोकादि केहेवे करी अ-1122 थवा हमणां देहरे चैत्यवंदन कहियें ढेयें, इत्यादि रूपें सर्वप्रथम जघन्य चैत्यवंदन जाणवुं. तथा ୯୫୭୦୧୦୭ दंमक युगल ते अरिइंत चेझ्याएंनुं युगल तथा स्तुतियुगल ते चार युइ एटले एक नमस्कार श्लोकादिरूप कही, शकस्तव कही, उन्ना थइ, अरिहंत चेइयाएं कही काउस्सग्ग करी, युइ कहेवी, ते बीजी मध्यम चैत्यवंदना जाएवी. तथा पांच नमोहुए। रूप पांच दंनकें करी अने 31. 00 CO CO CO स्तुति चतुष्क एटले आठ धुइयें करीने, स्तवनें करीने तथा जावंति चेझ्आई, जावंत केविसाह अने जयवीयराय, ए त्रण प्रणिधाने करीनें त्रीजी उत्कृष्टी चैत्यवंदना जाणवी ॥ १३ ॥ अन्ने-अन्य तिगेण-त्रण चउहिं−चार जडन-जघन्य बिंति-कहे छे 99 80 00 00 00 00 00 00 00 वंदणया-चैत्य वंदना पंचहिं-पांच मज्झा-मध्यम 112811 इगेणं∽एक तंहूग-तेवे उकोसा-उत्कृष्ट वा-अथवा सकत्यएणं-शक स्तवे

अन्ने बिंति गेणं, सकत्थएणं जहन्नवंदणया ॥ तदुगतिगेण मज्झा, उक्कोसाचउहिं पंचहिं वा ॥२४॥ बारं य शब्दार्थ - केटलाक आचार्यों एम कहे छे के, एकवार नम्रत्थुगं बोलवाथी जघन्य, वे अथवा त्रणवार नम्रत्थुगं वोल-वाथी मध्यम अने चार अथवा पांचवार नम्रुत्थुगं वोछवाथी उत्कृष्ट चैत्ववंदन थाय छे. ॥ २४ ॥ विस्तारार्थः-अन्य एटले बीजा वली केटलाएक आचार्य एम बुवंति एटले कहे बे के एकेन एटले एक शक्रस्तवें करीनें देव वांदीयें ते जघन्य चैत्यवंदना जाणवी. अने तद्दिकत्रि-Ì 99 केए एटने तेहीज बे तथा त्रए शकस्तवें करी मध्यम चैत्यवंदना जाएवी तथा चार शकस्तवें करी अयवा पांच शकस्तवें करीने प्रणिधान युक्त करीयें ते उत्कृष्ट चैत्यवंदना जाणवी, अने जाष्यादिकने त्रिबे स्तुति युगल कह्यां ठे, ते त्रए थुइ स्तुतिरूप एक गणीयें ठैयें. अने चोथी थुइ शिक्तारूप समकेतदृष्टिनी सहायरूप जूदी गणी ते माटें स्तुति युगल कहे छे, तेनो विचार



|--|

- (

चै०भा० ॥ २३ ॥	जत्तरी, अन्नज्ञ, इत्या	दि छपर ग्रंथांतरें तो ए	नमणो तथा जे छईयासिड सूत्रमां संकलित नथी तथ ार द्वार कह्यां, ते पूर्ण न था	ापि · जाष्यमांहेला देव-	202
100 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 2	अडसहि-अडसठ अहवीसा-अहावीश नवनउय-नवाणुं	सयंच-एकशोने दुसय-बसें सगनउया-सताणु ट्रकीया जनजजज	दुसटा−वसेंशाठ दुसोऌ-वसें सोऌ	अडनउयसयं–एकशो अहाणुं दुवन्नसयं–एकशो बावन	ୁ ଅନ୍ଦ୍ର ଅନ୍ଦ୍ର ଅନ୍ଦ୍ର ଅନ୍ଦ୍ର ଅନ୍ଦ୍ର
ം അം അം അം അം അം അം അം അം അം	दोगुणतिस	दुसंघा, दुसोलअ	यसयं च दुसयस ाडनउयसयदुवन्न समगनां अदावींग, ३ इरिया वाहिय	सयं॥ २६॥	

WWWWWWWWWWWWWWWWWWWWWWWWWW त्थुगनां बसोने सत्ताणुं, ५ अरिहंत चेइयाणंनां बसो ओगगत्रीस, ६ लोगस्तनां बसोने साठ, ७ पुख्खरवर रीनां बसोने सोल, ८ सिद्धाणं बुद्धाणंनां एकसो अठाणुं, ९ जावांति चेइयाई, जावंति केविसाहु अने जयवियराय ए त्रणना एकसो बावन अक्षर छे. सर्व मली १६४७ थाय छे. ॥ २६ ॥ विस्तारार्थः-१ प्रथम "पंच मंगल महासुयरकंध " एइवुं नाम नवकारनुं हे, तेनां अक्तर अनसठ ते हवइ मंगलं एवो पाठ जणतां थाय, केमके श्री महानिशीथ सूत्रमध्ये प्रकटाकरें ह-वइ मंगलं एहवो पाठ हे ॥ यडुक्तं ॥ पंच पयाणं पणतिस, वएणचृलाइं वएण तित्तीसं ॥ एवं सम्मे समप्पइ. फ़ुम मस्तर मठसठीए ॥ इति ॥ १ ॥ ते माटें जो नमस्कारनो एक अक्तर जेबो करे, तो चोसठ विधानें नमस्कार साधवो ते न्यून थाय, तेथी ज्ञाननी आज्ञातनानों अतिचार लागे, एवुं श्रीज्ञड्याहुस्वामीयें नमस्कारकर्द्ये प्रकाइयुं ठे, माटें इवइ मंगलं एवो पाठ कहेवो. Ô n an an an an an ् १ बीजुं " प्रणिपात " एवुं नाम इहामिखमासमणनुं ठे, ते योजसूत्रमां गुरुवंदनाधिकारें वां-दणामां आवशे, पण इहां चैत्यवंदन माटें जेखुं कह्युं हे. तेना आहार आठावीश हे.

ന്നെ പ്രത്യം നേഷം പ്രത്യം പ്രത്

ন্দ্ৰী০মা০ 👸	३ त्रीज़ुं " पनिकमणा सुयस्कंध " एवुं नाम इरियावहियानुं ठे, ते सूत्रना इज्ञामि पनिक-	Res a	बै०भाञ
ા ૨૪૫ ફે	मजं इहांथी मांकीने यावत् ठामि काजस्सग्गं लगें आक्तर एकझोने वली जपरें नवाणुं हे.	e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	• . •
Le la	४ चोशुं " शकस्तव " एवुं नाम नमोहुणंनुं हे. तेना छक्तर बरों ने सत्ताणुं जाणवा.	3030	
900	थ पांचमुं "चैत्यस्तव" एवुं नाम अरिइंत चेझ्याणंनुं हे. तेना अक्तर बशें ने रंगणत्रीश हे.	<b>8</b> 8	
ଷ୍ଟ୍ର	६ ढहुं " नामस्तव " एवुं नाम लोगस्सनुं ढे, वर्त्तमान जिन चोवीशीना नामनुं गुणोत्की	8	
ক্য জ্ব	र्त्तनरूप तेना अक्तर वहों ने शाठ हे.	9 9 9	
100 E	९ सातमुं " श्रुतस्तव " एवुं नाम पुरकरवरदीनुं ठे तेना व्यक्तर बरोंने सोल ठे.	3	
99 (P)	ण आठमुं " सिद्धस्तव " एवं नाम सिद्धाणं बुद्धाणंनुं वे तेना अक्तर एकशो ने अट्ठाणुं वे.	<b>)</b> 19 19	
A Destr	ए नवमुं " प्रणिधान त्रिक " एवं नाम जावंति चेझ्याइं, जावंत केवि साहु अने सेवणा	ଷ୍ଟ ୧୦୦୦ ଅକ୍ୟ ଅବସ୍ଥା ଏହି	1 28 1
80 ST - ST	आजवमखंमा पर्यंत जयवीयराय ए त्रणेनुं हे. तेना छक्तर एकशो ने बावन हे. ॥ १६ ॥	99	•
29. CD		2	
1 4		Ă	

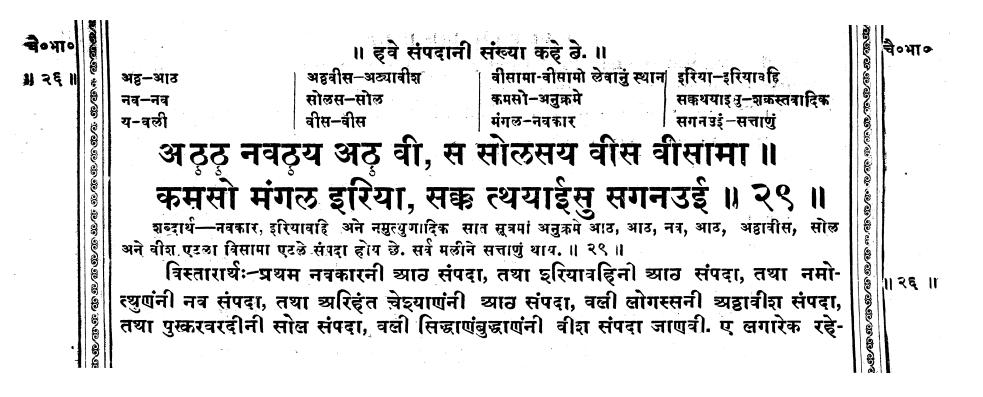
•

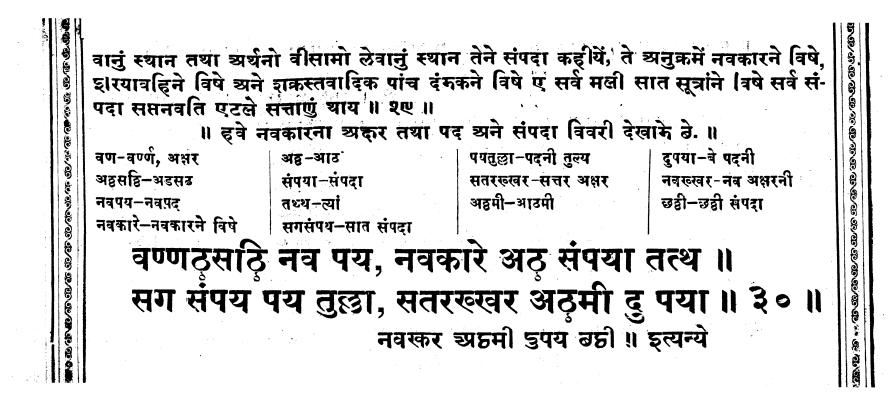
इअ-ए	इरिअ-इरियावहिना	दंडेसु-दंडकने विषे	वन्ना-अक्षर
नवकार-नवकार खमासण-खमासमण	सकत्थ–श्रक्रस्तव आइ–आदि	पणिहाणेसु-प्रणिधानने विषे अदुरुत्त-बीजी वार अणउचर्या	सालसयसायाला−२।लिसन सडतालीश
पणिहाणेः शब्दार्थ-ए प्रमाणे	सु अ अदुरु, त्त नवकार, खमासमण, इरियाव	रियसकत्थआइदंडे विन्नसोलसय सीया तहि, बकस्तवादि दंडकमां अने मणिधा	ला॥२७॥
विस्तारार्थः-प छट्ठावीश छद्तर ख	मासमणने विषे जाणवा	र छ.॥ २७॥ वि अनुक्रमें अपराठ अक्तर नव , तथा एकशो नवाणुं अक्तर ध किस्तवादिक पांच दंमकने वि	हरिया वहि्याना ठामि

७७७७७७७७७७ चि॰भा २ ॥२५॥	श्रिष्, तथा लोगस्सना सिद्धाणं बुद्धाणंना वेव्य पांच दंगकना १२०० व	सवलोए लगें १६०, व प्रावचगराएं, संतिगरा अक्तर थया. तथा १५६ पत्रव मखंगा लगें ए त्यारे छाद्विरुक्त एटबे	तथा पुस्करवरदीना सुव्यय एं, सम्मदिहि समाहिगर श्र व्यक्तर जावंति चेइव्या त्रण प्रणिधानने विषे जाग । बीजी वार व्यण उच्चरय	ना अप्पार्ण वोसिरामि लगें स्तज्ञगवर्ड लगें ११६, तथा तार्ण लगें १९७, ए सर्व मली इं, जावंत केवि साहु अने णवा. ए रीतें ए नव सूत्रांना ा एवा वर्ष एटले अक्तर ते	ନ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦	चै॰ শা∍
60.0	सर्व मली सोल हों ने स्	नुमतालीश थाय ॥ १९	3 11		6.00	
5 CE 25		॥ हवे पद	संख्या कहे बे. ॥		e de Ce	
10 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 0	नव−नव बत्तीस−बत्रीज्ञ तित्तीसा−तेत्रीश	तिचत्त−तेंतालीश अडवीस−अद्वावीश सोल−शोस्त	वीसपय−वीशपद मंगल∽नवकार इरिया−इरियावहि	सकत्थयाइस्र-शक्रस्तवादि पांच दंडके इगसीइसयं−एकशोने एक्याशी	ುರುರು ಸುಮಾರು	।। २५ (।

नवबत्तीसतित्तीसा, तिचत्तअडवीससोऌवीसपया ॥	
मंगलइरियासक, त्थयाइसु इगसीइसयं ॥ २८ ॥	- - - - - - - - - - - - - - - - - - -
भव्दार्थ	30-310-30 30-310-30 30-310-30
विस्तारार्थः-नवकारनां नव पद ठे, इरियावहिनां बत्रीश पद, नमोत्तुर्णनां तेत्रीश पद, अ-	. OC 00 %
णंनां वीश पद, एम नवकार, इरियावहि अने शकस्तवादिक पांचे दंमक ए सात सूत्रांने विषे	6.00 ±
	949 m
त्यादि गाथा जक्तिनी योजना हे, ते इहां गणी नही ॥ १० ॥	6 30 AC
	मंगलइरियासक, त्थयाइसु इगसीइसयं ॥ २८॥ भव्दार्थ-नवकार, इरियावहि अने नमुख्यगदि सात सत्रमां नव, वत्रीश, तेत्रीश, तेंताल्रीश, अद्यावीश, सोल अने वीश एटलां परो होप छे सर्व मलीने एकसो एकाशी पर थाय छे.॥ २८॥ विस्तारार्थः-नवकारनां नव पद ठे, इरियावहिनां बत्रीश पद, नमोह्रुएंनां तेत्रीश पद, व्य- रिहंतचेइयार्एंना त्रेंतालीश पद, लोगस्सनां व्यट्ठावीश पद. पुरकरवरदोनां सोल पद, सिद्धाएंबुद्धा- एंनां वीश पद, एम नवकार, इरियावहि व्यने शकस्तवादिक पांचे दंमक ए सात सूत्रांने विषे सर्व मली एकशो ने एक्याशी पदनी संख्या जाएवी. व्यने प्रणिपातनां पद तो वांदणां जेलां गुरु वंदनमां कहेशे, तथा प्रणिधानत्रिकनी पद संपदा व्यनुक्रमें ठे, ते माटें न कद्युं "वारिक्कइ " इ-

•



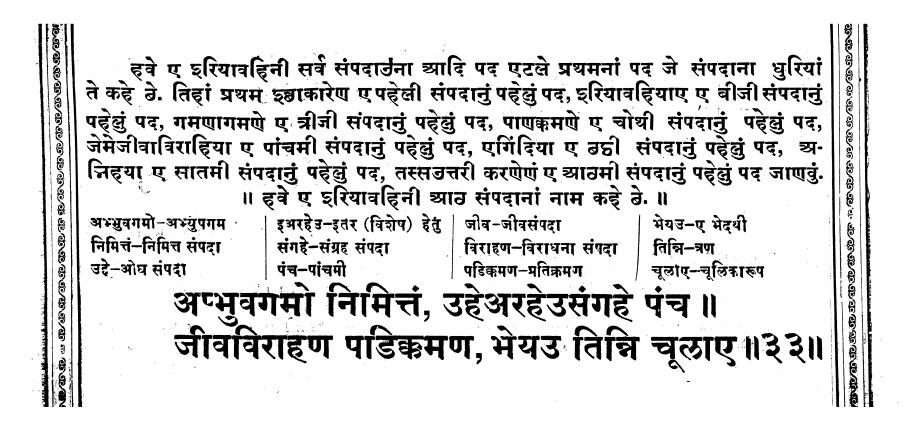


खे०मा० चे०मा० ॥२७॥	शब्दार्थ—नवकारमां अडसठ अक्षर, नव पद तया आठ संपदा होय छे. तेमां सात संपदा तो सात पदनी छे अने सत्तर अक्षरनी आटनी संपदा छेन्ना वे पदनी छे. ॥ ३० ॥	क्रिक्स क्रिक्स क्रि	
↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑↑	विस्तारार्थः-नवकारने विषे अनसठ वर्ष होय, तथा नमोअरिहंताणं आदिक पद ते नव होय, अने संपदा तो आठ होय, तिहां ते आठ संपदामांहे प्रथमनी "सवपावप्पणासणो" सुधी नी जे सात संपदा ठे, ते तो पदने तुख्य जाणवी एटले जेटला पद तेटली संपदा पण जाणवी. तथा आठमी संपदा तो '' मंगलाणं च सबेसिं " पढमं हवइ मंगलं ए बे पदने एकठां कहीयें माटे ए बे पदनी जाणवी, तथा अन्य केटलाएक आचार्य एम कहे ठे, के ''पढमं हवइ मंगलं"	20 (P)	
1. 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10	ए नव अक्तरनी आठमी संपदा तथा " एसोपंच नमुकारो, सवपावप्पणासणो " ए बे पदनी अने सोल अक्तरनी ठठी संपदा जाणवी ॥ ३० ॥ ॥ हवे प्रणिपात खमासमणना अक्तर तथा पद अने संपदा विवरी देखाने ठे ॥	कककळळ कळकथ € 6	

www.jainelibrary.org

8 ij ्तहाय-तेमज पणित्राय-मणिपात अख्खर-अक्षर पय-पद, 20 36 20 20 20 20 20 20 20 इरियाए-इरियावहिने विषे अख्खराइं-अक्षर छे सयं-सो संपया-संपदा 8 अहावीसं-अठ्यावीस दुतीस-बत्रीस नव नउअं-नवाणु अट-आठ पणिवाय अख्खराइं, अठावीसं तहाय इरियाए ॥ 00-10-00 नव नउ अ मख्खर सयं, दुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥ a car ar car ar शब्दार्थ-इच्छामिखमासमणना अक्षर अठावीश तेमज इरियावहिना एकसो नवाणुं अक्षर, बत्रीश पर अने आठ संपदा छे. ॥ ३१ ॥ विस्तारार्थः-प्रणिपात दंगकने विषे अठावीश अक्तर ठे, तथाच एटले तेमज वली इरिया-वहिने त्रिषे नवनवति अक्तरशतं एटले नवाणुयें अधिक एकशो अक्तर जाणवा अर्थात् एकशोने नवाणुं छद्दार जाणवा, तथा बत्रीश पद जाणवां छने संपदा छाठ जाणवी ॥ ३१ ॥ ा। ए छाठ संपदाना पदनी संख्या तथा संपदाना छादि पद कहे हे. ॥

हैं   इग–एक पदनी है   चउ-चार पदनी है   पण–पांच पदनी है   इगार–अगीयार पदनी	च्छग-छ पदनी इस्यि-इरियावहिनी 'संपया-संपदाओना आइपया-प्रथमना पद	इच्छा−इच्छाकारेण इरि-इरियावहिया <b>ए</b> गन−गमणा गमणे पाणा–पाणकमणे	जेमे-जेमे जीवाविराहिया एगिंदि-एमिंदिया अभि-अभिहया तस्स-तस्सउत्तरी
है द्ग द्ग इग	चउ इग पण, इ	गार च्छग इरिय	य संपयाइ पया ॥
			मे तस्स ॥ ३२॥
है। ्राब्दार्थ—इरियावति हे अने आदि पट तो रज्या	हेनी आठ संपदाना अनुक्रमे बे, कारेण, इरियावदियाए, गमणाग	बे, एक, चार, एक, पांच, अ मणे, पाणकमणे, जे मे जीवा प	गीयार अने छ एटलां पदो जाणवां
		नगर गणकनगर ज म जाया, व	रागार्या, जानस्या जन सरसङ्गरा ह
ु ए आठ जाणवा. ॥ ३२		ीची संगता गण ने गता	ती, त्रीजी एकपदनी, चोथी

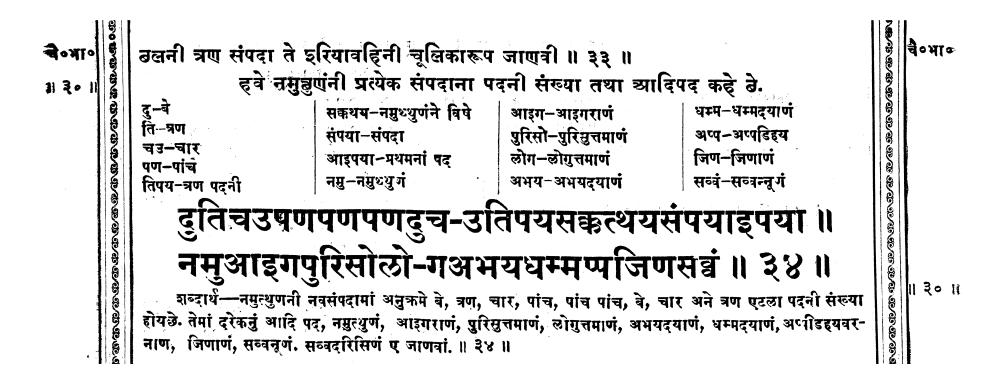


www.jainelibrary.org

ন্দুতমা ০ হিতমা ০ ম ২৫ ॥	शब्दार्थ-अभ्युपगम, निमित्त, ओघ, इतरहेतु अने पोचमी संप्रद वर्ती जीव, विराधना अने मतिक्रमणएवा भेदथी इरियावहिनी आठ संपदा छे. तेमां मथमनी पांच मूलसंपदा अने पाछल्लनी त्रण चूलिका संपदा जाणवी. ॥ ३३ ॥ विस्तारार्थःव्यन्युपगम एटले व्यंगीकार करवुं ते व्यहीं पापना द्तग्नुं जे व्यालोचना लद्दाण कार्य तेनो व्यंगीकार करवो ते स्वरूप एटला माटे इल्लामि पनिक्कमिठं ए वे पदनी प्रथम व्यन्यु-	গুৰুতমা <i>হ</i> বিত্যা
හ හ හැක හ හ හ හැක	पगम संपदा जाणवी. २ ते छंगीकारकृत वस्तुने उपजाववाना कारण रूप इरियावहियाए विराहणाए वे पदनी वीजी निमित संपदा जाणवी.	છે. શાર જેમ ચાર છે.
	३ सामान्य प्रकारें प्रायश्चित्त उपजाववारूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी उैव एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीवहिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन ठे. ४ जीवहिंसाना विद्येष हेतुरूप एटले विद्येषपणे प्राण वीजादिक आक्रमणरूप ते पाणक- मणे वीयकमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग पणग दगमद्दीमकका संताणा संकमणे, ए चार पदनी	। २ २

No.	चोथी इतरहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय; माटे वि-	
ちきる		
1000 U	राष इतु एवु नाम जाणवु.	
10-92-	पदनी पांचर्मी संग्रह संपदा. ६ एकेंडियादिक पांच जीवने देखामवारूप जीवन्नेद ४६३ प्रमख कथनरूप एगींदिया बे-	
90 - FC - S	६ एकेंडियादिक पांच जीवने देखामवारूप जीवजेद ८६३ प्रमुख कथनरूप एगिंदिया बे-	
S CO CO	🛛 🖁 ते जीवादिक जेदने परितापना विराधना रूप ते अजिहयाथी मांकीनें तस्त मिन्नामि 📲	,
1910 C	डिकमं लगें अगीयार पदनी सातमी विराधना संपदा जाणवी.	
6	ए प्रायश्चित्तविशोधनकरण रूप ते तस्सजत्तरी करणेणंथी मांमीने ठामि काजस्सगां लगें ठ	
	ेए जेदथकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी, अने पा-	
		- 

.....



ՠ*ՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠ*ՠՠՠ विस्तारार्थः-पहेली बे पदनी, बीजी त्रण पदनी, त्रीजी चार पदनी, चोथी पांच पदनी, पा-चमी पांच पदनी, ठही पांच पदनी, सातमी वे पदनी, आठमी चार पदनी छने नवमी त्रण पदनी ए नमुत्युणंने विषे संपदानां पद कह्यां, ते सर्व मली तेत्रीज्ञ जाणवां. ଟ୍ରି इने नमुहु एनी संपद्रानां आदिनां एटले पहेला धुरियांनां पद कहे हे. नमुहुएं ए पहेली ふき संपदानुं प्रथम पद जाणवुं, आइगराणं ए बीजी संपदानुं प्रथम पद, पुरिसुत्तमाणं ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, लोगुत्तमाणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, अजयदयाणं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, धम्मदयाणं ए बडी संपदानुं प्रथम पद, अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, जिणाणं जावयाणं ए आठमीसंपदानुं प्रथम पद, अने सवन्नूणं सवदरिसिणं ए नवमी संपदानुं प्रथम पद. दुवे ए शकस्तवनी नव संपदार्ठनां नाम कहे ठे. 500 C

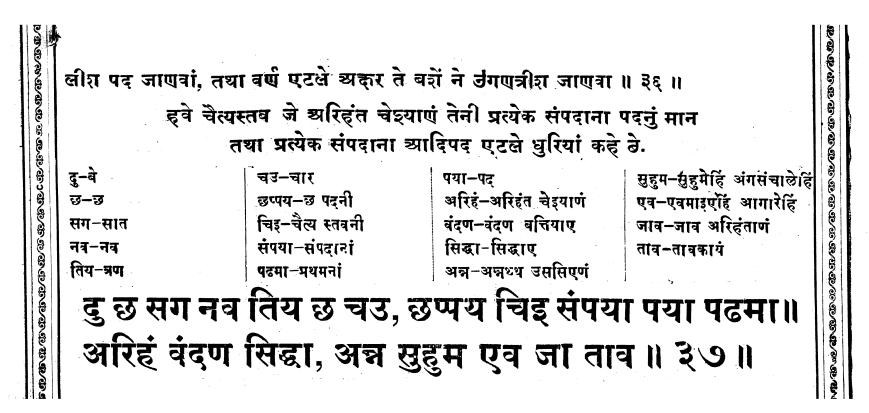
## en ces ৰী০ মা> थोअव्वसंपया-स्तोतव्य संपदा उवओग-उपयोग पयोग हेतु संपदा संपदा तद्वेऊ-तत् हेतु, उपयोग हेतु | सरुवहेउ-स्वरूप हेतु संपदा मुख्खे-मोक्ष संपदा उह-ओघ संपदा सविसेम्रव जग-सविशेष ज- नियसमफल्य-निज समफलद इयरहेऊ-विशेष हेतु 8 थोअबसंपया उह-ईयरहेऊवओगतदेऊ ॥ ð सविसेसुवउगसरूव-हेऊ नियसमफल मुखे ॥३५॥ 60000 80 30 40 40 10 शब्दार्थ - स्तोतव्य संपदा, सामान्य हेतु संपदा, विशेष हेतु संपदा, उपयोग संपदा, तद्हेतु संपदा, सविशेषउपपोग-हेतु संपदा, स्वरूपहेतुसंपदा, निजसमफल्ट्संपदा अने मोक्संपदा, ए नम्रुत्युगनी नवसंपदानां नाम कह्यां. ॥ ३५ ॥ CONNO CO विस्तारार्थः-श्रीअरिइंत जगवंत ते विवेकी जनोयें स्तववा योग्य वे एटला माटे न मुद्य ! अरिहंताणं, जगवंताणं ए बे पदनी पहेली स्तोतव्य संपदा जाणवी. पठी ते स्तववा योग्यनुं とうていていて सामान्य हेतु कहेवा माटे आइगराणंथी मांगीने सयंसंबुद्धाणं लगें त्रण पदनी बोजी ठंव एटले सामान्यहेतु संपदा जाणवी. पत्नी ए बीजी संपदाना अर्थने बिशेषें दीपावे ते माटे सामान्यहेतुयी B

1131

३१ ॥

ଅଧିକାର ହୋଇଛା ୦୦ ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର ଅଭିର	इतरहेतु ते विशेष हेतुरूप त्रीजी संपदा जाणवी, पठी आद्य संपदाना अर्थने विशेषे दीगावे एटले सामान्य स्तवनानो जपयोग तेनुं कहेवुं ते चोथी जपयोग संपदा जाणवी. पठी ए जपयोग संपदानाज अर्थने हेतुसफ़ावें करी दीपावे ते पांचमी तत् हेतु संपदा जाणवी, अथवा जपयोग हेतु संपदा जाणवी, पठी एज जपयोग हेतु संपदाना अर्थ गुण दीपाववा निमित्तें अर्थ विशेषें जणावे एटले कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कहेवुं ते ठठी सविशेष जपयोग हेतु संपदा जाणवी, पठी ययार्थ पोताना स्वरूपनुं हेतु प्रकटार्थ देखाकवारूप सातमी स्वरूप हेतु संपदा जाणवी, तथा पोताने समान फलदायक प्रकटार्थ रूप एटले स्तवना करनारने आपतुख्य करे एवी परम फलदाायनी एटले पोतानी समान परने फलनुं करण एटला माटे आठमी निजसमफलदनामे संपदा जाणवी, तथा मोक्त स्वरूप प्रकटार्थ रूप मोक्तपदनुं स्वरूप, एटला माटे नवमी मोक्त संपदा जाणवी. जे माटे कह्युं ठे के "सवन्नूआई पढमो, बीर्ड सिवमयल माइ आलावो ॥ तइर्ठ नमोजिणाणं जिय जयाणं तन्निदिन्ठो ॥रा॥ इत्यावइयके ॥३५॥	<b>ՠ֎֎</b> ֍֍֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎
vanar		

चै०भा० है इ	इवे नमोत्थुणंना व्यक्तरादिकनी एकंदर सरवाले संख्या कहे बे.	के हे हे चै०भा०
1] २२ ॥ हि अहम्ब ह	दो सग नऊआ-बसें ने सत्ताणु/ पयतित्तीस-पद तेत्रीस अह संपय-आठ संपदा दुसय-बसें वण्णा-वर्ण, अक्षर सकथए- क्रकस्तव तिचत्तपय-तेतालीस पद गुणतीप्ता-ओगणत्रीस नवसंपय-नव संपदा चेइयथय-चेत्य स्तव	के चि०भा <i>०</i> के कि
য় বহু হয়	दोसगनऊआ वण्णा, नवसंपय पय तित्तीस सक्वथए॥	10 (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
100 AD	चेइयथयट्टसंपय, तिचत्तपय वण्णदुसयगुणतीसा ॥३६॥ इब्दार्थ	10 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40
ন্ত গু গু গু	/ विस्तारार्थः-हाऋस्तव जे नमुत्युणं तेने विषे सर्व मलीने बहोंने सत्ताणुं वर्ण जाणवा व्यने नव संपदा जाणवी, तथा पद तेत्रीस जाणवां.	
D. C. M. C.	हवे चैत्यस्तव एटले अरिहंत चेझ्याणंने विषे सर्व मली आठ संपदा जाणवी अने तेंता-	Net an an



श्रब्दार्थ-आठ संपदामां अनुक्रमे पहेलेथी बे, छ, सात, नव, त्रण, छ, चार अने छ एटलां पदो होय छे. तेमज तेनां うそうせ अरिहंत चेइयागं, वंदग वत्तियाए, सदाए, अन्नत्थ उसणिएगं, सुहुमेहि अंगनंवालेहि, एवनाइएहि, जाव अरिहंताणं अने বিতমাত तावकायं. ए नव आदि पदो जाणवां. ॥ ३७ ॥ विस्तारार्थः-पहेली बे पदनी, बीजी ढ पदनी, त्रीजी सात पदनी, चोथी नव पदनी, पां-60.00 चमी त्रण पदनी, उहीं व पदनी, सातमी चार पदनी, आठमी व पदनी जाणवी. () () हवे ए चैत्यस्तवनी प्रत्येक संपदानां प्रथमना एटले आदिनां धुरीयांनां पद कहे ते. तिहां त्र रहिंत चेझ्याणं ए पहेली संपदानुं प्रधन पद, वंदणवत्ति गए जीजी संपदानुं प्रथम पद, सि-द्धाए ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, अनहाउससिएएं ए चोथो संपदानुं प्रयम पद, सुहुमोहिं अं-गसंचालाह ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, एवमाइएहिं आगारेहिं ए ठठी संपदानुं प्रथम पद, जाव अरिइंताएं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, तावकायं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद॥३९॥ みた ३३ ॥ हवे ए चैत्यस्तवनी संपदार्ठनां नाम कहे हे.

1 20 60 00 00 00 00 (	अभ्धुवगमो -अभ्युपगम निमित्तं-निमित्त हेउ-हेतु	इग–एक वचनांत आगार बहु वयंत आगारा–बहु व- चनांत आगार	आगंतुग आगारा–आगंतुका गार संपदा ऊस्सग्गात्दि-कायोत्सर्गा	चधी संपदा सच्च-स्वरूप अठ-भाठ सामारा॥	
B CO CO CO CO CO	अप्मुवगमो निमित्तं, हेउ इग बहु वयंत आगारा ॥ आगंतुग आगारा, उस्सग्गावहि सरूवठु ॥ ३८ ॥				
ՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠ	आगंतुक आगार संपर, क विद्तारार्थः-जे गीकाररूप प्रथम व्यद	संपदा, निमित्त संपरा, हेतु संपद विंगेत्सर्गावधि संपदा अने स्वरूप छंगीकार करवुं तेने छज्यु त्युपगम संपदा जाणवी, त जाणवी. तथा श्रद्धादिक	संपदा ए अरिइंन चेइयाणंनी अ पुपगम कहीयें माटे इहां ाथा काजस्सग्ग कया नि	राठ संपदाओ जाणवी. ॥३८॥ छरिइंत वांदवानी छं- कित्तें करी करीयें ? ते	

.

3		
<b>ৰ</b> ০মা০ টু	विना निष्फल थाय माटें त्रीजी हेतु संपदा जाणवी. तथा आगार राख्या विना निरतिचारपणे 👔	चै॰भा०
1 38 1 3	काउस्सग्ग न थाय, एटला माटें आगार राखवानी अन्नत्रउससीएणं इत्यादि जह्वासादिकने क-	
1	रवे करी चाथी एकवचनांत आगार संपदा जाणवी. तथा "सुहुमेहिं अंगसंचालोहिं " एटले-	
, le le	सूच्म नेत्रादिक फ़ुरकवादि मात्र आदिकें करी पांचमी बहु वचनांत आगार संपदा जाणवी.	
100 C	इहां आगारा पद बेहुने जोम्बुं, तथा एक सहज बीजो अब्पबाहुब्य एटले एवमाइएहिं एणे	· ~
	करी अग्निस्पर्श, पंचेंडिय ढेदन, चौरादिन्नय, सर्पादि, कदाचित् आवी मले तो झ्यादि आगार	
Se a	कह्यां, माटें बहु हेतु आगंतुक जावरूप अथवा अग्न्यादिक उपघातरूप बठी आगंतुकागार सं-	
a contraction of the second	पदा जाणवी. तथा जाव अरिइंताणं इत्यादिक काठस्सग्गनो अवधि मर्यादारूप जे संपदा, ते	
6.00	सातमी कायोत्सर्गावधि संपदा जाणवी, तथा कायोत्सर्गनुं यथावस्थारूप स्वरूप ते आठमी स्व-	11 38 11
	रूप संपदा जाणवी. ए आठ संपदानां नाम कह्यां ॥ ३० ॥	
19. A	हवे नामस्तव एटले लोगस्सादिकने विषे पद आदिकनी संख्यादिक कहे हे.	
8 B		

an or a	नामथयाइछ-नामस्तवादिकने पयसम-पद समान वीस-वीस दोसड-वसेंने साठ
\$ \$ \$	विषे अडवीस-अव्यावीस कमा-अनुक्रमें दुसय सोख-वसेंने सोछ 🖓
\$\$ \$	
0 69 Å	नामथयाइसु संपय, पयसम अडवीस सोल वीस कमा ॥
	अदुरुत्त वण्ण दोसइ, दुसय सोऌड नउअ सयं ॥ ३९ ॥ 👔
30 B	् शब्दार्थ—नामस्तवादिकने विषे पद समान अठावीस, सोल अने वीस अनुक्रमे संपदा जाणवी. तेमज बीजीवार नहि
38	उचरेला अक्षरो वसो साठ, बसो सोल अने एकसो अठाणुं अनुक्रमे जाणवा. ॥ ३९ ॥ ' ' ' विस्तारार्थः-नामस्तवादिकने विषे एटले नामस्तव लोगरस तथा आदिदाब्दथकी पुरकर-
80 SP	वरदी ते श्रुतस्तव जाणवुं अने सिद्धस्तव ते सिद्धाणं बुद्धाणं जाणवुं. ए त्रण सूत्रने विषे पद स-
\$ \$ \$	मान संपदा जाणवी. एटले जेटलां ए सूत्रोनां पद हे, तेटलां विशामानां स्थानक जाणवां. तिहां
9 (J. 1)	सोगस्सनां पद पण अष्टावीश अने संपदा पण अष्टावीश जाणवी. अने पुरकरवरदीनां पद पण सोख
Jain Education Internationa	For Personal & Private Use Only www.ji

अने संपदा पण सोल जाणवी. तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना पद पण वीश अने संपदा पण वीश जाणवी. चै॰भा ॰ ৰিতমাৰ ए अनुक्रमें संपदा तथा पद कहेवां, तथा लोगस्सने विषे बीजीवार अण्उचरया एवा, बरोंने शाठ to the second 1134 11 वर्ण एटले अक्तर जाणवा. तथा पुरकरवरदीना सुअस्स जगवर्ठ पर्यंत बशें ने शोल अक्तर जा-णवा, अने सिद्धाणं बुद्धाणंना करेमि काउस्सग्गं पर्यंत एकशो ने अठाणुं अद्वार जाणवा ॥ ३७ ॥ पणिहाण-प्रणिधान गुणतीस-ओगणत्रीस इगतीस-एकत्रीस ति–त्रण दवन्नसयं-एकसोने वावन चउवीस-चोशीश अहवीसा-अठ्यावीस बार-बार कमेण-अनुऋमे तित्तीसा-तेत्रीश च उतीस-चोत्रीस अक्षर . ) गुरुवण्णा-गुरु वर्ण सग-सात दुवन्नसयं, कमेण सगति चउवीस तित्तीसा ॥ गुणतीस अहवीसा, चउतीसिगतीस बार गुरुवण्णा दारं ॥ ए-ए-१० ॥

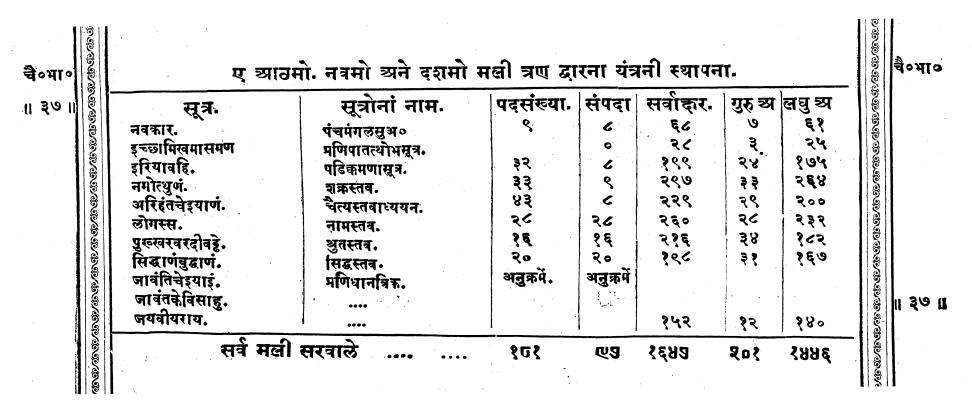
Jain Education International

For Personal & Private Use Only

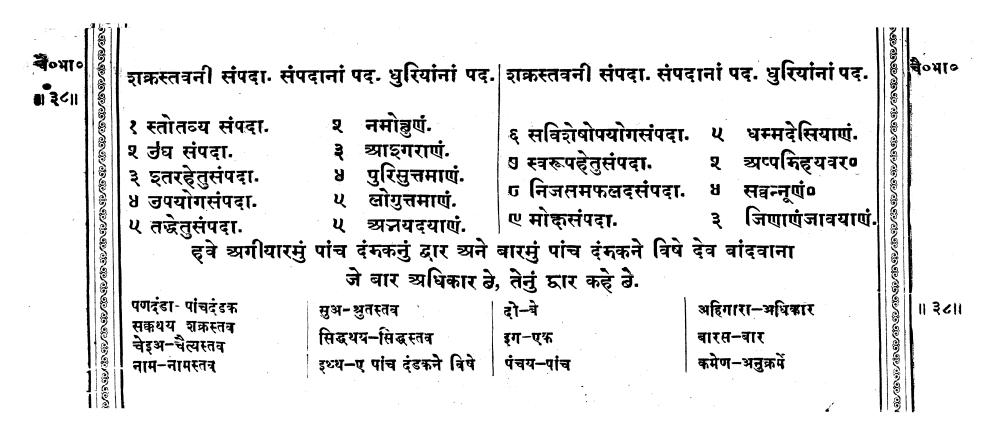
खों ज-
नवकारनें
हेने तिषे
ग्वा, ठा,
, ∓म, क,

ষ্ট্ৰতমা০ জ	ही, प्प, ह, झा, छा, ना, व, न्नु, व, स्के, वा, त्ति, छि, त्ता, छा, स्सं, ह, वे, ए तेत्रीश व्यक्तर	रे से चै०भाव-
NZEN	गुरु, जाणवा. केटखाएक छजमाणं पदना ठकारने गुरु कहेता नथी अने केटखाएक ह छ, म्म, ए	
10 m	त्रणने गुरु गणीने तेत्रीश गुरु अक्तर करे. तिहां चूलिकानी गाथा गुरु नथी गणता. इत्यादिक	96
<b>1</b>	बहु मतांतर बे, पण इहां तो संप्रदायागत एक टकार जारे गणीयें बैयें.	
10 A	तथा छरिइंत चइयाणं रूप चैत्यस्तवने विषे रस, गां, ति, ति, का, ति, म्मा, ति, ति, ति,	3
	ग्ग, त्ति, द्धा, प्पे, ढु, स्स, ग्ग, न्न, ड, डु, ग्गे, त्त, डा, ठि, ग्गो, जि, स्स, ग्गो, का, प्पा, ए	
100 L	जंगणत्रीश उपकार गुरु वे.	6 <b>8</b> 9
9000 S	तथा लोगस्सरूप नामस्तवने विषे स्स, जो, म्म, इ, त्त, स्सं, प्प, प्प, प्फ, जं, जं, म्मं, छिं,	े. इ.
600	व, ठ, छ, ब, ति, स्स, त्त, ऊा, ग्ग, त्त, म्म, चे छा, छि, व, ए अठावीश अक्तर गुरु जाएवा.	19 19
	तथा पुरवरवरदीरूप श्रुत स्तवने विषे रक, हु, म्मा, छं, रस, रस, रस, एफो, रस, रस, ख़ा,	है।। ३६ ॥
5 C	रक, रस, चि, रस, म्म, रस, ब्र, डे, त्र; त्र, रस; प्त्रु; चि; ठ; क; चा; म्मो; ट; म्मु; त; ट;	Ś
<b>ന</b> ംനം നേയം നേന്നം നേ നേന്നം നേന്നം നേന്നം നോന്നം ന		₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩
10 CE		1 1 W / F

स्स;	ए चोत्रीश छद्दर गुरू जागवा.
	तथा सिद्धार्णं बुद्धार्णंरूप सिद्ध स्तवने विषे द्धा, द्धा, गग, व, द्धा, का, का, स्स, द्ध, स्स
किं,	स्का, स्स, म्म, क, हिं, 5, त्ता, इ, वी, इ, ठि, ठा, डा, डिं, च, म्म, दि, हि, स्स, ग्गं, प
एकः	त्रीश अक्तर गुरु वे.
	तथा प्रणिधान त्रिकने विषे हे; वा; ठ; वे, ग्गा; ह; दि; द्ध; चा; ठ; व; ए बार गुरुवर्ण ए
टले	नारे अक्तर जाणवा ॥
5 2	एटले वर्ण संख्या, पद संख्या अने संपदा मली त्रण द्वार कह्यां, तेनी साथे पूर्वे कहेल
	दार मेखवतां मूल दश द्वार कहेवाणां, अने उत्तर नेद १७८० थया. ए सूत्रांनां अर्थ सर्व
श्री	व्यावइयकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी जाएजो. इहां घणो ग्रंथ वधे माटे अर्थ लख्यों नथी ॥ ४० ॥



इरियावहिनीसंपदा.संपदानांपद धुरियानांपद.		चत्यस्तवनीसंपदा.संपदानां पद धुरियानां पद.	
<ul> <li>४ व्यज्युपगम संपदा.</li> <li>१ निमित्त संपदा.</li> <li>३ र्वघसंपदा.</li> <li>४ इतरहेतुसंपदा.</li> <li>४ इतरहेतुसंपदा.</li> <li>६ जीवसंपदा.</li> <li>६ जीवसंपदा.</li> <li>७ विराधनासंपदा.</li> <li>७ पनिकमणसंपदा.</li> </ul>	१ इज्ञामि. १ इरियावहियाए. १ गमणागमणे. ४ पाणकःमणे. १ जेमेजीवाविराहिय _ा १ एगिंदिया. ११ व्यज्निहया. ६ तस्स उत्तरि.	४ एकवचनांतसंपदा. ५ बहुवचनांतसंपदा.	१ त्ररिहंतचेइयाणं. ६ वंदणवत्तिञ्चाए. ९ सिद्धाए. ९ ञनड्रउससीएणं. ३ सुहुमेहिंञ्रंगसंचालेहिं ६ एवमाइएहिंत्रागारेहिं ४ जावञ्चरिहंताणं. ६ तावकायं.



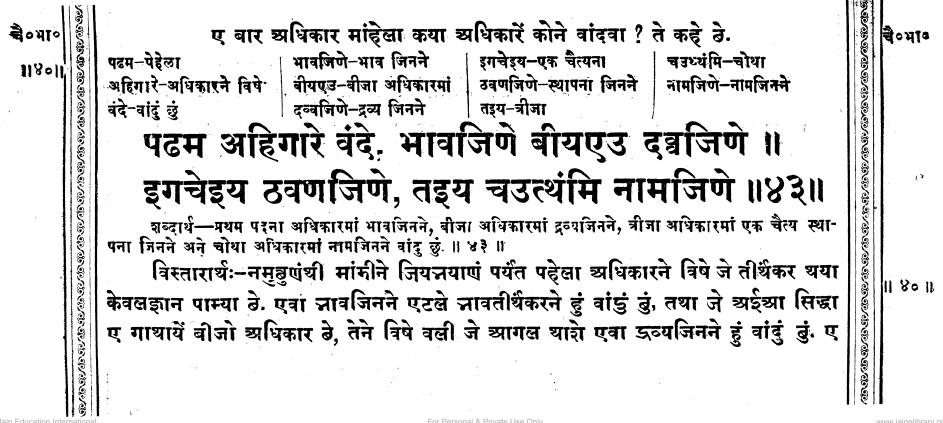
पणदंडा सकत्थय, चेइअ नामसुअ सिद्धत्थयइत्थ॥हारं गण
दो इग दोदो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥४१॥
शब्दार्थ शक्रस्तव, चैत्यस्तव, नामस्तव, श्रुतस्तव अने सिद्धस्तव ए पांच दंडक छे. तेमां बे, एक, बे, बे अने पांच
अनुक्रमे सर्व गडीने बार अधिकार छे. ॥ ४१ ॥ विस्तारार्थः∽पांच दंमकनां नाम कहे ठे. तेमां पहेखुं नमोत्युएंने शकस्तव दंमक कहि्यें.
बीजुं छरिहंत चेझ्याएंने चैत्यस्तव दंगक कहियें. त्रीजुं लोगास्तने नाम स्तव दंगक कहियें. चोथुं
पुरकरवरदीने श्रुतस्तव दंगक कहियें. पांचमुं सिद्धाणंबुद्धाणंने सिद्धस्तव दंगक कहियें. ए पांच दंगकना नामनुं ऋगीयारमुं द्वार कह्युं. सर्व मखी उत्तर बोख १७७५ थया॥ इवे ए पांच दंगकने
विषे देव वांदवाना बार ऋधिकार छे; तेमनुं बारमुं घार कहे छे. 👘 😳 👘 👘
तिहां प्रथम शकस्तव मध्ये वे अधिकार ठे;तथा बीजा अरिइंतचेइयाएंरूप चैत्य स्तवमध्यें

एक अधिकार हे; तथा त्रोजा नामस्तव एटले लोगस्सने विषे वे अधिकार हे; तथा चोथा श्रुत-स्तव मॅध्ये वे अधिकार हे; पांचमा सिद्धस्तव मध्ये पांच अधिकार हे. ए अनुक्रमें कहेवा. सर्व चै०भाव चै०भा० ાારડા मली चैत्यवंदनने विषे बार छाधिकारो हे ॥ ४१ ॥ हवे ए बार अधिकारनां धुरियानां पद एटले आद्यनां पद कहे ठे. ひっこう こうくじ こうくじっこう いっくい こうくい うろう जो देवा-जो देवाणवि देवो सन्व-सन्वलोए वेआवचग-वेआवच गराणं नमु-नमुध्धुणं जेइअ-जे अइया सिद्धा उज्झि--उज्झित सेलसिहरे पुरुख-पुरुखरवरदि अहिगार-अधिकार तम-तमतिमिर अरिहं-अरिहंत चेइयाणं पढम पया-पहेलां पद चत्ता--चत्तारि अद्व लोग-लोगस्स सि द-सिद्धाणं जेइअ अरिहं, लोग सब पुख्ख तम सिद्ध जोदेवा॥ 39 11 उज्झिं चत्ता वेआ, वचग अहिगार पढमपया॥ ४२ ॥

For Personal & Private Use Only

18 SIVE		ತಾಲಾಡಾಂ
ಹಾತ್ರಾತ್ರಾತ್ರಾ	ूर् श्रब्दार्थ—नमुत्थुणं, जे अइआ, अरिहंत चेइयाणं, लोगस्स, सब्वळोए, पुरूखरवर, तपतिमिर, सिद्धाणं चुद्धाणं, जो देवा, डोज्ज्ञत, चत्तारि अह, वेयावच गराणं, ए बार अधिकारनां प्रथम पर जाणवां. ॥ ४२ ॥	1. CO
2	विस्तारार्थः−नमोत्खुखं ए पहेला  अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं; जेव्र अर्इत्रा सिद्धा ए वीजा	છે. છે. છે.
500	अधिकारनुं प्रथमपद जाणवुं. तथा अरिहंत चेझ्याणं ए त्रीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं,	Nes.
19 A	लोगस्त उक्तोयगरे ए चोथा अधिकारनुं प्रथम पद जाएवुं. सबलोए अरिइंत चेझ्याएं ए पांचमा	୬୦୭୦
(B) (B)	अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं; पुरकरवरदीवर्फे ए बट्टा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं; तमतिमिर	30.050 30.050
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	पमल विद्धंसणस्स ए सातमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, सिद्धाणं बुद्धाणं ए आठमा अधि-	Nerve
10 CD	कारनं प्रथम पद जाणवुं, जो देवाणविदेवो ए नवमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, उचिंत सेख	Nerve
50 E	सिहरे ए दर्शमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं चत्तारि अट दस दोय, एअगीयारमा अधिकारनुं	65
য়ত হয় এক হায় প্রকাশ হয় এক হায় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় প্রকাশ হয় মান	प्रथम पद जाणवुं; वेआवच्चगराणं ए बारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं; ए बार अधिकारोना	32 A
See.	पहेलां पद एटले आदिनां पद धुरियां जाणवां ॥ ४१ ॥	3005
New Y		

÷



For Personal & Private Use Only

हैं   नाग	सूत्रांमां एकज अधिकार <b>ढे. तथा लोगस्स उक्रोयगरे रूप चोथा अधिकारने</b> विषे श्री <b>रूपन्नादिक</b> नाम जिनने हुं वांदुं ढुं ॥ ४३ ॥				
ूँ   हव ूँ <b>पु</b> ण	रुअण-त्रण भुवन णजिणे-स्थापना जिन -वल्री मए-पांचमा अधिकारने	विषे विहरमाण-विहरमाण जिण-जिन प्रत्ये छट्टे-छट्टा	सत्तमष−सातमा अधिकारमां सुयनाणं−श्री श्रुतज्ञान प्रत्यें अढमष्−आठमामां		
10-010-010-010-010-010-010-010-010-010-			पंचमए विहरमा ए सब सिद्ध थु		

-

খি০মা ০ विस्तारार्थः-वली सबलोए अरिइंतचेइयाएंरूप पांचमा अधिकारने विषे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप त्रण जुननने विषे जे शाश्वता अने अशाश्वता एवा स्थापना जिन हे ते प्रत्यें हं 0000 ୰ୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄ वांदुं. तथा पुरकरवरदीवरुंनी पहेली गाया रूप ढठा अधिकारने विषे अढी द्वीपमध्यें श्रीसीमंधरे स्वाम्यादि विचरता जाव जिनप्रत्यें वांदुं ढुं. तथा तमतिमिरपमल इहांथी मांमीने सुअस्स जग-वर्ड पर्यंत सातमा अधिकारने विषे अश्रितज्ञानप्रत्यें हुं वांदुं. तथा सिद्धाएं बुद्धाएं ए गाथा-रूप आठमां अधिकारने विषे तीर्थ अतीर्थादिक पन्नर नेदवाला एवा सर्व सिद्धनी स्तुति ತಾರ್ಯಾ जाणवी ॥ ४४ ॥ तिथ्थाहिव-तीर्थना अधिपति अहवायाइ अष्टापदादिक नेविषे सुर−देवताने दसमे-दसमा 50 130 130 130 130 130 130 बीर-वीर भगवाननी अ-वली इगदिसि-अगीआरमा समरणा-स्मरण करबा 88 11 उज्झयंत-गीरनार पर्वत थुइ–स्तुति सुदिडि-सम्यक्दष्टी चरिमे-छेछा बारमा नबमे-नबमा थुइ-स्तुति

H 82 II

ৰী০মা০

Jain Education International

तित्थाहिव वीरथुइ, नवमे दसमे य उज्झयंतथुई ॥ अडवायाइ इगदिसि, सुदिडि सुरसमणा चरिमे ॥ ४५ ॥ शब्दार्थ--नयमा अधिकारमां तीर्थपति श्री वीरमञ्चनी स्तुति अने दशमा अधिकारमां रेवताचलनी स्तुति जाणवी. तथा अगीयारमा अधिकारमां अष्टापदादिकनी अने छेला अधिकारमां सुदृष्टि देवताना सारणरूप स्तुति जाणवी. ॥४५॥ विस्तारार्थः-तथा जोदेवाणविदेवो अने इक्कोविनमुकारो ए बे गाथा रूप नवमा अधि-कारने विषे आ वर्त्तमान तीर्थना अधिपति ठाकुर जे श्री वीरजगवान् तेनी स्तुति जाणवी. तथा उर्किंतसेलसिइरे ए गाथा रूप दशमा अधिकारने विषे वली श्रीरैवतकाचल पर्वतने विषे श्रीने-मिनाथ जगवाननी स्तुति जाणवी. तथा ' चत्तारि अठदस दोय वंदिया " ए गाथा रूप व्यगी यारमा अधिकारने विषे अष्टपादादिकने विषे श्रीजरतेश्वरें करावेली चोवीश जिन प्रतिमानी स्तुति जाणवी. तथा वेयावचगराणं ए गाथारूप ठेला बारमा अधिकारने विषे सम्यग्दृष्टि देवताने

		200	
ৰ • মা•	समर्वारूप स्तुति जाणवी ॥ ४५ ॥	। हे चै०भा	10
118511	आ ठेकाणें अगीयारमां अधिकारने विषे चत्तारि अठदस इत्यादि गायामां घणा प्रकारें देव		
	वांचा ठे ते मांहेला केटला एक इहां लखीयें बेयें. संजवादिक चारजिन दक्तिण दिशें, तथा		
	सुपार्श्वादिक आठ जिन पश्चिमदिशे, तथा धर्मादि दशजिन उत्तरदिशे, तथा श्रीरूषन्न अने अ	। বি <b>০</b> মা কজেরুজেরেজেরেজেরেজেরেজেরেজেরেজেরেজেরেজেরে	
	जित ए बे जिन पूर्वदिशे. एवं चोवीश जिन वांचा हे, तथा बीजे अर्थे प्रथमना चारने आठ	2	
	] गुणा करीयें तेवारें बत्रीश थाय. अने वचला दशने बे गुणा करियें, त्यारे वीश थाय. ए बे आंक	5. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.	
	मिलवीयें तेवारें बावन थाय, ते बावन चैत्य, नंदीश्वरप्तीपें ठे, तेने वांचा ठे.		
	तथा त्रीजे अर्थें ढांग्या ढे वैरी जेणें एवा अठदस एटले अढार अने बे पाढला मेलवीयें		
	सारे वीश तीर्थंकर थाय ते श्रीसमेतशिखरे सिद्ध थया तेने वांचा. अथवा विचरता जिन उत्कृष्टे	100 m	
•	कालें एक समये जन्मथी वीश होय तेमने वांद्या.	ું ॥ ૪૨	16
· · ·	तथा चोथे अर्थे आएने दश अढार थाय, तेनी साथें वीशनो चोथो जाग पांच थाय ते मे-	9.992 ·	
1		S.	
1	s i la seconda de la second	19 SE	

www.jainelibrary.org

.

Sov		
2000	लवीयें, तेवारें त्रेवीश यया. ते एक श्रीनेमीश्वर विना त्रेवीश जिन श्रीशत्रुंजये समवसरया हे.	
	माटें तेने वांचा.	
No.	पांचमें अर्थ दर्शने आठ गुणा करीयें, तेवारें एंशी थाय, तेने बमणा करतां एकशोने साठ	
See.	थाय, ते उत्कृष्टकालें पांच महाविदेहें विचरे, तेने वांचा.	
<u>ୁ</u>	ठठे छर्थे छाठ छने दश मली छढार थाय, तेने चार गुणा करतां बहोंतेर थाय. ए त्रैका-	
	लिक त्रण चोवीशी जरतादिक क् ^{त्र} नी वांदी.	
90/030	सातमे अर्थे चारने आठ युक्त करीयें, तेवारें बार थाय तेने दश गुणा करीयें, तेवारें एक-	
50 A	शोने वीश थाय, तेने बमणा करता बशें ने चालीश थाय ते जरतादिक दश कोत्रनी दश चो-	
97-11 12-11	वीशी वांदी.	
20	आठमे अर्थे मूल चार हे, तथा वली आठ ने आठ गुणा करतां चोसह थाय, तथा दसने 🛛	
Stor.	दस गुणा करतां एकझो चाय. तेनी साथें पाठला वे मेलवतां १७० जिन चाय. ते उत्कृष्ट कालें 🞼	
98	विचरता जिनने वांद्या.	
		,

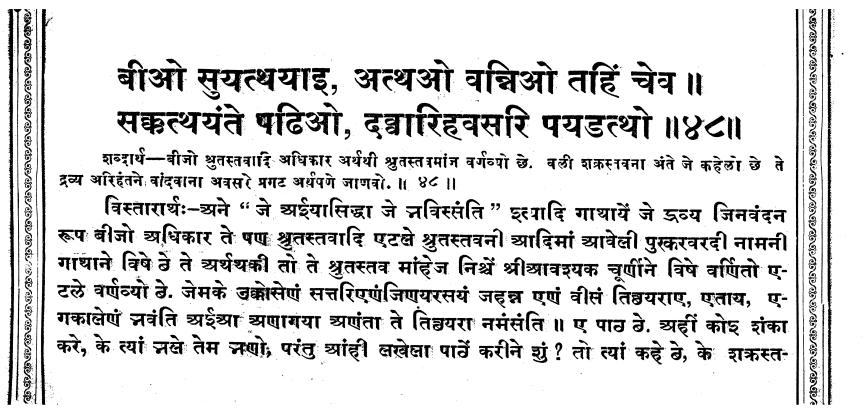
 $\overline{o}$ 

and the second second ৰীগ্যাণ नवमे खर्चे खनुत्तर, ग्रैवेयक, विमानवासी खने ज्योतिषी ए चार स्थानक जर्ध्वलोकें हे चै०भाव तिहांनां चैत्य तथा आठ व्यंतरनिकाय, दश जवनपति, ए अधोलोकनां चैत्य तथा मनुष्यलोकमां 11 83 11 तो शाश्वती अने अशाश्वती प्रतिमा ए त्रए लोकनां चैत्य वांद्यां. एवी रीते ए गाथा मध्ये सर्व Se Se तीर्थवंदना लक्तण अर्थ घणा ठे, ते सर्व वसुदेवहिंग प्रमुख प्रंथोथी जोइ लेवा. अहींयां विस्तार ್ ತಾರ್ಮಿಕಾ ಕಾರ್ಮಕ್ರಾ ಕಾರ್ घणो चाय माटे लख्या नची ॥ ४५ ॥ ललिअविध्यरा-ललित विस्तरा तिण्णि-त्रण दसमो-सदमो नव-नव वित्तिआइ-टत्ति आदिकना | सुयपरंपरया-श्रुतनी परंपराथी इगारसमो-अगीआरमो अहिगारा-अधिकार अणुसारा-अनुसारे वीयउ-बीजो आवस्सय-आवश्यकनी इह-ए aran arange नव अहिगारा इह ऌलि-अवित्थरा वित्तिआइ अणुसारा॥ 83 || तिण्णि सुयपरंपरया, बीयउ दसमो इगारसमो 11 88 11

ଽ୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶୶	शब्दार्थ-ए बार अधिकारमां १-३-४-५-६-७-८-९-१२-ए नव अधिकार छलित विस्तरा नामनी भाष्यनी द्यत्ति आदिना अनुसारे जाणवा अने २-१०-११, ए त्रग श्रुतनी परंपराथी जाणवा. ॥ ४६ ॥ विस्तारार्थः-ए वार छधिकारमांथी पहेलो, त्रीजो, चोथो, पांचमो, ठठो, सातमो, ट्याठमो, नवमो, ट्यने बारमो, ए नव छधिकार ते ललितविस्तरा नामें ज्ञाष्यनी वृत्ति छादिकना छनुसार यकी जाणवा. ट्यने बीजो छधिकार, जेछ छडट्या सिद्धा तथा दरामो छधिकार उर्जितसेल ए गाथोक्त तथा छगीयारमो छधिकार चत्तारि छट्ठ दस ए गाथोक्त एटले जेछ छईछा, उद्यंत छने चत्तारि, ए त्रण छधिकार, ते श्रुतनी परंपराधी एटले जेम सिद्धांतनुं व्याख्यान ठे, तेम तथा गीतार्थ संप्रदायथी जाणवा ॥ ४६ ॥					
NO 6000 0000 00 00 00 00	चुण्णिए-चूर्णिने विषे	सेसया-त्रोष जहिच्छाए-यथेच्छाए	उज्झंताइवि−उज्जितादिक पण अहिगारा−अधिकारो	सुयमया−श्रुतमय जाणवा चेव−निश्व	the the star of the second second	

-

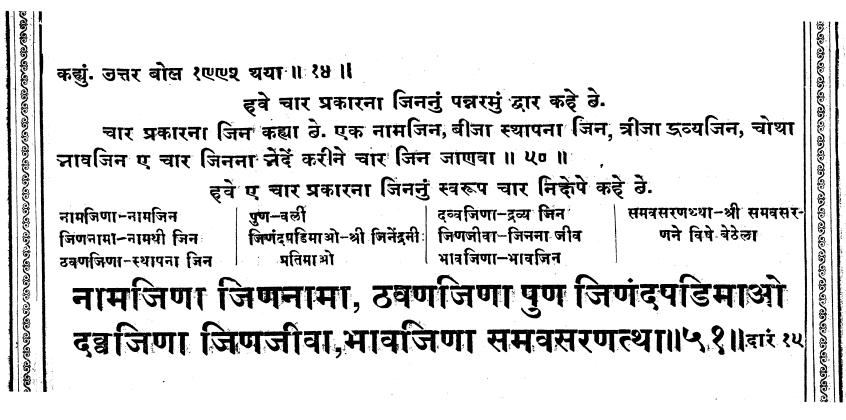
ৰী০মা০ accede **ৰি**০মা০ चुण्णीए, जं भणियं सेसया जहिच्छाए ॥ आवस्सय 11 8811 तेणं उज्झंताइवि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७॥ ৽৽৵ড়৽ড়৾৾৽ড়৾৽ড়৾৴ড়৽ড়৾৴ড়৽ড়৾৴ড়৽ড়৾৴ড়৽ড়৾৴ড়৽ ज्ञब्दार्थ....जेम आवक्यक सूत्रनी चूर्गीने विषे कहुं छे ते उर्डिंझतादि रोप अधिकार इच्छा प्रमाणे जाणवा. ते कारण माटे उज्झित सेल इत्यादिक गाथाथी पण ते सर्व अधिकार निश्चे श्चतमय जाणवा ॥ ४७ ॥ विस्तारार्थः-जेम व्यावइयक सूत्रनी चूर्णीने विषे तथा प्रतिक्रमण चूर्णींमध्ये कह्यं ठे जे उ-चिंतादिक होष अधिकार ते यथेहायें जाएवा. ते कारए माटें ए उद्यंतसेलसिहरे इत्यादिक गा-थाये पण जे अधिकारो ते सर्व श्रुतमय जाणवा. चकार पादपूर्णार्थ वे अने एव शब्द निश्चय-वाचक हे ॥ ४९ ॥ 118811 वांदवाना अवसरें वन्निओ-वर्णव्यो छे सकथ्थयंते-शक्रस्तवना अंते बीओ-वीजो पयडथ्थो-मगटार्थ पढिओ-कह्यो छे तहिं-तेज सुयथ्थयाइ-श्रुतस्तवादि अध्यओ- अर्थ यकी चेव-निश्चे द्व्वारिहवसरि-द्रव्य अरिहंत See C



वना यंतने विषे जे पठितः एटले कह्यो ठे यर्थात् पूर्वाचार्योयं राकस्तवना यंतमां स्थापन क- रेलो ठे, ते द्रव्य यरिइंत वांदवाना यवसरें एटले जाव यरिहंत वंदनानंतर द्रव्य यरिहंत वं- दनानुं यनुकर्मे प्राप्तपणुं ठे, माटें ए याद्य यधिकारमां पण नवमी संपदाने विषे कांइक जप्प- वायकी तेनुं विस्तारार्थपणुं ठे तेम प्रगटार्थों एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवा- या की तेनुं विस्तारार्थपणुं ठे तेम प्रगटार्थों एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवा- या प्रकारें निर्युक्ति छत्वे चूर्णीनां वचन ते प्रमाण त्र ठे, जे माटें कह्युं ठे ॥ ४७ ॥ असढाइन-पंडित पुरुषोए था- अणवर्क्ज-पाप रहित [ चरेले रति-एवा मज्य्रया-मरवस्य आण-आज्ञा रहितवियणओ-एवं वचन छे हु-निश्च आण-आज्ञा रहित-पर्वा मज्यर्था नमे असढाइइन्रणवर्ज्झं, गीअत्थ अवारिआंति मज्झत्था ॥ असढाइत्रणवर्ज्झं, गीअत्थ अवारिआंति मज्झत्था ॥ आयरणावि हु आण, त्ति वियणओ सु बहु मन्नंति॥४९॥	चै०भा ॰ ॥ ४५ ॥	वना अंतने विषे जे पठितः एटले कह्यो ठे अर्थात पूर्वाचार्यों दें राकस्तवना अंतमां स्थापन क- रेलो ठे, ते इव्य अरिहंत वांदवाना अवसरें एटले जाव अरिहंत वंदनानंतर इव्य अरिहंत वं- दनानुं अनुकमें प्राप्तपणुं ठे, माटें ए आद्य अधिकारमां पण नवमी संपदाने विषे कांइक जण- वाथकी तेनुं विस्तारार्थपणुं ठे तेम प्रगटार्थो एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवा	<b>चै</b> ॰মা <b>॰</b>
Jain Education Intersectional Ecor Personal & Private Use Only		आ प्रकारें निर्युक्ति अने चूर्णीनां वचन ते प्रमाण त ठे, जे माटें कह्युं ठे ॥ ४० ॥         असढाइन-पंडित पुरुषोए आ- अणवज्ञं-पाप रहित [चरेखं गीअध्य-गोतार्थ इति-एवा मज्य्या-मध्यस्थ आण-आज्ञा इत्तियणओ-एवं वचन छे दु-निश्चे आण-आज्ञा चहुमत्रति-घणं माने असढाइन्नणवर्ज्झं, गीअत्थ अवारिअंति मज्झत्था ॥ असढाइन्गवर्ज्झं, गीअत्थ अवारिअंति मज्झत्था ॥ आयरणावि हु आण, त्ति वियणओ सु बहु मन्नंति॥४९॥	

ererer ererer	शङदार्थ
19-19-01-01-01-01-01-01-01-01-01-01-01-01-01-	विस्तारार्थः-जे आचारणा अनवद्य होय एटले पापरहित होय, अने वली ते गीतार्थं
NU CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONTRACTORIO CONT	अवारित होय एटले बीजा कोइ गीतार्थ पुरुषें तेने वारी नहीं होय एवा मध्यस्य राग देष
8 8	रहित छराठ पंभित, गीतार्थ पुरुषो तेणे जे आचरयो होय तो तेवा गीतार्थनी करेली जे आ-
6	चारणा ते पण ।नश्चें श्री जगवंतनी आज्ञाज कहीयें एवं वचन हे, ते माटे सुष्टु एटले जला
250	अथग सुविदित अहाठ गीतार्थनी करेली आचरणाने पण गीतार्थ जन घणुं माने ॥धए॥
ସନଧାର ସହ ପାରସ ନ ପାରସ ନ ଏହି	ए बार छधिकारनुं बारमुं दार कह्युं, इहां सुधी उत्तर बोल १९७७ थया ॥ इवे चार वांदवा योग्यनुं तरमुं छादे देइने बीजां पण दार कहेबे.
525C	च उवंदणिज्ज-चार वांदवा
North Carl	जिण-जिन मुणि-मुनिराज इह-ए मुणि-मुनिराज जिणभेएणं-जिननाभेदे करीने
é.	

चै०मा॰ ॥४६॥	चउ वंदणिज्जा जिणमुणि, सुयसिद्धा इह सुराइ सरणिज्झा चउह जिणा नाम ठवण,दब्वभावजिण भेएणं॥५०॥ ^{दार १३-१४}	સેગ્લાગ્લાગ્લાગ્લાગ્લાગ	चै०भा≉
€0.00.00.00.00.00.00.00.00.00.00.00.00.0	शब्दार्थ-जिन, ग्रुनि, श्रुत अने सिद्ध ए चार वांदवा योग्य छे अने ए जिनशासनना अधिष्टायक सम्यक्दष्टि देवता स्मरण करवा योग्य छे. वल्ली नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा जिनना भेदे करीने जिनेत्पाता चार भेद छे विस्तार्रार्थः-चार वंदनीयक एटले चार वांदवा योग्य कह्या ठे, ते कया कया ? तेनां नाम कहे ठे. एक जिन तीर्थंकर व्यरिहंत, वीजा मुनिराज साधु, त्रोजो श्रुत सिद्धांत प्रवचन व्यने चोथा सिद्ध जगवान् जे मोक्त प्राप्त थया ते जाएवा. ए चार वंदनीकनुं तेरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १७७१ थया ॥ १३ ॥ हवे एक स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कहे ठे. ए श्री जिनशासनमांहे सम्यग्द्ष्टि व्यधि- ष्टायिक देवता प्रमुख स्मरणीय ठे एटले स्मरवा योग्य जाएवा. ए स्मरवा योग्यनुं चौदमुंद्वार,	৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽	॥४६ ॥



शब्दार्थ-जिनेश्वरनां नाम ते नामजिन, जिनेश्वरनी प्रतिमा ते स्थापनाजिन, जिन नामकर्म बांधनारा जीवो द्रव्य ୍ ପାରେ ସେ ହୋଇ ସେ जीन अने समवसरणमां विराजित थयेछा भावजिन जाणवा. ॥ ५१ ॥ े विस्तारार्थः-प्रथम श्री कृषन्नादिक जिननां जे नाम हे तेमने ते ते नामें बोलावीये हैये तेने नाम थकी जिन कहीयें, वली बीजा श्री जिनेंछनी जे शाश्वती उपशाश्वती प्रतिमार्ट हे तथा पगलां ढे ते सर्वने स्थापना जिन कहीयें, त्रीजा जेणे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं ढे एवा श्रीइष्ण, श्रेणिकादिक ए सर्व तथा जे तेज जवमां तीर्थंकर पदवी पामशे पण दीक्ता लघ्ने ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी पाम्या त्यां सुधी तेपण जिनना जीव कहेवाय, तेने डव्यथकी जिन कहियें. चोथा जे केवलज्ञान पामीने श्रीसमवसरणने विषे स्थित थया, बेठा थका धर्मोपदेश आपे तेने नावथकी जिन जाणवा ॥ ५१ ॥ ए चार प्रकारें जिनना नामनुं पन्नरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोब ಡಾರ್ ನಾಡು ನಾಡು 1108 १एए६ यया. ॥ इवे चार थोयोनुं शोलमुं दार कहे ढे.

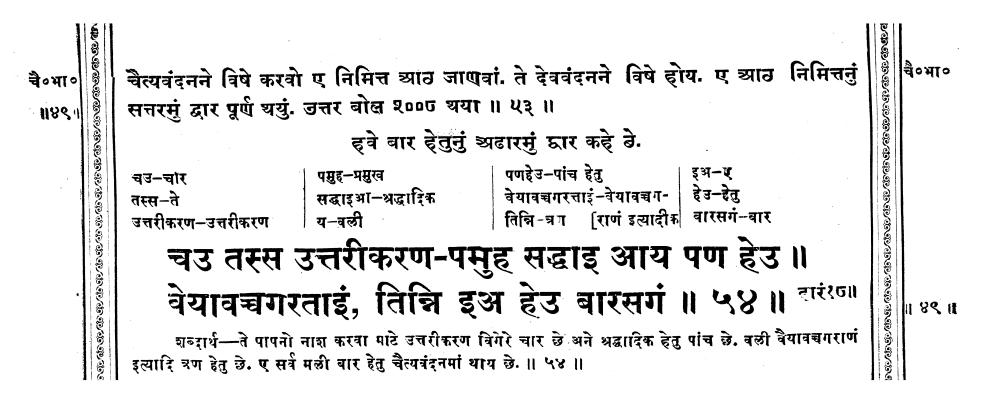
www.www.www.www.www.www.www.

ন্বি০্যা০

वेयावचगराण-वैयावचकरनार उवओगध्यं-उपयोग अर्थे सब्बाण-सर्व तीर्थकरोनी अहिगयजिण-अधिकृत जिन तु–वली चउथ्थथुइ-चोथी स्तूति तरअ-त्रीजी पढमथुइ-मथम स्तुति बीया-बीजी नाणस्त-ज्ञाननी अहिगयजिण पढमथुई, बीया सवाणतइअ नाणस्स॥ वेयावच गराण उ, उवओगत्थं चउत्थत्थुई ॥ ५२ ॥ दारं रदा। शब्दार्थ-रुषभादि मुख्य अधिकृत जिनेश्वरनी प्रथम स्तुति, सर्व जिनेश्वरोनी बीजी स्तुति, ज्ञाननी त्रीजी स्तुति अने शासननी वैयावच करनारा सम्पक् दृष्टि देवोनी उपयोगने अर्थे चोथी स्तुति जाणवी. ॥ ५२ ॥ विस्तारार्थः-जेनी आगल देव वांदीयें एवी जे नामे मूलनायकनी प्रतिमा द्वोय एटले प्रस्तुत छंगीकरयो जे चोवीश जिन मांहेझो कोइ श्रीक्रवन्नादिक एक जिन तेने अधिकृत जिन कहीयें तेनी प्रथम स्तुति ते एक जिननीज जाखवी. तथा बीजी स्तुति तो सर्व तीर्थंकरोनी सा-

নিত মাত গাওঁ লোক জনক গাওঁ লোক জনক জনক জনক জনক জনক জনক জনক জনক জনক জনক	तथा श्री जिनशासनना	ीः तथा त्रीजी स्तुति ते रखवाला वैयावृत्त्यना व थी स्तुति जाणवी ॥ थ	जनार एवा सम्यग्दष्टि	देवतार्जनी वली जपयोग	। হার হার হার হার হার হার হার হার হার হার
0 (13) (13) (13) (13) (13) (13) (13) (13)	पाव−पाष खवणथ्थ-खपाववाने अर्थे इरिआई-इरियावहि	छ–छ निमित्ता–निमित्ते	पवयणसुर⊢मवचनना अधि- ष्टायक देवता सरणथ्थं−स्मरवाने अर्थे	उस्सग्गो−काउस्सग्ग ≰ इअ−ए निमित्तइ−निर्मित्त आठ	100 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00
પ્રદાગ હોય તેવે છે. તેવે બાંગ તેવે બેંગ તે	पविखवणत्थ इरिआइ, वंदणवत्तिआइ छ निमित्ता ॥ पवयणसुरसरणत्थं, उसगो इअ निमित्तष्ठ ॥५३॥ दार १७॥ बब्दार्थ-पाप लपाववाने अर्थे इरियावहिया पढिकमवी ए मथम निमित्त, बंदगवत्तियादि छ निमित्त अने मवव- न्ना देवताना स्मरणने अर्थे कायोत्सर्ग ए सर्व मलीने आठ निमित्त थया. ॥ ५३ ॥				

विस्तारार्थः-गमनागमनथी उपना जे पाप ते खपाववाने अर्थे इरियावहि प्रथम पनिकमवी ते प्रथम निमित्त जाणवुं. तथा श्री तीर्थंकरने वंदणवत्तियादि व निमितें काजरसग्ग करवो, जेम के प्रथम वंदणवत्तिआए एटले श्रीजिनराजने वांदवाथी जे लाज थाय, ते काउस्सग्गमां मुजने लान चार्ट. बीजो पूछणवत्तित्राए एटले केशर चंदनादिक धूप प्रमुखें परमेश्वरने पूजवाची जे बाज थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाज थाउं. त्रीजो सकार वत्तिआए एटले सत्कार ते श्री जिनेश्वरने आजरणादि चढाववाथी जे लाज थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाज थाउ. चोथो सम्माणवत्तिञ्चाए एटले सन्मान ते श्रीजिनना स्तवनगुण कहेवाथी जे लाज थाय, ते मुजने का-जस्सग्गमां लाज थार्ड, पांचमो बोहिलाज वत्तिआए एटले आगले जवे समकेतनो लाज थाय, ते निमित्तें काउस्सग्ग कहं. ठठुं निरुवसग्ग एटले निरुपसर्ग ते जन्म जरा मरणादि उप-सर्ग टालवा निमित्तें काउग्सगा कहं. ए व निमित्त अने एक प्रथम कह्युं एवं सात थयां. तथा ञाठमुं प्रवचनना अधिष्ठायक सुर एटले देवता तेने स्मरवाने अर्थे एक नवकारनो काउस्सग्ग



C B C		ତ୍ତ୍
E B	विस्तारार्थ-तिहां प्रथम देव वांदतां पाप टले ठे ते पाप टालवाना उत्तरीकरण प्रमुख चार	6000
50	<b>ठे, ते कहे ठे. एक तस्तजत्तरीकरणेणं एटले पापने</b> आलोववे करीने अर्थात् पापकर्म निर्घातन	600
90-35-	करवे करी, बीजो पायत्नित्तकरणेणं एटले अजिहया पदथी उपन्युं जे प्रायश्चित्त ते लेवे करी,	10 (D)
95-CB	त्रीजो विसोहिकरणेणं एटले राग देषनुं टालवुं अतिचार टालवानी विशुद्धि करवे करी, चोथो	ଅବହୋଷ୍ଟ ଅବହାର ଅନ୍ୟର ସହ ଏହି ସହ ଏହି ସହ ଏହି ସହ ଏହି ସହ
50 (S	विसह्वी करणेणं एटले माया मात्सर्यादि वर्जवे करी मन वचन कायानी निःशब्यत्व त्रिकाल	2000
90.40	अतीत अनागत वर्त्तमानने विषे अरिइंतादिक षट्पद साथें पापकर्म टाखवे काउस्सग्गनुं फख	ୁଙ୍କ
S.	आपे ए चार उत्तरीकरणादि निमित्त कह्यां तथा श्रद्धादिक वर्खी पांच हेतु वे तेनां नाम कहे वे,	500
49 Q	सद्राए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए; एटले एक श्रदा, बीजी मेधा एटले बुद्धि, त्रीजी	5000
500 A	धृति एटले चित्तस्वस्थता, चोथी धारणा ते यथाकिंचित् शिक्ता ग्रहणता, पांचमी अनुपेक्ता ते	300
	तदेकाग्रता, ए सर्व पांचे वानां वधते थके पांचहेतु जाएवा तथा वेयावचकरत्वादिक वेआवच-	30 CC
କ୍ଷ	गराणं संतिगराणं, सम्मदिठि समाहिगराणं ए त्रण हेतु करे, ते कहे ठे. एक वैयावच्चकर सम्य-	ತಾಲಾಂಭ
うらい		9

ৰ্ষী০মা০ ग्दृष्टि देव, बीजो संतिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने रोगादिकनी शांति करवे करीने, त्रीजो समा-हिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने समाधि उपजाववे करीने ए त्रण हेतुयें देव संन्नारवा एटले चार **चै**०भा*०* 1 901 उत्तरीकरण तथा पांच श्रद्धादिक अने त्रण वैयावच्चकर ए द्वादशकं एटले बार हेतु चैत्यवंदनने विषे जाणवा एटले बार हेतुनुं अढारमुं घार पूरुं चयुं अने उत्तर बोल २०१० चया ॥ ५४ ॥ हवे शोल आगारनुं उंगणीशमुं फार कहे हे. एवमाइयाचउरो-एवमादिक अन्नथ्ययाइ-अन्नथ्यादि अगणि-अग्निनो बोहिखोभाइ-बोधिक्षोभादि पणिंदिछिंदण-पंचेंद्रि छेदन डकोय-डख बारसआगारा-बार आगार चार अन्नत्थयाइ बारस, आगारा एवमाइया चउरो ॥ ૺ૾ૺ૱૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ 1401 अगणिपणिंदि छिंदण, बोही खोभाइ डक्कोय ॥५५॥ दारंरण

Jain Education International

For Personal & Private Use Only

છે. આ જાણ છે. આ આ જાણ છે. આ જાણ છે. આ જાણ છે. આ	भ=रार्थ-अन्नत्यआदि वार आगार अने एगगदिक चार आगार, ते चारमां १ अग्रिनो, २ पंचेंद्रिच्छेइन, ३ वोधि भोभादिक अने ४ सर्पडंस तिगेरे जानवा. ॥ ५५ ॥ विस्तारार्थः
୩୨.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.୩୦.	संचारथी काउस्सग्ग न जांगे. तथा एवमादिक चार झागार कहे ठे एक अग्निनो उपडव उपने बके तिहांबी पूंजतो अलगो जाय अथवा दीवा प्रमुखनी उजेई यातां तथा अग्निनो स्पर्श बतो होय तेवारें काउ-
SP-JP-GP-H	स्सग्गमांहे कपमाथी शरीर ढांके, अथवा पूंजतो अलगो जइ रहे, बीजुं पंचेंडियग्विंदन पंचेंडि-

ዄዾዄዸዄዾዄዄዄዸዄፙዾዄፙዾዄፙዄፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙ यनुं ठेदन थतुं होय अथवा मूषकादिक पंचेंडिय जीव, ते स्थापनाचार्य अने पोतानी वचमां चै०भा० चै॰ भा• जाता होय, तेवारें पूंजतो अलगो जइ रहे, तो काउस्सग्ग जंग न थाय. त्रीजुं बोधि कोजादि 11 4? ते जिहां राजा अथवा चोरादिक मनुष्य तेना पराजवें करी धर्मनी कोजणा थाय माटें काउ-स्तग्गमांहे तिहांथी अलगो जइ रहे तो काउस्सग्ग जंग न थाय, चोधुं मक ते साप प्रमुखना मंकना जयें करी अथवा साप प्रमुख पासें आवतो होय तो तेना जयथी अलगुं जवुं पमे, तेथी काजस्तग्ग नंग न थाय, ए झोल आगारनुं उंगणीझमुं घार थथुं. उत्तर बोल १०३६ थया ॥५५॥ हवे काउस्सग्गना उंगणीश दोष त्याग्वा, तेनां नामनुं वीशमुं घार कहे हे. भग्रहंगुलि–भग्रहंगुली घोडग-घोट क उद्धी-उधि बहू -वध्र नियल-निगड **लंबुत्ता−लंबुत्ता** वायस-वायस लय-लता 4211 कविहे-कपिथ्थ सबरि-भीछडी खंभाइ-स्तंभादि थण-स्तन खलिण-खलिण .संजइ-संयति माल-माल

घोडग ऌय खंभाई, मालुद्वी निअल सबरि खलिण वहू ॥
घोडग लय खंभाई, मालुद्धी निअल सबरि खलिण वहू ॥ लंबुत्तर थण संजई, भमुहंगुलि वायस कविठे ॥ ५६ ॥ बदार्थ-अत्र, तता, स्तंभ, माल, अधि, निगढ, भ्रवरि, खाल्लण, वधू, लंबुत्तर, स्तन, संयति, भद्वदंग्रली, वायस भने कपित्थ दोष. ॥ ५६ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम घोमानी पेठें एक पग उंचो राखे, वांको पग राखे, ते घोटक दोष, बीजो जेम वायराथी वेखमी कंपे तेम शरीरने भूखावे, ते खता दोष, त्रीजो थांना प्रमुखने ठठिंगे रहे, ते स्तंन्नादि दोष, चोथो मेमा उपरने माले माथुं लगावी रहे ते माल दोष, पांचमो गामानी कंधिनी पेरें ट्यंग्रठा तथा पानी मेलवी पग राखे ते उधि दोष, ठठो नेजलमां पग नारूयानीपरें स्त मोकला राखे, ते निगम दोष, सातमो नागी निल्लमोनो पेरें ग्रह्यस्थानकें हाथ राखे ते शवरि होष, ठ्याठमो घोमाना चोकमानी पेरें हाथ रजोहरखें राखे, ते खलिख दोष, नवमुं नवपरिणीत
शब्दार्थ-अश्व, लता, स्तंभ, माल, अधि, निगड, श्वबरि, खालिण, वधू, लंबूत्तर, स्तन, संयति, भम्रहंगुली, वायस
^{अने कपित्थ} दोष. ॥ ५६ ॥ विस्तारार्थः–प्रथम घोमानी पेठें एक पग उंचो राखे, वांको पग राखे, ते घोटक दोष, बीजो
जेम वायराथी वेलनी कंपे तेम शरीरने धूणावे, ते लता दोष, त्रीजो थांना प्रमुखने उठिंगे रहे,
ते स्तंजादि दोष, चोथो मेमा जपरने माले माथुं लगावी रहे ते माल दोष, पांचमो गामानी
कंधिनी पेरें छांगुठा तथा पानी मेलवी पग राखे ते उधि दोष, ठठो नेजलनां पग नारूयानीपरें गग मोकला राखे, ते निगम दोष, सातमो नागो जिल्लनीनो पेरें गुह्यस्थानकें हाथ राखे ते ज्ञबरि
रोष, आठमो घोमाना चोकमानी पेरें हाथ रजोहरणें राखे, ते खलिए दोष, नवमुं नवपरिणीत

२ चै०मा॰ #५२॥	वहूनी पेरें माथुं नीचुं राखे ते वधूदोष, दशमो नान्निनी उपरें छने ढींचणयी नीचे जानुं उपरें लांबुं वस्त्र राखे ते लंबुत्तर दोष; ए दोष यति आश्रयी जाणवो, केमके छुंटीयी चार छंगुल नीचें	হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ
৽৽৽৵ড়৽ড়৾৾৽ড়৾৾৽ড়৾৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾৽ড়৾	अने ढींचणथी चार अंगुल उपर वतिने चोलपट पहेरवो कह्यो ठे. अगीयारमुं मौंत मसाना नयें अथवा अज्ञानथी लज्जाथी स्त्रीनी पेरें हेयुं ढांकी राखे; हृदय आठादे; ते स्तनदेाष; वारमा शीतादिकने नयें साधवीनी पेरें बेहु खंन्ना ढांकी राखे एटले समय शरीर आठादी राखे ते संयतिदोष, तेरमो आलावो गणवाने अर्थे संख्या करवाने अंगुली तथा पांपणना चाला करे, ते नमुहंगुली दोष, चउदमो वायसनी पेरें आंखना कोला फेरवे, ते वायस दोष, पंदरमो पहेरेलां वस्त्र ते यूका तथा प्रस्वेदें करी मलिन थवाना नयने लीधे कोठनी पेरें ख़ुगछुं गोपवी राखे ते कपिन्ठ दोष ॥ यह ॥ सिरकंप-माथुं धुणावे ते वार्क्श-मदिरा इति-ए मकारे मुभ-मुक दोष ये देस-दोष उस्सग्ने-काउस्सग्गने	किक्क क क क क क क क क क क क क क क क क क

लंबुत्तर–लंबुत्तर थण⁻ स्तन	ंन-नहोय दोस-दोष	समणीण-श्रमणीने, स-सहित	साध्वीने वहु−वधू सहीणं−श्राविकाने
पण रुलग संजइ-संयति	दास= ५११		
सिरकंप ।	मूअ वारुणि, पे	हत्ति चडज ढो	स उस्सग्गे ॥
लबूत्तर थ	णि संजइ, नदाग	स समणाण सव	हिुसङ्घीणं॥५७॥ ^{दारं}
	1 C C C C C C C C C C C C C C C C C C C		त्यनी देवा; पण लंबूत्तर, स्तन अ
संयति ए त्रण दोष र	साध्वीने न होय. वल्री वधु दोष	र सहित उपर कहेळा त्रण दोष	ा अर्थात् चारे दोष श्राविकाने न होय
			ारःकंपदोष, सत्तरमो म <mark>ुंगान</mark> ी पे
	करोष व्यतारमा त्रालाव	ो गणतो थको मदिरान	ी पेरें बमबमाट करे. ते मदि
ह ह करे. ते म			
हू हू करे, ते मु दोष, <b>उंग</b> षीशम	्रे वानग्नी पेरें त्र्याहं पर	हं जोवे नेष्ठ पर चल	na. ते प्रेष्य दोष ए प्रकारें

चै०भा० ॥ ५३ ॥	व्यने छंगुली वे ज़ूदा द संयति ए त्रण दोष ते साध्वी प्रतिक्रमणादि ए त्रण दोषने वधू दोषे होय, होष पंदर दोष श्र	ोष करे <i>बे</i> , तेवारें वीश घ श्रमणीने न होय, केमवे केया करते मस्तक उघा i करी सहित करियें तेव	पाय, तथा एक लंबुत्तर, 5 एनुं वस्त्रावृत झरीर हो 5ुं राखे एटले झोल दो ारें लंबुत्तरादि चार दोष दोष टालीने काउस्सग्ग व	पमां केटखाएक जमूह बीजो स्तन छने त्रीजो य, पए एटख्रुं विद्येष जे प साधवीने लागे, छने थाय. ते श्राविकाने न उरवो एटखे काउस्सग्गना	के के कि कि कि कि ना न न न न न न न न न न न न न न न न न न
<b>৽</b> ড়৴৽ড়৾৾৽৻ড়৾৽৻ড়৾৾৴৻ড়৽৻ড়৾৴৻ড়৽৻ড়৾৴	इरिउस्सग्ग- इरियावहिना काउस्सग्गनुं पमाणं-प्रमाण	, उतर पांस रुपर पर पणवीसुस्सास-पचीस श्वा∙ सोखासनुं अह−आठ ना प्रमाणनुं एकवीशमुं	सेसेख−रोष का उस्सग्गमां गंभीर−गंभीर महुरसदं−मधुर ज्ञब्द	महथ्यजुत्तं-महा अर्थ युक्त हवइ-होय थुत्तं-स्तवन इामुं द्वार कहे ठे.	の の の の の の の の の の の の の

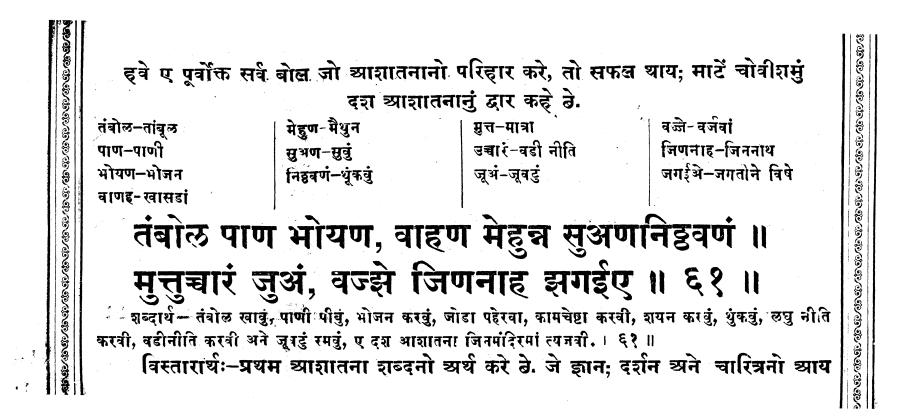
इरिउस्सग्गपमाणं, पणवीसुस्सास अर् सेसेसु॥ दारं ११ ॥ गंभीर महुरसदं, महत्थजुत्तं हवइ थुत्तं ॥५८ ॥ दार ११ शब्दार्थ-- इरियावहिना काउरसग्गनुं प्रमाण पचीश श्वासोश्वासनुं जाणवुं. बाकीना काउरसग्गनुं आठ श्वासो-श्वासनुं प्रमाण जाणतुं. वली मेघनी पेठे गंभीर, मधुर शब्दवाला तेमज महा अर्थवाला प्रभुनां स्तवनो होय छे. ॥ ५८ ॥ and the second of the second sec विस्तारार्थः-इरियावहिना काजस्तग्गनुं प्रमाण पश्चीश श्वासोन्धासनुं जाणवुं. एटले संप्र-दायें ''चंदेसु निम्मलयरा" पर्यंत यावत् पचीश पदनुं काउस्सग्ग कराय ढे, अने शेष काउ-स्सग्ग जे देव वांदता स्तुति काजस्सग्ग ते आठश्वासोझास प्रमाण जाणवो. केम के संप्रदायें एक नवकारनी संपदा आठ हे माटें. ए काउस्सग्ग प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार चयुं. उत्तर बोल १०५६ थया.

<b>चै</b> ०भा० ॥५४॥	गंधार छन मधुर शब दादि दशायुक्त एवुं श थयुं. उत्तर बोल १०४	द ठे जिहां अने वली ग प्रीवीतरागनुं स्तुत एटले ७ थया ॥ ५७ ॥	नहा अर्थेयुक्त जक्ति, ज्ञा स्तवन होय ए स्तवन	द्वार कहे <b>ठे. मेघनी पेरें</b> न, वेराग्य छने छात्मानं- जणवानुं बावीशमुं द्वार	<b>উঠিক জে</b> জা জেজা জেজা জেজা জেজা জেজা জেজা জেজ
ತುಭಾತಾಭಾತಾಭಾತಾಭಾತಾಭಾತಾಭಾತಾ ಕ್ರಾ	पडिकमणे-मतिक्रमण चेइय-दहेरामां जिमण-जमती वखते पडििकमणेचे	चरिम-पाछ्ले दीवसे पढिकमण-मतिक्रमण सुअण-स्रती वखते <b>इयजिमण, चॉ</b>	विगर करवुं ? तेनुं त्रेवीशर पडिबोहे-जाग्या पछी चिःवंदण-चैलवंदन इअ-ए रेमपडिक्कमणसु उवेळा अहोरत्ते	जइणो-यतिने सत्तउवेळा-सात वेला अहोरत्ते-एक अहोरात्र मध्ये अणपटिबोहे ॥	क्षेक्रक क्रिक्रक क्रिक्रक न न देठ न न र र र र र र र र र र र र र र र र र

Jain Education International

**પ્રક્રણ** તેમ છે. જેમ છે शब्दार्थ-प्रभातना पडिकमण वखते, देहरे, भोजन वखते, भोजन करचा पछी, सांजना पडिकमण वखते सुति व-खते, पाछली रात्रीये जाग्या पछी एम रात्री दिवस मल्ली साधुने सात वखते चैत्यवंदन करवुं. ॥ ५९ ॥ ાર્ગ્સ્ટ્ર विस्तारार्थः-एक प्रज्ञातने परिक्रमणे पचरकाण करतां देव वांदवाने विषे विशाल लोचन 190190190190 190190 कही चैत्यवंदन करे, बीजुं चैत्यगृहमां जगवंत आगले चैत्यवंदन करे, त्रीजुं जमती वखत पच-स्काण पारे, तेवारें चैल्यवंदन करे, चोर्युं ठेहेलो जमीने उठ्या पठी एटले आहार करी रह्या पठी दिवसचरिम पच्चस्काण करतां चैत्यवंदन करे, पांचमुं संध्याने परिकमणे नमोस्तु वर्छमानादि चैत्यवंदन करे, ठठुं सूती बखतें शयन संचारा पोरिसी जणावतां चैत्यवंदन करे, सातमुं पाठली रात्रे जाग्या पठी कुंसुमिण दुसुमिणकाउस्सग्ग करवा पठी किरियानी वेलायें चैत्यवंदन करे, ए कह्यां जे सात वखतनां चैत्यवंदन करवां, ते एक छहोरात्रमध्ये यतिने होय ॥ ५९ ॥ हवे श्रावकने एक छहोरात्रमां केटलां चैत्यवंदन होय ? ते कहे ठे. पूआसु-पूजाने विषे सगवेला-सातवार तिवेला-त्रणवार पडिकमिउ-पडिकमण तिसंझ्झासु-त्रण संध्याये गिहिणोवि- गृइस्थने पण पंचवेल-पांचवार जहन्नेणं-जघन्यथी ह-निश्चे होड–होड इअरस्स-इत्तर

ण्करूककरूक वि०भा० च ५५ ≅	पडिक्वमिउ गिहिणोवि हु, सगवेळा पंचवेळ इअरस्स ॥ पूआसु तिसंझासु अ, होइ तिवेळा जहन्नेणं ॥ ६० ॥	क्षित्र माठ चै॰ माठ
ব্যাবহা পাঁচ বাচ পাঁচ বাচ পাঁচ বাচ পাঁচ বাচ পাঁচ বাচ বাচ বাচ	शब्दार्थ—पडिकमण करता एवा ग्रहस्थने पण सात वखत अने न करनाराने पांच वखत चैत्यवंदन करवुं. वल्ली ज- घन्यथी तो त्रणे संध्याये पूजाना अवसरे त्रण वखत चैत्यवंदन करवुं. ॥ ६० ॥ विस्तारार्थः-एक प्रज्ञाते व्यने वीजो तांफे ए वे वार पश्चिक्रमणुं करता एवा गृहरूथने पण निश्चें यतिनी पेरें सात वार चैत्यवंदन थाय. तथा जे एक वार पश्किमणुं करता होय एवा गृह स्थने पांचवार चैत्यवंदन थाय; तेमां एक पोरिसि सांज्ञखतां; एक क्रिया करतां व्यने त्रणवार देव वांदता मली पांच थाय. व्यने तेथी इतर एटले जे पश्चिक्रमणुं नथी करता एवा गृहस्थने तो प्र- ज्ञात; सांफ व्यने मध्यान्हे ए त्रण संध्याथे धूजाने विषे ए जघन्यथी पण गृहस्थने माटें त्रणवार चैत्यवंदना होय. ए सात प्रकारना चेत्यवंदननुं त्रेवीशमुं द्रार पूर्ण थयुं. उत्तर वोल २०६४ थया ॥६०॥	ینی محق این مادر مادر مادر مادر مادر مادر مادر مادر



10	पटले लाज तेनी शातना एटले खंग्रना करवी तेने आशातना कहीयें ते जिनघरमां न करवी ते आशातना जघन्यथी दश प्रकारें टे; तेनां नाम कहे ठे. प्रथम तांबूल ते सोपारी; नागरवल्लोना पान अने पंचसुगंधादिकनुं खाडुं; वीजी पाणी पीठुं; त्रीजी जोजन करवुं; चोथी उपानह एटले मोजकी पगरखादिक पहेरवां; पांचमी मैथुन ते कामचेष्टा करवी; ठठी सुवुं ते झयन करवुं; सा- तमी थ्रूंकवुं; श्ळेष्म नाखवुं आठमी मात्रा एटले लघु नीति करवी; नवमी जवार ते वकीनीतिनुं करवुं: दशमी जूवटे रमवुं; ए दश आशातना ते जिननाथ एटले ज्ञगवानना देरासरनी कोटनी मांहे पेसतां ए दश वानां वर्जवां ए जघन्यथी दश आशातना महोटी ठे; तेनां नाम कह्यां ॥६१॥ हवे उत्झ्रष्टथी चोराशी आशातना त्यजवी जोइयें तेनां नाम इहां प्रसंगे लखीथें ठैयें. १ खेलश्ठेष्म, १ यूतादिकीमा, ३ कलह, ४ धनुवेंदादिक कला, थ कोगला नाखवा, ६ तांबूल पूगी	୧୦୦୫୦୦ ଏକ ୧୦୦୦ ଅନିକାର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ଅନେକାର	वै०भाष
	खलश्ठष्म, १ यृतादिकोमा, ३ कलह, ४ घनुर्वेदादिक कला, ५ कोगला नाखवा, ६ तांबूल पूगी फल पत्रादि न्नक्तण, ७ तांबूल खावाना कूचा, तथा उज्ञार नाखवो, ए गालो देवी, विरुद्ध वोलवुं, ए लघुनीति वकीनीति करवी, वातनिर्गमनादि पवित्र करणादि, १० झरीर घोवन, ११ केझ स-		<b>   4</b> 840

चे०मा ग्रा५१॥

मारवा, ११ नख समारवा, १३ रुधिरादि नाखवां, १४ शेकेलां धान्य प्रमुख खावां, १५ त्वचाचा ठादिक नाखवां, १६ छौषधादिकें करी पित्त वमन करे, १९ वमन करे; १० दंतधावनादि करे; १७ वीसामण करावे; २० बकरी; गज; अने अश्वादिकनुं दमन बंधन करे; २१ दांत; २१ आंख; २३ नख, २४ गुंगस्थल, २५ नासिका, २६ कान, २९ मस्तकादिक, ते सर्वनो मेल ठांने, २० सूत्रे, २७ मंत्र जूतादि ग्रह तथा राजादि कार्यना आलोच विचार करे, ३० वृद्ध पुरुषनो समुदाय तिहां आवी मले, ३१ नामां लेखां करे, ३१ धनना जाग प्रमुख मांहोमांहे वहेंचे, ३३ पोतानुं डव्य-जंमार करी तिहां थापे, ३४ पग जपर पग चमावीने बेसे, ३५ ढाणां थापे, ३६ वस्त्र सुकवे, ३७ दाल ढंढणीयादिक उगवे, ३० पापम शालेवां करे, ३७ वमी व्यादि देइ कचर चीजमी प्रमुख सर्व शाक जाति जगवे, ४० राजादिकना जयथी देरासर मध्यें नासीने जुपी रहे, ४१ शोकादिक रुदन आकंद करे, ४१ स्त्री, जक्त, राज्य, देशादिकनी विकथा करे, ४३ शर, बाण, तथा बीजा पण ತಾಲಾರ್ अधिकरण रास्त्र घमे, ४४ गाय, वलद, प्रमुख थापे, ४५ टाढें पीड्यो अग्नि सेवे, ४६ अन्नादि-

ঞ্চা জ্বার্জ জ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ্বজ	कतुं रांधवुं करे, ४९ नाणादिक पारखे, ४० व्यविधियें निसिद्दी कह्या विना प्रवेश करे, ४ए ठत्र, ४० उपानह, ५१ शस्त्र, ५१ चामर न मूके. एटले ए चार वानां साथें लइ प्रवेश करे, ५३ मननी एकाग्रता न करे, अन्यंग एटले शरीरें तैलादिक चोपके, ५५ सचित्त पुष्पफलादिक न मूके, ५६ व्यजीव वस्तु जे हार मुद्रादिक वस्त्रादिक ते बाहेर मूकी कुशोज्ञावंत थइ देरासरमां	୫୦୧୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦ ଅନ୍	৽ম্বি
ತಿ ಮಾಡಿಗಳು	प्रवेश करे, ८७ जगवंत दीठे छंजलि न जोके, ८० एक शाटक उत्तरासंग न करे ८ए मुक्ठट मस्तकें धरे, ६० मौली उपर वस्त्र बोकानी घोस पेच प्रमुख न ठोके, ६१ क्रसुमना सेइरा, ठोगां प्रमुख माथाथी न मूके, ६१ होक पाके, ६३ गेकीदके रमत करे, ६४ प्राहुणादिकने जुहार करे,	ાજ્યા	
ত হয়। বহা বহা বহা বহা বহা বহা বহা	६५ जांक चेष्टा, गाल, काख़ धूंठ वजावे, ६६ रेकार तुकारादि तिरस्कारनां वचन बोले, ६९ लेवा देवा आश्रयी धरणुं मांके, ६० रणसंग्राम करे, ६ए वाल ठूटा होय ते समा करे, जूआ करे माथुं खणे, ९० पलांठी पग बांधे, ९१ चांखकीयें चके, ९१ पग पसारी बेसे. ९३ पुरुपुकी देवरावे, ९४ पगनो मेल जाटके, ९५ वस्त्रादिक जाटके, ९६ माकम यूकादिक वोणे, तथा तेने त्यांज नाखे,	19-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00	ષ્લ 🎼

হাস্থিত জেলেন্ড ব্যাপিক ব্যাপিক বিশ্ব	99 मैथुनकीका करे, 90 जमण करे, 9ए व्यापार कयविकय करे, 0º वैेडुं करे, 0१ इाय्या समारे, 0१ ग्रह्य लिंगादिक जघाके, तथा समारे, 0३ बाहुयुद्ध करे तथा क्रुककादिकना युद्ध क- रावे, 0४ वर्षाकालादिकने विषे प्रणालीथी पाणी संग्रहे अंघोल स्नान करे, तथा पाणी पीवाना जाजन मूके, ए उत्कृष्टथी चोराशी आशातना जिन जुवनमां वर्जवी.	ක හැක හැක හැක හැක. •
હો છે. હો બાજ છે.	हवे मध्यम बहेंतालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहे ठे. १ मूत्र, १ पुरीष, ३ पाणो, ४ उपानह, ८ शयन, ६ अशन, ९ स्त्रोप्रसंग, ० तंबोल, ए शुंकवुं, १० जूवटुं रमवुं, ११ जूवटादि कनुं जोवुं, ११ पलांठी वालवी, १३ पग पसारवा, १४ परस्पर विवाद, १८ परिहास, १६ मत्सर, १९ सिंहासन परिन्नोग, १० केश शरीर विन्नूषा, १ए ठत्र १० खज्ज, ११ मुकुट, ११ चामरनुं रा- खवुं, १३ धरणुं करवुं, २४ हास्यादि विलास परिहास, २८ विटसार्थे प्रसंग करवो, २६ मुखकोश न करवो, १९ मलिन शरीर राखे, १० मलिन वस्त्र पहेरे, १ए अविधियें पूजा करे, ३० मननुं	ଌୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄ

वे भार	एकाग्रपणुं न करे ३१ र	नचित्त ऊव्य बाहिर न म	की आवे: ३१ उत्तरासं	ग न करे: ३३ श्रंजलि ।	ন	चै॰ भাচ
114511 1980	करे ३४ छानिष्ट, ३५ ई	ोन, क्रसुमादि पूजापकरए चैत्यडव्य खाय, ३७ चैत्य	राखे, ३६ छनादर को	र, ३७ जिनेश्वरना प्रत्य	- 1-	
য়ে বাং বাং বাং বাং বাং বাং বাং	नादिकें मंदता करे, ध वर्मरानी मुख्यता करे,	१ देवऊव्यादि जक्तक तथा तेनी आज्ञायें प्रवत्ते ानुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बो हवे देव वांदवाय	साथें व्यापार मित्राइ í, ए बहेंतालीइा मध्यम ख १०९४ पूर्ण थाय ॥	सगाइ करे, ४२ तेहव	জ্যুক্তক্তক্তক্তক্ত । ।	
\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$	इरि−इरियावहि नम्रुकार–नमस्कार नम्रुथ्थुण−नम्रुथ्थुणं अरिइंत–अरिइंत चेइआणं	थुई-स्तुति लोग-लोगस्स सन्व-सन्वलोए अरिइंत चे- इआणं	थुइ–बीजी स्तुति पुरूख–पुरुखरवदी सिद्धा–सिद्धाणं बुद्धाणं वेआ-वेयावचगराणं	जावंति−जावंति चेइआइं थय−स्तवन जयवी−जयवीयराय	82-83-43-43-43-43-43-43-43-43-43-43-43-43-43	<b>4</b> ← ⊪

Jain Education International

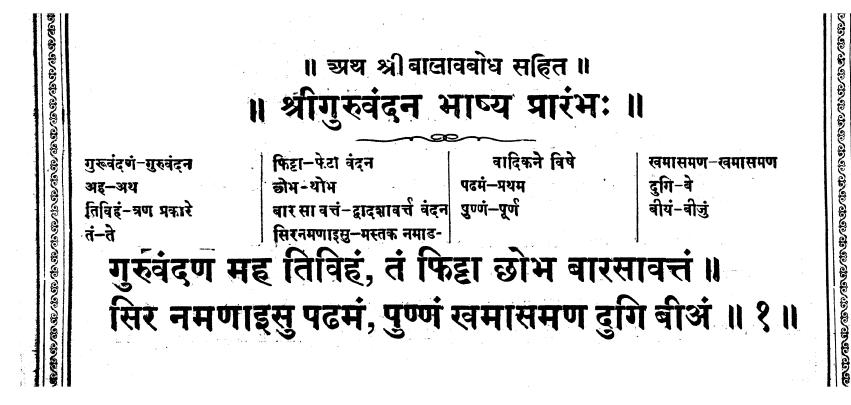
For Personal & Private Use Only

ತ್ರಾತ್ರಾತ್ರಾತ್ರ	इरि नमुकार नमुत्थुण, अरिहंत थुई लोग सब थुइ॥ पुरुख थद मिद्रा वेआ थद, नमत्थ जावंति थय जयवी॥ ६२॥
	ुर्गोदी मजा मुंद, गंगुरेन जागरी मेन जनमा ॥ भूरे ॥
ಡು ಪುಸುವಿ ಮಾಡು ಮಾಡುಗೂ ಮಾಡು	शब्दार्थ-इरियावहि, नबकार, नम्रुत्थुणं, अरिइंत चेइयाणं, कही एक स्तुति कहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए कही स्तुति कहेवी. पछी पुरुखरबर अने स्तुति कहवी पडी सिद्धाणं बुद्धागं, वेयावच्चगराणं अने स्तुति कहेवी. पछी नम्रुत्थुणं, जावंति चेइयाइं अने स्तुति कहोने छेवट जयवीयराय पूर्ण कहेवा. ॥ ६२ ॥
ತಾಯಾರ್	विस्तारार्थः–प्रथम इरियावहि संपूर्ण पकिकमि पठी चैत्यवंदननो आदेश मागी नमस्कार कि कही पठी नमुहुणं कहे. पठी उन्नो अह अस्हिंत चेझ्याणं कही काठस्सग्ग करी एक तीर्थंकरनी
	स्तुति कहे. पत्नी लोगस्स कहीयें पत्नी सवलोए अरिइंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी सर्व तीर्थंकरनी बीजी स्तुति कहियें, पत्नी पुरक्करवरदी कही काउस्सग्ग करी श्री सिद्धांतनी त्रीजी
13 CE CE CE CE	स्तुति कहेवी पठी तिद्धाणं बुद्धां बेयावच्चगराणं इत्यादिक कही काउस्सग्ग करी अधिष्ठायिक देवोनी चोथी स्तुति कही पठी नीचें बेसीने नमुह्वणं संपूर्ण कहीने जावंति चेइआइं जावंत केवि
2000 C	

म्ब-भा ॰ म ५९ ॥ ॥ ५९ ॥	साहु कही नमोईत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुच्यः कही स्तवन कहीने, संपूर्ण जयवीयराय कहीथें. ए देव वांदवानो विधि कह्यो ॥ ६१ ॥ हवे यद्यपि कोइ प्राणी एटला बोल तथा एवो विधि न जाणतो होय तो पण व्या कहेला आठ बोल तेमां होय तेने जक्तिवंत कहीथें. जे माटे संबोध प्रकरणमध्यें कद्युं ठे ॥ जत्ति बहु- माणोवण्ण, संजलण व्यासायणाइ परिहारो ॥ पनिणीयं संगवज्जण, सइ सामठे तज्जुणणं ॥ १ ॥ विहिजुंजण मस्स वण,मवही वायाण विहि पनिसेहो॥सिद्धाए इय व्यमगुण,जुत्ता संपूरण विहिजुत्ते। ए बे गाथानो जावार्थ कहे ठे. एक जक्ति ते व्यंतरंग राग, बीजुं बढुमान ते बाह्य लोको- पचार विनयादि गुण. त्रीजो वर्णवाद यज्ञोवादनुं बोलवुं. चोथो व्याज्ञातनादिकनो परिहार, पांचमो तेमना प्रत्यनोकनी साथें संग वर्ज्जवो. ठठो ठती सामर्थ्यें विघ्ननुं टालवुं. सातमो व्याग- लाने विधिमां जोम्वुं, व्याठमो व्यवर्णवाद न सांजलवापूर्वक व्यविधिनो निषेध करवो व्यन विधिनो	शकक्षाकककककक वी०भा० ॥ ४९ ॥
জ্ঞাৰ জাৰ্থা জাৰু জাৰু হয়	पांचमो तेमना प्रत्यन।कनी साथें संग वर्क्तवो. ठठो ठती सामर्थ्यें विघ्ननुं टालवुं. सातमो आग- लाने विधिमां जोमवुं, आठमो अवर्णवाद न सांजलवापूर्वक अविधिनो निषेध करवो अन विधिनो प्रतिसेवन करवो, एवा आठ गुण विद्युद्रयुक्त ते सर्वोपाधि थिद्युद्ध संपूर्ण विधि युक्त कहीये ।श	11 49    11 49

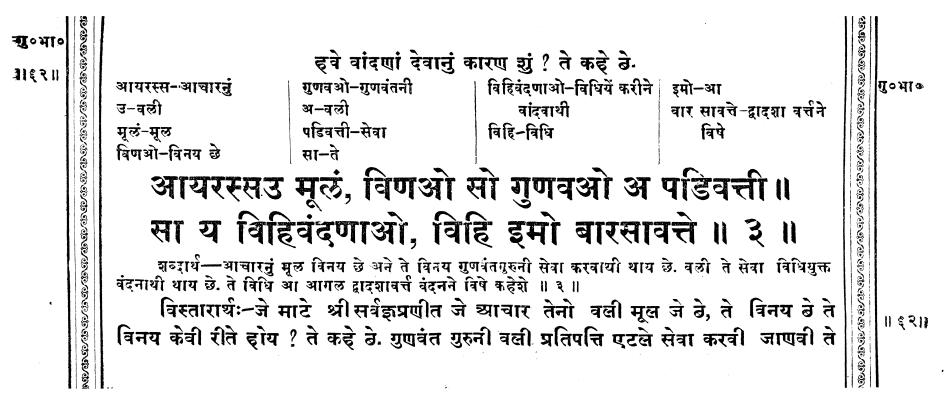
सव्वोवाहि विसुद्धं विशुद्ध	-सर्वोपाधि   वंद <b>ए</b> -वांदे सया-सदा	देविंद⊸देवना इंद्र विंद्−समूह	परमपयं-मोक्षरूप पद् पावइ-पामे
एवं-एम : जो-जे पाणी	देवे-श्री देवाधिदेवने	महिअं-पूज्युं '	लहुसो-शीघ, खतावलो
सबोव	ाहिविसुद्धं, एवं उ		
देविंद	विंदमहिअं, परमण	रय पावइ लहु	सा ॥ ६३ ॥
्राब्दार्थ—अ जेऌां परमपदने तु	ा प्रमाणे सूर्व उपाधिथी राहेत एवो रत पामे छे. ॥ ६२ ॥	जे माणस निरंतर आरेहंत देव	नी वंदना करे छे ते इंद्रोना सम्रूहे पू-
विस्तारा	र्थः-एम सर्वोपाधि विद्युद्ध उ	नेम होय एम एटलेस	र्व श्रो जिनधर्म संबंधिनी चिँत्ता
तेणे करी निद	षि प्रकारें द्युद्ध श्रद्वायें करी	जे जन्नव्य प्राणी श्रीदेव	गधिदेवने सदा सर्वदा वांदे ते
नन्य प्राणी न	वन्नयरूप पद जिहां नथी प	र्वो परमपद एटले मो	क्ररूप पद ते प्रत्यें शोघ जता-
	a second s	ng Sanaga Sanan Sanaga Sana Sanaga Sanaga	na 1995. Na serie de la companya de Na serie de la companya de la company

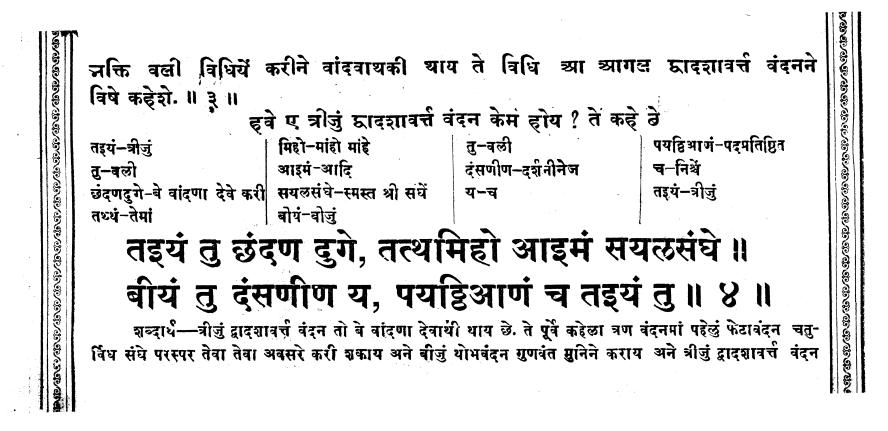
ಾತ		s de ce	
ৰি-মা- জ	वलो पामे. ते परम पद कहेवुं ढे ? तो के देवना इंड तेमना समृह एटले इंडोने समृहें जेने	See.	৹মাত
<b>N E</b> 011	अर्चितं एटले पूज्युं एवुं ढे. एमां प्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरियें पोतानुं नाम पण सूचव्युं ढे ए श्री-	Sec	
	चैत्यवंदन जाष्यनुं वार्त्तिक संद्तेपथी कह्युं, अने विस्तारथी तो श्री आवइयकनिर्युक्त तथा	ne a	
San	प्रवचन सारोद्धारनी वृत्त्यादिकथी जाणवुं. इति श्रेयः ॥ इति श्री देववंदनन्नाष्यं बालावबोध-	arananananananan Alb	
N. 10 C	सहितं संपूर्णम् ॥ ६३ ॥	20 20	
2000	इवे ए श्री देवाधिदेवने विधि वांदवाना फलना कहेवावाला ते श्रीगुरु हे माटे तेमने पण	30-030 - (19-04)	
ತ್ರಾ ಮಾತ್ರು ಮಾತ್ರಾ	ञक्ति विनयें करी विधि पूर्वक वंदना करवा थकी सकल आगमनां रहस्य पामीयें. ए श्रीगुरुनें	ක කැත කරන කා කා කා කා ක =========================	
1. CO.	वांदवानां पण घणां फल आगममांहे कह्यां हे ॥ यछक्तं ॥ वंदणएणं जंते जीवे किं जणइ, गोयमां	90-00-	
100 C	वंदणएणं जीवे नीयागोयं खवेइ, जचागायं णिवंधइ. साहग्गंचणं अपमिलेहियं आणाफलं निवि-	જીર્ય	
	त्तेइ दाहिण जावच जणय इति ॥ तेणे प्रसंगें आव्यो जे गुरुवंदनाधिकार ते हवे कहे हे.	\$    	६० 🕪
and the		સંસ્થ	
100 C		25	



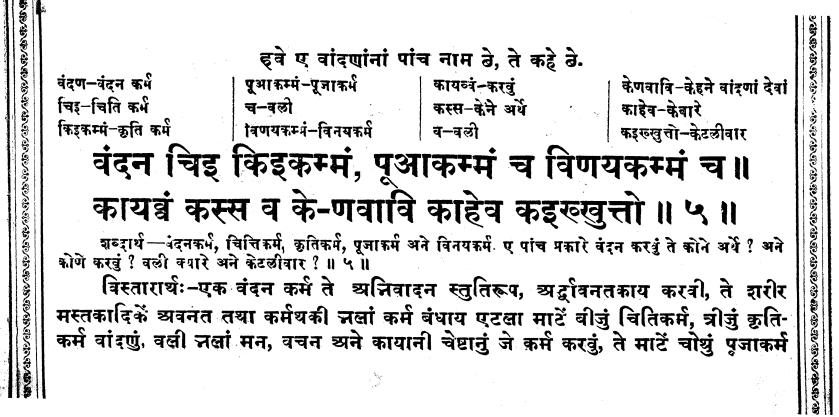
गु०भन • सु०भन • सु२॥	शव्हार्थ—हवे गुरुवंदन त्रण प्रकारे छे. ते फेटा वंदन, थोभ वंदन अने द्वादक्षावर्त्त वंदन. तेमां मस्तकने नमःववा- दिकथी पहेछं, अने पूर्ण पंचांग वे खमासमण देवाथी बीजुं वंदन थाय छे. ॥ १ ॥	নলে বিগতে গৈছে হৈ বিগতে হৈ বিগতে বিগতে হৈ বিগতে বি বিগতে বিগতে বিগত	માવ્
॥ <b>६ २ ॥</b> ॥ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७	विस्तारार्थः-अथ शब्द ते मंगलाधिकारें बे, तथा प्रथम प्रारंत्रने कारणे अथ शब्दें करी चत्यंवदन जाष्य कह्या पढी हवे गुरुवदंन जाष्य कहीयें बैवें. ते गुरुवंदन त्रण प्रकारें बे तेमां पहेलुं फेटा वंदन, बीजुं थोजवंदन, त्रोजुं घादशावर्त्तवंदन, तिहां मस्तक नमामवादिकने विषे	ತಾಲುಕಾರುತ್ತಾರು	
লৈ কে কে কে কে কে কে	आदि शब्द थकी अंजलिकरण ते हाथ जोमवादिक जाखवा. ते पहेख़ुं फेटा वंदन जाखवुं तथा पूर्ण पंचांग बे खमासमणा देवे करीने एटले बे हाथ, बे गोठण अने एक मस्तक ए पांच अंग नमाववा रूप ते वीजुं थोजवंदन जाणवुं ॥ १ ॥	। কৈ আ বিস্থান হৈ আ কি আ কি = #	<b>Ž</b> IĖ
৫ <b>ক্ড</b> াড়েব্যু ব্যা	इहां शिष्य पूढे ढे के थोजवंदनें तथा घादशावर्त्त वंदने प्रथम एक वार वांदीने फरी बीजी वार शे हेतुयें वांदीए ढेेयें ? त्यां छाचार्य उत्तर छापे ढे.	n Second Second Second Second Second Second Second Second Second Se	, <b>Σ. 8₫</b> 2:

a server a s		10 CO
हे   दुओ−द्त	र्ज्जं−कार्थ वीसज्जिओवि–वि वेइउं–निवेदन करे वंदिअ-वांदीने	।सर्ज्यो थको ए मेत−एनीपेरे [ पण इथ्थ−इहां
है। रायाणं-राजाने है। नमिउं-नमिने प	छा-पाछो गच्छइ-जाय	दुगं-द्रोक
जह दूओ रा	याणं, नमिउं कज्झं	निवेइउं पत्था ॥
	वे वंदिअ, गच्छइ एमे	व इत्थदुगं ॥ २ ॥ 👔
श्वा राष्ट्र आधान श्वार्थ — जेम दूत प्रथम फरी नमस्कार करी जायछे तेम जिन्नान्ही के जेन	राजाने नमस्कार करीने कार्य निवेदन करे छे आ देववंदनमां पण बवार् वंदना जाणवी.	अने पाछो राजाए रजा आपवायी ते द्त 🛛 🐉
विस्तारार्थः-जेम इत	त पुरुष ढे ते राजाने नमिने कार्य	निवेदन करे वली पाठो राजायें
	जाय एनी पेरें इहां गुरुवंदनने विषे बेहु वांदणे मलीने	
वांदणानी जोमीयें एकज	वंदन कहेवाय ठे ॥	





तो आचार्यादि पर प्रतिष्ठित मुनिने कराय. ॥ ४॥ गु०भा० নৃতমাত विस्तारार्थः न्त्रीज़ं द्वादशावर्त्त वंदन ते वली बे वांदणां देवे करीने होय, एटले बे वांदणां ॥ ६३ देवे करी थाय, इहां ढंदण शब्द वंदनवाचक जाणवो. ते पूर्वोक्त त्रण वांदणांमां आदिम एटले കേരുന്നു. അനുന്നു അന്തരം അന്തരം അന്തരം അന്തരം पहेलुं फेटावंदन जे हे, ते साधु, साध्वो, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध समस्तश्रीसंघें मली मियो एटले मांहोमांहे परस्पर तेवा तेवा व्यवसरने विषे करवुं होय त्यारें थाय, व्यने बीजुं जे थोनवंदन हे, ते निश्चें वली सुसाधु एवा दर्शनीयनेज अर्थे होय, एटले एक गृहगत, बोजो अनुयोगी, त्रीजो अनियतवासो, चोथो गुरुसेवी, पांचमो आयुक्त जे संयममार्गमां सावधान एवा रण्यंत यतिने ए वांदणुं देवाय, तथा चकारथी, तथा विधिविशिष्ट कार्यने विषे सिंगमात्रधारी पण जो सम्यक्तवदर्शनवंत होय, तो ते पण होनवंदने वंदनीय होय. तथा त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन जे हे ते वली आचार्य, जपाध्याय, गुणवंत गीतार्थादिक एवा पदप्रतिष्ठित जे होय तेमने **E**3 II निश्चें होय. ॥ ४ ॥



मु•मा० मु•मा० ॥६४॥	कहियें, तथा विनयनुं करवुं ते माटें पांचमुं विनयकर्म कहीयें, ए पांच प्रकारें वंदन वली करवुं एटले पांच प्रकारें वांदणां देवां ते केने व्यर्थे देवां ? वली केइने वादणां देवां ? व्यपि झब्द निश्चयार्थमां ठे. केवारें वांदणां देवां ? केटली वार वांदणां व्यापीयें ? ॥ ५ ॥	য় য় পাত
ক্ত পা০ । । । । । । । । ।	कइओणयं-वेटला अवनत करवा करवा कइसिरं-देटलीवार मस्तक नमाववुं कइसारं-देटलीवार मस्तक नमाववुं कह्ओणयं कइसिरं, कइहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं॥ कइदोसविपप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस कीरईवा॥ ६॥ बब्दार्थ—केटलीवार नमवुं? केटलीवार मस्तक नमाववुं? वल्ली केटला आवस्यके करी शुद्ध थवुं? केटला दोषथी क्रुक्त थवुं? अने क्रुतिकर्म शा माटे करवुं ?॥ ६॥	ARPARARANA REVARCE
Jain Education Internatio	For Personal & Private Use Only	www.jainelibra

brary.org

loin	Edu	notion	Intor	national
Jaili	Euu	ICallon	men	national

	।) ए पांचसी छने तुडू। बे गांधा						
विस्तारार्थः-वांदणाने विषे केटला व्यवनत करवा, केटलीवार मस्तक नमाम्न्वुं, केटला वली व्यावइयकें करीने परिशुद्ध थको तथा केटला दोषें करी विप्रमुक्त एटले रहित थके शामाटें करी इतिकर्म वांदणां दीजें ? वा शब्द पुनर्वाचक ठे ॥ ६ ॥ ए पांचर्मी व्यने ठट्ठी वे गाथा व्यावश्यक निर्श्रक्तिमां कद्दी ठे ते इहां कद्दी ॥ हवे त्रण गाथायें करी वंदनानां वावीश द्वार कद्दे ठे. पणनाम-पांच नाम पणनाम-पांच खराहरण अजुगपण-आयोग्य पांच चउत्रापण पांच पणनिसेदा-पांच निषेध पणनामां पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेद्दा, चउअणिसेह इ कारणया ॥ ७ ॥							
ह्वेत्रेण गायाय करा पदनाना जावार पणनाम-पांच नाम पणाहरणा-पांच उदाहरण अजुग्गपण-अयोग्य पांच चउअ दाया-चार अदाता पणनिसेहा-प	र दाता चउअणिसेह-चार अनिषेध						
पणनामं पणाहरणा, अजुग्गपण ज् चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेह							

an car an भ्रब्दार्थ-१ वंदणाना पांच नामनुं द्वार, २ पांच उदाहरगतुं, ३ पासत्यादि पांच अयोग्यतुं, ४ आचार्यादि पांच योग्यतुं, ५ चार वांदणा देवराववाने अयोग्यतुं, ६ चार देवराववाने योग्यतुं, ७ पांच स्थानक वांदणानो निषेध तेतुं, ८ बु०मा० 10-10-00-যু ০ মা 👁 ୧୫୦୧୫୦୧୫୦୧୫୦୧୫୦୧୫୦୧୫୦୧୬୦୧୬୦୧୫୦୧୬୦୧୬୦୫୦୫୦୫୦ चार स्थानके वांदणाना अनिषेधनुं, ९ वांदणानां आठ कारणनुं ॥ ७ ॥ 11 84 विस्तारार्थः-मूलद्वारनी गायार्ट जाणवी. पहेलुं वांदणांनां पांच नाम कहेशे, बीजूं वांदणांनां ٢ ୍ୱାକ୍ଷ୍ पांच आइरण एटले वांदणांनां पांच जदाहरण दृष्टांत ऊव्य अने जावथी कहेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने अयोग्य एवा पांच पासञ्चादिक कहेंशे, चोथुं वांदणां देवाने योग्य एवा आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासें वांदणां न देवरावीयें एवा चार जण वांदणांना आदाता कहेशे. ठठुं जेनी पासें वांदुणां देवरावीयें एवा चार वांदणांना दातार कहेरो, सातमुं पांच स्थानकें वां-ાજી સા दणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेरो, आठमुं चार स्थानकें वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानकें वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांदणां देवानां आठ कारण कहेशे॥९॥ दु छवीसख्खर-वर्शेने छव्वीश पणिस-पचीस आवस्सय-आवश्यक गुरुठवण-गुरुनी स्थापना 8 मुहणंतय-मुहवत्तिनी पडिलेहणा दोस बत्तोसा-वत्रीश दोष अक्षर गुरुपगीसा-गुरु अक्षर पचीश 8 11 5416 दुग्गह-चे अवग्रह तणुपेह-शरीरनी पडिलेहणा छगुण-छ गुण

	आवस्सय मुहणंतय, तणुपेह पणिस दोस बत्तीसा ॥ ७ गुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीसख्खर गुरुपणीसा ॥ ८ ॥
•	भव्दार्थ—१० आवश्यकतुं. ११ ग्रहपत्तिनी पडिलेहणानुं, १२ शरीरनी पडिलेहणानुं, ए त्रण पचीश पचीश्च कर- १३ वत्रीस दोषनुं, १४ छ गुणनुं, १५ ग्रुह स्थापनानुं, १६ वे अवग्रहनुं अने १७ वसो छवीस अक्तरमां पचीस
शनु, गरुव	्रे बत्रांस दाषनु, १४ छ गुणनु, १५ गुरु स्थापनानु, १६ व अवग्रइनु अन १७ बसा छवास अक्रमा पचास णनुं ॥ ८ ॥
3 * 1	्यु ॥ ९ ॥ विस्तारार्थः–दर्शमुं वांदणाने विषे व्यावझ्यक साचववां, व्यग्यारमुं मुखनंतक एटखे मुह्रपत्तिनी
TE	बहणा करवी, बारमुं शरीरनी पमिलेहणा करवी, ए त्रणे वानां पचीश पचीश करवां ते कहेशे,
- 6	गर्था करना, नारणु रारारना नागवहिंधा करना, द तथ पाना नसारा नसारा करना त कहरा,
না এ <u></u>	त शब्द सर्वने जोम्बो. तेरमुं वांदणां देतां बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां
द्ता	ब उपा जपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साद्दात् उरु न होय तेवारें सज्जाव अने
अस	झाव रूप गुरुन। स्थापना करवे। ते कहरो, शोलमुं वॉदर्णा देतां बे खवग्रह साचववा. ते
कहे	ते; सत्तरमूं वांदणाना सूत्रने विषे वशें ने ववीश अक्तर वे, तेमां गुरु अक्तर पचीश वे ते कहे शेज

.

मु०मा० अल्लाकककक आदद्म	पयअडवन्न-पद अहावन आसायण तित्तीसं-तेत्रीन्न दुवीसदारेहिं-वावीन्न द्वारे वाणउइ-वाणुं छहाणा-छ स्थानक आन्नातना करीने ठाणा-स्थानक छग्रुरुवयणा-छ ग्रुरुना वचन दुविहि-बे विधि चउसया-चारसें	an a	गु०भा ∞
20-02-	पय अडवन्न छ ठाणा, छ गुरु वयणा आसायणतित्तीसं ॥ दुविहि दुवीसदारेहिं, चउसया बाणउइठृाणा॥ ९॥	ಗಾಗಾಗಾಗ್ರಾಗ್ರ	
৽ড়৴৵ঢ়৽৽ড়৴ড়৽ড়৽ড়৽৵ড়৽৽ড়৽৵ড় <b>৽</b> ড়	शब्दार्थ—१८ अहावन पदनुं, १९ छ स्थानकनुं, २० छ गुरुवचननुं, २१ तेत्रीस आज्ञातनानुं अने २२ वे प्रकार- ना विधिनुं द्वार. ए सर्व वावीस द्वारे करीने चारसो वाणुं स्थानक छे. ॥ ९ ॥ विस्तारार्थः	രുന്നു. പ്രത്യാന്ത്രന്നു. പ്രത്യാന്ത്രം പ്രത്യാന്ത്രം പ്രത്യാന്ത്രം പ്രത്യാന്ത്രം പ്രത്യാന്ത്രം പ്രത്യം പ്രത്യം പ്രത്യാനം പ്രത്യാനം പ	।। द्द II

Jain Education International

करीने	सर्व मली चारहोंने बा	गुं स्थान	नक थाय ॥	<b>U</b> II	विधि कहेशे. एम वांद		
छंक.	मूलदारनां नाम. उन	तर जेद	. ज्ञारवालो.	छंक.	मूलद्वारनां नाम. ज	त्तर जेद	शरवालो
Ż	वंदननाम.	ય	ય	R R	वांदणांना कारण.	ប	ષ્ઠય
হ	दष्टांत.	ય	30	20	आवर्यक.	ચ્પ	90
સ	वांदवाने अयोग्य.	્ય	રપ	रर	मुह्पत्ति पमिलेहण.	ছথ	્રહ્ય
В	वांदवाने योग्य.	્ય	QD	<u> </u>	शरीर पमिलेहण.	श्य	<u> </u>
ય	वांदणांना व्यदाता.	8	<b>হ</b> ৪	१३	वांदणांना दोष.	ঽঀ	ુશ્યશ
દ	वांदणांना दाता.	الا	হত	रध	वांदणांना गुण.	Ę	্রথত
9	निषेधनां स्थानक.	ય	રર	રય	गुरु स्थापना.	2	રયણ
5	ञ्चनिषेधनां स्थानक.	B	39	१६	खवग्रह.	R	१६१

Jain E	ducation	Intern	ational
--------	----------	--------	---------

and all the second second

-

11 29 18

गु∘भा∙

e c c c c c c c c c c c c c c c c c c c	१९ छक्तरनी		२१६	309	হ০	वांदणांमां र मानी नामा		33	<b>ม</b> น 20
	२७ पदनी से १ए स्थानक		थ्छ इ	ક્ષ ક્ષ શ્રય્≀	হ <b>ং</b> হহ	गुरुनी आहा विधि.	।(तना-	ইহ হ	90 80
ě			वेणयकम्म−विनयकर्म 1ूअकम्मं−पूजाकर्म		पणनामा-पांच नाम			दुइ–बे प्रकारे	
8	विइक्.म्मं-इतिकर्म		गण्ग रूगा दंदग-गुरुव	•	दब्वेभावे	–द्रव्य अने भावे	ओहेण	-सामान्य	। प्रकारे
5204		चिटक	मां	किरक	म्मं दि	र्षेणयकम	मपअ	कम्म	i n
		1737		171271					

ୁ କାର୍ଯ୍ୟ ଅନେକ୍ତର ହେଏହା ହେଏହ	भव्दार्थ-१ वंदनकर्म, २ चितिकर्म, ३ इतिकर्म, ४ पूजाकर्म अने ५ विनयकर्भ. एरुगंदननां आ पांच नाम, द्रव्य अने भाव एम वे प्रकारना सामान्वर्थी जाणवा ॥ १० ॥ द्वा. १ विस्तारार्थः-प्रतिद्वास्नी गाथा कहे ठे. प्रथम वंदनकर्म ते व्यजिवादन स्तुति रूप जाएवुं बीजुं चितिकर्म ते रजोह्रएषादि उपकरए विधि सहितपणे कुरालकर्मनुं करवुं जाएवुं. त्रीजुं छु- तिकर्भ ते रारीर मस्तकादिकें व्यवनमन करवुं. चोथुं पूजाकर्म ते प्ररास्त मन, वचन व्यने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारें विरोष उद्यमपणुं जाएवुं. ए उठ								
ತ್ರಾತ್ರ	वांदणां एम बे प्रकारें <b>उंघेन एटले सामान्य प्रकारें जाणवां ॥ १०</b> ॥ इवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं घार कहे <b>डे</b> .								
<b>ત્રાખ્યા</b> ર હાર હાર હાર	भव्दार्थ-१ वंदनकर्म, २ चितिकर्म, ३ छतिकर्म, ४ पूजाकर्म अने ५ विनयकर्भ. गुरुषंदननां आ पांच नाम, द्रव्य अने भाव एम वे प्रकारना सामान्यर्था जाणवा. ॥ १० ॥ द्रा. १ विस्तारार्थः-प्रतिद्वास्नी गाथा कहे ठे. प्रथम वंदनकर्म ते व्यत्निवादन स्तुति रूप जाणवुं बीजुं चितिकर्म ते रजोइरणादि उपकरण विधि सहितपणे छुरालकर्मनुं करवुं जाणवुं. त्रीजुं छ- तिकर्म ते रारीर मस्तकादिकें व्यवनमन करवुं. चोथुं पूजाकर्म ते प्ररास्त मन, वचन व्यने काय चेघा रूप जाणवुं. पांचमुं विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारें विरोष उयमपणुं जाणवुं. ए गुरु वांदणांनां पांच नाम ते वंदनाना पर्याय पाणवा. ए एक डव्यथकी वांदणां व्यने बीजां जाववकी वांदणां एम वे प्रकारें ज्वेन एटले सामान्य प्रकारें जाणवां ॥ १० ॥ ह्वे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे ठे. सोयऌय-शीतलाचार्थ कन्दे-छण्णमहाराज संवे-शाम्वऊमार संवे-नाव्य वोर्ए-पांच पाछनी पाछए-पालक प्रकारे प्-प								

मु०मा०	सीयलय ख्खुडुए वी-र कन्ह सेवगदु पालए संबे ॥	म्	
॥ ६८॥	पंचे ए दिइंता, किइकम्मे दब्रभावेहिं॥११॥ ^{दारं॥२॥}	म्	
ಣ ನಾ ಸು ಸು ಬ್ರಾಮ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ವ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರಾನಾ ಪ್ರ	भव्दार्थ-वंदनकर्भ उपर शीतलाचार्यनो, चितिकर्म उपर श्रुखकाचार्यनो, इतिकर्म उपर वीरा शालवीनो अने कृ ध्लनो, पूजाकर्भ उपर राजाना वे सेवकनो अने विनयकर्म उर पालक तथा शांवनो दष्टांत जाणवो. आ पांच दष्टांत कृति कर्म उपर द्रव्य अने भावथी जाणवा. ॥ ११ ॥ द्वा. २ विस्तारार्थः-प्रथम वंदन कर्म उपर ड्रव्यवंदन अने ज्ञाववंदन आश्रयी शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर द्युख्वकाचार्यनो दृष्टांत जाएवो. त्रीजा कृतिकर्म उपर वीरा शालवी नो अने कृष्ण महाराजनो दृष्टांत जाएवो. चोया पूजाकर्म उपर राजाना बे सेवकोनो दृष्टांत जाएवो. पांचमा विनयकर्म उपर श्री कृष्णमहाराजना पुत्रपालक अने शाम्वनो दृष्टांत जाएवो ए पांच दृष्टांत ते कृतिकर्म एटले वांदएाने विषे ड्रव्यज्ञावें करीने जाएवा ॥ १४ ॥ हवे ए पांचे	มนองของของของของของของของของของของของของขอ	< 11

and the second s दष्टांतोनी कथा कहे हे. इहिणाउर नयरना वज्रसिंह राजानी सौजाग्यमंजरी राणीने शोतलनामा पुत्र हतो, अने चृंगारमंजरी नामे पुत्री इती. ते कंचनपुरनगरें विक्रमसेन राजाने परणावी, अनुक्रमें शीतलपुत्र राजा थयो, तेणें धर्मघोषसूरि पालेंथी दीक्ता लीधी, पठी विज्ञातसिद्धांत गीतार्थ थइ, आचार्यपद पाम्या. इवे तेनी जगिनीनें चार पुत्र सकलकलामां निपुण थया जाणी तेमनी मातानिरंतर पोताना पुत्र आगल जाइनी प्रशंसा करे अने कहे के धन्य कृतपुर्ण्य पृथिवीमांहे एक तमारो मातुल ठे, के जेणे राजन्नार ठांनी दीका लीधी ! एवी प्रशंसा सांनली ते चारे पुत्र संवेगपणुं an an an an an पाम्या. पठी स्थविरपासें दीक्ता लइ बहु श्रुत थइ गुरुने पूठी पोताना मामा शीतलाचार्यने एक पुरें छाव्या सांजली तेने वांदवाने अर्थे गया. तिहां जातां विकाल वेलायें गाम बाहेर एक and a second and a second देवलमां रह्या. मांहे पेसतां एक श्रावकने जणाव्युं के अमारा मातुलने कहेजो जे जाणेज साधु आव्या वे. इवे ते चारे जाणेजने रातें गुजध्यानथी केवलज्ञान उपज्युं. प्रजाते तेमनुं अनागमन

C 2 C 2 C 2 C 2 C 2 C 2 C 2 C 2 C 2 C 2	जाणी मातुल व्याव्या, तेहने व्यनादर करता जाणी कषाय दंककमां व्यावते दंमक चापी इरि यापचिका प्रतिक्रमी ऊव्यची वंदन कीधुं, तेवारें ते बोख्या छहो ऊव्यवंदन कषाय कंकक वधते वांचा, परंतु ज्ञाववंदने कषायोपशांतियें वांदो, ते सांजली मामोजी बोख्या तमें केम जाण्युं ? तेवारें जाणेज बोख्या के व्यमें व्यप्रतिपाती ज्ञानें करी जाण्युं. ते सांजली मामोजी मनमां विचा- रवा लाग्या के व्यहो में केवलीनी व्याशातना करी, एम विचारी कषायस्थानकथी निवर्त्त्या व्यने ते चारे केवलीने वांदवा लाग्या, व्यनुक्रमें चोथा केवलीने वांदतां मामाने पण केवलज्ञान जपनुं. ए शीतलाचार्यने प्रथम ऊव्यवंदन पठी जाववंदनकर्म थयुं. ए प्रथम जदाहरण ॥	∿રો જા જોય છે. જોય છે. જોય છે. જોય જોય છે. જોય જોય છે. જોય છે. જ	गु०भा ०
৲ ডে ফে বিহ বিহ বিহ বিহ বিহ বিহ বিহ বিহ বিহ	हवे बीजा चितिकर्म उपर क्तुद्धकनो दृष्टांत कहे ठे. जेम एक क्तुद्धक जला लक्तणवालानें, आचार्थें श्रंत समयें पोताने पदें स्थाप्यो, गीतार्थ साधु पासें जणे, ते पण विशेषथी जक्ति साच वे. एकदा समयें मोहनीय कर्मना उदयथी जग्न परिणामी थयो; पठी साधु जिक्तायें गये थके बाहेर जूमिने विषे निकल्यो पठी एक वनने विषे एक दिशें जातां थकां, तिलक, अशोक चंप-	<b>કલઈન્ટ્રાકલ્ટ્રે સ્ટે</b> ન્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્રેસ્ટ્	॥ द <b>९ ॥</b>

মু৽মা৹

11 8911

Jain Education International

রি <mark>বরি বিশেষ</mark>্ঠ ব্যক্ত ও দেওঁ ও বিশেষ ও পারি ও বিশেষ বিদেষে ও পার বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ ব্যক্তি ব্যক্ত ব্যক্ত <del>ൕൕ൜ൕൕ൜൜൜൜൜൜൜൜൜൜൜൜൜ൕൕൕൕ</del>൝ कादि विविधवृद्द तिहां इता तेम बतां एक शमी एटले खीजमीनो वृद्द तेनुं कोइक पूजन करतो हतो ते देखो पूजक प्रत्ये पूठयुं, के तमे ए कंटकवृक्तनें केमं पूजो ढो ? तेणे कह्युं के अमारा ब-मित्रोयें पूर्वे ए वृक्तने पूज्युं हे माटे अमे पए पूजीये हैये. ते वचन सांजलीने क्षुह्लके विचाखुं जे आ शमी एटले जांखरांना वृक्त सरिखो हुं हुं; तेने उत्तम वृक्त समान गुणवंत लोक पूजे हे. अने महारामां श्रमणपणुं नथी; मात्र रजोइरणादि चितिकर्मगुणे करी मुजने पूजे हे, एम विचारी, पांडो आवी, साधुनी पासे आलोयणा लई, उजमाल थयो. एम एने पूर्वे डव्य चितिकर्म इतुं, पत्नी जावचितिकर्म जत्पन्न थयुं. ए बोजुं जदाहरण जाणवुं. हवे त्रोजा कृतिकर्म जपर वोरा ज्ञालवी अने श्रीकृश्ननुं जदाहरण कहे हे. श्रीनेमिनाथ जगवान् द्वारिकाये समोसरया तेवारे श्रीक्रश्ने सर्व साधुर्जने द्वादशावर्त वांदणे वांचा, एने जाव-कृतिकर्म कहीये, अने श्रीकृक्षने रूगुं मनववाने अर्थे वीराशालवीये पण वांचा एने डव्य कृति-कर्म कहीगे. एना संबंधनो विस्तार आवइयकवृत्तिथी जाणवो. ए त्रीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे चोथा पूजाकर्म उपर बे सेवकनो दृष्टांत कहे ठे. जेम एक राजाना बे सेवक इता ते E CENTRALE SEALES EN ন্য০মাত गामनी सीमा निमित्ते विवाद करता राजपंथे जाता इता, मार्गमां साधु देखीने प्रशस्त मन, वचन अने कायायें करी एके कह्युं के " साधों दृष्टे धुवा सिद्धिः " एटले साधु दिठे ढते निश्चयें कार्यसिद्धि थाय, एमां संशय नथी, एम कही एकाम चित्ते साधुने वांद्या. अने बीजे सेवके ज-12 लटी हांसी रूपें व्यवहार मात्रें तेने अवनमन करयुं, पठी राजहारें गये थके पहेला सेवकनो जय थयो, छने वीजानो पराजय थयो एम एकनें डव्यथी पूजाकर्म छने बीजानें जावथी पूजा-कर्म थयुं; ए चोधुं उदाहरण. हवे पांचमा विनयकर्मने विषे पालक अजव्य अने सांवनो दृष्टांत कहे हे. श्री नेमिनाथ जगवान् दारिका नगरीयें समोसरवा, तेवारें श्री इब्ण बोख्या के जे श्रीनेमीश्वर जगवाननें 190 I सर्वथी पहेखुं जई वंदन करशे, तेने महारो पट तुरंगमविशेष आपीश, ते सांनली तुरंगमने लोनें प्रथम रात्रि बतां पण पालकें आवीने वांचा, ते डव्यथकी वंदन जाणवुं. अने त्यां शांब

নৃ০মা০

11 190 1

50-50-50 10-50-50 10-50-50	कुमारें जावथकी वांद्या ढे, ते जाववंदन जाणवुं. ए पांचमुं जदाहरण कद्युं. ए पांच दृष्टांतनुं
ತುಳುತುಳುತುಳು	छनार जावयका वाद्या छ, त जाववदन जाखवु. ए पाचमु छदाइरख कह्नु. ए पाच दृष्टातनु हि
Sec.	हवे पासज्ञादिक पांच व्यवंदनीकनुं त्रीजुं द्वार कहे बे.
is en a servis en	कुमारें जावथकी वांद्या ढे, ते जाववंदन जाणवुं. ए पांचमुं उदाहरण कद्युं. ए पांच दृष्टांतनुं बीजुं द्वार थयुं, उत्तर बोख दरा थया ॥ ११ ॥ द्वे पासठादिक पांच व्यवंदनीकनुं त्रीजुं द्वार कहे ढे. पासध्थो-पासथ्थो उस्सन्नो-उस्सन्नो, प्रमादि कुसील-कुज्ञीलीओ दुग-बे दुग-बे अणेगविहा-अनेक प्रकारे
ന്താനം നേഷം അംഭം പ്രത്യം നേഷം നേഷം നേഷം നേഷം നേഷം നേഷം നേഷം നേഷ	पासत्थो उसन्नो, कुसील संसत्तओ अहाछंदो ॥ दुग दुगतिदुगणेगविहा,अवंदणिज्झा जिणमयंमि॥१२॥ ^{दारं ३॥} भन्दार्थ-पासरछो, उसन्नो, कुसीलीयो, संसक्तो अने पथाछंदो ए पांचेना अनुक्रने वे, वे, त्रज, वे अने अनेक
menter of the second	शब्दार्थ-पासत्छो, उसन्नो, कुसीलीयो, संसक्तो अने यथाछंरो ए पांचेना अनुक्रवे वे, वे, त्रग, वे अने अनेक भेदो छे. जिन मतमां ते पांच अवंदनीय जाणवा. ॥ १२ ॥ द्वा. ३

<u></u>	विस्तारार्थः-जे ज्ञान, दर्शन व्यने चारित्रनी पासें रहे ते प्रथम पासत्वो जाणवो तथा जे साधु सामाचारीने विषे प्रमाद करे ते बीजो उस्सन्नो जाणवो तथा जे ज्ञान, दर्शन व्यने चारि त्रनी विराधना करे ते त्रीजो छुझीलीयो जाणवो. तथा जे वैरागी मल्ठे तो तेनी साथें पोते पण वैरागी जेवो बनी बेसे व्यने जो व्यनाचारी मले तो तेनी साथें पोतें पण व्यनाचारी बनी बेसे, ते चोयो संसक्त जाणवो, तथा जे श्रीतीर्थंकरनी व्याज्ञा विना पोतानो इडायें प्रवर्त्ते, पोतनी इडायें प्ररूपणा करे, ते पांचमो यथाठंदो जाणवो ए पोताने ठंदे प्रवर्त्ते माटे एने ठंदो कहीये. तिहां	୬୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	<b>गु०भा</b> ञ
৽ড়৴ঀ৾৽৽ড়৾৾৽ঀ৾৽৽ড়৾৴৻৾৽৽ড়৴ঀ৾৽৽ড়৴	एक देशयी बीजो सर्वथी मली बे जेद पासज्ञाना, तथा एक देशयी बीजो सर्वथी मली बे जेद उस्सन्नाना, तथा ज्ञानकुशील; दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील मली त्रण जेद कुशीलीयाना, तथा संक्रिष्ट चित्त अने असंक्रिष्ट चित्त मली वे जेद संसक्तना, तथा अनेक प्रकार, बंदाना जाणवा, एटले यथाबंदा अनेक जेदना थाय बे ए पासत्वादिक पांच जे कह्या ते श्रीजिनमतने विषे अवं- दनीय जाणवा॥ ११॥	AD A	ાહર્ ા

**ग্ত**०भा० ॥७१॥

Jain Education International

हवे ए पांचेनुं कांइक विशेष स्वरूप खखीयें ठेथें. तिहां मिथ्यात्वादिक वंध हेतुरूप पास तेने विषे जे रहे, तेने पासड़ों कहीयें. छयवा ज्ञानादिकनें पोतानी पासें करी मि- थ्यात्वादिक पासमां रहे एटखे ज्ञानादिकने पासें राखे पण सेवे नही, अधवापासनी पेरें पोतानुं पासुं मखिन राखे ते पासड़ो कहीये. तेना वे जेद ठेः एक देश पासड़ो खन वीजो सर्वपासडो. तेमां जे कारण विना शब्यातर पिंक, खञ्याहत एटखे साहामो आण्यो पिंक, राज्यपिंक, नित्यपिंक छाने अर्घापंकादिक जुंजे. तथा गाम, देश, छुख आवकनी ममता मांके, जेम के "आ महारा वासित ज्ञा व्या ठे" ते छुखादिकनी निश्चाये विचरे, तथा गुर्वादिकने जे विशेष जक्तियोग्य रहस्यज्रूत थापना छुख ठे, ते छुखादिकनी निश्चाये विचरे, तथा पीर्व सीये तेने विशेष जक्तियोग्य रहस्यज्रूत थापना छुख ठे, ते छुखामांहे निष्कारणे प्रवेश करे, तथा "नित्यप्रत्ये तमने एटखुं देइद्युं तमे नित्य खावजो" एवी रीतनी जे निमंत्रणा करे तेनी पासें ते पिंक खीये तेने नित्य पिंक कहीये. तथा ज्ञाजनमांहेथी वापरया विना र्डदन जक्तादिकनी शिखा उपरितन ज्ञाग खक्तण खीये, तेने खप्रपिंक कहिये. के- टखाएक एम कहे ठे के कारण विना प्रधान सरस आहार खोये तेने खप्रापेंक कहिये. तथा बहेंताक्षीश
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

		8
Net of the second se		200
गु॰भा॰ 💈 ट	रेष आहारना न राखे, वारंवार आहार खीये तथा जमणवार, विवाइ अने प्राहूणामां शिखं-	हुँ गु०भा •
1 192 11 8	के जोतो फरे, आहारनी खाखचें मुखें, कहे. तिहां निमित्त दोष न होय, सूजतो होय ते माटें	ষ্ঠ <b>দৃতমাত</b> গুও <b>দৃতমাত</b>
5 N	तथा सूर्य आथमता जगताथी मांकी जमे, मांकलीये आहार न करे, सन्निधि राखे, पोतानी	<b>छ</b> इ
	निश्रायें ओेषधादिक छालगु गृहस्थने घरे मूकावे, डव्यादिक सहित विचरे, तथा ज्ञान	8
T Dec	इव्यादिक मिषें करी स्वनिश्रायें ज्ञानादि जंमारनां नाम लेई, पुस्तकादि संघहे, डव्यादि सहित	10 m
	विचरे, मुखे कहे अमे निर्म्रथ ढेेये पूर्व साधु समान गर्व राखे. इत्यादिक अनेक प्रकारे साधु	ままままでで、 11 11 11 11 11 11 11 11 11 1
र ह	वक्तणथी विपरीत होय ते देश पासहो जाणवो.	20-05-05-05-05-05-05-05-05-05-05-05-05-05
1 m	तथा जे सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी अलगो रहे, केवल लिंगधारी, वेषविमंबक,	200
andre .	गृहस्याचार धारी होय, ते सर्वथी पासबो जाएवो.	
	बीजो जे कियामार्गने विषे शिथिलता करे, अथवा खेद पामे तेने उस्सन्नो कहीयें; तेना	ँ ॥ ७२॥ इ
41 -	वे जेद हे. एक देशथी व्यवसन्नो व्यने बीजो सर्वथी व्यवसन्नो, तिहां जे व्यावश्यक, प्रतिकमण,	200
area -		25
161		

देववंदनादि, सजाय ते पठन पाठनादि, पमिलेहण, मुखवस्त्रिका, वस्त्रपात्रादि, जिह्ता ते गोचरो कालादि, ज्यान ते धर्मध्यानादि, अनकार्थ ते तप नियम अनिग्रहादि, आगमन ते बाहेरथी उपाश्रयमां प्रवेशलक्तण, निसिहिया ते पग पूंजवादि, निर्गमन ते प्रयोजनविना जपाश्रययी बा-हेर निकलवा लक्तण, स्थान ते कायोत्सर्गादि, निषोदन ते बेसवुं, तुयठण ते त्वग्वर्तन एटले शयन इत्यादिक, दशविध चकवाल साधु समाचारी, तथा उंघ पद विन्नाग सामाचारी प्रनुख विधि संयुक्त न करे, अथवा ठेठी अधिकी करे अथवा कषाय कंनक सहित करे. अथवा राज-वेठनी पेरे करे, जय मानीने करे, तथा गुर्वादिकना वचन सांजली दुमणो थइने वचन खंकन करे, आक्रोरा करे, इत्यादिक लक्त्णे करी देश अवसन्नो जाणवो. अने सर्वथकी अवसन्नो तो चोमासा विना रोषकालें पाट, बाजोठ, निष्कारण संचारे, सेवे, स्थापनापिंग जमे. संथारो पाथरवो राखे, प्राजृतिकादि दोष जमे. इत्यादिक लक्तणें सर्व व्यवसन्नो जाणवो.

18742.48743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.43743.437

त्रोजो जेनुं कुस्सित, निंदनीय माठुं शील एटले आचार होय, तेने कुशील कहीयें. तेना ेमु॰भा० त्रण जेद वे. ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्र कुशील, तिहां ज्ञानकुशील ते अकाल, अ-11 93 11 MERCENTER CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR विनय, अबहुमान, गुरुनिन्हवता. योग जपधान हीन, सूत्र, अर्थ अने तदुनय हीन, इत्यादिक आशातनायुक्त थको ज्ञान जूखे तथा आजीविकाहेतें पठन पाठन संजलाववुं, लखवुं, लखाववुं, जंमार कराववा, नंदी समारचनादि स्वार्थना उपदेश देवा, तथा आजीविका हेतें धर्मकथा कहे, जणे, घर घर धर्म संजलाववा जाग, पोताना खवाने हेतें स्त्री बाळकादिकने जणावे, अनेरा इानना जमार जेखवे, ज्ञानने जेखवे, लखवां खखाववां, ऋयविऋय पुस्तकादिकोनो करे, करावे, SU COSE इत्यादिक लक्तणें ज्ञानकुशोल जाणवो. बोजो दर्शनकुशील ते शंका काहा विचिकित्सा व्यापन्न, दर्शननिन्हव, छहाउंदा, कुशी-||| \9 **|**| लिया वेषविभंबनादिक साथें परिचय करे, एटले तेनी साथें आलाप संलाप पठनादिक करे, ते Ge Conce दर्शनकुशील जाणवो.

त्री जो चारित्र कुशील ते ज्योतिष, निमित्त, अद्यरकर्म, यंत्र, मंत्र, जूत कर्म, बलिपिंम, जto revenence to reven जाणी, दानादि, सौन्नाग्य दौर्नाग्यकारी, जमी, मूली, विद्यारोइणादिक, पादलेप, आंख अंजन, चूर्ण, स्वप्तविद्या, चिपुटीदान प्रमुख, अतीत अनागत वर्त्तमान निमित्तकयन, पोतानी जाति कुत्र विज्ञानादिक स्वार्थकार्थे प्रकाश करे, नख, केश, शरीर, शोजा करे, वस्त्र पात्र दंमादिक बहु मूख्यवाला सुंदर सुकोमलनी वांठा करे, शिष्यादिक परिग्रहनी विशेष तीत्रता धरे, निष्कारण अपवाद पद सदूषण मार्ग प्रकाशे, तथा सेवे, इत्यादिक लक्तणें चारित्रक्ठशील जाणवो. चोथो संसक्त, ते पासबा अयवा संविज्ञादिक जन जेवानी साथें मले त्यां तेवो थई प्रवर्त्ते, अथवा मूलोत्तर गुण दोष सर्व एकठा प्रवर्त्तावे, जेम गायनी आगल सुंमलो मूक्यो होय तेमां सरस, नीरस, कपाशिया, खोख, घृत, छग्धादिक एकठुं मेख्युं होय तो ते सर्वने एकठांज खाई जाय पण तेनुं विवेचन न करे. तेम ए पण गुण छने देाप सर्वने एकठा प्रवर्त्तावी देखाने तेने संसक्तो कहीयें, ते एक संक्रिप्टचित संसक्तो अने वीजो असंक्रिप्ट चित्तसंसक्तो एवा

गु•भा० है।	वे जेदें जाणवो.	ন্য মন্ত্র প্রথকে প্	
11 98 11	ब अद जाणवा. तिहां जे प्राणातिपातादिक पांच आश्रवनो सेवनार, रुद्धिगारव; रसगारव अने ज्ञातागारव	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	०भा >
9,99410 31 9 8 11 31 9 8 11 31 9 8 11	ए त्रण गारवें करी सहित, स्त्रीगृहादिक सेवनने विषे प्रसक्त, ऋपध्यानज्ञील, परगुणमत्सरी, इत्यादि	CE-CE-CE	
See .	गुण युक्त ते संक्रिष्ट चित्तसंसको जाणवो. तथा पोताना आत्माने जेवारे जेवो प्रसंग मले तेवारे	~ ~ ~	
100 CB	तेवो चाय एटले प्रियधर्मी साधु मले ते वारे साधुना आचार पाले अने अप्रियधर्मी पासत्ने मले	20000	
ନିଅ କର ଅନ୍ୟ	तेवारे तेवो थाय, लिंबूना पाणीनी पेरे तट्रूप थइ जाय ते असंक्लिष्ट चित्तसंसक्तो जाणवो इति ॥	0000	
3 R	पांचमो यथा छंदो ते यथा रुचियें प्रवर्त्त, यथा तथा लवे, उत्सूत्र जाषे, पोताना स्वार्थना	1. A.	
	उपदेश आपे, स्वमति विकडिपत करे, परजातिने विषे प्रवर्त्ते, पारकी तांत करे, उपकारी धर्मा- इपर्यात्रकी केवचर करे, जप्रदर्भ जप्रकर्ण जन्म सम्पर्धनान करेते, जेवणरी जपर्यात्रक समे वेवर	s al a la	
9 8	चार्यादिकनी हेलना करे, आचार्य जपाध्यायना अवर्णवाद बोले, जेनाथी ज्ञानादिक पामे तेवा बहुश्रुतनी निंदा करे, गारव प्रतिवंधि होय, कारणविना विगय खाय, इत्यादिक अनेक जेदे य-	5200	L a') 12
19.45.45. 19.45.45.45.45.45.45.45.45.45.45.45.45.45.	अडुद्धृतना निर्दा कर, गरिव अतिवाय हाय, कारणावना विगय खाय, इत्यादिक अनक जद य थाठंदो जाणवो. ए पांचेनां विशेष लक्षण श्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्ति तथा आवश्यकवृत्ति तथा	1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1.000 - 1 	ાકરા
নহা হয়। বিশ্ব হা বিশ্ব হ		35.25	

N				60.V		
eto et	उपदेशमालावृत्ति प्रमुख	ग्रंथोथी जाणवा. ए पांचे	वने अवंदनीय जाणवा.	एमने वांदवाथी कर्मनि-		
2000	र्करा न थाय, केवल क	नेश अने कर्मबंध उपजे	तथापि ए कहेलां लक्षण	वालो जो ज्ञान, दर्शन 📳		
2005		कारणे सेव्यो होय तो व				
49 CE		ा असंजवी होय पण द				
2029	णवा पण इहां तो चाः	रत्रीयो वंदनीय कह्यो वे	ते अधिकार माटे चारित्र	वंत ते वंद्य हे छन्यथा 📲		
2000	जो छचारित्रीयाने वंद्य	कहीये तो जेटलां तेनां	प्रमादनां स्थानक ठे ते	सर्व अनुमोदनीय थाय		
Š	तेथी तेने वांदतो थको प्रवचन बाधाकारी थाय. ए रीते वांदणां देवाने पासज्ञादिक पांच व्ययोग्य					
<b>গ্</b> য	तेमनुं त्रीजुं घार कह्युं. उत्तर बोल पन्नर थया ॥ ११ ॥					
19-21 19-21	हवे पांच वांदवाने योग्य तेमनुं चोथुं द्वार कहे हे.					
1950	आयरिय- आचार्य	थेरे-थिविर	किइकम्मं–कृतिकर्म	कायव्वं-करवुं		
5	उवज्झाए-उपाध्यायजी	तहेव-तेमज				
è	पवत्ति−मवर्त्तक	गयणिए-गुण रत्ने अधीक	निज्जरद्वा-कर्मनिर्ज्ञराने अर्थे	इमेसिपंचन्दं-ए षांच		

S आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ॥ गु॰भा॰ किइकम्मनिज्जरहा, कायब्र मिमेसि पंचन्हं ॥१३॥^{दारंध॥} शब्दार्थ-अाचार्य, उपाध्याय, पवर्त्तक, स्थविर तेमज रत्नाधिक. निर्ज्ञाराने अर्थे ए पांचेने कृतिकर्म (वंदन) करवुं. विस्तारार्थः-पहेला ज्ञानादिक पांच आचारे करी युक्त ते श्रीआचार्य कहीये, बीजा श्रीज-पाध्यायजी, त्रीजा जे तप संयमने विषे प्रवर्त्तावे, गडनी चिंता करे ते प्रवर्त्तक कहीये, चोथा जे चारित्रथी पमता होय तेने प्रतिवोध आपीने पाठा ठेकाणे आणे तेने थित्रिर कहीये तथैं एटले तेमज वली पांचमा गड़ने अर्थे केन्न जोवा माटे विहार करे, सूत्र अर्थना जाए तेने रत्नाधिक गणाधिप कहीये, ए कह्या जे आचार्यादिक पांच जए तेने कृतिकर्म एटले वांदणानुं कर्म करवुं एटले वांदणां देवां ते केवल कर्मनिर्जाराने अर्थे जाणवुं ॥ १३ ॥ ए आचार्यादिक पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप नीचे लखीयें ढेथे.

ever ever aver aver aver aver aver aver

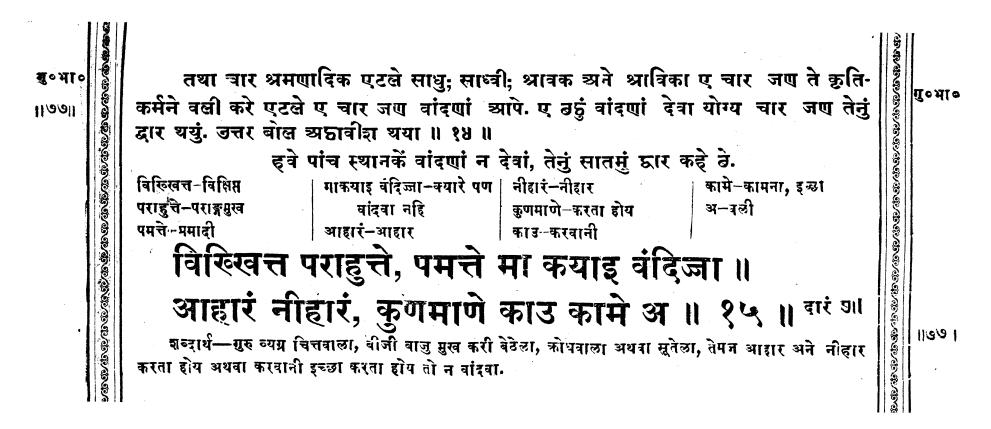
गु०भा०

1199

	छाचार्य ते सूत्र अने अर्थ उनयना वेत्ता, प्रशस्त समस्त खक्तणें खक्तित, प्रतिरूपावि
	गुणयुक्त शरीर होय, जाति कुल गांजीर्य धेर्यादि अनेक गुणमणियुक्त, आठ प्रकारन
.	गणिसंपदायें करी युक्त, पंचाचार पालक, पलाववाने समर्थ. बत्रीश बत्रीशी गुणें करी विराजमान
	आर्थ पुरुषें सेववा योग्य, गह्रमूलस्तंत्रजूत गह्रचिंतारहित अर्थनाषी, एटले जेमां गह्रचिंता न उ
	पजे एवा अर्थ जाषे एवा गुण्युक्त ते आचार्य जाणवा.
	तथा उपाध्याय ते जेनी पालें अगीयार अंग, बार उपांग, चरणसित्तिरी, करणसित्तिरी ज
	णीयें, आचार्यने यूवराज समान, ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयी युक्त, सूत्र अर्थना जाण
	आचार्यने हितचिंतक, ते उपाध्याय.
	तथा प्रवर्त्तक ते यथोचित्त प्रशस्त योग जे तर संयम तेने विषे साधुसमुदायने प्रवर्त्तावे
	गहने योगद्देम करवानी योग्यतानी संजालना करनार जागवा.
	तथा थिविर ते ज्ञानादिक गुणोने विषे सिदाता साधुने इहलोक तथा परलोकना
	तथा विविध होगादिक उपान विषे लिदाती लायुन इहलाक तथा परलाकना

गु०मा० ॥ ७६॥	व्यपाय दष्टांत देखानी संयममार्गमां स्थिर करे; ते स्थविर त्रण प्रकारें ठे. एक ज्ञाठ वर्षना ते वयःस्थविर; बीजा वीज्ञ वरसदीक्ता पर्याय जेने थयां होय ते पर्यायस्थविर; त्रीजा जे निज्ञीथा- दिक छेदयंथना रहस्य जाणे; जघन्यथी समबायांगादि श्रुत जाणे; ते श्रुत स्थविर पण इहांतो जेने आचार्यादिकें स्थविर कीधा होय ते स्थविर जाणवा.	are are an area and an	गु०भ{व
₫₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽₽	तथा रत्नाधिक ते गृञ्चने कार्थे शिष्य उपधि प्रमुख खान्ननें झर्थे विहार करण शीख सूत्रार्थ वेत्ता एनुं गणावछेदक एवुं पण नाम कहीयें एवा गुणवंत ते पर्यायें ज्येष्ठ छयवा खवु होय तो पण तेने रत्नाधिक कहीयें. एटखे पांच वंदनिकनुं चोयुं द्वार थयुं. उत्तर बोख वीश थया ॥१३॥ हवे चार जण पासे वांदणां न देवराववां तेनुं पांचमुं द्वार तथा चार जण पासे प्रायः वांदणां देवराववां; तेनुं छटुं द्वार; ए बे द्वार साथे कहे ठे. माय-मोता अउमावि-वयाहिके रुघु होय किइकम्म-बांइणां नहेव-तेमज [पण न कारिज्ञा-नकरावे पुणो-वली जिद्वभाया-महोटोभाइ सन्वरायणिए-सर्व रत्नाधिक चउसमणाई-चार श्रमणाहिक	હા છે. આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ	।। ७६ ।

an a	माय पिअ जिडभाया, अउमावि तहेव सत्र रायणिए॥	
an an an an an an an an	माय पिअ जिडमाया, अउमावि तहेव सच्च रायणिए॥ किइकम्म न कारिजा, चउसमणाई कुणंति पुणो॥१४॥ ^{दारं५.६।} बब्दार्थ-माता, पिता, म्होटो भाइ तेमज वयथी न्हाना ९ण ज्ञानादिकथी मोटा. ए चार पासे वांदणां देवराववान्नं न कंग्ले बकी चार अप्रणारिक वांदणा आपे ॥ १४ ॥ टा ५-६	
<u> </u>	शब्दार्थ- माता, पिता, म्होटो भाइ तेमज वयथी न्हाना ९ण ज्ञानादिकथी मोटा. ए चार पासे वांदणां देवराववानुं न कंरवुं. वल्ली चार अमणादिक वांदणा आपे. ॥ १४ ॥ ट्रा. ५-६	
<b>ে</b> চে	विस्तारार्थः-एक पोतानी माता; बीजो पोतानो पिता; त्रीजो पोतानो ज्येष्ठ जाइ एटले विस्तारार्थः-एक पोतानी माता; बीजो पोतानो पिता; त्रीजो पोतानो ज्येष्ठ जाइ एटले मोहोटो जाइ; चोथो वयादिके लघु होय एटले वय प्रमुखें तो यद्यपि पोताथी न्हानो होय तो पण तेमज ए त्रणेनी परें ते सर्व रत्नाधिक एटले सघला पर्यायें करी ज्येष्ठ होय ज्ञान दर्शन अने, चारित्रें करी अधिक होय ए चारनी पासें प्रायः वांदणां देवराववानं न करावे. ए विधि	
ચેર્ગ સંખ્યાલ્ય	पण तेमज ए त्रणेनी परें ते सर्व रत्नाधिक एटले सघला पर्यायें करी ज्येष्ठ होय ज्ञान दर्शन व्यने चारित्रें करी व्यधिक होय ए चारनी पासें प्रायः वांदणां देवराववानुं न करावे. ए विधि	
ierer er de	साधुने जाणवो; अने गृहस्थ पासे तो वंदन देवरावे. ए पांचमुं द्वार थयुं. जत्तर बोख	



anaranar विस्तारार्थः-एक विक्तिस गुरुथके एटले जेवारें धर्मकथा करवामां अयमचिन होय, बीजो thank ware a contraction of the second se कार्यादिकें करीने पराङ् मुख होय एटले संमुख बेठा न होय पण उपरांठा बेठा होय; त्रीजुं प्रमादी थका होय एटले कोधादिकें अथवा संथारवादिकें प्रमाद सेवता होय; निद्रालु थका होय; चोशुं आहार पांचमुं नीहार एटले लघुनीति अथवा वमीनीति प्रत्ये करता होय; अथवा करवानी कामना एटले बांडना करता होय वली करवा जता होय एटले स्थानके केवारें पण गुरुने वांदवा नही. अहीं माशब्द निषेधवाचक वे ॥ १५ ॥ ए सातमुं द्वार थयुं. उत्तर बोख तेत्रीश थया. ॥ ३३ ॥ इवे चार स्थानके वांदणां देवां; तेनुं आठमुं द्वार कहे ठे. पसंते-मज्ञान्त उबसंते-क्रोधादिके रहित तु-वली किइकम्पं-वांदणां आसणध्ये-आसने बेठा होय डवहिए-डपस्थित मेहावी-पंडितजनो प गंज्जई-उग्रम करे अ-वली अणुत्रवि-आज्ञा मागीने and a second

ग्र॰भा॰ भ ७८॥	पसंते आसणत्थे अ, उवसंते उवहिए॥ अणुन्नवि तु मेहावी, किइकम्मं पउज्जाई ॥१६॥ दारं ण शब्दार्थ-शांव चित्तवाला, आसन उपर बेठेला, कोधादि रहित अने छंदेण इत्यादि कहेवा तैयार होय एवा गुरुने	৻ৼ৴ড়৻ড়৻৻ড়৻৻ড়৻৻ড়৻৻ড়৻৻ড় য়ৢ <b>৽৸</b> য়৵
	हूँ ] बुद्धिमान पुरुषोए आझा मागवा पूर्वक वांदणा देवाने जयम करे. ॥१६॥ द्वा. ८ विस्तारार्थः-प्रशांतचित्त व्याद्वेपरहित गुरु होय, बीज़ं आसनस्य एटले पोताने आसने	pos avas avas
	बेठा होय, क्ली त्रीज़ं उपशांतचित्त एटले कोधादिकें रहित होय, चोयुं उपस्थित होय एटले ठंदेण इत्यादिक कहेवाने संमुख उजमाल थया होय, एवा गुरु आदिकने वांदणां देवानी अनुज्ञा मागीने वली वांदणां देवाना विधिना जाख एवा मेधावी एटले पंक्तिजनो ते छतिकर्म एटले वांदणां देवा प्रत्ये प्रयुंजे एटले उद्यम करे॥ रदाए आठमुं घार थयुं.उत्तर बोल सामत्रीश थया.॥ हवे आठ कारणे वांदणां देवां, तेनुं नवमुं द्वार कहे ठे.	20 =

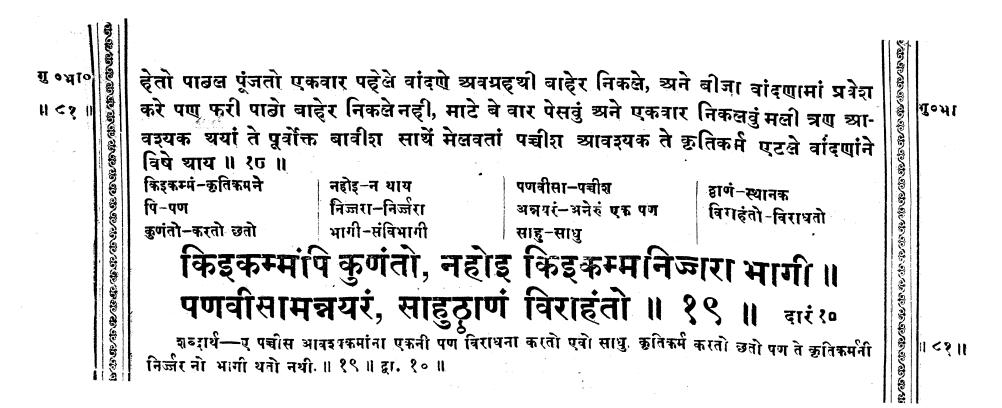
and the second य−वलौ संवरणे-पचचख्वाण करते पडिकमणे-मतिक्रमणने विषे | अवराह-अपराध and the second वंदणयं-वांदणां देवाय सज्जाए-सज्जाय भणती वखते पाईणए--पाइणा मुनि आवे उत्तमहे-उत्तमार्थे आलोगण-आलोचना काउरसग्ग-काउरसग्ग पडिकम्मणे सज्जाए, काउस्सग्गे वराह पाहुणए॥ 3 and and the second s and and आलोयण संवरणे, उत्तमठे य वंदणयं ॥ १७॥ ॥ दारं ए॥ the internet was the second second श्रब्दार्थ — प्रतिक्रमणमां, स्वाध्यायमां, कायोत्सर्गमां अने अपराध खमाववामां वांदणा देवा. वर्ली नवा आवेला साधुने आलोचनामां अनेः शासखमणादि तपुरूप संवरमां तथा अंत संलेखना करतां एम आठ कारणे वांदणा देवा. । १७॥ विस्तारार्थः-एक प्रतिक्रमणने विषे सामान्य प्रकारें वांदणां देवाय, बीजा स्वाध्यायवाच-नादि लक्तण तथा सजाय पढाववाने विषे विधिवांदणां देवाय, त्रीजा पचरकाण करवाना कायो-त्सर्गने विषे एटले आचाम्लादि योगादि पार्णे परिमितविगय विसर्जामणी विगयपरिज्ञोगनी

<b>ग्र भ्या</b> ० ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥	खमावतां वांदणां देवा माहोटाना समागमने विहारादि समाचारी प	वाय, चोथा अपराध एटले गुरुनो विनय उंखंघवा रूप पोतानो अपराध य, पांचमा प्राहुणो महोटो यति आवे तेवारें तेमने वांदणां देवाय, एटले वांदणां देवाय. ठठा गुरुनी पासें आलोचना लेवाने अर्थे एटले आलोचना पद जिन्न हुंते यके वांदणां देवाय, सातमा पचल्काण करतां अथवा मास- परूप संवरने विषे वांदणां देवाय, आठमा उत्तमार्थे एटले अंतसमये संलेषणाने विषे वली वांदणां देवाय, अथवा वांदवुं थाय. ए आठ कारणे वमं ठार थयं, जन्म बोल प्रित्वालीका थया ॥ १९॥	•भा ०
ক জে জে জে জে জে জে জে জ	ञ्चन <b>द्यान करवाने विषे</b> वांदणां देवाय, तेनुं न	इय साचववा माटे आवर्यक कहीयें, ते वांदणां देतां पचीश आवश्यक सचवाय, तेनुं दशमुं द्वार कहे हे.	હર 11
5. 17. 19. 19. 19. 19. 19. 19. 19. 19. 19. 19	अहाजाय∽एक यथाजात आवत्ता-आवर्त्त	च उसिर-चारवार झिर नमाडवुं इगनिरूखमणं एकवार नीकलवुं किइकम्मे-वांदणांने विषे हैं। तिग्रत्तं-त्रण ग्रुप्ति पणवीसा-पचीस	

200 दोवणयं महाजाय, आवत्ता बार चउसिर ति गततं ॥ -to-co-co-दुपवेसिग निख्खमणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥१८॥ Secondo Secondo शब्दार्थ-चेवार अवनत, एकवार यथानात, बारवार आवर्त्त, चारवार शिरनुं अवनत, त्रण गुप्ति, वेवार अवग्रहमां भवेश करवो अने एकवार निकलवुं. ए पचीस आवश्यक वांदणामां होय छे. ॥१८॥ द्वा. ९ विस्तारार्थः-चे व्यवनत वांदणाने विषे जाणवां एटलेचे वार उपरितन झरीर जाग नमामवो तिहां एक तो जेवारें ''इह्यामि खमासमणो वंदिछं जावणिकाए निसीहिआए' एम कहीने नमे तेवारे ठंदेणनी अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन जाग नमाफे त्यारे गुरु ठंदेण कहे. ए एक व्यवनत थयुं, एम बीजीवार वांदणां देतां बीजो व्यवनत थाय. ए बे व्यवनत रूप 1000 C वे आवरयक थया. and a control तथा एक यथाजात एटले जे रूपें दीक्तानो जन्म थयो इतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति

• •	Š.	200	
<b>য়</b> ০মা০	🦻 चोलपद्दमात्रपणे श्रमण थयो इतो तेटलाज नेला थई हाथ जोने अथवा योनिथी बालक नीकलते	ଅକ୍ଟେମ୍ବାରେ ସେ ଏହା ସେ ଏହା ସେ ଏହା	TONIM
11 00 11	हैं जेम रचितकर संपुट होय तेम करसंपुट करबा हाय जोमेखाने खखाटे खगामे ते यथाजात	କୁକୁ ଜୁନ୍ଦି	3-41-
	है कहीयें एम वे अवनत अने त्रीज़ं यथाजात मली त्रण आवश्यक थयां.	200	
	हुवे इारीरना व्यापार रूप बार आवर्त्त सूत्राजिधान गर्जित कायव्यापार विशेष जाणवां.	\$2.33	
	🖁 तेमां प्रथम वांदऐ ठ आवर्त्त थाय, ते आवी रीतेंः-प्रथम त्रए आवर्त्त तो ' अहो " " कायं "	ತ್ರುತ್ರ	
	🖁 "काय " ए बे बे ऋक्तें नीपजे एटले पोताना हाथनां तलां वे उंधां गुरु चरणे लगाने तथा	ತ್ರುಗತ್	-
	🖁 उत्तान हाथें पोतानो ललाटदेश फरसे अने " १ अहो २ कायं ३ काय संफासं " कहेतो मस्तक	(P)-35	
	🖁 नमाफे, तेवार पठी " खमणिकोथी मांकीने वइकेतो " पर्यंत यावत् करसंपुटे कहीने वली त्रण	10 A B	
	🖁 अावर्त्त त्रण त्रण अहरना कहे, तेमां एक अहर गुरुवरणे हाथ लगामतां कहे, बीजो अहर	S	
	🐒 उत्तान हाथे वचाले विशामा रूप कहे अने त्रीजो खत्तार ललाटदेशे हाथ लगामतां कहे, जेम	S. S	11 60 M
	अतान हाथ पंचाल विशामा रूप कह अन त्राजा अदार ललाटदरा हाथ लगानता कह, जम "ज ता जे" "ज व णि" " जं च जे" एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अहारना कहेतो खामेमि	್ಯಾ	
		<b>N</b> 276	
		\$	

खमासमणो कही बीजी वार मस्तक नमाने. ए रीतें ए प्रथम वांदणे ड व्यावर्त्त थयां तेम वली
बीजे वांदणे पण एज रीते व आवर्त्त थाय, वे वार मली बार आवर्त्त रूप बार आवइयक थाय.
सर्व मली पंदर थयां.
सर्व मली पंदर थयां. तथा चतुःशिरः एटले चार वार शिर नमामवुं तिहां पहेले वांदणे बे वार मस्तक नमामवुं अने बोजे वांदणे पण बे वार मस्तक नमामवुं मली चार वार शिर नमन थाय. एवं उंग-
्यारा आवश्यक थया. तथा त्रण गुप्ति ते मन, वचन अने काया ए त्रणने अन्यव्यापारथी गोपवी राखे ए त्रणने
णीश आवश्यक थयां. तथा त्रण गुप्ति ते मन, वचन अने काया ए त्रणने अन्यव्यापारथी गोपवी राखे ए त्रणने द्रव्यथी तथा जावथी अयत्नायें न प्रवर्त्तावे, एवं बावीश आवश्यक थयां. तथा दिप्रवेश एटखे बे वार आवश्यकें बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रह मांहे प्रवेश करवा रूप बे आवश्यक अने एक वार अवग्रहथी बाहेर निकझे एटखे पहेखे वांदणे आज्ञा मागी निसीहि कहेतो पग पूंजतो थको एकवार अत्रग्रह मांहे प्रवेश करे छाते पठी आवस्तियाए क-
तथा दिप्रवेश एटले वे वार आवश्यकें वे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रह मांहे प्रवेश
करवा रूप बे आवइयक अने एक वार अवग्रहथी बाहेर निकले एटले पहेले वांदणे आज्ञा मागी
निसीहि कहेतो पग पूंजतो थको एकवार छात्रमह मांहे प्रवेश करे छाते पठी छात्रसियाए क-



देतो बतो पण कृतिकर्म चकी जे कर्मपरिशाटनरूप निर्क्तरा याय तेनो संविन्नागी न चाय ते वांदणांनुं जे निर्क्तरा रूप फल, ते न पामे ॥ १७ ॥ ए दशमुं घार चयुं उत्तर बोल सित्ते।						
यंत्र स्थापना.						
श्ववनत नमबु	रं यथाजात मुझा.	व्यावर्त्त.	शिरो नमन.	गुप्ति	प्रवेश.	निंकलवुं.
<b>ર</b> ્ચ		<b>१</b> ছ	ង	ર	হ	2
	इवे मुइपत्तिनी	पचीश परि	केंसेदणानुं अगीः	यारमं घार	कहे हे.	

- 22-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-	दिट्टिपडिलेह एगा. छ उड्डपप्फोड तिग तिअंतरिया ॥	ম ম ম	10
য় জেল্ডা গে	अख्खोड पमज्जणया, नव नव मुहपत्ति पणवीसा॥२०॥	revents.	
ನ್ನುತ್ತಾತ್ರಂತ	शब्दार्थ-एक दृष्टि पडिलेहण, छ उंचा परुखोडा, त्रण अखोडा, त्रण प्रमार्जना. ए छेला बे त्रगने त्रणवार अंतरित करतां एक एकना नव नव भेद थाय. सर्व मली मुहपत्तिनी पंचीस पडिलेहणा थइ. ॥ २० ॥ द्वा ११	S. S	
in avera	विस्तारार्थः-प्रथम मुहपत्तिने पहेले पासे सूत्र अने बीजे पासें अर्थ तेनुं तत्त्व, सम्यक् प्रकारे हृदयने विषे धरुं, एमचिंतवीने मुहपत्ति उखेली तेनां बेहु पासां सर्वत्र दृष्टियें करी जोबां	ನ್ನುಗಳು	
হাসক হিসের হাসক কার্যক কার্যক ক	ते दृष्टि पमिलेइणा एक जाणवी. तेवार पत्नी त्र जंचा पखोमा करवा एटले मुहपत्तिने फेरवी बे हाथें साहीने एकेका हाथें नचाववा रूप त्रण त्रण जंचा पखोमा करवा तिहां माबे हाथे करतां	1000 Carlor	
10 ave	सम्यक्त्व मोइनीय, मिश्रमोइनीय अने मिथ्यात्वमोइनीय ए त्रण मोइनीय परिहरुं एम चिंत-	2 	Ð
<b>শ্বি</b> জ্ঞান্য	वीयें तथा जमणे हाथे करतां कामराग, स्नेहराग व्यने दृष्टिराग, ए त्रण राग परिहरुं. एम	the second	
		Naves New	
lucation Internet	For Demond 9 Device Line Only		broniora

at an	चिंतवीयें ए व खंखेरवा रूप व पमिलेहणा थइ तेनी साथे प्रथमनी एक दृष्टि पमिलेहणा मेल-	લ્ટ્યો
ସାରେ ଏହାସେ ଏହା	वीये तेवारे सात थाय. तेवार पठी त्रण व्यस्तोमा व्यने त्रण प्रमार्ज्जना एटले पूजवुं ते व्यनुकमे एक बीजा केमे	ತ್ರಾತ್ರ
	त्रणवार एकेकने अंतरे करवा एटले मुहपत्तिये एक पर्नुवाली मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी	ೆ. ಮಾಡು ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.ಡಾ.
֍֎֍֍֍֍֍֎֎֍֎֎֎֎֎֎֎֎ ՟	जमणा हाथनी  छंगुलीना छांतरानी वचमां जरावीने त्रण छरकोमा पसली जरीये, त्रणवार मृह- पत्ति	ನಾರ್
e cener	त्रण प्रमार्क्तना पशलीमांदेेथी घसी काहामीये एम एकेकने आंतरे त्रण वार त्रण त्रण अस्कोमा करवा अने त्रण वार त्रण प्रमार्क्तना करवी. एवी रीते त्रण वार करतां नव अखोमा खंखेरवा	ગ્લાઓ
to at voc	रूप थाय. अने नव परकोमा प्रमार्जना एटले पूंजवा रूप थाय मली छढार पमिलेहणा थाय	3
iverev	तेनी साथे पूर्वोक्त सात मेलवीये, तेवारे सर्व मली मुहपत्तिनी पमिलेहणा पच्चीज्ञ याय ॥ २० ॥ हवे व्यढार पमिलेहणा करतां एकेका त्रिके छुं हां मनमां चिंतविये ? ते कहे ढे.	9.40.40 C
- - - - - - - - - - - - - - - - - - -	ए गणगा पताप्र गता रक्ता तक छुरा गगगा । पताप्र : त कह छ.	્રજીવ્યુ
		3

1 ......

पहेला त्रण अस्कोमामां सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्व आदरुं, पठी त्रण प्रमार्ज्ज-नामां कुदेव कुगुरु अने कुधर्म, ए त्रण परिइरुं, बीजा त्रण अस्कोमामां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण आदरुं, पठी त्रण प्रमार्ज्जनामां ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना अने चारित्रविराधना, ए and and an article and a contraction and पण परिइरुं, त्रीजा त्रण व्यक्तोमामां मनोगुति, वचनगुति व्यने कायागुति ए त्रण गुति व्यादरुं, पडी त्रण प्रमार्जनामां मनोदंग, वचनदंग अने कायदंग, ए त्रण दंग परिहडं, एवी रीतें मनमां चिंतववुं, ए किया करवानी मुहपत्ति एक वेंत ने चार अगुंल आत्म प्रमाणनी जोइयें अने रजो-इरण तथा चरवलो बत्रीश अगुंलनो जोइयें तेमां चोवीश अंगुलनी दांनी अने आठ अंगुलनी दशी जोइयें अथवा न्यूनाधिक करी होय तो पए सरवाले बत्रीत अंग्रुल जोइयें, ए पचीश पकि-लेहणा स्त्री पुरुष बेहुयें करवी. ए अगीयारमुं द्वार चयुं, अने उत्तर वोल पद्माणुं चया ॥ ୁଇକ୍ଟ हैवे शरीरनी पचीश पमिलेहणानुं बारमुं द्वार कड़े हे.

**अ**०भाषः

पायाहिणेण-प्रदक्षिणाये बाहु तियतिय-त्रण वणवार सीस वाम-डात्री इअर-जमणी हिया पायाहिणेण दि अंसुङाहो पिठु बब्दार्थ-प्रदक्षिणाये करीने				
रवभानी उपर अने नीचे, तेमज वे प	पीठ उपर अने छ ब	वाहुये, मस्तके, म्रुखे अने वे पग उपर एम सर्व मली	हृदये. ए पांच ठेक शरीरनी पचीश परि	ाणे त्रण त्रणवार; बे इलेहणा थाय. २१
। विस्तारार्थः-प्रदक्तिणा है। जमणे बाहुयें तथा त्रीजुं मग् है।				। बीजुं इतर ते ठामे त्रए त्रए

ՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠՠ ֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֎֎֎֎ वार पमिलेइणा करवी एटले मुह्पत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने वामजुजादिक पांच स्थानके ত্র ০মা০ गु०भा 👁 फेरववी तेवारे पन्नर पनिलेहण थाय, अने अंसुरु एटले बे खंजानी जपर, अने बे खंजानी अहो 1 68 1 एटले नीचें काखमां, पिछ एटले वांसानी बाजुयें चार पमिलेइए करवी एटले बे खंजा उपर छने बे काखने विषे, एमज ठ पमिलेहण बे पगनी उपर करवी तेमां त्रण वाम पगे छने त्रण दक्तिण पगे करतां व याय, एवी रीतें सर्व मली शरीरनी पमिलेइणा पचीश याय. ॥ ११॥ इहां यद्यपि श्रीत्रावश्यकवृत्ति तथा प्रवचन सारोद्धारादिकें पमिलेहणानो विशेष विचार कह्यो हैनथी पण इहां परंपराथी संप्रदाय समाचारीयें स्त्रीनुं इारीर वस्त्रें आवृत होय माटे एने शरीरनी पमिलेहणा पच्चीशमांथी त्रण मस्तकनी, त्रण हृदयनी व्यने वे पासाना खंजानी चार, एवं दश परिखेइणा न होय शेष पन्नर होय तथा वली साध्वीने तो जघाने माथे किया करवानो व्यवहार हे माटें तेने मस्तकनी त्रण पमिलेहणा होय शेष सात न होय बाकी छढार 11 CS B पमिलेइणा होय.

ସନ ସହ ପତ ସହ ଏହା ए पमिलेहणा जे हे, ते यद्यपि जीवरक्तानी कारणजूत ज्ञव्य जीवनें हे एम तीर्थंकरनी आज्ञा ठे तो पण मनरूप मांकमाने नियंत्रवा सारु बोल धारीयें ते यद्यपि आवइयकवृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथें कद्युं नथी तोपण अख्पमतिने मन स्थिर राखवा माटें "सुत्तव्व तत्तदिट्ठि" इत्यादि पांच गायानुं कुलक कहां ठे, ते इहां वांदणामां अधिकार नथी तोपण ते पांच गायानो अर्थ लखीयें तैयें. जमणा फेरथी मुहपत्तिने वधूटकनी पेरें प्रहण करीने पमिलेहण करीयें ते कहे हे. मावा हाथनी जुजायें त्रण वार पुंजियें त्यां हास्य, रति अने अरति, ए त्रण परिहरुं. एम चिंतवीयें. जमणा हाथनी जुजायें त्रण वार पुंजीयें त्यां जय, शोक अने छगंहा, ए त्रण परिइरुं, एम चिंतवीयें. मस्तक त्रण वार पुंजीयें तेमां ऋष्ण, नीख अने कापोत ए त्रण माठी खेरया ठांछं, एम चिंतवियें. मुखनी त्रण पमिलेहण करीयें त्यां रुद्धिगारव, रसगारव अने झातागारव, ए त्रण परिइरुं, एम चिंतवीये हृदयनी त्रण पनिलेहणा करीये त्यां मायाशाख्य, नियाणाशाख्य अने

ಡಾ ಡಾ ಡಾ ಡಾ ಡಾ मिथ्यात्वशाख्य ए त्रण शल्य ठांछं, एम चिंतवीये माबा खंन्ना अने जमणा खंन्नानी नीचे उपर गु भा० (1)? बे पासानी पमिलेहणा चार करीये त्यां क्रोध, मान, माया अने लोज ए चार कषायने ढांछुं; 11-64-11 एम चींतवीये नाबे जमणे पगे अनुक्रमे त्रण त्रण पनिलेहणा करीये, तिहां अनुक्रमे पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय, ए व कार्य जीवोनी रक्ता करुं, एम चींतवीये.॥ तथा वली पभिलेइ एना अधिकार माटे वस्त्र, पात्र, पाट, बाजोठ, पायावाला पाटला पा-टली, स्थापनाना कबा, ढांकणां, व्यने जाजन प्रमुखनी पचीश पकिलेहण तथा कणदोरा, मांमा व्यने मांमीनी दश पमिलेहण तथा थापनानी तेर, पायानी तेर इत्यादिक सर्व परंपरागते जाणवी. ॥ ११ ॥ CO. T. R. C. आवस्सएसु-आवश्यकनेविषे | पयत्तं-प्रयत्न तहतह-तेमतेम तिविहकरण-त्रिविधकरण 11241 अहोण-हीन नही जहजह-जेमजेम 90-09-09-09 उनउत्तो-शुद्ध उपयोगी थयो से-ते अइरित्तं-तेम अधिक नही कुणइ-करे निज्जराहोइ-निर्जरा होय थको

आवस्सएसु जहजह, कुणय पयत्तं अहीण मइरित्तं ॥ तिविहकरणो व उत्तो, तहतह से निज्जरा होई ॥२२॥ शब्दार्थ---आवश्यकादिमां जेम जेम प्रयत्नथी ओछो अधिक न थयो छतो मन, वचन अने कायाये उपयोग राखी करे तेम तेम ते करनारने निर्जरा थाय छे. ॥ २२ ॥ द्वा. १२ विस्तारार्थः-ए आवरयकने विषे तथा मुह्पत्ति अने रारीरनी पनिलेहणाने विषे जेम जेम उजमाल चित्त थको प्रयत्न एटले उद्यमप्रत्यें हीन नहि परंतु जेम कह्यो हे तेमज करे, पण तेथकी उंग्रो करे नही तेमज अतिरिक्त ते तेथकी जूदो एटले जेम हीन न करे, तेम अधिक पण न करे एवी रीते जली बुद्धिये सहित थको त्रिविध करण ते मन, वचन अने काया, ए त्रण करणे करी उपयुक्त थको एटले शुद्ध उपयोगी थयो थको एकायचित्त बतो करे तेम तेम ते उद्यम करनार पुरुषने विशेषे कर्मोनी निर्जरा थाय अने जो अविधिये प्रतिलेखनादिक करे

10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 -		New J
ग्र॰भा॰ है	तो ते ब कायनो विराधक कह्यो बे. एटले पमिलेहणानुं बारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल एकझो वीश थया ॥ ११ ॥	१ १ १ १ १ १ १ १
11 < 11	हवे चार गायाये करी बत्रीश दोष त्यागवानुं तेरमुं द्वार कहे बे.	র রুক্টেজ্র জ্যা হ বিদ্যা হ
100 CD	दोस-दोष अपविद्ध-अपविद्ध दोष ढोल्रगइ-ढोल्लगति दोष मच्छुव्वत्तं-मत्स्योद्वर्त दोष अणाहिय-अनाइत परिपिंडियं-परिपिंडित दोष अंकुस-अंकुञ्च दोष दोष मगपउठ्ठं-मनःभदुष्ट दोष	47×35×42×43
යා යා යා යා යා යා යා යා යා	र्षे क्षेत्र-स्तब्ध दोप च-वली कच्छमरिंगीय-कच्छमरिंगित- दोस अणाडिअ थडिअ-पविद्ध परिपिंडिअं च ढोत्ठगई ॥	17 (17 (17 (17 (17 (17 (17 (17 (17 (17 (
<b>ચ્</b> રુજી છે.	अंकुस कच्छभरिंगिअ, मच्छुवत्तं मणपउइं ॥२३॥	300000
ব্য ক্রা ব্যা ব্যা ব্যা ব্যা ব্যা ব্যা ব্যা ব্য	६ब्हार्थ-(१) अनादतदोष, (२) स्तब्धदोप, (३) अपविद्धदोप, (४) परिपिंडितदोप, (५) ढोलगतिदोप, (५) अंक्र- शदोप, (७) कच्छभारींगितदोप, (८) मत्स्योद्वर्तदोप, (९) मनःमदुष्टदोप. ॥ २३ ॥ विस्तारार्थः-जे व्यनादर पणे संच्रांत थको वांदे, ते पहेलो व्यनादत दोष, तथा जे जात्या-	11 CE 11

.

an an an	दिके करी धीठो यको स्तब्धपणुं राखतो वांदे, अथवा ऊब्य जावादिक चजर्जगीये करी स्तब्ध
S C D D D D D D D D D D D D D D D D D D	यको वांदे ते बीजो स्तब्ध दोष तथा जे वांदणां आपतो जामुतनी पेरे तुरत नासे, अथवा वां-
হাত্য	दणां देतो व्यरहो परहो फरे ते त्रीजो व्यपविद्ध दोष. तथा जे घणा साधु प्रत्ये एकज वांदणे
92/35	वांदे अथवा आवर्त्त, व्यंजन, अने आलाप ए सर्व एकठा करे, ते चोथो परिपिंक्ति दोष वली
SEC 23	जे तीमनी पेरे जबलतो एटले जपमी जपमी विसंष्टुल वांदे, ते पांचमो ढोलगति दोष. तथा जे
222	छंकुशनी पेरे रजोहरणने बे हाथे प्रहीने वांदे ते ठठो छंकुश दोष. तथा जे काचवानीपेरे रिंगतो
10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1	रिंगतो वांदे, ते सातमो कड्रजरिंगीत दोष. तथा जे उन्नो थइ बेसीने जलमांहेला माठलानीपरे
200	एकने वांदीने उतावलो ढपी फरी बीजाने वांदे, अथवा पाठ प्रडन्न करे अथवा रेचकावर्त्ते अनु-
2000	लोम प्रतिलोम वांदे, ते आठमो मत्स्योद्धर्त दोष. तथा कोइ साधु पोताथी एकादे गुणें हीन होय
No.	ते दोषने मनमां चिंतवतो ईप्पा सहित थको वांदे, ते नवमो मनःप्रडष्ट दोष जाणवो ॥ १३ ॥
Sec.	

For Personal & Private Use Only

୩୦୩୦୩୦୩୦୩୦୩୦୩୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	वेदिकावद्ध दोष जाणवो. तथा ए कांइक व्यमने जजरो एटले विद्यामंत्रादिक शीखवरो इत्यादिक लाखचनी बुद्धिये वांदे, ख्रयवा नही वांदीश तो रीश करशे एवुं जाणीने वांदे; ते व्यगीयारमो जजंत दोष जाणवो. तथा एमने नही वांदीश तो मुजने गठ्ठादिकथी बाहिर काढी मूकरो, व्य- यवा शापादिक व्याक्रोश करशे, इत्यादिक जयें करी वांदे, ते बारमो जयदोष जाणवो. तथा जो हुं जली रीते वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल ठे, माद्यो के, विधिप्रवोण ठे, एवी रीते वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल ठे, माद्यो के, विधिप्रवोण ठे, एवी रीते जाणपणाना गारवे करी वांदे, ते तेरमो गारव दोष जाणवो. तथा एमनी साथे महारे पूर्वे मित्राइ ठे, एवुं जाणी मित्रादिकनी व्यनुद्यिये वांदे, ते चौदमो मित्रदोष जाणवो. तथा जे झानदर्शनादिक कारण विना बोजा व्यन्य कारण जे वस्त्रादिक पदादिक मुफने देशे, एम उद्देशीने वांदे, ते पन्नरमो कारण दोष जाणवो. तथा जे चोरनी पेरे ठानो रद्यो यको वांदे एटले परथी पोताना व्यात्माने ठानो राखे, रखे कोइ मुठने उंखली लेशे तो माहारी खवुता थशे.
হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ হ	ज्ञजंत दोष जाणवो. तथा एमने नही वांदीश तो मुजने गन्नादिकथी वाहि्र काढी मूकशे, अ-
3	थवा शापादिक आक्रोश करशे, इत्यादिक जयें करी वांदे, ते बारमो जयदोष जाणवो. तथा जो
See	हुं जली रीते वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल ठे, माह्यो ठे, विधिप्रवोण
36	वे, एवी रीते जाणपणाना गारवे करी वांदे, ते तेरमो गारव दोष जाणवो. तथा एमनी साथे
92/25 	महारे पूर्वे मित्राइ हे, एवुं जाणी मित्रादिकनी अनुवृत्तिये वांदे, ते चौदमो मित्रदोष जाणवोः
ar a	तथा जे ज्ञानदर्शनादिक कारण विना बीजा व्यन्य कारण जे वस्त्रादिक पदादिक मुफने देशे, एम
200	जद्देशीने वांदे, ते पन्नरमो कारण दोष जाणवो. तथा जे चोरनी पेरे ठानो रह्यो थको वांदे
ୁହ	एटले परथी पोताना आत्माने ठानो राखे, रखे कोइ मुफने उंखखी लेशे तो माहारी लघुता थशे.
is and the second s	एटल पर्या पोताना आत्मान ठाना राख, रख फाइ मुजन उलला तरा ता गाहात जुला पत
250	एवी रीते पोताने जुपावतो वांदे, ते झोखमो स्तेन्यदोष जाणवो. तथा आहारादिकनी वेखाये

		30 CD
ৰ্য ০মা০ গ্ল	प्रत्यनीकपणे व्यनवसरे वांदे, ते सत्तरमो प्रत्यनीक दोष जाणवो. तथा कोधे धमधम्यो थको	छे गु०भा ० इ.स.
11 << 11	वंदना करे, अथवा कोधांत प्रत्ये वांदे, ते अढारमो रुष्टदोष जाणवो. तथा जे घणीये वार वांद्या,	
5005	तो पण प्रसन्न यता नथी तेम कोपमां पण यता नथी काष्टनी पेरे देखाय ढे, एम तर्ज्जना करतो	20.000 A
Nev:	वांदे, अथवा तर्ज्जनी अंगुलियादिके तर्ज्जना देतो थको वांदे, एटले कहे के एने रूषेथी शुं ? अने	90 (90 (90 (90 (90 (90 (90 (90 (90 (90 (
లు లు లు లు లు లు లు లు లు లు లు	तुठेथी पण शुं ? एम तर्क्ततो यको वांदे, ते उंगणीशमो तार्क्ति दोष जाणवो. तथा जे मायादिक	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1
	कपटें करी वांदे, अथवा ग्लानादिक व्यपदेश करी सम्यक् प्रकारे न वांदे, ते वीशमो शठ दोष	10-08-04 0-08-04
100 B	जाणवो. तथा हे गणि ! हे वाचक ! तमने वांदवाथी शुं फन्न थाय ? एवी रीते जात्यादिकनी	19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-1
95-32 1	हेखना करतो थको वांदे, ते एकवीशमो हिखित दोष जाणवो. तथा अर्छा वांदणां देइने वचमां	୍ଥିତ
	वली देशकथादिक विकथाउं करतो करतो छनिमाने वांदे, ते बावीशमो विपलितचित्तकं एटले	11 22 II
1. S.	विपलितचित्त दोष जाणवो ॥ १४ ॥	210 OL
10 C		30 C C C C C C C C C C C C C C C C C C C

For Personal & Private Use Only

Jain Education Internation

and and a contraction ढढूर-ढढूर दोष ं उणं-उण दोष दिइमदिइं-द्रष्टाद्रष्ट दोष तंमोअण-तन्मोचनदोष **ም/ሙ**ጥ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ መ/ሙ अणिद्वणालिद्व–आस्तिष्ट ना उत्तरचुलिअ–उत्तरचुलिका चुडलियं−चुडलिक दोष सिंगं-श्रंग दोष श्ठिष्ट दोष मूअं-मूक दोग च-वली दोष कर-करडोष दिव्मदिइं सिंगं, कर तंमोअण अणिद्धणालिदं ॥ いいてい ऊणं उत्तर चूलिअ, मूअं ढड्डर चूडलिअं च ॥ २५ ॥ 00 00 00 00 00 00 00 शब्दार्थ—(२३) द्रष्टाद्रष्टदोष, (२४) शुंगरोष, (२५) करदोष, (२६) तन्मोचनदोष, (२७) आश्ठिष्टानाश्ठिष्टदोष, (२८) ऊणदोष, (२९) उत्तरचूलिकादोष, (३०) मूकदोष, (३१) ढढूरदोष, (३२) चुडलिकदोष. ॥ २५ ॥ विस्तारार्थः-जे मुंगो रही ठानो मानो बेसे तेने कोइ बीजो जाणी जाय जे आ ठानो वेसी रह्यो वे तो वांदे तथा कोइ व्यपरनुं वचमां अंतर बते न वांदे, एम दीवुं छाणदीवुं करे, एटले कोइये दीनं, कोइये न दीनुं एम खाजतो थको अधारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो दृष्टादृष्ट दोष

1			8	
<b>ग्र</b> ०भा०	Strates	जाणवो. तथा जे पोताना मस्तकने एक देशे करी एटले मस्तकनुं एक पासुं गुरुने पगे लगामे	5~90 G	<b>गु</b> ०भा <b>०</b>
11 69 11	62.30	तथा मुझाहीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राखतो ठतो वांदे, ते चोवीशमो शृंग दोष	ગાર ગાર	
	୍ଟେହେ	जाणवो. तथा जे राजादिकना कर वेठनी पेरे जाणीने वांदे, पण कर्मनिर्क्तराने अर्थे वांदे नही,	30-CD	
	30-30-G	ते पच्चीज्ञमो करदोष जाणवो. तथा जे गुरुने वांदणां दीधा विना ढुटको नथी, केवारे एथी ढुटग्रुं?	920	
	ତ୍ୟୁ	एम चिंतवतो वांदे, ते ठवीशमो तन्मोचन दोष जाणवो. तथा सत्तावीशमा आश्ठिष्टानाश्ठिष्ट-	Sec 20	
	ট তেওঁ	दोषनी चउन्नंगी थाय ते छावी रीते के, हाथे करी रजोहरण छने मस्तक फरसे ए प्रथम नांगो	ગ્લર હ	
ж. С	anal.	ते ग्रुद्ध जाणवो. तथा रजोहरणने हाथ लगामे पण मस्तके हाथ न लगामे, ए बीजो जांगो,	જ્લ્લ	
	ಾಲ್	तथा मस्तके इाथ लगांभे पण रजोहरणे हाथ न लगांभे ते त्रीजो जांगो, तथा रजोहरण अने	চাল	
	19 19	मस्तक बेहने हाथ फरसे नही एटले लगामे नहीं, आश्ठेषे नही, ते चोथो जंग जाणवो. ए	seo.	11 69 11
	1900-1900-1900-1900-1900-1900-1900-1900	चार जांगामां प्रथम जांगो शुरू वे अने पावला त्रए जांगा अशुद्ध दोषावतार जाएवा. ए त्रए	- Josef	
	s circle		sever/	r

Jain Education Internat කිය

पाठ ञालावा छसं वांदीने पठी महोटे	पूर्ण कहेतो अको वांदे, ते राब्दे करी 'मञ्चएण वंद	ो अठावीशमो जए दो ।मि ' एम कहे, ते उंग	ो. तथा जे व्यावइयकादिकें ष जाखवो. तथा जे वांदणे णत्रीशमो उत्तरचूलिका दोष वांदे, ते त्रीशमो मकदोष
जाणवो. तथा जे घ	गलावाने अत्यंत महोटे स	वरें जचार करतो वांदे	, ते एकत्रीशमो ढढ़र दोष
	बुअमाना पर रजाहरण ब हामो चुमलिक दोष जाएव		रणने जमामतो यको वांदणां

 $\sim$ 

बत्तीस दोसपरिसुद्धं, किइकम्मं जो पउंजइ गुरुणं ॥ গ্রতমা ত सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमानवासं वा ॥२६॥वारंग १३॥ an an an an an शब्दार्थ-जे माणस ए उपर केंहेला बत्रीस दोष रहित गुरुने वांदणा आपे छे ते थोडा कालमां मोक्तने अथवा तो देवपदने पामे छे. ॥ २६ ॥ द्वा. १३ arance and and and and and विस्तारार्थः-ए पूर्वोक्त बत्रीश दोष तेणे करीने रहित थको परिशुद्ध निर्दोषपणे कृतिकर्म जे artistic and a second वांदणां तेने गुरुना चरण प्रत्यें जे जव्य प्राणी प्रयुंजे, एटले आपे हे ते प्राणी थोना कालमां निर्वाण एटले कर्मरूपदावानलनो उपशम जे मोक्त ते प्रत्यें पामे अथवा वैमानिक देवपणाना वास प्रत्ये पामे ॥ २६ ॥ एटले ए तेरमुं बत्रीश दोषनुं द्वार पूरुं थयुं, उत्तर बोल १५१ थया ॥ 90 1 हवे वांदणां देतां व गण जपजे, तेनुं चौदमुं घार कहे वे.

নৃতসাৎ

* **11** So

। । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	गुणा–गुण् विणओवयार क्राज्य माणाइभंग–मानादिकनो	•		લચ્છાજી
इस् द	<b>ध्च गुणा विणओ-व</b>	यारमाणाइभंग		ುಡುಣ ಸುಣ್ಗಡು ಪುಸು ಪ್ರಾಸು ಪ್ರಾಸ್ತು ಸುಣ್ಣ ಸುಣ್ಣ ಬರು ಪ್ರಾಸ್ತು ಸುಣ್ಣ ಸುಣ
કે ગુરુવાર્થ	यराण य आणा, सुअ - ए वांदणामां छ गुणो उपने छे. तेमां ? पालन ५ श्रुतधर्मनी आराधना अने ६ मो	विनयनो उपचार, २ मानादिव	तनो नाश, ३ गुरुप्रजा, ४ तीर्थक-	ತಾಲಾಕುತ್ತ
ुँ विस्त	पाल्म र कुतवनना आरावना अन र ना ।।रार्थः−ए वांदणाने विषे ठ क्ली )ए उपजे एटले जे विशेषें करी र	गुण जपजे ते कहे हे.	तेमां एक तो विनयोपचार	2.13 EV-18-07.12
	त्र्याराधवाने। प्रकार जाणवो. र्ब			1000 CD (D)

.

. .

S www.jainelibrary.org

मु २भा० ॥ ९१ ॥ ॥ ९१ ॥	चोथो समस्त कढ्याण आज्ञानुं पालवुं थाय धना आव, केमके श्रुत गुण तो परंपरायें एथी	नुं मूल रूप एवी श्रीर्त केमके जगवंते विनय म ज्ञान जे गुरु पासेंथी ज	यजन तेमनी पूजा सेवा थिंकर देवनी व्याझा तेनुं एस धर्म कह्यो ठे, तथा प णवुं ते पण वंदन पूर्वक द सिद्धपणुं पामीयें ए ठ गु पया ॥ १९ ॥	र आराधन थाय एटले गंचमो श्रुतधर्मनी आरा- तणवुं कह्युं ठे. तथा ठठो	জ্ঞাজজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞজ্ঞ
350 ST	र ह	वे त्रण गायायें करी गुरु	ध्यापनानुं पन्नरमुं द्वार क	हे हे.	10 CO CO
	गुरु-महोटा गुणजुत्तं-गुणेकरी युक्त तु–निश्चें	गुरूं-गुरुने ठाविज्ञा-स्थापन करीने अहव-अथञ्च	तथ्थ−तत्र, ते अख्खाइं–अक्षादिक नाणाइतियं–ज्ञानादि त्रण	· ·	11 9 7 IL
Jain Education Internatio	nal	For Pe	rsonal & Private Use Only		www.jainelibrary.org

ૡ૱ૡઽઌ૱ઌ૱ૡઽૡઽૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्ञा अहव तत्थ अख्खाई॥ अहवा नाणाइतिअं, ठविज्ञ सख्खं गुरुअभावे ॥२८॥ शब्दार्थ---म्होटा गुणे करीने युक्त एवा गुरुने स्थापन करवा. अथवा साक्षात् गुरुनो अभाव होय तो तेमने ठेकाणे थापनाचार्य स्थापन करवा. कदापि स्थापनाचार्य पण न होय तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनां पुस्तकादि उपकरण स्थापवां २८ विस्तारार्थः-महोटा विशेष प्रतिरूपादि बत्रीश गुणें करी युक्त एवा निश्चें गुरुने स्थापन करीने तेनी आगल प्रतिक्रमणादि किया करीयें अथवा सांझात् पूर्वोक्त गुणयुक्त एवा गुरुनो छन्नाव बते तत्र एटले ते गुरुने स्थानकें छक्तादिक स्थापीने तेनी छागल किया करीयें ते अक्तादिक स्थापनाचार्य न होय तो ज्ञानादिक त्रण एटले एक ज्ञान, बीजुं दर्शन, त्रीजुं चारित्र, ए त्रणेना उपकरण जे पोथी नोकरवाली प्रमुख ठे तेने स्थापीने तेनी आगत किया करीयें परंतु छगुरुने विषे गुरुबुद्धि आणीने तेनी आगल किया करवी नहीं. केमके आगममां अगुरुने

विषे जे गुरुबुद्धि आणवी तेने अत्यंत आकरुं लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं हे. ॥ २७ ॥ খতমাত 4 9211 अरूखे-अक्ष चित्तकम्मे-चित्रकर्म कटे−काष्ट गुरुठवणा-गुरुना स्थापना पु्थ्ये−पुस्तक सभ्भावं-सद्भाव वराडए-वराटके इत्तर-इत्वर वा-अथवा अ−वल्री असभ्भावं-असदभाव जावकहा–यावत् कथिका अख्खे वराडए वा, कठ्रे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ॥ सप्भावमसप्भावं गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥ २९ ॥ शब्दार्थ-अक्ष, ( स्थापनाचार्य ) कोडा, डांडा, पुस्तक अथवा गुरुमूर्तिनी स्थापना करवी. स्थापना बे प्रकारनी छे. एक सद्भाव अने बीजी असदभाव. गुरुस्थापना पण बे भेदे छे. तेमां एक इत्वर एटले पुस्तक आदि थरेडा वालनी अने बीजी यावत्कथिका एटले मूर्तिं विगेरे बहुकालनी. ॥ २९ ॥ विस्तारार्थः-छक्तादिक ते कया? ते कहे हे, एक छक्त ते चंदन प्रसिद्ध मालानी स्थापना ģ

Jain Education Internationa

अनुयोग फार सूत्रयी लखीयें छैयें, " से किंतं ठवणाणुण्णा जणं वा व्यर्क वा वरामए वा कठक- म्मे वा पोड्ठकम्मे वा लेपकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा संघा- तिकम्मे वा एगे व्यणेगे वा सप्नाত वा व्यसप्नाठ वा ठवणा ठविक्कत्ति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना तिकम्मे वा एगे व्यणेगे वा सप्नाठ वा व्यसप्नाठ वा ठवणा ठविक्कत्ति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना करवी. ते वे प्रकारें जाणवी ते कहे ठे.एक सद्जावस्थापना व्यने बीजी व्यसद्जाव स्थापना तिहां गुरुनी मूर्ति तथा प्रतिमादिकनी व्याकार सहित जे स्थापना ते सट्जाव स्थापना जाणवी, व्यने व्याकार विना व्यक्तादिकनी जे स्थापना करवी ते व्यसङ्गाव स्थापना जाणवी, वली गुरुनी स्था- पना ते एक इत्वर व्यने बीजी यावत् कथिका तेमां इत्वर ते थोमा काल लगें स्थापना रहे, जेम नोकरवाली व्यने पुस्तकादिकनी जे स्थापना ठे, ते स्थापना किया करवाने वखतें थापे ठे, माटें	୵ଌ୲ଽୢଌୄ୵ଌଽ୶ୠ୵ଽଡ଼୵ୡଡ଼୵ୠ୵ୠ୵୶ଡ଼୵ଌଽ୶ଡ଼୵୶ଡ଼୵୶ୠ୵ <b>ୠ</b>	जाणवी, तेना अजावे वराटके एटले त्रण खींटीना कोमानी स्थापना करवी, अथवा काष्ठ मांमा मांमी प्रमुख चंदनादिकनी पाटी आदिकनी स्थापना करवी, पुस्तकनी स्थापना करवी, वसी तेना अजावें चित्रकर्म ते गुरुनी मूर्तिनां चित्राम आलेख, अथवा गुरुनी काष्ठनी प्रतिमा ए पाठ श्री अनुयोगघार सूत्रथी लखीवें ठैथें, " से किंतं ठवणाणुण्णा जर्ण वा अस्के वा वरामए वा कठक- म्मे वा पोड्ठकम्मे वा लेपकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा संघा- तिकम्मे वा एगे अणेगे वा सम्राउ वा असम्राठ वा ठवणा ठविक्तति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना करवी. ते वे प्रकारें जाणवी ते कहे ठे.एक सद्जावस्थापना अने बीजी असद्जाव स्थापना तिहां गुरुनी मूर्ति तथा प्रतिमादिकनी आकार सहित जे स्थापना ते सट्जाव स्थापना जाणवी, अने आकार विना अक्तादिकनी जे स्थापना करवी ते आसज्जाव स्थापना जाणवी, वली गुरुनी स्था- पना ते एक इत्वर अने बीजी यावत् कथिका तेमां इत्वर ते थोमा काल लगें स्थापना रहे, जेम
	NO CONTRACTOR CONTRACTOR	अस्त पूर्वि सेना आसमा आसर साहरा ज रवाता से सुपना र सुपना आखवा, अस आकार विना छक्कादिकनी जे स्थापना करवी ते छसझाव स्थापना जाणवी, वली गुरुनी स्था- पना ते एक इत्वर छने बीजी यावत् कथिका तेमां इत्वर ते थोमा काल लगें स्थापना रहे, जेम नोकरवाली छने पुस्तकादिकनी जे स्थापना ढे, ते स्थापना किया करवाने वखतें थापे ढे, माटें

गु ०भा० म ९३ ॥ कुछक्क	ज्यां सुधी ते किया करीयें, तिहां सुधी ते स्थापना रहे, जो दृष्टि तिहांनी तिहां राखीयें, तो रहे, नही तो वल्ली फरी बीजी स्थापना स्थापवी पफे, ते इत्वर कालनी स्थापना जाणवी. अने बीजी यावत्कथिक स्थापना ते घणा काल पर्यंत रहे, ते प्रतिमादिक तथा व्यक्तादिकनी बे प्रकारनी स्थापना करीयें ठेयें. ए स्थापनानी व्याज्ञातना पण गुर्वादिकनी पेरें टालवी ॥ १७ ॥	୵ଊୄଊ୵ଊୄ୶ଽ୶୶୶୶୶୶୶୶୶ <i>୷</i>	ગુંગ્મ{ જ
๚ ๛ ๚ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛ ๛	ग्रह्मि-ग्रह्मो विरह दंसणध्यं-देखाडवाने माटे उनणा-स्थापना ग्रह्मचरहोन उपदेश निणविरहंमि-श्री निनेश्वरनो तिणविंव-जिनविंव ग्रह्मवरहंमि ठथणा, गुरुवएसोव दंसणद्थं च ॥ जिणविरहंमि जिण विं-ज सेवणामंतणं सहलं ॥ ३०॥ शब्दार्थ-ग्रह्मो अभव होय त्यारे ग्रुह्मो उपदेश देखाडवा माटे स्थापना छे. जेम इमणा जिनेश्वरनो विरह छवा	କ୍ଷକ୍ତର ହେଇଥିଲେ ଅନ୍ୟାର ହେଏହା ହେଏହା ହେଏହା ହେ	॥ ९३ ॥

to the the server server as an arrange of a server the જી તેમ જ તેમ જ તેમ જ તેમ जिनविंगनी सेवना करी आयंत्रण करवुं ते सफल थाग छे तेम. ॥ ३० ॥ विस्तारार्थः-इवे स्थापना शा कारण माटें स्थापत्री ? ते कहे हे. जेवारें साहात् गुणवंत गुरुनो विरह एटले अनाव होय, तेवारें गुरूपदेशोपदर्शनने अर्थे एटले गुरुनो जपदेश देखामवाने माटें स्थापना स्थापनी जोइयें इहां जानार्थ ए ठे जे. स्थापनानी आगल किया करतां ते एवं जाणे जे गुरुज मुफने आदेश आपे हे, ते महारे इड़ाकारि कही प्रमाण करवुं. केम के, गुरुना المرقع المارية छनावे जे धर्मानुष्टान कातुं, ते शून्यन्नाव गणाय. इवे दर्षांत कई हे. जेम इमणां श्रीजिनेश्वरनो विरह ठतां श्री तीर्थकरना बिंब एटले प्रतिमानुं सेवन करीने आमंत्रण करवुं. जे हे जगवंत ! तमे मुजने संसार समुझ्यकी तारो, मोक्त आपो इत्यादिक जे कहेवुं, तेसफल याय वे. ए दृष्टांते इहां पण श्रीगुरुना तिरहें गुरुनी स्थापना पण सफल होय ठे. ए गुरुस्थापनाना एकज बोलनुं पन्नरमुं घार चयुं. उत्तर बोल १५७ चया ॥ ३० ॥ इवे बे प्रकारना व्यवप्रहनुं शोलमुं घार कहे हे. 00000

म्स •भा० बा ९४ ॥	चउदिसि-चार दिशा अहुट-साडात्रण सपरपरुखे-स्व अने परपक्ष नकष्पए-न कल्पे गुरुग्गहो-गुरुथकी अवग्रह तेरस-तेर अणणुत्रायस्स-गुरुनी अनुद्रा तथ्य-तेटला इट-ए करे-हाथनुं सया-सदा लीघा वीना पविसेउ-मवेज्ञ करवाने	যু <b>০</b> মা ০
NAD ಮಿ ಮಾಡು ಮಾಡು ಮಾಡು ಮಾಡು	चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुड तेरस करे सपरपर्ख्ये ॥ अणणुन्नायस्स सया,न कप्पए तत्थ पविसेउ॥३१॥ दारं॥१६॥ अब्दार्थ—आ जिनशासनमां गुरुथी अवग्रह चारे दिशामां पुरुष पुरुषने अने पुरुष तथा स्नीने साडा त्रण हाथ अने तेर हाथ जाणवो. ते अवग्रहमां प्रवेश करवाने आज्ञाविना क्यारे पण न कल्पे. ॥ ३१॥	
	तर हाव जागवा. त अवग्रहमा प्रवेश करवान आज्ञावना क्यार पण न कर्ल्य. ॥ २९ ॥ विस्तारार्थः-ए श्रीजिनशासनमांहे गुरुथकी छवग्रह चारे दिशाने विषे ख छने परपद्द छा- श्रयी छनुकमे केटलो केटलो होय, ते कहे ठे. तिहां एक सामा त्रण छने बीजो तेर हाथनो जाणवो. तेमां स्वपद्द ते पोतामां साधु साधुमां छने बीजा श्रावक जाणवा. तथा परपद्द ते साधु	です。 11 く <mark>8</mark> 11
Jain Education Internationa	For Personal & Private Use Only	www.jainelibrary.org

अने साध्वी तथा श्राविका जाणवी. तेमां साधु साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे सामा त्रणहाथ वेगलो अवग्रह होय अने गुर्वादिकथी साध्वी तथा आविकाने तेर हाथ वेगलो अवग्रह होय. तेमज साध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे सामा त्रण हाथनो अवग्रह होय तेटला अवग्रहमांहे गुरुनी अनुज्ञा लीधा विना सदा निरंतर प्रवेश करवाने वली न कल्पे. ए बे अवग्रहनुं शोलमुं ð दार थयुं. जत्तर बोल १६१ थया ॥ ३१ ॥ हवे कांदणांना सूत्रांना व्यक्तरनी संख्यानुं सत्तरमुं घार तथा पदनी संख्यानुं अढारमुं द्वार कहे **बे**. गुणतीस-ओगणत्रीस चउरो-चार सव्ब−सर्वे पण-पांच छट्टाण-छ स्थानकने विषे सेस-शेष तग-त्रण-पय-पद आवरसयाइं-आवस्सिआएथी अडवन्ना-अद्वावन्न बारस-बार पय-पद दुग-बे इगुणतीसं-ओगणत्रीस

Boxlo II Crd II Crd III	पणतिग बारस दुगतिग, चउरो छठठुाण पय इगुणतीसं॥ गुणतीससेस आव-स्सयाइ सव्वपय अडवन्ना॥३२॥दारं॥१९ बद्धर्थ-( मयम वंदनक सूत्रना अक्षर २२६ छे तेमां छष्ठ अक्षर वसी एक अने एक अक्षर पचीस छे.) पांच, त्रण, बार, वे, त्रण अने चार. एव छ त्यानकमां ओगणत्रीस पद छे. वाकीना ओगणत्रीस पर आवास्सियाएयो जाणवा. सर्व मठी अहावन पर पाय छे. विस्तारार्थः-प्रथम वंदनक सूत्रना छद्धर ( ११६ ) ठे. तेमां लघु छद्धर ( १०१ ) ठे, छाने गुरु छद्धर तो इड्ढामिथी मांकीने बोसिरामि पर्यंत पचीहा ठे ते लखे ठे, ड्वा ज्ञा ग्ग ज्ञो प्य कं ता कं क क ती झ डा क क क व व डो व स्मा क स्स क प्या. ए पचीहा छत्तर गुरु जाणवा एटखे सत्तरमुं वंदनक सूत्रना छत्तरोनुं द्वार थयुं. उत्तर वोख ( ३०९ ) थया. हवे छढारमुं वंदनक सूत्रना पदनी संख्यानुं घरा गाथाना छर्थे कहे ठे. तिहां ' विज्ञ-	AND AND CONTRACTOR CONTACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONT
Jain Education Internal	ional For Personal & Private Use Only	www.jainelibra

255	क्तयंतं पदं ' एटले विन्नक्ति जेना व्यंतमां दोय तेने पद कहीयें ते इहां वंदनक सूत्रना ठ स्थानक मध्ये सर्व मली व्यठावन पदनी संख्या ठे, तिहां प्रथम स्थानकमां इड़ामि, खमासमणो वंदिछं, जावणिक्जाए, निसीहियाए, ए पांच पद जाणवां. तथा बीजा स्थानकमां व्यणुजाणह, मे, मिछग्गहं, ए त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक मध्यें निसीहि, व्यहो, कायं, काय संफासं, खमणिक्जो, जे, किलामो, व्यप्यकिलंताणं, बहुसुजेण, जे, दिवसो, वइकंतो. ए बार पद जाणवां, तथा चोथा स्थानकमां जत्ता, जे, ए बे पद जाणवां. तथा पांचमा स्थानकमां जवणिजं, च, जे, ए त्रण पद जाणवां, तथा ठठा स्थानकमां खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइकमं, ए चार पद जाणवां, एम ठ स्थानकने विषे उंगणत्रीश
e e e	क्तबंतं पदं ' एटले विन्नक्ति जेना श्रंतमां होय तेने पद कहीयें ते इहां वंदनक सूत्रना ठ स्थानक 👹
ସହ ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି	मध्ये सर्व मली अठावन पदनी संख्या ठे, तिहां प्रथम स्थानकमां इडामि, खमासमणो वंदिजं,
200	जावणिजाए, निसीहियाए, ए पांच पद जाणवां.
2000	तथा बीजा स्थानकमां ऋणुजाणह, मे, मिछग्गहं, ए त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक
	मर्ध्यं निसीहि, छहो, कायं, काय संफासं, खमणिज्जो, जे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुजेण, 📳
কে বহু	ने, दिवसो, वइकंतो. ए बार पद जाणवां, तथा चोथा स्थानकमां जत्ता, ने, ए बे पद जाणवां.
ୢୢୢ୶ୄୢୄ	तथा पांचमा स्थानकमां जवणिजं, च, न्ने, ए त्रण पद जाणवां, तथा ठठा स्थानकमां खामेमि, 🏼
	पद जाणवा.
ୢ୵ଌ୶ଡ଼	तथा रोष रह्यां जे उंगणत्रीश पद ते आवस्तिआएथी मांमीने वोसिरामि पर्यंत थाय,
وترقصون	तथा रोष रह्यां जे र्रंगणत्रीश पद ते आवस्तियाएथी मांमीने वोसिरामि पर्यंत थाय, त्रि तेवारें सर्वे मलीने पद अठावन्न थाय हे. इवे ए पाहला र्रंगणत्रीश पद कही देखामे हे. आव-
Sec.	

<b>गु०भा</b> ० <b>भ ९६</b> ॥ अ	स्सियाए पक्किम्मामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए मणटुकक्राए वयटुककाए कायटुककाए कोहाए माणाए मायाए लोन्नाए सबकालियाए सबमिछो- वयाराए सबधम्माइकमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कर्ठतस्स खमासमणो पनिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ए र्ठगणत्रीश पद थयां. आ ठेकाणें कटलाएक जंकिं चिमिछाए ए एक पद माने ठे तथा केटलाएक आवस्सियाए ए अनिष्ठित पद ठे माटे नथी	জক্ষ য়০মা ও
Var. 42 43 43 44 45 45 45 45 45 45 45 45 45 45 45 45	गणता. तेमाटे बहुश्रुत कहे ते प्रमाण जाणवुं. ए छठावन पदनुं छढारमुं घ्रार थयुं. उत्तर बोल ४४५ थया ॥ ३१ ॥ हवे वांदणांना दायकना स्थानकनुं उंगणीशमुं घ्रार कहे ठे. इच्छाय-इच्छामि खगासमणो च-वळी अवराइखामणा-अपराधनु वालाना अणुन्नवण्णा-अणुजाणह जत्त-जत्ता मे खमाववुं वालाना अच्वाबाई-अव्याबाध जवणाय-जवणिज्जं चमे वंदणदायरस-वांद्रणा देवा-	₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩

अणुन्नवण्णा, अन्नाबाहं च जत्त जवणाय॥ अवराहखामणाविय, वंदणदायस्य छडाणा॥३३॥वरांगरणण शब्दार्थः--इच्छामि खमासमणा आदि पांच पदनुं प्रथम स्थानक, अणुजाणहमे मिउग्गहं, ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक " निसीही " आदि बार पदनुं त्रीजुं स्थानक जत्ताभे ए वे पदनुं चोथुं स्थानक " जवणिज्जंचभे " ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक '' खामेमिखमासमणों ?' आदि चार पदनुं छढ़ं स्थानक ए वंदननां दायकनां छ स्थानक जाणवां. ॥ ३३ ॥ विस्तार। र्थः-इह्यामि खमासमणो वंदिज जावणिकाए निसीहित्याए लगे पांच पदनुं प्रथम स्थानक जाणवुं, तथा अणुजाणह मे मिछगाहं ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक, तथा ञ्चव्याबाध एटले निराबाध पणुं पूठवा अर्थें निसीहियी मांमीनें दिवसो वइकंतो पर्यंत बार पदोनुं त्रीजुं स्थानक जाणवुं, तथा जत्ता जे ए वे पदोनुं चोथुं स्थानक, तथा जवणिक्तं च जे ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक, तथा अपराधनुं खमावनुं एटले खामेमि खमासमणो देवसियं व इकम्मं ए चार

ૡૢૢૢૢૢૡૡઌૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ

Contraction of the second s

गु॰भा॰ गु॰भा॰ ॥ ९७॥ जाएवां. ॥ ३३ ॥ ए ठ स्थानकर्नु जैगएीशमुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल ४५१ थया. हवे ए ठ स्थानकमां ठ गुरु वचन होय तेनुं वीशमुं द्वार कहे ठे. छंदेण-छंदेण तुजंपि-तुमने पण अहमवि-हुंपण वयणाइ-वचन	5 छि इ इ इ इ द े द े पुरुभार् दे
द्वे द छ रवागनमा छ उठ वयम हाय (तु पारानु द्रार पर छ. छंदेण-छंदेण अणुजाणामि-आज्ञा आपुं छं तहत्ति-तथेति, तेमज छंदेणणुज्जाणामि, तहत्ति तुप्मंपि वद्यु एवं ॥ छंदेणणुज्जाणामि, तहत्ति तुप्मंपि वद्यु एवं ॥ अहमवि खामेमि तुमं, वयणाई वंदुणारिहस्स ॥३४॥ शब्रार्थ:-छंदेण, अणुनाणामि, तहत्ति, तुभ्पंषिबद्दर, एवं, अहमति खामेमि तुमं. ए छ वचन वांदणा देवा योग गुरुनां जाणवां. ॥ ३४ ॥	あ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ ゆ

ୁକ୍ତ ୧୭୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	विस्तारार्थः-जिहां इड़ामि खमासमणो वंदिउं जावणिक्राए निसीहियाए एटलो पाठ शिष्य कहे, तेवारे गुरु जो वांदणां देवरावे तो ठंदेण ए पाठ कहे, अने वांदणां न देवरावे तो "तिविहेण " एवो पाठ कहे, ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं, तथा ' छाणुजाणह मे मिठग्गहं ' ए पाठ शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे याज्ञा आपुं ठुं. ए बीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा निसीहि इत्यादिक जेवारे शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे तथेति ए त्रीन्तुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जिवारे जत्ता ने इत्यादि ज्ञांसे शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे तथेति ए त्रीन्तुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारे जत्ता ने इत्यादि शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे तुमने काजे पण वर्ते ठे ? ए चोथुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जे वारे जवणिक्रं च जे शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे एमज, तुं पूठे ठे तेमज, ए पांचमुं गुरु- वचन जाणवुं. तथा जेवारे खामेमि खमासमणो शिष्य कहे, ते वारे गुरू कहे हुं पण खमावुं बुं तुम प्रत्ये. ए ठठुं गुरुवचन जाणवुं. ए ठ वचन ते वांदणां देवा योग्य छाचार्यादिकनां जाणवां, एटले वीशमुं ठ गुरुना प्रतिवचननुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ४५९ थया ॥ ३४ ॥	ଅକ୍ଟେମ୍ବର ଭୁମ୍ୟା ଭୁମ୍ବର ଅନ୍ତର ହାଇ ହାଇ ହାଇ ହାଇ ହାଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋଇ ହୋ
নচাক্ত বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু বহু		th an an an an an an

I ONTO	पुरओ पख्खासन्ने, गंता चिडण निसिअणाय मणे ॥ आलोयण पडिसुणणे, पुत्वालवणे अ आलोए ॥३५॥	I o HI	
Jain Education International	For Personal & Private Lise Only	www.iainelibr	arv

22	गमणागमण पहेछं आलोवे, १२ बोलाव्या छतां न बेलि, १२ कोइने गुरुनी पहेला बोलावे, १४ गुरु छत्रा बीजा
	ो भिक्षादि आहार आलोवे. ॥ ३५ ॥
	विस्तारार्थः-प्रथम गुरुने आगल चालतां शिष्यने विनयनंगादिक लागे माटे ए अकारणे
স্থা	<b>शातना थाय परंतु जो मार्गा</b> दिकनी विषमता होय
गुरु	थी छागल चालवुं पने तो ते छकारणमां गणाय नही. बोजी गुरुने पनले बेढु पासे गमन
करे	गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी एमज गुरुने आसन्ने एटले अमकतो गंता
	खें चाले पठवाने इकनो चाले तो श्वास, ठींक, श्ठेष्म, उध्रसादि दोष रूप आशातना थाय,
	। ए त्रेण व्याझातना जेटले जूमिजागे गुरुनी साथे चालतां चकां घाय, तेटलेज जूमिजागे
गुरु	नी पासे उन्ना रहेवाथकी पण पूर्वोक्त त्रण व्याशातना थाय. एम त्रण स्थानके गुरुनी पासे
बेस	ता थकां पण पूर्वोक्त त्रण आहातना थाय. एवं नव थइ. दशमी आचमने एटले गुरूनी
	ये उच्चार जुमिये गयां थकां शिष्य जो व्याचार्यथकी पहेला व्याचमन लीये व्यथवा गुरूनी

য়৽৸৽ য়৽৸৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽	र्दिशी गुर्वादिक सार्थ थाय, बारमी गुर्वादि कोए जागे ठे? एम आपे तो आशातना आव्या होय अथवा आग्गातना थाय, वर्ष	यवा हाथवाणी लीये तो आज्ञातना थाय. अगीयारमी उच्चारादिक बहि ये आव्या पत्नी गमणागमणाथी जो गुरूथकी प्रथम आलोये, तो आज्ञातना क वर्केरा तथा रत्नाधिक जे होय ते रात्रिये बोलावे जे कोण सूतो ते ? वचन सांजलतो जागतो थको पण अण सांजलतानी पेरे पात्नो प्रत्युतर नहीं याय, तेरमी गुरू आदिकने आला ग्वा वोलाववा योग्य एवा कोइ आवकादिक ा आवेला ते तेने आवर्ज्जवा माटे गुरु बोलाव्यानी पूर्वेज पोते बोलावे तो ली चौदमी अज्ञान पान खादिम स्वादिम ए चारे आहार रूप जे जिद्दा म कोइ बोजा ज्ञिष्यादिक आगल आलोइने पत्नी गुरू आगले आलोचे तो	ಲ ಡಾ. ಲಾ. ಡಾ. ಲಾ. ಡಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲಾ. ಲ
જી તારુ લઇ તેરુ લઇ તેરુ લઇ તેરુ લઇ તેરુ બેર તેરુ અંગ	तह-तेमज उवदंस-देखाडे	२२ ग निमंतण-निमंत्रण आयणेण-सरस आहार पोते तद्दा-तेमज खद्ध-खवरावे जमे अपडिसुणणे-अप्रतिश्रवणे	11 <b><b><b>49 11</b></b></b>

For Personal & Private Use Only

Jain Education International

## िर्फ−र्छ तूम-तमे खद्धतिअ-कठीणवचन तज्जाय-तर्ज्जनाकरे नोसुमणे-समनो न थाय જી આ આ બાદ છે. આ ગામ આ तथ्थगए-त्यांथीज तह उवदंस निमतण, खद्बा ययणे तहा अपडिसुणणे॥ खद्धत्ति य तत्थगए, किं तुम तजाय नो सुमणे ॥३६॥ म्रब्दार्थः---तेमज १५ आहारादि बीजाने देखाडे, १६ बीजा साधुने प्रथम बोलावीने पछी गुरुने बोलावे, १७ गुरु विना वीजाने मिष्ट खत्ररावे, १८, पोते मिष्ट खाय, तेमज १९ ग्रह बोलावे छता, न सांभले, २० ग्रहने कठण वचन बोले, २१ पोताने संथारे बेठा उत्तर आपे, २२ शुं कहो छो ? एम कहे, २३ तमे करो, एम कहे, २४ तिरस्कार करे, २५ गुरुनो धर्मे।परेश सांभली हर्षित मनवालो न थाय. ॥ ३६ ॥ विस्तारार्थः-पन्नरमी तेमज वली अज्ञानादिक चार जे लाव्या होय ते प्रयम बीजा यतिने देखानीने पत्री गुरूने देखाने तो आशातना थाय, शोखमी तेमज अशनादिक चार खाव्या होय es es es

मु॰भा॰ मु? ॰ ०॥ मा? ॰ ०॥	तेनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करे के आ जात पाणी लेशो ? पठी गुरूने निमंत्रणा करे तो आशातना थाय. सत्तरमी अशनादिक चार सूरि प्रमुख साथें जिक्तायें आणीने पठी गुर्वादिकने पूठया विना जेनी साथे पोतानुं मन माने तेने मधुर जाणीने खवरावे तो आशातना लागे, अढा- रमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक साथे जमतो थकों अशनादिक स्निग्ध सरस होय ते पोतेज वावरे, ते आशातना जाणवी. यष्ठक्तं दशाश्चतस्कंधसूत्रे ॥ सहेअसणं वा राइणिएसेहिं चुंजमाणे तठं सेहे खर्ऊ खद्वं मायं मायं उसढं उसढं मणुएणं मणुएणं मणामं मणामं निद्वं निद्धं लुकं झुकं आहारिता हवइ आसायणा सेहस्सत्ता ॥ तेमज ठंगणीशमी गुरू जे वारे साद करे तेवारे अप्र- तिश्चवणे एटले अणसांजलतानी पेरें गुरूने पाठो जुवाव आपे नही, ते आशातना जाणवी. ए	। য় <b>ে সা</b> &
∧ছেওে∕ক গ্ৰ∕ক গ্ৰ∕ক গ্ৰ∕ক	आशातना पूर्वे कही ठे, परंतु ते रात्रिसंबंधी शयन करवा पठीनी जाणवी, अने आ ते दिवस संबंधि धिठाइपणे तथा अनान्नोग पणे जाणवी. वीशमी रत्नाधिक तथा गुर्वादिक जेवारे साद करे, तेवारे तेने खर एटखे अत्यंत कर्कश महोटे खरे करी परुत्तर घणा वाले, कहे के अरे	11 ? • • 1

in the second	जाइ खाधो रे जाइ खाधो ! केम केम मूकता नथी. इत्यादिक कठिन वचन बोले, अथवा आ कोश गाढस्वरादिक ग्रुरूने करावे. ते आशातना जाणवी, वली एकवीशमी ग्रुर्वादिके बोलाव्यो थको त्यांथीज एटले पोताने ठेकाणे बेठो थकोज उत्तर आपे, परंतु ग्रुरूनी समोपे आवीने	
New Service	कोश गाडस्वरादिक गुरूने करावे. ते व्याशातना जाणवी, वली एकवीशमी गुर्वादिके बोलाव्यो 🏼	
2020	थको त्यांथीज एटले पोताने ठेकाणे वेठो थकोज उत्तर आपे, परंतु गुरूनी समोपे आवीने	}
ಬ್ರಾಟ್ ಗ್ರಾಮ್ ಮಾಡು ಮಾಡು ಮಾಡು ಮಾಡು ನಿರ್ದಾ	जवाब न आपे तो आज्ञातना थाय. बावीशमी वली गुर्वादिकें बोलाव्यो थको कहे के ग्रुं ठे ते ? तमें कहो. कोण कहेवरावे ठे ? ग्रुं कहो ठो ? इत्यादिक विनयहीन वचन बोले, ते आज्ञा- तना जाग्रवी, तथा त्रेवीशमी वली गुर्वादिके बोलाव्यो थको कहे के तूंज कां नथी करतो ? एवी रीते पोताना पूज्यने एक वचनांत बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थकामुजने प्रेरणा करो ठो ? इत्यादिक वचन कहे ते आज्ञातना जाणवी. चोवीशमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक जिष्यने कहे के तमें समर्थ ठो, पर्याये लघु ठो, माटे वृद्धनं तथा ग्लाननं वैयावच करो तवारे ते पाठो जवाब	
9.65V2	ते ? तमें कहो. कोण कहेवरावे बे ? ग्रुं कहो बो ? इत्यादिक विनयहीन वचन बोले, ते आज्ञा-	
Sec.	तना जाणवी, तथा त्रेवीशमी वली गुर्वादिके बोलाव्यो थको कहे के तूंज कां नथी करताे ? एवी रीते पोताना पूज्यने एक वचनांत बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थकामुजने प्रेरणा करो ठो ? इत्यादिक वचन कहे ते आशातना जाणवी. चोवीशमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक शिष्यने कहे के तमें समर्थ ठो, पर्याये लघु ठो, माटे वृद्धनुं तथा ग्लाननुं वैयावच करो तवारे ते पाठो जवाब आपे के जो तमेज लाज जाणो ठो, तो तमे पोते केम नथी करता ? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार ठे ते शुं लाजनो अर्थी नथी? तो तेमनी पासे करावो. तेवारे वली	
10 A B	रीते पोताना पूज्यने एक वचनांत बोलावे आथवा कहे के तमे कोए अकामुजने प्रेरणा करो हा ?	
	इत्यादिक वचन कहे ते आज्ञातना जाणवी. चोवीज्ञमी गर्वादिक तथा रत्नाधिक जिष्यने कहे	
es es	के तमें समर्थ ठो, पर्याये लघ ठो, माटे बुद्धनं तथा ग्लाननं वैयावच करो तवारे ते पाठो जवाब	
30×39	आपे के जो तमेज लाज जाणो हो, तो तमे पोते केम नथी करता ? तथा तमारो बीजो पण	
55 C	आपे के जो तमेज लाज जाणो ठो, तो तमे पोते केम नथी करता ? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार ठे ते हुं लाजनो अर्थी नथी ? तो तेमनी पासे करावो. तेवारे वली	2
18		

गु०भा० गु०भा० ॥१०१॥	गुर्वादिक तेने कहे के हे शिष्य ! तमे आक्सु न थार्ट. ते वारे वली गुरूने कहे के तमे ते छुं अमनेज दीठा ढे ? एवी रीतनां वचन बोलीने गुरूनी तर्ज्जना करे ते आशातना जाणवी. पच्ची- शमी गुर्वादिक धर्मकथा कहेता होय तेवारे शिष्य छमणो थाय परंतु सुमनो न थाय, गुर्वादि-	য়৽৸৻৵
য়৽য়৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽	कना गुणनी प्रशंसा करे नही छने कहे के तमे गृहस्थने विशेष प्रकारे समजावो ठो, ते रीते छमने समजावता नथी व्यथवा गुर्वादिक तथा रत्नाधिकनो जे रागी होय तेने देखीने टुमणो थाय ते छाशातना जाणवी ॥ ३६ ॥ नोसरसि-नथी सांभरतो अणुढिभा-अणउठेथके थारे पग लगाडे समासणेयावि-गूरुने सम ना कइच्छित्ता-कथानो च्छेद करे कही-कहे चिठ-बेसे आसने परिसंभित्ता-सभानो भंग करे संथारपायघट्टग-गुरुना सं- उच्च-उंचे आसने	·
	नो सरसि कहं च्छित्ता, परिसंभित्ता अणुडियाइ कहे॥ संथार पाय घट्टण, चिट्टुच समासणे आवि ॥३ आकारणहरण	।। १० <b>१</b> ।।

शब्दार्थः२६ तमने नथी सांभरतुं १ एम कहे, २७, कथानो च्डेइ करे, २८ सभानो भंग करे, २९ गुरुये कहेली वात फरी पोते कहे, ३० गुरुना संथारे पग ऌगाढे, ३१ गुरुनी घटपा संधारा के आसन उार वेसे, ३२ गुरुथी उंचा आसने बेसे, ३३ गुरुना समान आसने बेसे. ॥ ९७ ॥	Weinster
हिस्वरमर्गः-ज्वीसमी जेवारे गरू कथा करता दोग ते तारे कहे के तमने ए अर्थ नथी	in the second second
गुर्वादिक कथा करता होय तेनी वचमां पोतानुं माहापण जणाववाने अर्थे सन्य सोकने कहे के ए कथा हुं तमने पठी समजावीश एम कही कथानो छेद करे, ते आशातना जाणवी, अठावी- शमी गुरू कथा कहेता होय अने तेने सन्य सोक हर्षवंत हृदयथी सांजसतां होय ते सन्य	NI DE LE DE
संजरतो ? या अमुकनो अर्थ एम न होय. एवी रीते कहेतां आशातना लागे. सत्तावीशमी गुर्वादिक कथा करता होय तेनी वचमां पोतानुं माहापण जणाववाने अर्थे सच्य लोकने कहे के ए कथा हुं तमने पठी समजावीश एम कही कथानो छेद करे, ते आशातना जाणवी, अठावी- शमी गुरू कथा कहेता होय अने तेने सच्य लोक हर्षवंत हृदयथी सांजलतां होय ते सच्य जनोने देखतां ठतां गुरूने कहे के एवमी शी कथा कहो ठो ? हमणां जिन्हानो अवसर ठे, जो- जनवेला पोरिसि वेला ठे, एम कही पर्षदानो जंग करे तो आशातना थाय, उंगणत्रीशमी गुर्वा- दिक धर्मकथा कही रह्या पठी पर्षदा अणुठठे थके तेज कथाने पोतानुं माहापण जणाववाने	

ন্থ্র ০মা০ ঝাং০২॥	है। हेतुये जे गुरूये अर्थ कह्यो होय तेहिज अर्थ वली विशेषथी विस्तारी चर्ची देखामीने कहे तो	ৣ ৻৽৸ ৻৽ ৽
	श्र आशातना आय, त्रीशमी गुरूनी शय्या तथा संथाराने पोताना पादादिके करी संघट्टे तेने खमावे	& <b>গু</b> ০মাত
]]] २०२॥	हैं नही तो आंगातना थाय, इहां शय्या ते सवांग प्रमाण जाणवी, अने संथारो ते अढी हाथ	10 13
	है प्रमाण जाणवो, अथवा शय्या ते जर्णादिवस्त्रमय जाणवी, अने संचारो ते दर्जादिक तृणमय	\$ }
	है। प्रमाण जाणवों, अथवा शय्या ते जर्णादिवस्त्रमय जाणवी, अने संथारो ते दर्जादिक तृणमय है। जाणवों, एक त्रीशमी गुरूनी शय्या संथारो तथा वेसणादिकने विषे तिष्ठेत् एटले वेसे, अथवा	(B)
		20
	े बेसे, अथवा अधिक बेसणे बेसे तथा गुरू जेवां वस्त्र पहेरे, तेथकी अधिक मूल्यवालां वस्त्रादिकनो	Noral I
	आलोट असन्य शरीरने अवयर्व करी फरसे, तो आशातना थाय, बत्रीशमी गुरूथी उँचे आसने बेसे, अथवा अधिक बेसणे बेसे तथा गुरू जेवां वस्त्र पहेरे, तेथकी अधिक मूल्यवालां वस्त्रादिकनो परिजोग करे, तो आशातना थाय, तेत्रीशमी गुरूने समान आसने बेसे, अथवा गुरूना जेवां वस्त्रादि होय, ते वांज समान वस्त्रादिकनो परिजोग करे तो आशातना थाय ढे. इहां अपिशब्द निश्चयवाचक ढे. तथा गरूने आगल अने पाढल तथा बे बाजये बेसवादिकनी आशातना तो	Vare
	वस्त्रादि होय, ते वांज समान वस्त्रादिकनो परिज्ञोग करे तो आज्ञातना थाय हे. इहां अपिशब्द	2. CON
	है निश्चयवाचक ठे, तथा गुरूने आगल अने पाठल तथा वे बाजुये बेसवादिकनी आशातना तो	
	पूर्वे कहेली ठे ए तेत्रीस आशातना टालतो थको शिष्य विनयी कहेवाय, ते शिष्य वांदणां देवा	2007 II 2007 II 2007 II

For Personal & Private Use Only

restration	संपूर्ण थयुं. सर्व बोल	(४ए०) थया ॥	ाय ॥ ३७ ॥ ए तेत्रीश आव	
toot.	हवे के विधिनुं ब	ावीशमुं हार कहे हे.	एटले पनिक्रमणुं करवानी	सामग्रीना खनावें तथा
do ab	वे प्रतिक्रमण करणादि	पर्याप्तिने अन्नावे प्रन	गतें अने संध्याये वांदणां	बे देवां. ते बेह विधिनो
yates (	अनुकम जाखवो, ते व	× .		
જે છે. આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ	इरिया−इरियावहि कुसुमिणुरसग्गो–कुसुमिणदु-	चिइवंदण-चैत्यवंदन	आलोयं राइयं आलोए वंदण-वांदणा <b>खामण-अ</b> भुद्विभोमिखामवुं	चउथ्योभ-चारयोभ वंदन
2.46V	टांगा उत्त	TTTTTTTTTTT	चित्रवंत्रण गचि	אשתי איז אי
and the second	રારવા ભુભુ	ामणुरलग्गा,	चिइवंदण पुत्ति	वदणा लाय ॥
atros	वंरण ज्याम	णा तंत्रता चंत्र	र चउ त्थोभ दु स	וועצוו זנכודב
1 à 1	न जुन रनाम	ण पद्रण, राष	र पुछ त्याम छु स	जाजा॥२८॥

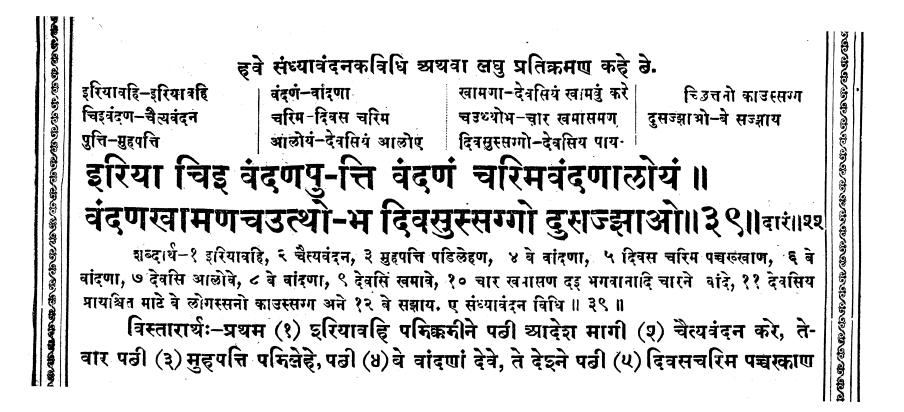
शब्दार्थः—१ इस्यिावाहे, २ कुम्रुमिण दुसुमिणने। काउस्सग्ग, ३ चैत्यवंदन, ४ म्रुहपत्ति पडिलेहग, ५ वे वांदणां, ६ राइयं आछोवे, ७ वे वांदणा, ८ खमासमण, ९ वांदणा १० पच्चरुखाण, ११ चार खमासमण अते १२ वे सज्जाय. एम अनुक्रमे करे ते मभात वंदन विधि जाणवो. ॥ ३८ ॥

विस्तारार्थः-तिहां प्रथम प्रज्ञातनो वंदनक विधि कहे ठे. इहां पहेली (१) इरियापथिकी प्रतिक्रमीने, पठी (१) क्रुसुमिण दुसुमिण उमाविणी निमित्ते चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, ते वार पठी (३) आदेश मागीने, चैत्यवंदन करे, पठी (४) आदेश मागीने मुह्पत्ति पमिलेहे पठी (५) वांदणां बे आपे, तेवार पठी (६) राइयं आलोए, तेवार पठी (९) वे वांदणां आपे. पठी (ठ) अप्जुठिउमि आप्निंतर राझ्यं खामे, पठी (७) वेवार वांदणां आपे, पठी (१०) पचस्काण करे, पठी (११) चार खमासमण पूर्वक जगवन् आचार्यादिक चारने थोज वंदन करे, पठी (१२) सद्यायसं दिसाहुं, सद्याय करं, ए बे खमासमणें बे आदेश मागी सम्नाय करे. ए प्रज्ञातवंदनक शिध जाणवो ॥ ३० ॥

10 AD AD AD

गुःभा०

ತಾರ್ಮಾತಾರ್



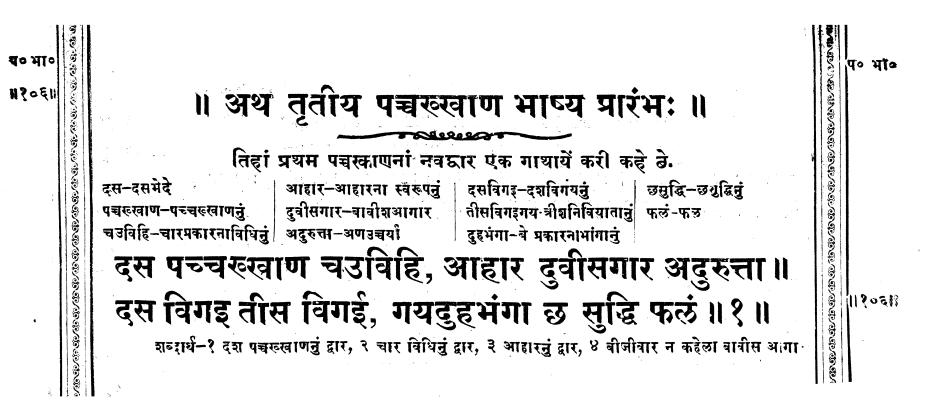
<b>गु०भा०</b> ॥१०४॥	करे, पठी (६) बे वादणां देइने (९) देवसियं आलोए. पठी (०) वे वांदणां देइने, (ए) देवसियं खामवुं करे, पठी (१०) चार खमासमणां देइ जगवानादिक चारने वांदी पठी आदेश मागीने (११) देवसियपायब्वित्तविसोइण्डं चार लोगस्सनो काठस्सग्ग करी आदेश मागीने (११) वे खमासमणे सद्याय करे, एटले एक खमासमणे सड्फाय संदिसाहुं, बीजे खमासमणे सज्जाय करुं. इति संध्यावं दनकविधिः समाप्तः ए वावीशमुं द्वार प्राज्ञातिकवंदन तथा संध्यावंदन मली वे विधियें करी वे प्रकारनुं कह्युं. उत्तर ज्नेद ४ए१ थया ॥ ३ए ॥				(११)   । मणे   । यात्रं   ।
and and an	एयं-ए किइकम्म-वांदणा विहिं-विधि एयं किइव	जुं नंता−प्रयुंजता चरणकरणं−चरणसित्तरी	आउत्ता-आयुक्त साहू-साधु खवंति-क्षयकरे ता चरण करण मवसंचियमणंत	अणेगभवसंचिय-अनेव अणंतं-अनंताकालना माउत्ता ॥	संचित रू भव- इ. भव- इ. भव- इ. भव- ह. भव- ह. भव- ह. भव- ह. भव- ह. भव-

शब्दार्थ- ए प्रमाणे वांदणानी विधिने करता चरण सित्तरी अने करण सित्तरीए सहित एवा साधु शे अनेक भव-मां मेलवेलां अनंतां कर्मने खपावे छे ॥ ४० ॥ विस्तारार्थः-ए पूर्वे कही आव्या जे बोल, तेणे करी कृतिकर्म जे वांदणां, तेनो जे विधि anarinaran arang a जे व्यवहार ते प्रत्यें प्रयुंजतां यकां चरणसित्तरी अने करणसित्तरी तेना गुणे करी आयुक्त एटले सहित एवा जे साधु निर्मंथ चारित्रीया ते व्यनेक जवनां संचित एटले कोटि जन्मनां उपार्जन करेलां अने जेनो दुरंत विपाक हे एटले अनंता काल पर्यंत जोगवाय एवां अहेहपणे रहेनारां जे कर्म अथवा अनंत कालनां उपार्क्तन करेलां एवां जे कर्म वे ते कर्मोप्रत्यें तुरत शिघपणे केपवी निराकरण करे हे, अर्थात क्वय पमाके हे ॥ ४० ॥ विवरियं-विपरीतपणे अप्पमइ-अल्पमति मए-महाराथी गीयथ्था-गीतार्थ भव्य-भव्यप्राणी च−वली जं-जे अणभिनिवेसि-अकदाग्रही an ar an ar an ar ar बोहथ्यं-बोधनेअर्थे अमच्छरिणो-मच्छररहित भासियं–भाख्युं इह-ए

अपमइभव्वबोहत्थं, भासियं विवरियं च जमिह मए ॥ गुःभाव যু০মা০ तं सोहंतु गीयत्था, अणभिनिवेसि अमच्छरिणो ॥४१॥ 1120411 ू शब्दार्थ-अल्पमति एवा भव्य जीवोना बोधने अर्थे में आहिं जे कांड़ विपरीतपणे कहेलुं होय तेने कदाग्रह रहित BARANOVIN DE CONTRACTOR CONTRACTOR अने मत्सर रहित एवा गीतार्थ पुरुषो सुधारी लेगो ॥ ४१ ॥ विस्तारार्थः-आ वांदणांनो विचार ते अहप हे मतिजेइनी एवा जे जव्य प्राणी तेमना बोध ज्ञानने अर्थें जांख्यो परंतु आवइयक बृहद्रुत्यादिक ग्रंथने विषे एनो अत्यंत विस्तार बे. रयांथी विशेषें जोवुं, इहां संक्षेपथी कह्यो हे. ते मांहे जे छनान्नोगें विपरीतपणे वली जे ए नाष्यमांहे महाराथी कहेवाणुं होय तेने वली अकदाग्रही एटले हठवादरहित एवा अने मत्स-रपणाना परिणामें रहित, गुणना रागी एवा जे गीतार्थ एटले गीतना अर्थ तेना जाण, अर्थात् सूत्रार्थना जाण तथा निश्चय व्यवहारने विषे कुराल होय ते शोधजो, अर्थात् गुद्ध करजो. ए

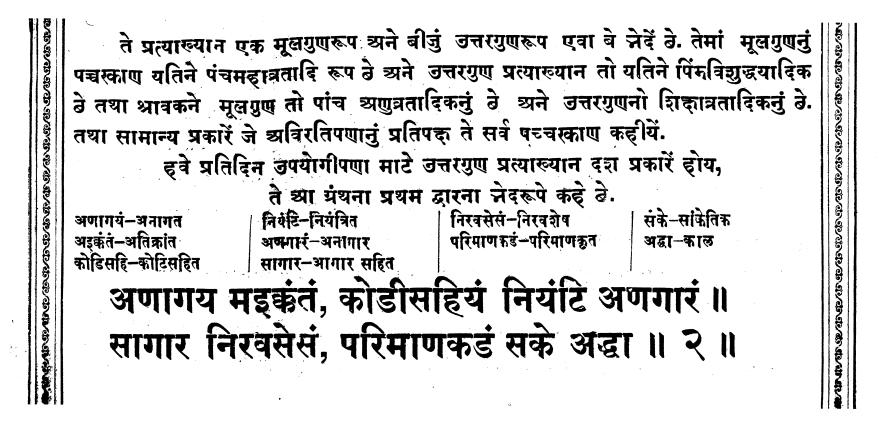
	धण्श वोलें करी श्रीगुरुने वांदणां देवानो विधि कह्यो ॥ आंहीं "इड़ामि खमासमणो वंदिजं जावणिजाए निसीहिआए " इत्यादिक गुरुवंदन सूत्र जो पण प्रंथकारें मूल पाठमां गाथा रूपें कह्युं नथी, तो पण प्रसंगथी तेनो अर्थ लखवो जोइये, परंतु प्रतिक्रमणने विषे सुगुरु वांदणांमां ते अर्थ सविस्तर लखायेक्षे होवाथी आ ठेकाणे लख्यो नथी. ॥ इति श्री गुरुवंदनक जाष्य अर्थ सहित सपूर्ण ॥ ४१ ॥ हवे एवा गुणवंत गुरुवस्यें वांदणां देइने तेमना मुखयी यथाशक्तिये पचस्काण लेवुं, केमके 'झानस्य फलं विरतिः ' एवुं वचन ठे. वली आगम मध्ये कह्युं ठे के, " पचस्काणेणं जंते जीवे किं जणइ पचस्काणेय य आसव दाराइंनिरुजति " तेमाटे पचस्काण करवानो महोटो लाज ठे. ते पचस्काण शुं ? अने ते केटला प्रकारनां पचस्काणो ठे ? इत्यादिक जाणवा माटे त्रीजुं	anaranaranaranaranaranaranaranaranarana
of starter	ठे. ते पचस्ताण ग्रुं ? अने ते केटला प्रकारनां पचस्काणो ठे ? इत्यादिक जाणवा माटे त्रीजुं पचस्काण जाण्य कहे हे.	Nerter
		B CANE

*****22



୩୫୫୫ ହେଏହ ହେଏହ ହେଏହ ହ	रंतुं द्वार, ५ दक्ष विगयतुं द्वार, ६ त्रीस निर्वीयातातुं द्वार, ७ मूल्यण उत्तरग्रगना भेदवुं द्वार, ८ छ शुद्धिवुं द्वार, ९ प- बख्लाणना फल्रबुं द्वार ॥ १ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम पच्चस्काणना दद्दा जेद ठे, तेनुं द्वार कहेशे. वोजुं पच्चस्काण करवाने विषे पाठ विशेषरूप चार प्रकारनो विधि ठे तेनुं घार कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना आहारना विषे पाठ विशेषरूप चार प्रकारनो विधि ठे तेनुं घार कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना आहारना स्वरूपनुं घार कहेशे. चोथुं पचस्काणमां अदिरुक्त एटले बीजी वारनां अण उचरयां अर्थात् एकवार कह्यां तेनां ते फरी जुदां जुदां पचस्काणमां आवे, ते न लेवां एवा बावीश आगारनुं घार कहेशे. पांचमुं दश विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं घार कहेशे. ठठुं त्रीश विकृतिगत एटले ठ मूल विगयना त्रीश निवीयाता थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे. सातमुं एक मूल गण पचस्काण तथा बीजुं उत्तरग्रण पचस्काण एम बे प्रकारना जांगा पचस्काणना थाय, तेनुं घार कहेशे. आठमुं पचस्काणनी ठ शुद्धिनुं स्वरूप निश्चेथी, कहेवुं तेनुं घार कहेशे. नवमुं पचस्काण करवाथी इहलोक तथा पग्लोक मक्षी बे ठेकाणे फल थाय तेनुं द्वार कहेशे ॥ १॥ ए
30 A	विस्तारार्थः-प्रथम पचस्काणना दश नेद हे, तेनुं द्वार कहेशे. बोजुं पचस्काण करवाने
serve .	विषे पाठ विशेषरूप चार प्रकारनो विधि हे तेनुं घार कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना आहारना
serves.	स्वरूपनुं द्वार कहेरो. चोथुं पचरकाणमां अदिहक्त एटले बीजी वारनां अण उचरयां अर्थात् 💡
april 1	एकवार कह्यां तेनां ते फरी जुदां जुदां पचस्काणमां आवे, ते न लेवां एवा बावीझ आगारनुं 💈
๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛	हार कहेशे. पांचमुं दज्ञ विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं द्वार कहेशे. बहुं त्रीश विकृतिगत 🖉
and and a second	एटले ढ मूल विगयना त्रीश निवीयाता थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे. सातमुं एक मूल गण
arateva	पच काण तथा बीजुं उत्तरगुण पच काण एम बे प्रकारना जांगा पच काणना थाय, तेनुं दार
ate a	कहेशे. आठमुं पचस्काणनी व गुद्धिनुं स्वरूप निश्चेथी, कहेवुं तेनुं द्वार कहेशे. नवमुं पचस्काण
Evet	करवाथी इहलोक तथा पग्लोक मली बे ठेकाणे फल थाय तेनुं द्वार कहेरो ॥ १ ॥ ए
serve	
181	

2		6		
<b>দ০ সা০</b> ॥ १০৩॥ •	मूल नवदारनां नाम कह्यां. एनां उत्तरघार आंहीं विवरयां नथी, पण प्रंयांतरे नेवुं कह्यां ठे, अने अहीं पण शरवालो आपतां नेवुं थाय ठे, ते आगल विस्तारे कहेशे. इहां प्रथम पच्चस्काण शब्दनो अर्थ करे ठे. तिहां एक प्रति, बीजुं आ, अने त्रीजुं आ ख्यान, ए त्रण पद मलीने प्रत्याख्यान शब्द थयो ठे. तेमां अविरतिपणानां स्वरूपप्रसे प्रति एटले प्रतिकूलपणे करी आ एटले आगार मर्यादा करणस्वरूपे करी आख्यान एटले कहेवुं कथन	<b>MADANANANANANANAN</b> ANANAN	ঀ৽ भाত	
യുന്നു ബുഹ്യായം അംബംഹം അംബം പ്രംബം പ്രംബം പ്രംബം പ്രംബം പും	करवुं ते ठे जेने विषे, तेने प्रत्याख्यान कहीये. छायवा प्रति एटखे छात्मस्वरूप प्रत्ये छा एटखे छन्निव्यापीने करण एटखे करवुं एटखे छात्तांसारूप ग्रण छात्माने जपजे एम करे तेनुं जे छाख्यान एटखे कथनरूप ते ठे जेने विषे तेने प्रत्याख्यान कहीयें. छाथवा प्रतिके० परलोकें छाके० किया योगार्थे छुन्नाग्रुन फल कथनरूप जेने विषे ठे तेने प्रत्याख्यान कहीयें. एम घणां व्याख्यान ठे.	ುನು ಭಾರ್ಯನಾರ್ ನಾರ್ಯನಾರ್ ನಾರ್ಯನಾರ್ ನಾರ್ಯನಾರ್	11 30011	



बा० २० इ.२०८३।		शब्दार्थ-? कारणे आगल्यी तप करवुं, २ पाइल्यी करवुं, ३ एकनी जोडे बीजुं करवुं, ४ घारी राखेला दिवसे करवुं, ५ आगार रहित करवुं, ६ आगार सहित करवुं, ७ चार आहारादिकचुं करवुं, ८ वस्तु विगेरेचुं परिमाण करवुं, ९ संकेते करंवुं अने १० काल पचल्खाण करवुं ॥ २ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम जे कारण विशेषे व्यागलयी करे पण ते दिवसे न करी शके ते व्यनागत पच्चस्काण ते पर्युषणादिक पर्व व्याव्यानी पहेलांज एवुं विचारे जे ग्रुरु, ग्लान, शिष्य व्यने तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च महारे करवुं पमरो, तेवारे व्याकुलताने लीधे महारायी व्यष्टम्यादिक तपश्चर्या यह शकरो नही, तो मने लाजनी हानि यहो माटे ते पर्व व्याव्यानी पहेलांज ग्रुरु पासे पच्च स्काण लहने तप करे ते व्यनागत जावी पच्चस्काण. बीजुं व्यतिकांत पचस्काण ते पूर्वोक्त रीते पर्युक्षादिक पर्व व्यतिक्रम्या पठी तेहिज कार्या दिकने हेतुये जे पाठलयी व्यष्टम्यादिक तप ग्रुरुपासे पचस्काण लइने करे, तेने व्यतिक्रांत व्यतीत पच्यस्काण कहीये.	ସହ ୧୦୦୧୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	प०भाक ॥१०८४
	3	1 - 1	2	1

S. S	त्रीज़ं कोटिसहित पच्चख्खाण ते प्रज्ञाते उपवास प्रमुख व्रत करीने वसी बीजा दिवसना	50×50×60
/ଅବସ୍ଥା ଏହି ସହ/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହି/ଏହିଏହ	प्रज्ञात समये पण तेहिज उपवासादिकनुं पचस्काण करे, एम उछादिकनी पण कोटि एटले संधि	1 1 1
સંસ્કૃ	मेलवे एटले वठादि एक पचस्काण पूर्ण थयानी वखतें बीजुं पचस्काण पचस्के. एवा कोटिकमें	arateres
<b>3</b>	जे तप करवुं, ते कोटि सहित तप अथवा नीवी, एकाशनादिकने विषे पचस्काण पारया पहेलां	66~36
<b>1</b>	आंविलादिक करवुं ते, एटले एकनो अंत अने बीजा पचरकाणनो आदि ते कोटिसहित पच-	30~30
1000	स्काण जाण्यवुं.	8
10 40 A	चोधुं नियंत्रित तप ते पुष्ट नीरोगी तथा ग्लानपणे होय तो पण एवुं चिंतवे जे अमुक दिवसे	ಕಾ ಲಾ ಗಾ ಗ್ರಾಗತಿ . ಬಿ
200 Q	मारे अमुक वह अठमादिक तप करवुं. पत्नी गमे तेवुं कारण जपजे तो पण ते निर्धारेखा दिवसें	জন্ম
SER	ते तप अवइय करे, पण मूके नही. एम नियतकालें ते पचख्खाण चौदपूर्वी दशपूर्वी, जिनकल्पीने	9 <b>9</b> 9
1	विषे प्रथम वज्ररूषननाराच संहननने विषे हतुं. हमणां व्युन्निन्न ययुं ठे. थिविर पण ते वेलायें	ଜଣ୍ଡ
E.C.W	ते तप करता इता, परंतु इमणां ते पचच्खाण नथी. ए नियंत्रित पचच्खाण जाणवुं.	2. 2.
20		3

•

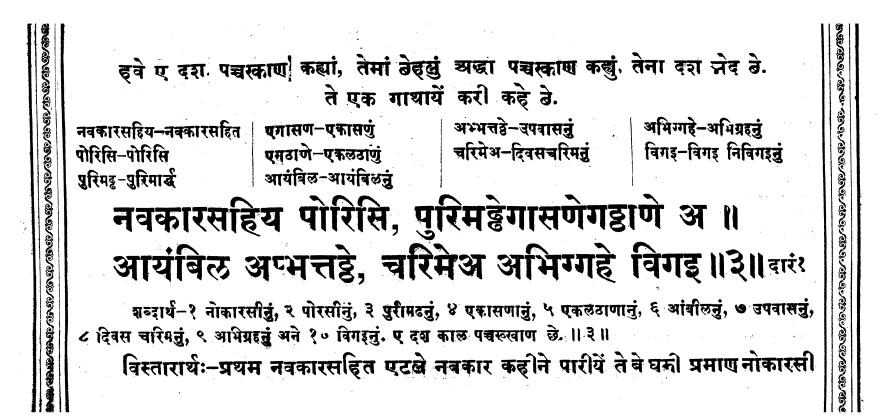
3		60 C C C
प०भा० 🦻	पांचनूं अनागार तप ते " अन्नवणनोगेषं " तथा " सहसागारेणं " ए बे आगार तो सर्वत्र	হ-৬ ব <b>০মা</b> ০ [:] জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্মক জন্ম জন জন্মক জন জন জন জন জন জন জন জন জন জন জন জন জন
11 <b>१</b> ०९11 %	होयज ठे, परंतु महत्तरागारादिक आगार जे पचल्खाणने विषे न होय, ते आगार रहित पच-	v
50 C	ख्खाण कहीयें. ए पण पहेला संघयणनो साथें व्युक्रेद थयुं.	200 L
	बहुं आगार सहित ते महत्तरागारादि आगारसहित पश्चख्लाण करवुं, ते आगार सहित	2000 C
<b>ত</b> ক্ষে	पचस्काण जाणवुं.	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
2.35A	सातमुं निरवशेष तप ते समस्त	S. 10
S 400 A	सर्वनुं पचस्काण करीयें. ते निरवशेष पचल्खाण जाणवुं.	1 V 200
100 C	ञ्चाठमुं परिमाणकृत तप पच्चरुखाण ते दातीनी संख्या करे तथा कवलनी संख्या करे तथा	No.
Sec	घरनी संख्या करे, एटले दातीनुं परिमाण तेमज कोलीयानुं परिमाण तथा घरनुं परिमाण जे	ું શરવ્યા
16 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19	जिकादिके करवुं, अथवा मग अमद प्रमुख द्रव्यादिकें जे जिकानो परित्याग ते सर्व परिमाण-	જે મારે ૦૬ા જે સ્ટેઝ જે સ્ટેઝ
Reso	कृत पच्चख्वाण जाणवुं.	
506-26		

ଏହା	नवमुं सांकेतिक पच्चख्खाण ते इहां गृह तेणें करी जे सहित वर्त्त तेने गृहस्य कहीयें, ते	
30 CD	संबंधी प्रायः ए पच्चस्काण गृहस्थने होय अथवा चिन्ह जे अंगुष्टादिक तेणे करी होय ते संकेत	
() () () () () () () () () () () () () (	कहेवाय. एटले कोइएक श्रावक पोरिसी आदिक पच्चरकाण करीने बाहेर कोइ कामें अथवा	
6	केत्रादिके गयो होय तिहां पोरिसीनो काल पूर्ण ययो अथवा घरमांज वेठो ठे अने पोरिसीनो	200
<u></u>	काल पुर्ण थयो हे, परंतु नोजन सामग्री तैयार थइ नयी ते वखत विचार करे जे एटला काल	200
R. C.	वचमां महारो अपच्चस्काणपणे रहेरा, ते श्रावकने योग्य नथी. एम चिंतवी एक अंग्रुट सहिव्यं	9: CS
200	पच्चस्कामि एटले जिहां सुधी मुठोमां अंग्रठो राखुं त्रां सुधी महारे पच्चस्काणनी सीमा हे.	10 A
200	एमज बीजुं मुइसहियं पच्चकामि एटले मुठो बांधी राखुं तिहां सुधी. त्रीजुं गंठसहियं पचस्का-	S
Noo.	मि एटले गांठ बांधी राखुं तिहां सुधी. चोथुं घरसहिव्यं पचलामि. पांचमुं प्रस्वेदसहियं ते ज्यां	
6	सुधी छंगना परसेवाना बिंदु निकन्ने, त्यां सुधी. ठठुं उस्साससहियं पचस्कामि. सातमुं थिबुक	
200 C	सहियं पचस्कामि एटबे स्तिबुक ते ज्यां सुधो पाणीना बिंझ्या नाजनादिकें तथा करादिक सूके	
8	ताह्य पंचरकाल एटज रत्तजुरु त ७२। छुपा गणाग पहुंचा मालगार्थि तपा गरेतर्थ सूर्ण	22
12		8

		New J
শণ শা০ 💡	तिहां पर्यंत जाणवुं. आठमुं जोइरकसहियं पचस्कामि एटले ज्योतिष्क जे दीवा प्रमुखनी ज्योति	क्षक क क क क क क क क क क क क क क क क क क
]] ? ? 0    8	रहे तिहां सुधी संकेत करे. ए आठ प्रकारें नवमुं सांकेतिक पचस्काण कहेवाय ठे जे माटें कह्युं	हैं प॰भा॰
S. 100	ठे के ॥ अंग्रुह मुट्टी गंठी, घर सेज जस्तास थिबुक जो इस्को ॥ पचस्काण विचाले. किच मण-	No.
ab at	जिग्गहे सुचियं ॥ १ ॥ तथा कोइ पोरिसी आदि पचस्काण न करे अने केवल अजिग्रहज करे	1000 A
AD CO	तो गांठ प्रमूख न ठोके त्यां लगें पद्यसाण तेने थाय, तेथी ए पद्यसाण जेमबीजा पद्यसाणोनी	NEW 13050 136
30 S	वचमां थाय ठे, तेम छन्निग्रहने विषे पण थाय ठे. तथा साधुने पण कोइक स्थानकें ज्यां सुधी	100 A
	मंमख्यादिकें गुर्वादिक न व्याव्या होय त्यां लगें व्यथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तेवारें	2×30
ೲಣುಗೂ ಗಾಗೂ ಗಾಗೂ ಗಾಗೂ ಗಾಗೂ ಗಾಗೂ	पण ए अन्निग्रह संकेत पच्चस्ताण थाय.	\$200 11850 11850
Series Series	दरामुं अर्छा ते काल मुहूर्त्त पौरुष्यादिक प्रमाणने पण उपचारथी जाणी लेवो. ते काल	2 11 8 ? 0 11
STATE OF THE STATE	पचरकाण जाणवुं ॥ १ ॥	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1
the second se		

Jain Education International

www.jainelibrary.org



प०भा० ॥१११॥	पच्चकाण कहीयें, बीजुं पहोर दिवससुधी पचछाण ते पोरिसि कहीयें, एमां साहुपोरिसी सार्ड एटले दोढ पहोरनुं पचस्काण पण जाणवुं. त्रीजुं पुरिमार्द्ध, ते वे पहोर प्रमाणनुं पचख्लाण. चोथुं एकाज्ञाननुं पचस्काण व्यने पांचमुं एकलठाणुं. जिहां मूख तथा एक जमणा हाथ विना वीजुं	ଏହା ହା ଏକ ଏକ ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି	प०भाळ
র- ୧୬୦ ୧୮୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫୦ ୧୫	अंग हाले नही ते ठठुं आयंबिल पच्चकाण. सातमुं अजकार्थ एटले उपवासनुं पच्काण. आ ठमुं दिवसचरिम अथवा जवचरिमादिरूप जाणवुं. नवमुं अजिप्रह पचख्लाण ते अमूक वस्तु तेवारेज खाउं जेवारे अमुक करुं ? इत्यादिक अजिप्रह करे ते. तथा दरामुं विगई निविगइनुं पच्चकाण जाणवुं. ए दशे पच्चकाणोने कालनी मुख्यता ठे माटे अद्धा पचस्काण कहीयें ॥ ३ ॥ इहां शिष्य पूठे ठे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चकाण कद्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं का- लमान न कद्युं माटे नोकारसी जे ठे, ते अजिप्रह पचस्काण कहेवाय पण काल पच्चस्काण थह शके नहीं ? ल्यां गुरु जत्तर कहे ठे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द आवयो माटे सहित शब्दे काल-	୫୦୧୫୦୫୦୯୦ ୧୦୦୯୦ ୧୫୦୫୦ ୧୫୦୫୦ ୧୫୦୫୦ ୧୫୦୫୦	1135518
NEVER	y ?	2007	

www.jainelibrary.org

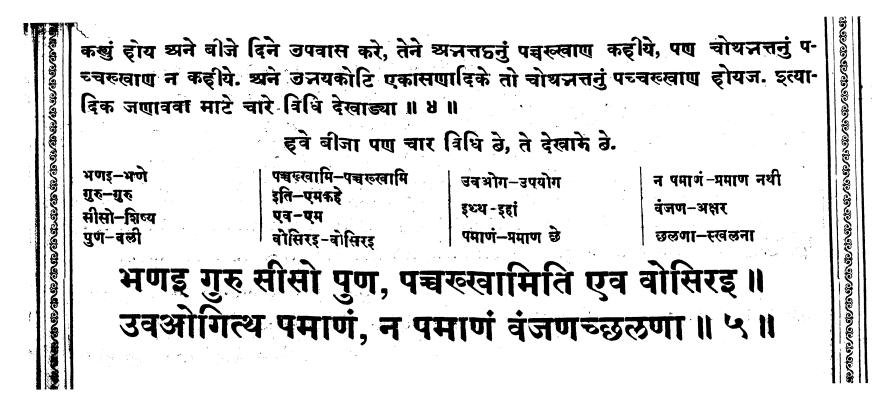
\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$		2
92 ) 93	प्रमाण जाणवुं, अने खहप आगार वे माटे खहपकाल जाणवो.	500
95-36	तेवारे शिष्य पूठे ठे के पोरिसी तो एक प्रहर काल प्रमाण ठे माटे ए नवकारसीने विषे	
62/26	मुहूर्त्तेद्रयादिक काल केम न लीधो ? केम के मुहूर्त्तेद्रयादिक काल पण पोरिसीची छाढप वे माटे	anarana.
	वे घनीनुंज मान शा वास्ते लीधुं ?	200
3	गुरु उत्तर कहे हे, के हे शिष्य ! तें कह्युं ते सत्य हे, परंतु सर्वथी स्तोक काल छाद्रापच	200
	स्काणनो एक सुहूर्त्तज ढे, सुहूर्त्तद्धा खद्धा इति वचनात् ते माटे एनुं एक सुहूर्त्तज	Sec.
	कालमान जाणवुं.	Sec
	इवे ए नवकारसी पच्चरकाण, सूर्थोदय पहेलांज करवुं अने नमस्कारे करी पारवुं, अन्यथा	See
	जंग लागे, नोकारसी करवा पढी आगल पोरिसीयादिक थाय, परंतु ते विना न थाय अने यद्यपि	Sec.
	नोकारसी विना पोरिसीयादिक करे तो काख संकेत रूप जाणवो. तथा वखी वृद्ध संप्रदाये एम	Nev.
	कहे ठे जे नोकारसी पचस्काण जे ठे, ते रात्रे च उविदारादिक पचस्काणना तीरणरूप ठे एटखे	ener.
		Sal
11		S

÷.,

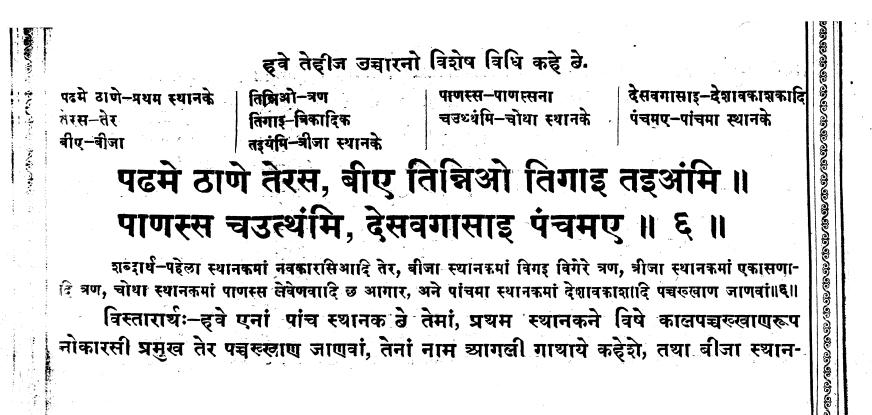
ण०भा० ११११२॥	शिक्तारूप <b>डे. इत्यादिक घणो विचार डे ते प्रवचनसारो</b> खारग्रंथनी वृत्तिष्ठी जाणवो. छहींयां विहोषे करी लख्यो नथी.	
1.000 C	हवे पुरुष प्रमाण ढाया जेहने विषे थाय ते पोरिसी जाणवी '' आसाढमासे छपया " इत्यादिक पाठ श्री उत्तराध्ययनादि सूत्रथी जाणवो.	
	ए रीते नोकारसी, पोरिसी, दिननुं पूर्वार्ड ते पुरिमकृ, एकासण, एकलठाणुं, आयंबिल, उपवास, दिवसचरिम, अनिमद अने विगइ एवंदरा पच्चस्काणना नामनुं ए प्रथमद्वार थयुं. उत्तर जेद दरा थया ॥ ३ ॥	
	हवे बीजे दारें पचस्काण करवानो पाठरूप विधि चार प्रकारें कहे हे.	11?२२1?
	डग्गएसूरे-डग्गएसूरे नमो-नमोकार सहिअं पचख्ख-पचख्खाण [ रिमहं अभत्तद्वंपचख्खाइ-अभत्तद्वं अ-वली पोरिसि-पोरिसि सूरेडग्गएपुरिमं-सूरेडग्गएपु- इति-एम [पचख्खाइ	
. See		

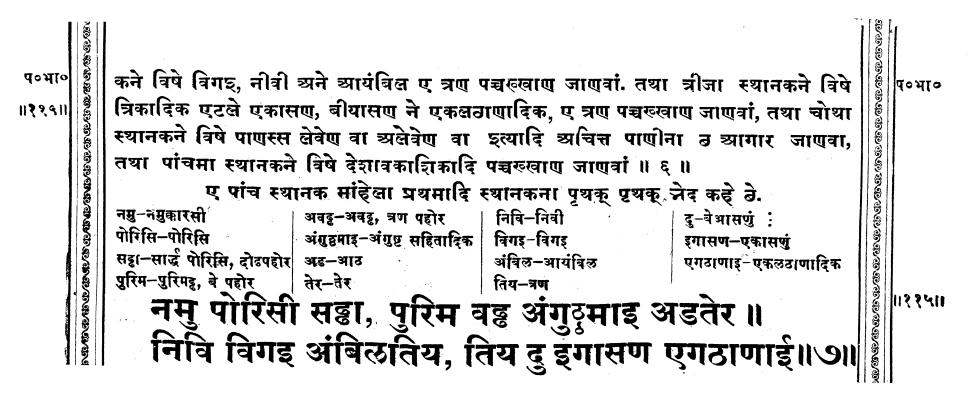
**બંધાન્યાન્યાન્યા** આવ્યા છે. તેમ વ્યુપ્સ અંગ વ્યુપ્સ અંગ વ્યુપ્સ છે. તેમ વ્યુપ્સ વ્યુપ્સ વ્યુપ્સ વ્યુપ્સ 0000000 अ नमो, पोरिसि पच्चख्ख उग्गए पुरिमं, अभत्तइं पच्चख्खा इति ॥ ४ ॥ शब्दार्थ-नवकारसीना पत्रख्खाणमां " उग्गए सरे नमोकार सहियं " एवो पाठ, ए प्रथम बिधि पोरसिना पत्र-रूखाणमां '' उग्गए सरे पोरिसियं " एवा पाठ, ए बीजो विधि. पुरिमहुना पुच्चख्खाणमां '' सरे जग्गए पुरिमहुं " एवो पाठ, ए त्रीजो विधि. उपवासना पच्चख्खाणमां '' अभत्तद्वं पच्चख्खाइ " एवो पाठ भणवो. ए चोथो विधि ॥ ४ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम नवकारसीनुं पच्चस्काण उच्चरीयें तेवारे उग्गए सूरे, वली नमुकार सहिअं पच्चख्वाइ चजविदंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नवणान्नोगेणं सहसागारेणं वोसिरई ए जच्चार करवानो प्रथम विधि जाणवो. बीजो पोरिसीतुं बच्चर्स्वाण उच्चरीगे, तेवारे उग्गए सूरे पोरिसियं पच्चस्त्वाइ, जग्गए सूरे चउविद्वंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नव्याजोगणं सहस्सोगारणं ए उच्चार

<b>प०मा०</b> म११२॥ म११२३॥	करवानो बीजो विधि जाणवो. त्रीजो प्रूरिमार्ड्रनुं पच्चख्खाण उच्चरीये तेवारे सूरे जग्गए पुरिमरुं पच्चख्खाइ चजविद्दंपि आहारं ए उच्चार करवानो त्रीजो विधि. चोयो अजक्तार्थ एटखे जपवासनुं पचस्काण उच्चरीये तेवारे अजत्तर्ठं पच्चख्खाइ तिविद्दंपि आहारं चउबिद्दंपि आहारं एम उच्चार करीये, ए चोयो विधि जाणवो.	ૺ ૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱	प०मा●
₩ ?? #	छहींयां पुरिमार्छ ते दिवसनुं पूर्वार्छ समजवुं; एटले नोकारसी आदि पच्चख्लाण जो पूर्वे सूर्योदयथी न कखुं होय तो पण पुरिमरु थाय, एम उपवासादिक पण थाय. तथा सूर्योदयथी मांकीने यावत् आगला दिवसनो सूर्योदय थाय, त्यां सुधी अजक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चख्लाण कहेवाय ठे, एम जणाववाने तथा रात्रिनो चडविहार करयो होय अने बीजे दिवसे एक उपवा- सनुं पच्चख्लाण करे, तेहने चेाथजत्तनुं पच्चख्लाण थाय. तथा रात्रियें चडविहारनुं पच्चख्लाण न	the the second second second	11 देर् इप्त

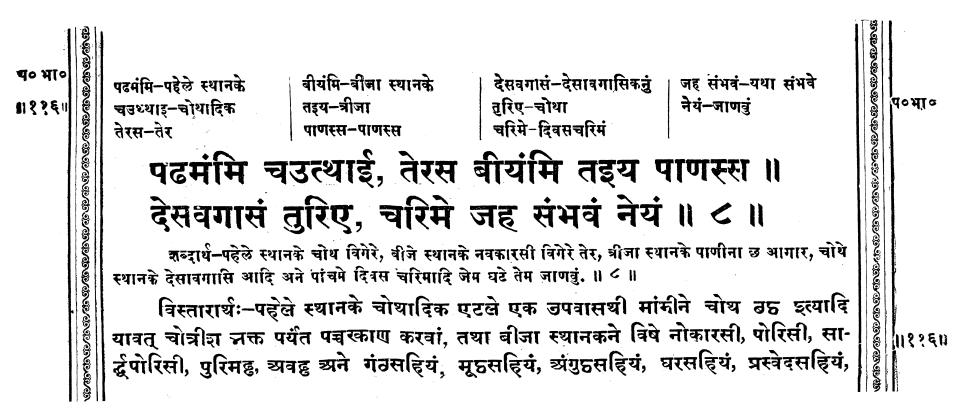


ण्म• भा• <b>॥</b> ?१४॥	भ्रब्दार्थ-प्रथम पच्चरुखाण करावनार ग्रह " पच्चरुखाइ " एम कहे ए मथम विधि. वळी पच्चरुखाण करनार शिष्य " पच्चख्खामि " एम कहे, ए बीजो विधि. पछी ग्रह "वोसिरइ" एम कहे ए त्रीजो विधि. शिष्य "वोसिरामि " एम कहे, ए चोथो विधि. आहें धारेळो उपयोगज ममाण छे; परंतु अक्षरनी स्खलना ममाप नथी. ॥ ५ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम ग्रुरु जे पच्चरुखाएनो करावनार होय, ते पच्चरुखाइ एम जएो, एटले कहे; ए प्रथम विधि जाएवो. वली शिष्य जे पच्चरुखाएनो करनार होय तेपच्चरूतामि एम कहे. ए बीजो विधि जाएवो. छने एम संपूर्ण पच्चरुखाएे ग्रुरु वोसिरई कहे. ए त्रीजो विधि जाएवो छने शिष्य	a a a a a a a a a a a a a a a a a a a
<b>છ છ</b> ા છા છા છા છા છા છા છા છે. છે છે છે છે છે છે. છે છે છે છે છે છે છે છે. છે છે. છે છે. છે છે. છે છે. છે	जे पच्चख्लाणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे, ए चोथो विधि जाणवो. ए चार विधि कह्या. इहां पच्चख्लाणने विषे करतां तथा करावतां थकां पोताना मननो जे उपयोग एटले मननी धारणा ठे तेज प्रमाण ठे एटले मनमांहे जे पच्चख्लाण धाख्रुं होय तेज प्रमाण ठे, परंतु व्यद्वर तेनी ठलना ठे एटले स्खलना ठे. व्यर्थात् व्यनान्नोगने लीधे धारेखा तिविहार पच्चख्लाणथी वीजो कोइ चउविहार पच्चख्लाणनोज पाठ उच्चरीये, ते वंजण ठलना जाणवी ते प्रमाण नथी ॥५॥	₩~₩~₩~₩~₩~₩ ₩~₩~₩~₩~₩~₩~₩ ₩





15		S
1000 000 000 000 000 000 000 000 000 00	शब्दार्थ-नम्रुकारसी, पोरसी, सार्द्धपोरसी, पुरिमढू, अवढू अने अंगुइसही विगेरे वीजा आठ, ए सर्व मछी प्रथम	50 CE. CE
	स्थानकना तेर भेद थाय, बीजा स्थानकना निवि, विगइ अने आंबीछ ए त्रण भेद जाणवा. त्रीजा स्थानकना बेसणुं, ए-	000
	कासणुं अने एकलठाणुं ए त्रण भेद् जाणवा ॥ ७ ॥	S
	विस्तारार्थः-प्रथम स्थानकें तेर जेदनां नाम कद्दे ठे. एक नमुकारसी, बीजुं पोरिसि, त्रीजुं	Sol
্ হি	साईपोरिसि ते दोढ पहोर पर्यंत, चोथुं परिमरृ ते बे पहोर, पाचमुं अवरृ ते त्रण पहोरनुं	9000
J Sel t	पचरुखाण. ए पांचनी साथे पुर्वोक्त अंगुष्ट सहितादिक आठ नेद मेलवीये तेवारे तेर नेद थाय.	and and
<u>क</u> ्र	तथा बीजा स्थानके एक निनी, बीजुं विगइ अने त्रीजुं आयंबिल ए त्रण पच्चख्खाण जाणवां,	60.00
T T T T	तथा त्रीजा स्थानकने विषे एक वेळासणुं, बीजुं एकासणुं ठाने त्रीजुं एकखठाणादिक ए त्रण	Sec.
	पचल्खाण जाणवां ॥ ७ ॥	5
2000	इवे वली प्रकारांतरे जपवासादिक विधिये जपवासने दिवसे पांच स्थानक	Secon
Sale .	केवी रीते करवां ? ते कहे जे.	DOPO
<b>É</b>		S

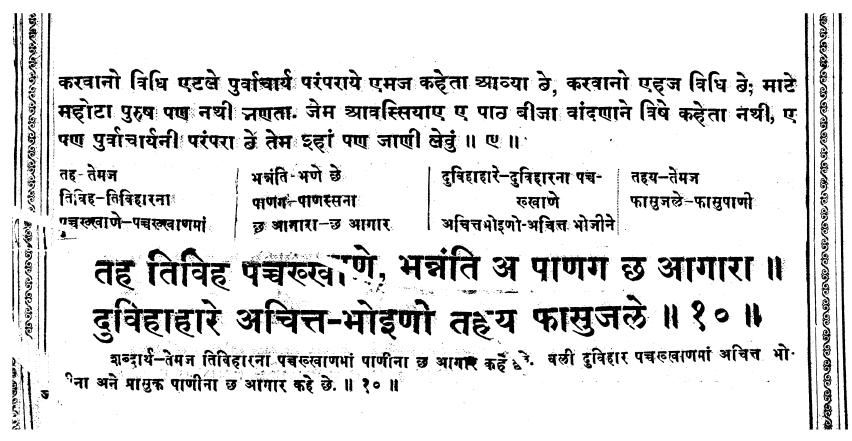


तथा त्रीजा स्थानकने देसावगासिकनुं पचर रिमं एटले रात्रिनुं प रकाण ते यथासंज्ञवे	त्नबिंडुसहियं, दीपसहियं, ए तेर पचच्खाण मांहेख़ं हरकोइ पचस्काण करवुं, विषे पाणीना ठ व्यागारनुं पचच्खाण करवुं तथा चोथा स्थानकने विषे खाण करवुं तथा पांचमा स्थानकने विषे ठेदेकानुं पचस्काण जे दिवसच बस्काण तेने विषे दुविहार, तिविहार, चडविहार पाणहार प्रमुखनुं पच- ने पोताने करवानी इज्ञा होय ते यथाशक्तियें करवुं तथा ज्वचरिमादि जे करवुं. एम जाणवुं. ए पांच मांहेख़ं जे कोइ करवुं ते पच्चरखाण कहीये ठ				
हु    वल	वला ए पचरखाण करवाना पाठनाज विशेष विधि कह ठ.				
है तह-तथा है मज्झपचरूखाणेसु-मध्य पच इ स्वाणने विषे	नपिहु-वारंवाह न कहेवो करणविहीओ-करवानो विधि आवसीयाइ-आवस्सियाए सूरुग्गयाइ-सरेउग्ने विगइओ नभण्णइ-नथी भणता बोसिरइ-वोसिरामि जहा-जेम				

and the second s तह मज्झपचख्खाणे-सु नपिहु सूरुग्गयाइ वोसिरइ ॥ পৃত্দাত करणविहीउ न भन्नइ, जहावसीयाइ बियछंदे ॥ ९ ॥ श्रब्दार्थ-तेमज मध्यना पच्चख्लाणमां "सूरे उग्गे विगइओ" इत्यादि पाठ वारंवार न कहेवो ते 🗰 "वोसिरे' ए पाठ पण वारंवार न कहेवो, एटला माटे करवानी विधि आचार्योए कही नथी. जेन 'आवास्सियाए' ए पाठ वीजा वांद-णामां कहेता नथी तेम. ॥ ९ ॥ विस्तारार्थः-तथा ए पद विशेष देखामवावाची हे. मध्यनां वे स्थानक जे विगइ, नीवी अने आयंबिलनुं तथा एकासण, बियासण अने एकलठाणानुं ए बेनां ठ पच्चख्लाणोने विषे पृथक् पृथक् पचल्खाणे सूरे जग्गए विगइउ पचल्खाइ इत्यादिक पाठ वारंवार न कहेवो, एटले प्रथम जे पच्चख्वाण मांगे, तिहां सूरे जग्गए कहेवो, परंतु पच्चख्वाण पच्चख्वाण प्रत्यें न कहेवो, तेमज and the second 1122011 वोसिरइ तथा वोसिरामि ए पाठ पए छांतने विषे एकवार कहीये, पए वारंवार न कहीये ए

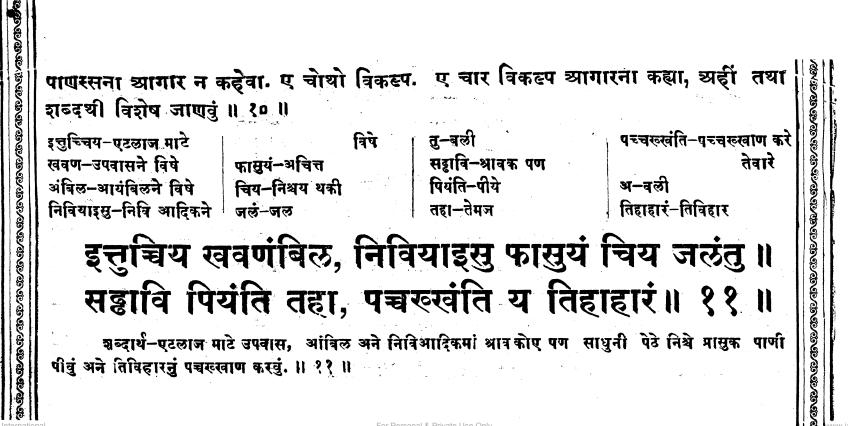
प०भा०

415501



<b>प० भा</b> ० ॥११८॥	୧୭୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	विस्तारार्थः-तेमज वस्ती तिविहारना पचच्ख्लाणने विषे तथा एकासणादि पच्चख्लाणे प्रासुक निर्जीव जलपान संबंधि पानक एटले पाणीना ठ आगार जणे ठे कहे ठे. तेनां नाम कहे ठे. पाणस्सलेवेण वा, अलेवेण वा, अन्नेण वा, बहुलेवेण वा, ससिन्नेण वा, असिन्नेण वा. ए ठ आ- गारनां नाम जाणवां. तथा दिविधाहार पच्चख्लाणने विषे अचित्तज्ञोजी होय सचित्तजोज्य परि हरे तेने तथा तेमज जे एकासणा वियासणाविना फासु पाणी लेतो होय एवा सचित्त परिहारीने	10-03-02-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-03-	प॰भा <b>०</b> •
	બ્લાબા જા બાદ આ બાદ	पण पच्चख्लाणने विषे पाणीना ठ आगार कहेवा. ए प्रथम विकल्प. तथा अचित्तजोजी होय अने फासु निर्जीव पाणी पीतो न होय तेने पाणस्सना आगार न कहेवा. ए बीजो विकटप. तथा जे सचित्तजोजी होय पण फासु पाणी पीये ठे तो तेने पाणस्सना आगार ठ कहेवा. ए त्रीनो विकल्प तथा सचित्तजोजी ठे अने फासु पाणी पीतो नथी तो तेने पाणस्सना ठ आगार न कहेवा. तथा सचित्तजोजी ठे अने केवलखादिम, अशन अने स्वादिम रूप त्रण आहारना पच्चख्लाणने उद्देशे रात्रिप्रमुखे तिविहार करे ठे, तिहां पण	જે છે. જે છે. છે. છે. છે. છે. છે. છે. છે. છે. છે	118861

www.jainelibrary.org



For Personal & Private Use Only

📔 😫 www.jainelibrary.org

विस्तारार्थः-एटलाज माटे अचित्तज्ञोजी होय तेने इतपण एटले उपवासने विषे प॰माव ঀ৹भा৽ बिलने विषे, तथा निवि आदिक एटले निवि एकासणादिक तिविहार पचख्खाण तथा आदि-H22911 शब्दथी सचित्त परिहारने विषे निश्चयथकी फासुक अचित्त जल ते जेम यति फासुक निर्जीव पाणी पीये तेनीपेरे श्रावक पण फासुक पाणी पीये तेने पण एहिज आगार कहीये, परंतु ते वसी तिविहार पच्चख्खाण पच्चख्से सचित्तज्ञोजीने पण जपवास आयंबिल, निविनुं पच्चख्खाण तिविहारें होय ते उष्ण पाणी पीये अने एकासणादि पच्चख्वाणनो नियम नथी. एमां तो छविहार, तिविहार, चउविहार यथासंजवे होय ॥ ११ ॥ an included and चउहाहारं-चउविहारोज म्रणीण-मुनिने निसि-रात्रिनं पचरूखाण सढ्ढाण-श्रावकने अर्थे दुतिँचउहा–दुविहारे, तिवि-हारे, चउविहारे पोरिसि-पोरिसिनं सेस−शेष तु-वली पुरिम-पुरिमहुनुं नमो-नोकारसीतं तिहचउहा-त्रिविद्दारा तथा रसिंपि-रात्रिनं पण चउविहारा एगासणाइ-एकासणादिक

चउहाहारं तु नमो, रसिंपि मुणिण सेसतिहचउहा ॥	e concerno
निसिपोरिसि पुरिमे-गा सणाइ सडढाण दुतिचउहा॥१२॥	sec-to-
ग्रब्दार्थ-नोकारसीनुं अने रात्रीनुं पचल्खाण मुनिने चउविदार्रंज होय. तथा बाकीनां पोरसी आदि तिविदारां तथा चडविहारां होय. वल्ठी श्रावकने रात्रीनुं, पोरसीनुं, पुरिमट्टनुं अने एकासणादिकनुं पचल्खाण दुविदार, रागिहार अने चडविद्दारे होय. ॥ १२ ॥	યું આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ
विस्तारार्थः∽नोकारसीनुं पचख्खाण तथा रात्रिनुं पचख्खाण पण मुमिने, यतिने वली नि- यमा चउविद्दारज होय अने शेष पोरिसी आदिक पचख्खाण ते मुनिने तिविहारा तथा चउवि-	
हारा यथासंजवे होय. हवे आवक आश्रयी कहे हे. रात्रिनुं पचस्काण, पोरिसीनुं पचल्खाण, पुरिमडुनुं पचल्खाण अने एकासणादिक पचल्खाण जे हे. ते आवकने छविहार, तिविहार अने	Several Several
चउविहार, ए त्रण प्रकार यथायोग्यें होय, तिहां नवकारसी तो श्रावकने चउविहार पख्वखाणेज	acasas an

Noter

13

121

and a set as a set and a set a set a set a set a set

<b>भ०भा ०</b> ॥१२०॥	होय, अने शेष पोरसी पुरिमद्वादि पचस्काण तथा रात्रिनुं दिवस चरिमादि पच्चस्काण ते छवि- हार तिविहार अने चडविहारे यथायोग्यें होय, परंतु ग्रंथांतरें एटलो विशेष ठे जे एकासणादि तिविहार पच्चस्काणीने रात्रे पाणहार होय अने छविहार पच्चख्खाणे एकासणादिकने विषे रात्रे चडविहार होय तथा केटलाएक स्थानके श्रावकने पणपोरिसी तिविहारें बोली ठे. अने दुविहार पच्चख्खाणे रात्रे तिविहार होय परंतु ते कारणिक जाणवुं, व्यवहारे समजवुं नही. इत्यादि बीजी विशेष वात ग्रंथांतरथी जाणवी, एटले चार विधिनुं बीजुं द्वार प्रूर्ण थयुं. उत्तर बोल चौद	प॰ भा॰ प॰ भा॰ ॥१२० ा
ensenter en	यया ॥ २२ ॥ २ ॥ ह्वे चार प्रकारना छाहारनुं त्रीजुं द्वार कहे ठे. खुइपसम-अुखने उपग्रमावाने एइ-आवे एवा खग-समर्थ रगागी-एकाकी सायं-स्वाद प्रत्ये आ हारिव-आहारने विषे खुहिओवि-श्चधितापि, भू छुटे-कोठामां आहारो-आहार	11

1

and an an an an an an an an an arts apression and the structure of the खुह्पसमखमेगागी, आहारिव एइ देइ वा सायं ॥ खुहिओ वि खिवइ कुट्टे, जं पंकुवमतमाहारो ॥ १३ ॥ भ्रब्दार्थ-भूखने समाववाने समर्थ एवो एकज आहार, आहारमां आवता एवा लवणादि अथवा स्वाद आपनारा हिंग विगेरे, वल्ली जे भूख्यो छतो पण पेटमां नाखे एवा कादवना सरखो होय ते आहार कहेवाय. ॥ १३ ॥ विस्तारार्थः-प्रथम सामान्य प्रकारे आहारनुं लक्तण कहे हे. जे कुधाने उपशमाववाने अर्थे ತು ಜಾ ಭಾ ಪ್ರಾಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ ಭಾ समर्थ होय एवो जे एकाकी डव्य होय तथा वली आहारने विषे एति एटले आवे एवा लवण हिंग्वादिक, वली जे आहारमांहे स्वाद प्रत्ये आपे ते, वली जे पंकोपम एटले कादवनी पेरे अ-सार होय कादवनी जपमा धारण करे एवुं कादव सरखुं डव्य होय परंतु क्तुधितो एटले क्तुधित थको कोठामां उदरमां किपति एटले केपवे ठे तो ते सर्व आहार जाणवा ॥ १३ ॥ इवे ए आहारना मूल चार जेद हे, ते कहे हे.

प०भा० धरु२१॥ ॥१२१॥	असणे-अशन मुग्ग-मगादिक ओयण-ओदन, भात सत्तु-साथुओ	मंड−मांडा विगेरे पय-दूध बिगेरे खज्ज─खाजां पकवान विगेरे रब्ब-रावडी	कंदाइ–कंदादिक पाणे–पानने विषे कंत्रिय–कांनीत्रुं जव∽यवत्रं	कयर–केरज़ुं ककडोदग–काकडी विगेरेज़ुं पाणी स्रराइजऌं–मदिरादिकज़ुं पाणी	শুরু মুক্ত মাত মুক্ত মাত
9.45 (B)	असणे मुग पाणे कंजि शब्दार्थ-अज्ञनमां जगतुं, केरतुं अने काकडीत विस्तारार्थः-ति दान कृद्दीये, तेने विषे	गोयणस-त्तु मंड य जय कयर, मग, भात, सत्यु, मांडा, दुध, स् व धोवग तथा मदिरात्रं जळ जा हां एक अशन ते, आशु मगादि सर्व कठोख जा	<b>पय खज्ज र</b> कक्कडोदग सु वाउं, राव अने कंद विगेरे णवुं. ॥ १४ ॥ J एटले सीघ जे क्तुधार्व ति जाणवी. तथा र्रदन	ब्ब कंदाइ॥	namanananananananananananananananananan

तेल. माखण विगयादि प्रमुख, खाजलां पकान खीर सुक्ठमारिका लापसी दर्हींथरां प्रमुख पक्वान. राबभी घेंस प्रमुख कंदादिक ते सूरणकंदादिक जाणवां. तथा तेमज, तुलसी नागरवल्यादि पत्र विना सर्व जातिनां फल फूल पत्र सर्वकंद सर्व वनस्पतिविकार शाकादि कूछरी चूरिम पर्प- टिकादि सर्व वस्तुनी जाति व्यशनमां छावे, तथा लवण, हिंग, सूया, व्यजमो, वरीयाली, धा- णादिके तल्यां एक वेसण पण व्यशनमां ज्यावे, इत्यादि सर्व ज्रशनजाति समजवी. हवे बोजो पानने विषे तिहां जेने पीजीये ते पाणी कहीये तेमां व्यप्काय ते नदी, तलाव, इह, समुद्र इत्यादि पाणीना व्याश्रय संबंधि सर्व स्थलोनुं पाणी जाणवुं. तथा कांजीनुं पाणी ठासनी व्याठ, तथा यवनुं धोयण, केरनुं धोयण, व्यांवलादिकनुं धोयण, डाइनुं धोयण, तथा काककी प्रमुख सर्व फलनां धोयणनुं जदक एटले पाणी, तथा सुरादि जल ते मदिरादिकनां पाणी जाणवां, ए व्यजद्यमां जले ठे. एमां व्यादि शब्दथी डाह्तादिकना व्यासव, नालिकेरादिकनां पाणी, इक्षुरस, सोवीर, तक ते ठाश इत्यादि सर्व पदार्थ पाणीने विषे कल्ये ठे, तथापि इक्तुरस, तक ते ठास
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

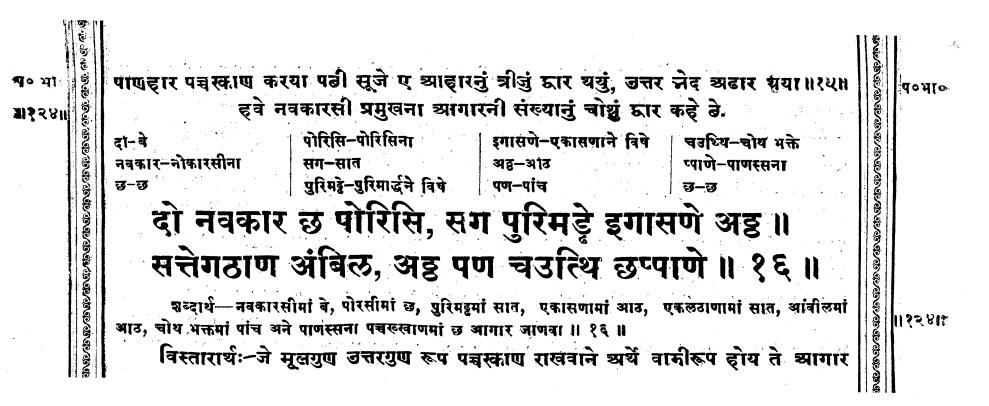
<b>म</b> ०भा० अ१२२॥	व्यने मदिरादि तथा नालिकेरादिकनां जलने सांप्रत जितव्यवहारे व्यशनमां गणीये बैये ॥ १४ ॥ हवे त्रीजो खादिम व्याहार कहे बे.	क हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे
A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	द्व त्राजा खादम छाहार कह ठ. खाइमे-खादिमने विषे भत्तास-भक्तोष, शेकलां धान्य बिगेरे फलाइ-फलार्ट्रिक जिस-जीरं जनस-जीरं जनमाइ- अजमादिक तंबोलाइ-तंबोलादिक निंवाइ-निंबादिक <b>खाइमे भत्तीस फलाइ, साइमे सुंठि जीर अजमाइं ॥</b> मह गुड तंबोलाइ, अणाहारे माय निंबाई ॥१९५॥ दारं ३॥ भब्दार्थ-खादिममां शेकेलां धान्य तथा फलादि जाणवां. अने स्वादिममां सुंठ, जीरुं, अजमो विगेरे, बली मध, गोल अने नागरवेलना पानादि जाणवा. तेमज अनाहारने विषे मात्रुं तथा लींबडानी सळी मसुल जाणवा ॥ १५ ॥ विस्तारार्थ:-हवे त्रीजो खादिम आहार कहे ठे. आकाहा एटले मुखनुं विवर कहिये. तेने पूरे, लगारेक जूख मात्र जांजे, पण छन्नादिकनी पेरे तृप्ति न करे, परंतु कांइएक छाइनसमान	प०भा० प०भा० ॥१२२॥

ଅକୁକୁ ଅକେଳେ ସମ୍ପାଦ ଅନ୍ୟାର ଅ ଅନୁକୁ	याय ते खादिम वस्तु कहीये. ते खादिमने विषे तिहां प्रथम जक्तोष एटले रोकेलां धान्य चणा
<b>7</b>	प्रमुख तथा अखोम सुखाशिका सर्व जाएवा, तथा आंबा केलां प्रमुख सर्व फलादिक जाएवां,
200	तथा फलजातिनी सुखर्मी मेवा सर्व कयरी पाकादिकनी जातियो, गुंदपाकादिक, डाक्त, चारोली
	प्रमुख मेवा जातिनुं सर्व पकान्न तथा खांम शाकरादि तेना विकार जे खांम कातली प्रमुख ते सर्व
	खादिमने विषे लीधा कहपे. परंतु जीतव्यवहारे प्रसिद्ध पणे अशन मध्ये लेपकृत्य उत्तम
293	डव्यमां गएया हे. परंपराये इत्यादिक सर्व खादिम "जत्तोसं दंताइं, खजुर नालिकेर आई
200	दख्खाई ॥ कक्कमि छंबग फणसाइ, बहुविहं खाइमेनेयं ॥ १ ॥ इत्यादिक विचार सर्व प्रवचन-
5	सारोद्धार प्रंथथी जाणवो ॥ ए त्रीजो खादिम आहार कह्यो ॥
うのい	हवे चोथा स्वादिमने विषे शुं कढपे ? ते कहे ठे. तिहां प्रथम ते जे आखादे करी खइये
5000	अथवा आहारादिक जे कीधां होय ते सर्व तेना स्वादमां विनाश पामे, लयलीन थाय ते
200	स्वादिम कहीये तेमां सूंठ, जीरुं, छजमादिक, छादि शब्दथकी पीपर, मरिच, इरमे, बेहेमां,
Š	त्वादिन कहाव तना सूठ, जार, अजनादिक, आदि राज्यजना नानर, नार म हरक नहका

प० भा० ॥१२३॥ ॥१२३॥	आमलां, मरी, पींपलीमूल, पीपर, अजमोद, आजो, काजो, काथो, क्वलिंजर, कसेलो, कयसेलियो, मोथ, जेठीमध, पुष्करमूल, एलचो, बाबची, चिणिकवाव, कप्रूर, तज, तमालपत्र, नागकेसर, केशर, जायफल, लविंग, हिंग्रुलाष्टक, हिंग्रुत्रेवीसो, संचल, सेंधव, यवखार, खयरसार, कोठवली, गोली सर्व जातिनी अश्वानादिमां न जले तेवी जाणवी, सर्व जातिनां दातण, तुलसी पत्र, श्रीपत्र, खार, सवा, मेथी, गोमूत्रादिकना कीधा अन्नमेलादिकनी गोलीयो, चित्रो, पिंमार्थ, कोइ एक तो पिंमार्थने खजुर कहे ठे. परंतु प्रंथांतरे एने जे सूरणादि कंदनां खारचुंदां करे ठे, तेने कहे ठे. कर्प्रूर, कचूरो, त्रिगठु, पंचपटोल, जिमज्ञवण, इत्यादिक अनेक जातिना स्वा-	™®™®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®®	০মা০
<b>10</b> 00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00	दिम आहार जाणवा. तथा मधु एटले मध अने गोल, खांक, साकर तथा तंत्रोलादिक ते विविध जातिनो तंवोल नागरवेलीनां पान तथा सोपारी प्रमुख ए पण स्वादिम जाणवा. हवे अणाहार वस्तु कहे ठे. जे पूर्वे कहेला चारे आहार मांहेला कोइ पण आहारमां	10-10-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-0	।१२३॥

न आवे, परंतु च ग्रविहार उपवासे तथा रात्रिने च ग्रविंदारे वागरी कह्पे, ते अणादार वस्तु जाणवी. तेनां नाम कहे ठे. अनाहारने विषे जे कह्पे ते वस्तु कहे ठे. खयु नीति ते गोमूत्राद्धिक अने निंवादिक ते निंवनी शली पानमा प्रमुख पांचे अंग ए सर्व अनाहार वस्तु जाणवी, आदि शब्द यकी त्रिकला, कर्म, करियातु. गलो, नाहि, धमासो, केरमामूख, बोरग्रालि मूल, बावलग्रालि, कंथेर मूल, चित्रो, खयरसार, सूलम, मलयागठ, अगठ, चीम, अंबर, कस्तूरी राख, चूनो, रोहिणी वज, हलिऊ, पातली, आसगंधी. छंदेठ, चोपचीनी, रिंगणी, अफिणादिक सर्व जातीनां विष, साजीलार, चूनो, जाको, उपलेट, गूगल, आतिविष, पूंपाम, एलीर्ट, चूणीफल सूरोलार, टंकणखार, गोमुत्र आदे दइने सर्व जातिना अनिष्ट मूत्र, चोल, मंजीग, कण्यरमूल, छंआर, योहर, अर्कादिक पंचकूज, लारो, फटकमी, चिमेम इत्यादिक वस्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान् ठे, अने इडा विना जे चीज मु- खनां प्रदेश करीये ते सर्व अणाहार जाणवी. ए उपवासमां पण लेवी सूजे, अने आयंबिल मध्ये
खारों, फटकमी, चिमेम इत्यादिक वस्तु सर्वे अनिष्ट स्वादवान् हे, अने इड़ा विना ज चीज मु- खनां प्रक्षेप करीये ते सर्व अणाहार जाणवी. ए उपवासमां पण छेवी सूजे, अने आयंबिल मध्ये

www.jainelibrary.org

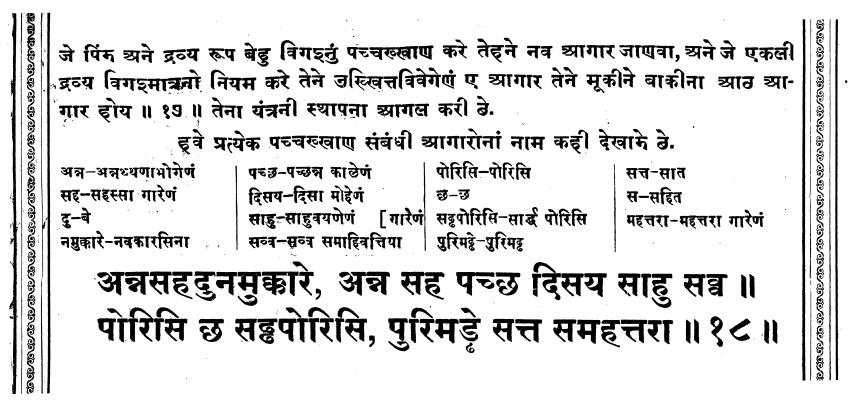


जाणवा. तिहां अपवाद पदे ऊव्य, क्षेत्र, काल अने जावादिके विचारतां मूलगुण पचस्काणने विषे अन्नचणदिक चार आगार जाणवा. अने उत्तर गुण पचस्काणने विषे यथोक्त रीते आगल कहरेरो ते प्रमाणे सर्वत्र आगार जाणवा ते सर्व मली एकवार उचरथा थका वावीरा आगार याय. ययपि अन्नचजित्सिएणदिक रोाल आगार काजस्सग्गना ठे तथा समकितना रायाज्रिने गेणादिक व आगार ठे, तेमज एक चोळ पटागारेणं एवं सर्व मली (४५) आगार थाय ठे, परंतु अर्हीयां तो दस षचस्काणने विषे वावीश आगारनुंज काम ठे, माटे ते कहे ठे. नोकारसीना पचस्काणने विषे वावीश आगारताणवा. पोरिसीना पचरकाणने विषे ठ आगार, तेम सार्फ्र पोरिसना पचस्काणे पण ठ आगार, पुरिमार्फ्रना पचस्काणने विषे सात आगार, एका- सणाना पचस्काणने विषे आंग जाणवा. चोथजक्ते एटले उपवासना पचस्काणने विषे पांच आगार, पाणस्सना पचस्काणने विषे ठ आगार जाणवा. ॥ १६ ॥
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प०भा० ७१२५॥ ७१२५॥	चड-चार पण-पांच आगार-आगार दब्दविगइ-द्रव्य विगइ चरिमे-दिवस चरिमना पावरणे-दस्त मूकवाना उख्ल्वित्तविवेग-उख्लित्त नियमि-नियम अभिभ्यहि-अभित्रहना नवद्वनिव्दीए-निवीमां आठ,नव मुत्तु-मूकीने [विवेगेणं अठ-आठ	रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे र
Bergerandersen andersen anders Andersen andersen and	चउ चरिमे चउभिग्गहि, पण पावरणे नवह निव्वीए॥ आगारुव्स्वित्तविवेग, मुत्तु द्वविगइनियमिष्ठ ॥ १७॥ अब्दार्थ-दिवस चरिममां चार, अभिग्रहमां चार, वस्न ग्रुकवामां पांच, निवीमां नव अथवा आठ आगार जाण- वा. वली द्रैव्य विगइनुं नियम करनारने 'अख्लित विवेगेणं' ए आगारने मूक्तीने बाकीना आठ आगार जाणना. ॥१७॥ विस्तारार्थः-दिवसचरिमना पच्चख्खाणने विषे चार आगार जाणवा, अजिप्रहना पच्चस्का- णने विषे चार आगार जाणवा. प्रावरण एटले वस्त्र मूकवाना' पच्चख्खाणने विषे पांच आगार जाणवा, निवीना पच्चख्खाणने विषे नव आगार पण होय अने आठ आगार पण होय, तिहां	то ні о по ні о по ні о по ні о по ні о по ні о

Jain Education International

www.jainelibrary.org



শৃত্যাত	क्षे बुह्य शब्दार्थ	क क क क क क न क न क न क न क न क न क न क
<b>શ</b> રૂરદ્દા	हूँ पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए छ आगार जाणवा. साढ पोरसीमां पण एज	Contraction of the second seco
	हूँ छि अने पुरिमहुमा उपरना छ सहित एक महत्तरागरिण ए वधारवी, जयी तेमां सात थाय. ॥ १८ ॥	R. C.
	है विस्तारार्थः-नवकारसीना पच्चस्काणने विषे एक अन्नइणाजोगेणं, बीजो सहस्सागारेणं ए	1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 1900 - 19
	🖁 वे व्यागार जाणवा तथा एक व्यन्नइणाजोगेणं, वीजो सहस्सागारेणं, त्रीजो पडन्नकालेणं, चोथो	(R)
	है दिसामोदेणं, पांचमो साहुवयणेणं, उठो सबसमादिवत्तियागारेणं ए उ आगार ते पोरिसीना	100 CO.
	पच्चख्खाणने विषे जाणवा. तेमज सार्इपोरिसीना पच्चख्खाणने विषे पण एहिज ठ आगार जाणवा. तथा वली एज पोरिसीना ठ आगारने एक महत्तरागारेणं ए आगारे करी सहित करीये तेवारे सात आगार थाय. ते पुरिममृ तथा अवमृना पच्चख्खाणने विषे जाणवा.	10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-1
	है जाणवा. तथा वली एज पोरिसीना ब आगारने एक महत्तरागारेणं ए आगारे करी सहित करीये	
	है तेवारे सात आगार थाय. ते पुरिमरृ तथा अवरृना पच्चख्खाणने विषे जाणवा.	5 II?7Ę II
	हुवे एकासणा तथा एकलठाणाना आगार कहे हे.	

अज्ञ- अज्ञध्यणा भोगे.णं गुरुअ- गुरु अभ्युठाणे सहरसा- सहरसागारेणं पारि-पारिठावणियाग सागारिअ- सागारि आगारेणं मह-महत्तरागारेणं आर्टटण-आउट्टण पसारेणं सब्ध- सध्व समाहिव	वियासणना अडटविणा-आउंटण पसारे- त्ति अद्वओ-आठ आगार णं विना
	उंटण गुरुअ पारिमहसब॥
एगबियासणि अठुओ,	सग इगठाणे अउटविणा॥१९॥
	सागारि आगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरुअप्धुद्वाणेणं, पारिद्वावणि- ए आठ आगार एकासणामां अने बियासणामां जाणवा. अने तैमांथी गवा. ॥ १९ ॥
	बीजो सहरसागारेणं, त्रीजो सागारिआगारेणं, चोथो
	, ठठो पारिठावणियागारेणं, सातमो महत्तरागारेणं, आ-

<b>प०भा०</b> ॥१२७॥ ॥१२७॥	ठमो, सब समाहिवत्तियागारेखें, ए आठ आगार ते एकासण अने वियासणना पच्चरूखाखने विषे जाणवा. तथा एज आठमांथी एक आउदृणपसारेखें ए आगार विना होष एकासणाने विषे जे कह्या ठे तेज सात आगार ते एकलठाणाना पच्चरकाणने विषे होय ॥ १९ ॥ जिहां जमणा हाथे जमे, मात्र कोलीया लेवानेज हाथ फेरवे, परंतु अंगोपांगने तो खरज खणवादिकने कामे पण हलावे नही ते एकलठाणुं जाणवुं ॥ १९ ॥	to the second se
ւ Խմեն մեն այն ու մե ու մե ու մե ու մե ու ու	हेवा-हेवा हेवेणं पिइ-गिइथ्य संसहेगं जिंद-गिइ पंडुच-पडुच मिल्लिएणं विगइ-विगइ जिंदिगए-विविगइ जिंदिगए-विविगइ जिन्नसहरेवागिह, उल्स्वित्त पडुच पारिमहसव्व ॥ विगइ निव्विगए नव, पडुच विणु अंबिरु अट्ट ॥ २०॥	va a a a a a a a a a a a a a a a a a a

The contract of the contract o

MOHIO हवे जपवासना आगार कहे हे. प०भा० 318261 सन्व-सन्व समाहि वत्तिया छ–छ चरिम-दिवस चरिमना अन्न-अन्नःथणाभोगेणं गारेणं पाणि-पाणस्सना the contract of the अंग्रहाइ-अंग्रुह सहियादिक सह-सहरसागारेणं पारि-पारिटावणियागारेणं पंच-पांच [°]लेवाइ∽लेपादिक भिग्गहि-अभिग्रहना खवणे-उपवासना मह--महत्तरागारेण चउ-चार अन्न सह पारि मह सन्न, पंच खवणे छ पाणिलेवाइ॥ चउ चरिमं गुट्टाइ, भिग्गहि अन्न सहमह सबे ॥ २१ ॥ शब्दार्थ-अन्नत्थणा, सहसा, पारिष्ठावणिया, महत्तरा, सव्वसमाहि. ए पांच आगार उपवासमां; तेमज लेवेणवा an and a second विगेरे छ आगार पाणस्सना जाणवा. वली अन्नत्थणा, सहस्सा, महत्तरा, सव्वसमाहि. ए चार आगार दिवस चरिमना पचल्लाणमां अने अंगुह सहियादि अभिमहना पचल्लाणमां जाणवा. ॥ २१ ॥ 118261 विस्तारार्थः-एक अन्नहणान्नोगेणं, बीजो सहस्सागारेणं, त्रीजो पारिटावणियागारेणं, चोथो

पचस्काणने विषे जाणवा ॥ ११ ॥ पचस्काणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना. यंक पच्चस्काणनां नाम संख्या. आगारोनां नाम. रे नोकारसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ १ पोरिसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ पठ्ठन्न० ॥ दिसामो० ॥ साहु० ॥ स	विषे । अन्नेण						
अन्नञ्रणान्नोगणं, बीजो सहस्सागारेणं, त्रीजो महत्तरागारेणं, चोथो सब समाहिवत्तियाग चार त्रागार ते दिवसचरिमना पच्चकाणने विषे तथा अंगुठमुठिसहियादिक अन्नि पच्चकाणने विषे जाणवा ॥ ११ ॥ पच्चकाणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना. यंक पच्चकाणनां नाम संख्या. आगारोनां नाम. रे नोकारसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ १ पोरिसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ दिसामो० ॥ साहु० ॥ स	एक						
चार आगार ते दिवसचरिमना पच्चकाएने विषे तथा अंग्रुष्ठमुष्ठिसहियादिक अन्नि पच्चकाएने विषे जाएवा ॥ ११ ॥ पच्चकाएना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना. यंक पच्चकाएनां नाम संख्या. आगारोनां नाम. रे नोकारसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ १ पोरिसी. १ अन्न० ॥ सह० ॥ दिसामो० ॥ साहु० ॥ स	रेणं ए 🛛						
पचस्काणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना. अंक पच्चस्काणनां नाम संख्या. आगारोनां नाम.   श्रंक पच्चस्काणनां नाम संख्या.   श्रंक प्रात्ति.   श्रंक पोरिसी.   श्रंक यत्न०॥ सह०॥ पञ्चन्न०॥ दिसामो०॥ साहु०॥ स	महत्तरागारेणं, पांचमो सबसमाहि वत्तियागारेणं, ए पांच आगार उपवासना पच्चस्काणने विषे जाणवा. तथा छवित्त पाणी पीवे तेने पाणस्सना पच्चख्खाणने विषे क्षेवेणवा छलेवेणवा, छठ्ठेण वा बहुलेवेणवा, ससित्ठेणवा, छसित्ठेणवा, ए क्षेपादिक इ आगार जाणवा, तथा एक अन्नडणानोगणं, बीजो सहस्सागारेणं, त्रीजो महत्तरागारेणं, चोथो सब समाहिवत्तियागारेणं ए चार आगार ते दिवसचरिमना पच्चस्काणने विषे तथा अंगुठमुठिसहियादिक छन्निग्रहना पचस्काणने विषे जाणवा ॥ ११ ॥						
<ul> <li>श्रंक पच्चरकाणनां नाम संख्या. आगारोनां नाम.</li> <li>१ नोकारसी.</li> <li>१ पोरिसी.</li> <li>१ पोरिसी.</li> <li>१ यारापोरिकी</li> <li>१ यारापोरिकी</li> </ul>	8						
१ नोकारसी. १ पोरिसी. १ पोरिसी. १ मात्रणोरिजी							
१ पोरिसी. १ अन्न०॥ सह०॥ पहन्न०॥ दिसामो०॥ साहु०॥ स्	व०॥ इ०॥ इ०॥						
	व०॥ है						
३ साहपोरिसी. ६ अन्न०॥ सह०॥ पत्रन्न०॥ दिसामो०॥ साहु०॥ स	ao 11   2						
	9- 11 2						

ŕ

.

1 2 1

1122611

	is cere			
	50 C C	<b>B</b>	पुरिमहु.	алан (1996) 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
ष०भा०'	BCC.	ય	खवहु.	
18231	0000	દ્	एकासणुं.	
	ଜ୍ୟାତ୍ର	9	बियासणुं.	· ·
	େପ୍ତେ	ច	एकलठाणुं.	- x
	ଅଟେ	Q	नीवी.	
	0000	ζο	विगइ.	•
1	9.00V	रर	आयंबिल.	
1	5000	ধহ	जगवास.	
	<u>କ</u> ତ୍ର	१३	पाणहार.	
	୫୦୧୬୦୫୦୧୬୧୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୦୫୬୫୬୫୬୫୬ ୧୭୫୫	ક્ષ્	अनिप्रह संके	ज्त.
1	8			

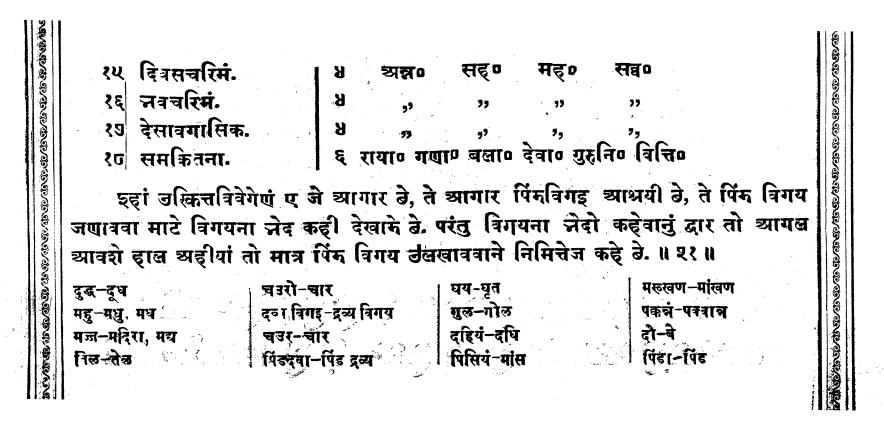
९ छन्न० ॥सह्णा पत्रण् ॥दिसा०॥ साहु० ॥सवणा महत्त० ॥ ९ छन्न० ॥सह०॥ पत्न० ॥दिसाणा साहु० ॥सव०॥ मह्त्त० ॥ ० छन्न० ॥सह०॥ सागा० ॥ आउ० गुरु० पारि० मह० सव० अन्न० ॥सह् ०॥ सागा० ॥ आज० गुरु० पारि० मह० सव० ञन्न० ॥सह्वणा ॥सागारिणा गुरु० ॥पारिणा मह्व० ॥सवणा ए छन्न० ॥सहस्सा०॥ लेवा० ॥गिइड०॥ जस्कित्त० पमुच्च० ए पारि० ॥ महत्त० ॥ सव० ॥ ए छन्न० सह० लेवा० गिह० उक्ति० पारि० मह० सव० **५ व्यन्न** सह पारि० मह स्व चोलपटागार यतिने । ६ लेवे० अले० अन्ने० बहु० ससिन्ने० असिन्ने० श्रनः सहः महः सदः

TROP

0000

as estas as as as as as as as as

and and



Поліо दुइ महु मज तिलं, चउरो दवविगइ चउर पिंडदवा॥ જી હોય જી જી જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ જ য ০ সা ০ **** घय गुरु दहियं पिसियं, मख्खण पक्वन दो पिंडा॥२२॥ शब्दार्थ-डुध, मध, मय अने तेल ए चार द्रव्य ( ढीली ) विगइ छे. वली घी, गोल, दहिं अने मांसपेसी ए www.www.www.www.www.www.www. चार पिंड तथा द्रव्य विगइ छे. वल्ली मांखण अने पकाझ ए वे तो पिंड विगइ छे. विस्तारार्थः-एक छुग्ध, बीजो मधु, त्रीजो मद्य एटले मदिरा अने चोथो तैल ए चार छव विगय हे. ए चार ते ढीख़ुं विगय होय रस रूप होय, माटे एने रसविगय कहीये, छने एक घृत बीजो गोल, त्रीजो दधि एटले दहीं अने चोथो पिशित ते मांस ए चार विगय जे हे ते पिंम जवरूप एटले पिंम तथा रसरूप जाएवी. ए चार कोइ वेला जव होय, तथा कोइ वेला पिंम and the second 11230時 रूप थीणो पिंम होय. तथा एक माखण, बीजो पक्वान ए बे विगय ते स्वजावें करीने पिंम रूप होय, कठिन होय, माटे एने पिंमविगय कहीये. ए दस विगय कह्यां. इहां उख्खित्तविवेगेणं ए

Jain Education International

200	हवे केटलांएक	वेगयनो <b>ठे ते जणाववा</b> पच्चस्काण मांहोमांहे ण मांहोमांहे सरखा ठे,	आगार तथा पाठ उच	चार विशेषे करी सरखा ढे.
Nar war war	पोरिसिसढ्ढं-साईं पारिसि	निव्विगइ–नीविनुं	अंग्रुइ–अंगुह सहियं	सचित्त दव्वाइं–सचित्त द्रव्या-
	अवढ्ढं−अवढ्ढनुं	पोरसाइसमा–पोरिसि	इहि−इहि सहियं	दिकनुं
	दुभत्त-वेआसणुं	आदि सरखा	गंही–गंठि सहियं	अभिग्गहियं–अभिग्रहनुं
30	अंगुड मुटि		त दब्राइ भिग	गहियं ॥ २३ ॥
	शब्दार्थ-पोरसी अ	गने साढ पोरसी, अवढ अने पु	रिमढ, एक।सणुं अने बीया	सणुं, विगइ अने नीवि, तेमज अंगु-
	इसहियं, मुहिसहियं, गांहेस	हियं अने सचित्त द्रव्यादिक प	र सर्व अभिग्रह पच्चख्खाण ।	गंहो मांहे सरखां छे. ॥ २३ ॥

ଅଟି ଏହି ଅନ୍ୟାର ହେ ଅନେ ଅନ୍ୟାରେ ଅନ୍ୟାରେ ଅନ୍ୟାରେ ଅନ୍**ରେ ଅନ୍ୟାରେ ସେ ଅ**ନ୍ विस्तारार्थः-पोरिसि छादे देइने पचस्काण जे ठे, ते सरखां जाणवां, एटले एक पोरिसि ৰহ্মাণ पर्णाव अने बीजी सार्छ पोरिसि ए बे सरखां जाएवां एटले पोरिसी अने सार्छ पोरिसीना पचस्काएना 11938 पाठनो उच्चार तथा आगार पण सरखा ठे. तेमज पुरिममृ ने अवमृतुं पचरकाण पण सरखुं जा-णवुं, तथा एकासणुं अने दिलक्त एटले बीआसणानुं पच्रस्ताण अने आगार पण सरखा जाणवा, तथा विगइने नीविनुं पच्चकाण अने आगार पण सरखा जाणवा. तथा अंगुटसहियं, मुट्टिसहियं गंठिसहियं, सचित्त डव्यादिकनुं पचस्काण एटले सचित्त डव्यादिकना पचस्काण जे देसावगा-सिक तेमज दिवसचरिमादिनां पच्चरकाण ए सर्व अजियह पच्चरकाण कहेवाय, तेना पण मां होमांहे पाठ तथा आगार सरखा जाणवा परंतु कालप्रमाणादिके तथा स्थानकें तो फेरफार हवे ए सर्व आगारोना अर्थ कहे हे. हायज ॥ १३ ॥ सयग्रुह-पोतानी मेळे ग्रुख विस्तरण-विस्मरण दिसिविवज्जामु-दिशि ग पच्छत्रकाल-मच्छत्र काल 118581 विपर्यासथी मेहाइ-मेघादि अणाभोगो-अनाभोगथी दिसिभोहो-दिसा मोहेगं पवेसो-मवेश करे सहसागारो-सहसात्कार

Sector and	विस्तरण महाभोगो, सहस्सागारो सयं मुहपवेसो ॥
ಾಹಿ	पच्छन्नकाल मेहारे हिमिविवजास हिसिमाह ॥२४॥
<b>1.43.43.43.43.43.43.43.43.43.43.43.43.43.</b>	शब्दार्थ-द्वर्णात्र पदि, द्वर्णां वाहे मुखमां घाले ते अनाभोग, सहसात्कारे पोतानी मेले मुखभां पेशी जाय ते सहसागार, पच्छन्नकाल ते मेघ विगेरेथी दिवसयी दिवसनी खबर न पडवाथी जमे ते, तेमज दिशाना वि पर्यास-पणाथी दिशामोइ ए आगारोमां पचल्लाण न भागे. ॥ २४ ॥
10-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-0	विस्तारार्थ-जे विस्मरण थइ जाय ते छनान्नोगथी थाय, एटले पच्चरकाणनो उपयोग छ- नान्नोग थकी वीसरी जाय, तेत्रारे छजाणपणे कांइ मुखमां प्रक्तेप करे तो तेथी पच्चरकाण नंग न थाय. ए प्रथम छणान्नोगेणं छागार कह्यो, एनी साथे छन्नड शब्द जोमीये तेवारे छन्नडणा- न्नोगेणं एवुं नाम थाय, माटे तेनुं कारण समजवाने नीचे छर्थ लखीये ठैये, छन्नडणान्नोगेणं एटले छन्यत्र छने छनान्नोगात् तिहां छन्यत्र एटले जे छागार कह्या होय ते छागार वर्जीने
	न थाय. ए प्रथम अणाजोगेणं आगार कह्यो, एनी साथे अन्नत्व शब्द जोनीये तेवारे अन्नत्वणा-
1	एटले अन्यत्र अने अनाजोगात् तिहां अन्यत्र एटले जे आगार कह्या होय ते आगार वर्जीने
AD UP	

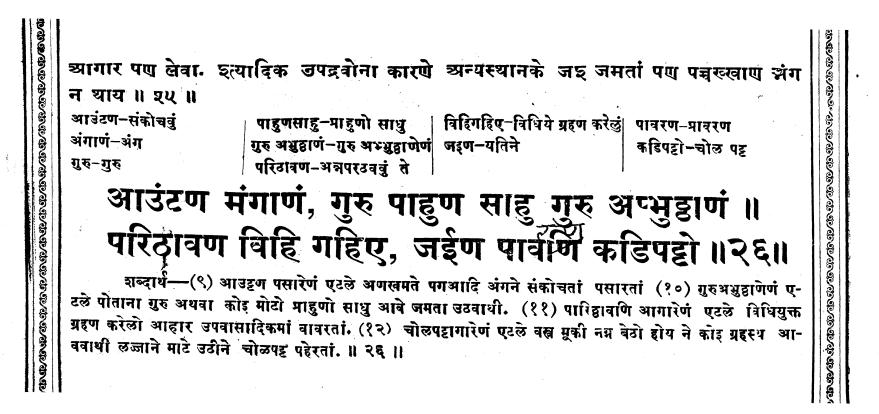
मा० भाः	बीजा सर्वत्र स्थानके पच्चख्खाण पालवानी यत्ना राखवी. अन्नह ए पद सर्वे आगारे जोम्वुं,	हे हे प० भा <i>०</i>
<b>113</b> 8711	एम जाणवुं, तथा अनाजोगात् एटले वीसरवाथकी अर्थात् पच्चकाणनो जपयोग वीसरते अ- जाणतां कांइ मुखमां प्रद्वेप कराइ जाय, पठी पच्चरूखाण सांजरी आवे, तेवारे तरत मुखयकी त्याग केरे, तेथी पच्चरकाण् जंग थाय नहीं, अथवा अजाणे मुखयकी हेठे उतखुं पठी कालांतरे	200 62 (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
	एम जाणवुं, तथा अनाजोगात पटले वीसरवाथकी अर्थात पच्चस्काणनो उपयोग वीसरते अ- जाणतां कांइ मुखमां प्रद्वेप कराइ जाय, पठी पच्चस्खाण सांजरी आवे, तेवारे तरत मुखयकी त्याग करे, तेथी पच्चस्काण जंग थाय नहीं, अथवा अजाणे मुखयकी हेठे उतखुं पठी कालांतरे अथवा तुरत स्मरणमां आवे तोपण पच्चरूखाणनो जंग थाय नही परंतु गुद्ध व्यवहार ठे, तेथी फरी निःशंक न थाय ते माटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए वात आगाराने विषे, जाणवी. माटे अहीं पीठिकारूपे लखी. बीजो सहसात्कार ते पोतानी मेले आवी मुखमांहे प्रवेश करे ते जाणवुं. एटले पच्चरूखाण कीधुं ठे तेनो उपयोग तो वीसरयो नथी, पण कार्य करवाना प्रवर्त्तनयोग, लक्तण सहसात्कारे सद्गावेज पोताना मुखमां कांइ प्रवेश थइ जाय. जेम दाध मथतां थकां ठांटो जमीने मुखमां पत्ती जाय, तथा चठविहार उपवास होय, अने वर्षाकालमां मेघनो ठांटो मुखमां पनीजाय, ता पचस्काण ज्ञांगे नहीं.	प० भा⊂ कक्षककककककक ॥? ३२ ह
	बीजो सहसात्कार ते पोतानी मेखे आवी मुखमांहे प्रवेश करे ते जाणवुं. एटखे पचरुखाण कीधुं ठे तेनो उपयोग तो वीसरयो नथी, पण कार्य करवाना प्रवर्त्तनयोग, खक्तण सहसात्कारे सन्मानेच पोनप्तर सम्पनं जंद जोन जान की स्वार्ग करवाना प्रवर्त्तनयोग, खक्तण सहसात्कारे	
	खन्नावेज पोताना मुखमां कांइ प्रवेश थइ जाय. जेम दीध मथतां थकां ढांटो जमीने मुखमां पनी जाय, तथा चछविदार जपवास दोय, अने वर्षाकालमां मेघनो ढांटो मुखमां पनीजाय, ता पचस्काण जांगे नहीं.	°े १।२३२ ≆ २०००

10 A C	त्रीजो प्रवन्नकाल ते कालनी प्रवन्नता जाणवी जेम मेघादि एटले मेघना वादले करीने
	ढंकाइ गयेला सूर्यनी खबर न परे, तथा आदिशब्दयकी दिग्दाह, प्रहादिक, रजोदृष्टि, पर्वत
3	प्रमुख सर्व जाणी लेवुं. तिहां पर्वत अने वादला प्रमुखे अंतरिक्त, सूर्य देखाय नहीं, अथवा रज
3	जमवे करी न देखाय, तेवारे पोरिसीयादिकना कालनी खबर न पमतां अपूर्ण अयेलीने संपूर्ण अ-
	येली जाणीने जमवा बेसी जाय तो पचरकाण जंग न थाय. परंतु जाणवामां आवे तो पठी अद्वों
	जम्यो थको होय तो पण एमज बेर्झा रहे, अने पोरिसी आदि पूर्ण थाय, पठी जमे तो जंग न
	थाय, परंतु इजी पूर्ण यइ नथी. एवुं जाणवामां आवे तो पण अटके नहीं, अने जमे तो पच-
	ख्खाण जंग थइ जाय ॥
	चोथो दिसामोहेणं ते दिशिना विपर्यांसपणायकी जेवारे दिङ्मूढ यइ जाय, तेवारे पूर्वने
	पश्चिम करी जाणे अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे एम खबर न पमवाधी अपूर्ण पचछखाणे पण
	$u_{III}$ and $u_{IIII}$ and $u_{III}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIII}$ and $u_{IIIII}$ and $u_{IIIII}$ and $u_{IIIIIIIIIIIIIIII and u_{IIIIIIIIIIIIIIIIIIII and u_{IIIIIIIIIIIIIIIIIIII and u_{IIII$
	पूर्ण काल थयो जाणीने जमे तो पद्यख्खाण जंग नहीं, छने दिङ्मोह मटी गया पठी जेवारे

प०भा० धरु ३३॥	जाणवामां आवे तेवारे पूर्वनी पेठे अर्द्धो जम्यो यको होय तो पण पचरूखाण पूर्ण याय तिहां
ත ක ක ක ක ක	साहु वयण-साधुनुं वचन मुथ्यया-स्वस्थता संघाइकज्ञ-संघादिकनुं कार्थ बंदाइ-बंदिवानादिक उग्घाडा पोरिसि-उग्घाडपोरिसि समाहि-सवाधि महत्तर-महत्तरागार तणु-श्वरीर हति-एम निद्ध्थय-यहस्थ साहवयण उग्घाडा, पोरिसितण सुरुथया समाहिति॥
ক্ষা বহু	संघाइकज्जा महत्तर. गिहथ्थ बंदाइ सागारी ॥ २५ ॥
	शब्दार्थ-(५) साद्रुवयणेगं एटले उग्वाड पोरिसि एवुं साधुनुं वचन सांभळीने पचख्लाण पारतां. (६) सब्ब समाहिवत्ति आगारेणं एटले क्षरीरनी स्वस्थता साचववा निमित्ते. (७) महत्तराणार एटढे संघादिकना कार्यमां वडेराती आज्ञा पाळता. (८) सागारि आगारेणं एटले गृहस्थनी तथा बंदिवानादिक्षनी नजर पडलां. ॥ २५ ॥

•	विस्तारार्थः-पांचमो जग्धाम पोरिसी एवं साधुनुं वचन एटले बहुपमिपुरणा पोरिसि एव
स	ांजलीने जो ऋपूर्ण अद्यस्काणे जमे तो पण पोरिसी जंग न थाय, पठी कोइकना कहेवा उपरर्थ
ज	गणवामां आवे के इजी लगण पोरिसीनो काल पूर्ण थयो नथी, तेवारे पूर्वोक्त रीते अर्छजुन
रह	हे, अने पोरिसीनो काल पूर्ण थया पठी जमे ए साहुवयणेणं नामे आगार जाणवो-
	बठो शरीर तेनुं स्वस्थता जे निरावाध पणुं तेने समाधि एम कहीये, एटला माटे ए सब
स	माहिवत्तियागारेणं कहेवाय, इहां तीव्रज्ञूलादिक रोग उपने थके, आर्त्त रोदनी सर्वथा निराइ
	। शरीरनी स्वस्थता ते सर्व समाधि कहीये. तत्प्रत्ययिक जे कारण ते सर्वसमाधिवर्तिताका
	इंग्रि. ते समाधिने निमित्ते जे औषध पथ्यादिकनी प्रवृत्तिने विषे छपूर्ण प्रत्याख्याने जमत
	ए पच्ख्खाए नंग थाय नहीं.
	सातमो संघादिकनुं कोइ कार्य उपने यके वर्करानी आज्ञा पाक्षे, तेने महत्तरागार कहीर
ते	आवी रीते के जे पचरुखाण कोधुं हे, तेनी अनुपालनायकी पण जो निर्क्तरानी अपेकाये वि

<b>S</b>		te-co ci	
<b>प०भा०</b> क्ष	चारोये तो महोटुं निर्क्तरा खान्न हेतु कार्य बे, अने अन्य पुरुषांतरे ते कार्यं असाध्य बे, वीजा	୧୬୦୫୦ ୧୭୦୫୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	प०भो०
11 8 3 8 11 8	कोइ पुरुषथी थाय तेम नथी, एवुं कोइ संघनुं तथा छादि शब्द थकी चैत्य ग्लानादिकना कार्थे	200	
35 GP	प्रयोजन तेहिज आगार ते महत्तरागार कहीये. तिहां अपूर्ण काले जमतां पच्चकाए जंग न थाय.	2	
(B)	छाठमुं गृहस्थनी नजर पर्के, तथा सर्पबंदिवानादिकनी नजर पर्के, तेने सागारिछागारेणं	ತ್ರಾಣ	
3. Sec. Sec.	कहिये. तिहां आगार एटले घर तेणे करी सहित बे, जे तेने सागारि कहीये, तेनी नजरे देखतां	30 CE	
() () () ()	साधुने आहार करवो कढपे नहीं. केम के एथकी प्रवचनोपघातादिक बहु दोषनो संजव थाय,	30 CD	
56936	माटे साधुने जमतां थकां जो सागारी आवी परे, अने ते जो चल होय, एटले तरत जवावालो	<b>∂</b> 2007	
Se la	होय तो इत्तणेक बेसी रहे, अने तेने स्थिर रहेतो जाणे तो स्वाध्यायादिकना जंगना जयथकी	00 Q	
5 C 1 2 1	अन्यत्र जइने तेहिज आसने जमे तो पच्चख्वाण जंग न थाय. ए जेम गृहस्थने सागारी कहीये	200	
~10 m	तेमज जेना देखतां छन्न खाइये ते पचे नहीं, तेने पण सागारिक कहीये तथा उपलक्तणे आदि		118381
ലെക്കുന്നത്. പ്രത്യം അന്തര്ത്ത്യം അന്തര്യം പ്രത്യം അന്തര്ത്ത്യം അന്തര്യം അന്തര്യം അന്തര്ം അന്തര്ം അന്തര്ം അന്തര്ം അന്തര്ം അ	राब्दयकी सर्प, अग्नि, प्रदीप, पाणीनी रेल आवे, तथा गृहपातादिक एटले घर पमतुं होय, ए	ಗಿ ಹಾಗಾ ಹಾಗಾ ಕ್ರ ಕ್ರಿ ಹಾಗಾ ಹಾಗಾ ಹಾಗಾ ಹಿಗೆ ಹಾಗಾ ಹಿಗೆ ಹಾಗಾ ಹಿಗೆ ಹಾಗಾ ಹಿಗೆ ಹಾಗೂ ಹಿಗೆ ಹ	
the second se		and a	



प०भा० ॥१३२५	विस्तारार्थः-नवमो पग प्रमुख अंग तेनुं आक्वंचन एटखे संकोचवुं तथा पसारवुं ते छण- खमते करवुं पंके, एटखा माटे एने आज्रहणपसारेणं आगार कद्दीये, तेथी जमतां थकां कांइक पोतानां आसनादिक चखायमान, थाय तो पचस्काण जंग न थाय. दशमो गुरु आचार्यादिक आवे अथवा कोइ मद्दोटो प्राहुणो साधु आवे थके जमतां ज्ववुं पंके तो गुरुअप्चुठाणेणं आगार थाय, एटखे ते आवेखा आचार्यादिक गुरुनां विनयादिक करवा माटे अन्युज्ञान्नादिक साचववा सारु ज्ववुं पर्के, फरी तेमज बेसीने जमे तो पच्च	ૡૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ૱ૡ	०भ्।०
জ্যাৰ্ক জেপ্তা ক্যাৰ্ক ক্যা	ख्लाण जंग न याय ॥ अगियारमो जे छन्न परठववानुं होय ते विधिये ग्रहण करेख़ें होय ते जगवासादिक पच- खाणमां पण लेवुं पमे तेने पारिटावणियागारेणं कहीये, एटवे जे विधिये करी निर्दोषपणे ग्रहण कखुं, छने विधिये वहेंची छाप्युं होय, पडी छन्य साबुये विधिये जुक्त कर्खा यकी कांइक छाहार जगरबो ते पारिष्ठापन योग्य थयो, परंतु ते छधिक छाहारने परठवतां दोष जपजे डे,	₩ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @ @	<b>ર</b> ેલા

	एवुं जाणीने तेइवुं छन्न तथा विगयादिकने गुरुनी छाङ्काये छाहारतां पचस्काख जंग न थाय.	
	एवुं जाणीने तेहवुं खन्न तथा तिगयादिकने गुरुनी आज्ञाये आहारतां पचस्काण ज्ञंग न थाय. तिहां एटखुं तिशेष जे चछतिहार छपत्रासमां पाणीनो नियम छे छाने पाणीतिना मुख गुद्ध न याय माटे पाणी तथा आहार ए वे वानां परठतवानां हेाय तो कढ्पे छने तितिहार छपत्रासा- दिकमां तो पाणी मोकखुं छे माटे एकखो आहार पण खेत्रो कढपे ए आगार यतिने होय परंतु पाठ संलग्न छे माटे गृहस्थने पण पाठमां कहेवाय छे. बारमो यतिने छार्थे आगार जाणवो ते यतिने छार्थे प्रावरणना पचस्काणे चोखपट तेहनो छागार जाणवो, एटखे वस्त्र मूकी नग्न थइ बेठो होय छने गृहस्थ आवे एटखे खज्जाने माटे छठीने चोखपट पहेरे, तेने चोखपटागारेणं कहीये एथी पचरुखाण ज्ञंग न थाय. ए आगार पण यतिने होय ॥ २६ ॥	
	थाय माटे पाणी तथा आहार ए वे वानां परवववानां हेाय तो कढरे अने तिविहार उपवासा-	
	दिकमां तो पाणी मोकत्तुं हे माटे एकत्नो आहार पण लेवो कढपे ए आगार यतिने होय परंतु	
	पाठ संखग्न हो माटे गृहस्थने पण पाठमां कहेवाय हे.	
	पाठ राजन्न ठ माट गृहस्यन पर्य पाठमा कहवाय ठ.	
	बारमो यतिने अर्थे आगार जाखवो ते यतिने अर्थे प्रावरखना पच्चकाखे चोखपट तेइनो	
	आगार जाणवो, एटले वस्त्र मूकी नग्न थइ बेठो होय अने गृहस्य आवे एटले लजाने माटे 🎼	
	उठीने चोलपट पहेरे, तेने चोलपटागारेणं कहीये एथी पचल्लाण जंग न याय. ए आगार 📲	
	खरडिय-खरड्यो छिन-छेवा छेवेगं । मंडाइ-मांडादिक   मख्लियं-मसल्युं	
	छिशि-छंछी नांख्यो संसइ-मिश्र डिखत्त-पाछुं छेवुं अंग्रुझीई-अंग्रुझीये 💡	
	डोगाइ-चाडुगादि इच-शाकादिक पिंडविगइणं-पिंडरूपविगयनुं मगा-लगारेक	
翻		
S.L		ł

खरडिअ ऌूहिअ डोवा, इ लेव संसष्ठ डुच TOMIO मंडाई॥ उख्खित पिंड विगई,णं मख्खीयं अंगुलीहिंमणा॥२ आ ग्रब्दार्थ-(१३) लेवालेवेणं एटले खरड्यो होय ने पडी खुछयो होय एवा चाडुवादिके लीधेलो आहार जमतां. (१४) गिइथ्य संसंहेण एटले गृहस्य संबंधी विगयादिके मिश्र कीधुं एवं शाक तथा मांडादिक वावरतां. (१५) उद्धिवत्त विवेगेणं एटले मांडा तथा पूर्षिकादिक उपर मूकेला गोळ मन्नुख पिंडविगय पाछा लइ लीधेला एवा आहार ने वावरतां. (१६) पडुच मरिखएणं एटले अंगुलीवडे घृतादिक चोपडीने लगारेक स्तेहवंत बनावेलो आहार वावरतां ॥ २७ ॥ and a concernance विस्तारार्थः-तेरमो, प्रथम खरड्यो होय अने पठी तेने खुंठी नांख्यो होय एटले खरड्यो ते लेप अने खूंबयुं ते अलेप एवो कोयो चाटुवो प्रमुख होय ते लेवालेवेण आगार जाणवो, एटले जोजननुं जाजन अथवा चाटुवा प्रमुख होय ते अकल्पनीय एवा विगय अने शाक प्रमुख 112351 अन्नादिके खरड्या होय, पठी ते कमजी प्रमुखने खूंठीने अलेप कीधां होय, तो पण कांइक

প০শা০

1133511

لاقتحاله والع	विगयादिक व्यवयवना सझावे सहित हे; तेवा जाजने करी आयंबिलादिक पचरकाणवालाने	
	जमतां लेतां पचच्खाण जंग थाय नही. चौदमो गिहहसंसडेणं एटले जक्तदायक गृहस्थ संबंधि विगयादिके वघारादिके संसृष्ट	SCC 450 €
জন্য কেন্দ্রা যে বেগ যে বেগ যে বেগ বেগ বেগ বেগ বেগ বেগ বেগ বেগ বেগ বে	एटले मिश्र कीधुं एवुं ज्ञाकादिक करंबादिक तथा मांमादिक ते लगारेक हाथे गोल प्रमुखे चोपम्या कीधा होय, तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीये, ते निविना पच्चरूखाणे लेवा कल्पे तथा आयं-	ଈଷ୍ଟାରାହାରୁ ହୋଇସ୍ଟାର ହୋଇ କ
<u> য</u> ে বিজ্যালয় বিজ্যা বিজ্যা বিজ্যা বিজ্যালয় বিজ্যা বিজ্য	विलमां पण किंचिन्मात्र तैलादिके स्निग्ध हाथे लगामेला एवा मंमकादिक होय ते पण यतिने	100-000-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00-00
rever.	लेतां पचरुखाण जंग न थाय. पन्नरमो पिंमरूप विगयनुं उक्तिप्त एटले पाढुं लेवुं एटला माटे एने उस्कित्तविवेगेथं नामे	15 (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
	आगार कहीये, एटले ए जाव जे मांका प्रमुख अन्न तथा पूपिकादिक जपर गोल प्रमुख तथा माखणादिक मूक्यां होय, ते फरी पाठां तेना उपरथी उपाकी पण लीधां होय एटले ए गोल	10 AD
the second	माखणादिक जे पिंक विगय हे ते एवां हे, के जे पदार्थ उपर राखेखां होय, तेने फरी जेवारे	Decree i
antes		STATE -

प०भा० ॥१२७ ॥१२७	तेना उपरयी पाठां उद्धरी खइये तेवारे ते निःशेषपणे एटखे बधां पाठां खेवाइ शकाय नहीं, कांइक पण रोटखा प्रमुखने खागेखां यकांज रही जाय माटे जेना उपरयी पिंगविगइ ट्यलगी करी खीधी होय एवा रोटखा प्रमुखने विगइना पच्चख्खाणवाखो, जो गृहस्यना घरयी वहोरीने जुंजे, तो पच्चख्खाण जंग न याय.	इ. प०मा० प०मा०
ବିହାର କାର୍ଯ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ •	रोालमो मसब्युं अंगुलीये करीने लगारेक एटले ए जाव जे अंगुलिये घृतादिक चोपकी ते अंगुलीये चोपकीने मांका प्रमुख करे तेने परुच्चमल्खिएएं कहीये. ते सर्वथा रूक्त एवा मंकका- दिक होय तेने लगारेक स्तेहवंत सुकुमारता उपजाववाने अर्थे लहुचूइ प्रमुख अंगुलीये करी म्रक्ति कीधुं होय ते नीवि प्रचल्खाएमां लेतां पचल्खाए जंग न थाय, परंतु घृतादिकनी धाराये करी म्रक्ति करे, तो लेवुं कृह्ये नहीं. ए शोल आगार अशन आश्री कह्या ॥ २९ ॥	an a
e and the second	हूर्वे पाणस्सना ठ आगारनो अर्थ कहे हे.	
Jain Education Internatio	nal For Personal & Private Use Only	www.jainelib

लेवाडं−लेप कृत पाणी आयमाइ−आचाम्लादि इअर−इतर सोवीरं−सौवीर	अच्छं-निर्मेल पाणी उसिणजलं-उष्ण पाणी धोयण-चोखानुं धोयण बहुल-बहु लेप	ससिथ्थं−सीथ सहित उस्सेइम−आटाथी खरड्या हाथनुं घोयण	इअर–इतर   सिथ्यविणा–सीथ विनानुं   जाणवुं
		तो्वीरमच्छ मुसि	
		से इमडयर सिथ अलेपकृत सौवीर कांजीन्नं धोवण	
निर्मेल पाणी ते उष्ण जळ, हाथनुं घोवण. (६) सीथ वि	(४) बहु छेपवाछं ते चोखा मा नानुं एटऊे अन्नादिक आटाना	पुखनुं धोवण, (५)सीथ सहित प	ाणी ते आटाथी खरडेला एव
		न कहाय ( क आचाम्ला) एटला माटे ए आगारनुं	

वीजो इतर एटले पूर्वोक्त लेपथकी उलटुं अलेपकृत पाणी लेवुं, ते माटे ए आगारनुं नाम শ, সা০ Second व्यलेवेण वा जाणवुं. ते सौवीर कांजी धोयण व्यादिशब्दची गमूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं. 112551 त्रीजो अञ्च ते निर्मल पाणी जब्ण पाणी एटले त्रिदंगोरकालित जब्ण जल अथवा बीज़ं पण निर्मल पाणी नितर्यु फलादिकनुं धोयण जाणवुं एटला माटे अन्नेणवा नाम कहीये. चोथो चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने बहुलेप कहीये एटला माटे एनुं बहुले-वेणवा एवुं नाम हे. ए तंडुलधावनादिक गंठुल पाणी जाणवुं. पांचमो सीय सहित पाणी ते व्याटायी खरमया हायनुं धोयण एटलेजत्सेदिम एवुं पिष्टजलनुं नाम वे एटला माटे ससिब्वेणवा एवुं ए आगारनुं नाम वे. ब्हो ए पूर्वोक्त पांचमो ससिब्रेणवा ए आगारथी इतर ते आटावाला हाथनुं धोयण तेने वस्त्रादिके करी गढ्युं होय, तेथी ते सीथ विनानुं जाणवुं, एटखे अन्नादिक आटाना दाणाना the second second 11236 8 स्वाद विनानुं थाय, एटला माटे तेनुं नाम असिब्रेण वा कहेवाय. ए ब आगार पाणीना

सख्य	या चाय. ॥ १७ ॥
	छहींयां प्रत्येक छागारे वा शब्द मूकेलो ठे ते एक एकथी बीजाबीजामां विशेष देखानव
ने म	गटे ठे, एटले लेपथी अलेप विशेष, अलेपथी अब विशेष, अबथी बहुलेप विशेष, बहुलेपथ
ससि	छ विशेष, ससित्वथी व्यसित्व विशेष जाणवो, परंतु लेपादिकनुं पाणी लीये, तो पण उपवास
	नो जंग थाय नही. इति जावः ॥ ए प्रकारे अपुनरुक्त एटले फरी न उचरीये एवा बावी
	ारोना अर्थनुं व्याख्यान लेशथी देखामयुं. ए आगारोना अर्थनुं चोयुं द्वार पूर्ण ययुं. उत्त
बोल	चालीश थया ॥
	चालीश थया ॥ इवे दश विगइना स्वरूपनुं पांचमुं घार कहे हे.

					2
<b>ঀ</b> ৹মা৹ 💈	पण-पांच	<b></b>	इगवीसं-एकवीश	चड-चार	है प॰ भा॰
H\$3611	चउ−चार दु–बे दुविहे–बे मेदे	भख्ख−भक्ष दुद्धाइ - दुग्धादिक विगइ−विगइ	ति–त्रण दु–बे चउविइ–चार भेदे अभख्खा–अभक्ष्य	महुमाई−मधु आद्रिक विगइ−विगइ बार−बार	1 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00
ಹಿಡುತು ಡು ಪ್	पण चउ च	उ चउ दु दुविह	, छ भख्ख दुद्धाः ।, चउ महुमाई	इ-विगइ इगवी	<b>Ř</b>
ന്തായം അത്താം	शब्दार्थ—दुधनां (खावा योग्य) विगइना स एम ए चार अपस्य विगइ विस्तारार्थः∽जे	पांच, दहिनां चार, घीनां चा र्व मल्री एकवीस मेद थाय छे ना सर्व मल्री बार भेद छे.॥ इंद्रियादिकने पुष्ट करे,	र, तेल्ठनां चार, गोल्लना बे, पक . तेमज मधना त्रग, मदिराना दे	ानना वे एम ए दुध विगेरे वे, मांसना त्रग, मांखगना ाा योगने व्यप्रशस्त वि	भक्ष्य चार. हे कार हे

10 CT 10 CT 10 CT	बेहुने अन्न <del>द</del> यज <b>डे. एटले जद्दण करवा योग्य नथी, अने ड</b> न <del>द</del> य विगइ साधु अने आवक बेहुने जदय करवा योग्य डे. माटे एने जक्ष्य विगइ कहीये, तेना उत्तर जेद एकवीस याय ते कहे डे.	Warren and
মুহ বহু কিন্দুহ	प्रथम छुध विगइ पांच जेदे हे, बीजी दधि विगइ चार जेदे हे, त्रीजी घृतविगइ चार जेदे हे, चोथी तेल विगइ चार जेदे हे, पांचमी गोळविगइ बे जेदे हे, ही, पक्वान्नविगइ दि- विध एटले बे जेदे हे, ए छुधादिक ह जक्तण करवा योग्य विगइ हे, तेना सर्व मली उत्तरजेद	A the service of the
to the standard stand	एकवीश थाय हे.	
12-23-52-53-53-53-53-53-53-53-53-53-53-53-53-53-	हवे चार अनद्य विगइना उत्तर नेद कहे ठे. प्रथम मधु विगइ त्रण नेदे ठे, बीजी मदिरा विगइ वे नेदे ठे, त्रीजी मांस विगइ त्रण नेदे ठे, चोथीमाखणविगइ चार नेदे ठे. ए मधु आदिक चार अनद्य विगइ ठे, तेना सर्व मखी उत्तर नेद बार थाय ते सर्व नामपूर्वक आगल कहेशे॥	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1
	हवे प्रथम छ जक्ष्य दिगइना एकवीश जेद व्यक्ते करी कहे छे.	

TO HIO गुड-गोल महिसी-भेंसनं षण-पांच प०भा० 12401 उंटि−उंटडीनं पकनं-पकवान्न **घय**-घत 25-25 अय-छालीनं अह-हवे भरूखविगइओ-भक्ष्य विगइ एलगाण-गाडरीनं चउरो-चार जातनं अ–वल तिलं-तैल गो-गायनं સે સંબધાર વાય છે. તે खीर घय दाहि अ तिऌं, गुड पक्कनं छ भख्ख विगइओ ॥ गो महिसी उंटि अय ए-लगाण पण दुद्ध अह चउरो॥३०॥ भन्दार्थ-दुध, घी, दहिं, तेल, गोल अने पकाल. ए छ भक्ष्य विगइ छे. तेमां गायनुं, भेंसनुं, उंटहीनुं, वकरीनुं अने घेटीन ए पांच जातन दुध विगइ छे. हवे चार जातन घी विगेरे कहे छे. ॥ २० ॥ Sector Second 118801 विस्तारार्थः-प्रथम ठ जक्ष्य विगयनां नाम कहे हे. एक छुध, बीजो घृत, त्रीजो दधि, वसी चोथो तैल, पांचमो गोल, ठठो पक्वान्न, ए ठ जन्त्यविगय जाणवी. एटले ए ठ विगइ जे ठे, ते

6	नां नाम कहे हे.	-	
है तिहां प्रथम	। दूधविगयनुं नाम कह्युं दे	), माटे दूधना उत्तर जेद व	न्ही देखामे हे. एक गायनुं
हूँ दूध, बीजुं जेंसनुं	दूध, त्रीज़ुं उंटमीनुं दूध,	चोयुं अजा एटले बालीनुं	दूध, पांचमुं एमका ते गा-
👔 🛛 मरीनुं दूध ए पांच	व जातिनां दूध ते सर्व वि	गई जाणवी, अने रोष मनु	ष्यणी तथा बीजो पशुझा
🖁 दिकनां जे खीर श्र	गय हे ते विगइमां गणाय	नही.	र जातिनं घत तथा चार
🖁 जातिनुं दहीं कहे	वे ॥ ३० ॥	•	
। डू डू घय−वृत	छे ॥ ३० ॥ ∣ सरिसव−ग्ररत्नवन्रुं	चउ-चार	्र ट पकन्नं−पक्वान्न
हूँ जातिनुं दर्हीं कहे हैं घय−घृत है दहिआ−दधि	` छे ॥ ३० ॥   सरिसव−ग्ररत्नवनुं   अयसि−अल्सीनुं	चउ-चार द्वगुड-द्रव्य गोस्र	पकञं−पक्वान्न तिल्ल–ते <b>रुमां</b>
है जातिनुं दर्ही कहे प्रय-यृत दरिआ-दधि उट्टिविणा-उंटडीना वि तिल-तिलनुं	छे ॥ ३० ॥ सरिसव−ग्ररप्तवन्नुं अयसि−अल्सीनुं ना लट्ट-काबरी	चउ-चार	पकञं-पक्वान्न

ľ.	घय दहिआ उद्विणा, तिलसरिसवअयसिलद्वतित्वचऊ॥	হ হু হু বৃ <b>০</b> মা
	द्वगुड पिंड गुडादो, पक्कनं तिछ घय तलियं ॥३१॥ नरं ॥४॥	ଜଣ୍ଟେଶ୍ୱ
	शब्दार्थ—घी अने दहिं इंटडी विना बाकीना चार भेदे जाणवुं. तलनुं, सरसवनुं, अलसीनुं अने *लाटनुं ए पार जातनु तेंल विगइ छे. ढीलो अने कठीण ए वे जातनो गोल, अने पकान्न ते तेलमां तलेलुं अने घीमां तलेलुं एम वे भेदे	NARADA ARA
	^{जाणतुं} ॥ ३१ ॥ विस्तारार्थः−प्रयम घृत जाणतुं, वीजी दधि जाणतुं, ए वे विगइना एक उंटकीना ≲ूध विना वाकी चार चार जेद जाखवा. केम के उंटकीनुं दूध जमाय नहीं, माटे ते विना बाकी चार; एक	anarawananananananananananananananananan
្លុះ	नाको चार चार जद जाखेबा. केन के ७८माज दूव जनाव नहीं, नाट तो विगा वार, इन गायना दहींनुं घो, बीजुं ज़ेंसना दहींनुं घी त्रीजुं बालीना दहींनुं घी, छने चोथुं गामरना दहींनुं वी, ए चार जेद घृतना जाणवा, तथा दहींना पण एज चार जेद. एक गायना दूधनुं दहीं,	Nares

**प**॰ेभा० स२४१॥

बीजुं जेंबना दूधनुं दहीं, त्रीजुं ढालीना दूधनुं दहीं अने चोर्थुं गामरेना दूधनुं दहीं, ए चार	জ্য জ্য
दहींना जेद विगइरूप जाणवा.	
हवे तेल विगयना चार जेद कहे हे. एक तिलनुं तेल, बीजुं शरशवनुं तेल, त्रीजुं अलसीनु	Sec.
तेल अने चोधुं काबरी एटले कसुंबाना दाणानुं तेल, ए तेल विगइना चार जेद विगइयाता	No.
रूपे जाएवा. अने बीजा एरंम्फल मधुकफल, नालियेर, खदिर, शिंशपादिक यावत लाह्तापा-	10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-1
	57-23- 57-23-
	(1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
	See a
	Sector Sector
तेमां तद्यां होग तेने तेवमां तबेवं एकाल कहींगे जीवं एतें जे जार जातिनां घत कहां ते	AND STORE STORE
ું તેમાં તેન્છું દાવ તેને તેમાં તેમણે તેમજ મુદ્દાવો બાંગે પૈતન્ત્ર તેમ તામે તામે તિને તેમને તેમ	g
	दहींना जेद विगइरूप जाणवा. हवे तेल विगयना चार जेद कहे हे. एक तिलनुं तेल, बीजुं शरशवनुं तेल, त्रीजुं व्यलसीनु

For Personal & Private Use Only

স্ব৽ সা৽ ॥१४२॥	ू इधना पांच, घृतना च	वार, दहींना चार, तेलन	ां चार, गोलना बे छने।	स्थानके जोम्त्रो. ए रीते पकान्नना बे, मखी एकवीश उत्तर बोख पच्चास थया ॥	<b>৫</b> ০ সাত উদ্ধান্ত উদ্ধান্ত
	हवे ए जदय पयसाडि-पयसाडी स्वोर-स्वीर पेया-पेया पयसाडि र दुख्ख बहु	विगयना निवीयाता त्री अवलेह-अवलेहिका दुबटि-दुबटी दुब-दुग्धना खीर पेया, वले अप्प तंदुल, त	रा कराय ठे तेना जेदोनुं विगइगया-निवीआता दख्ल-द्राल बहु-घणा हि दुद्धहि दुद्ध चुन्नं बिऌसहिअ	उन्हुं द्वार कहे ते. अप्पतंदुल-अल्पतंदुक तच्चुन-चोखानो आटो अंविलसहिअ-खटास सहित विगड्गया ॥	• • • • • • • • • • • • • • • • •

www.jainelibrary.org

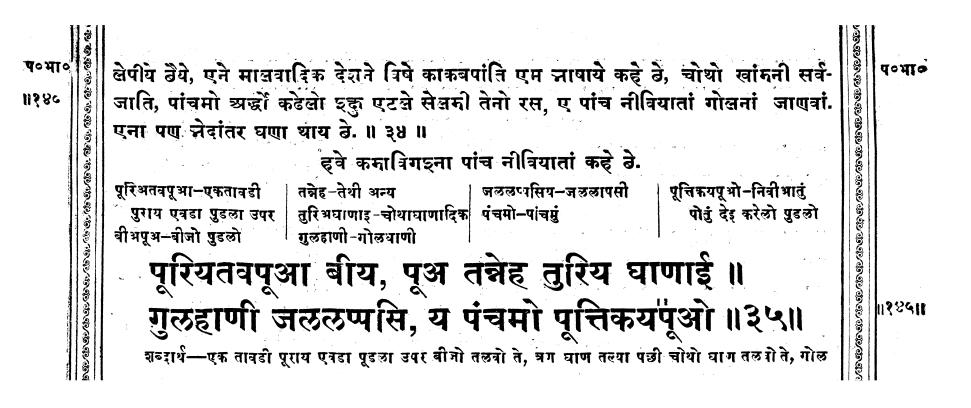
भेग, आरो नालीने रांघेछं अवलेहिका अने खटास नांखीने रांपेछं द्ध दुद्धार्ट. ए पांच द्धना निवीआता जाणवा.॥३२॥ विस्तारार्थः-प्रथम झूधना पांच निवियाता थाय ते कद्दे ठे. एक झाल व्यने टोपरादिक नाखीने दूध रांध्युं होय तेने पयसामी कद्दीये, वीजुं घणा चोखा नांखीने दूध रांध्युं होय तेने वांखीने दूध रांध्युं होय तेने पयसामी कद्दीये, वीजुं घणा चोखा नांखीने दूध रांध्युं होय तेने पंति कद्दीये, त्रीजुं व्यट्पतंछुल एटले थोका चोखा नांखीने झ्ध रांध्युं होय तेने पेया कद्दिये, चोथुं ते चोखाना चूणें करी सदित एटले ते चोखानो व्याटो लोक जाषाये फ्रूकरणुं कद्दे ठे, ते नांखीने, झ्ध पचाद्युं होय, रांध्युं होय तेने व्यवहेदिका कद्दिये, पांचमुं खाटो रस करी व्याठ कांजी प्रमुख खटाशे सदित छुध ऊष्ण करे, व्यथवा ए लोक जाषाये दृधमां खटाश होय, तेमाटे एने फेदरी कद्दे ठे, व्यथवा त्रण दिवस प्रसूत गोछुध बल्लदी बलहटां ते छुद्धटी कट्दीये, ए पांच छुधनां विक्वतिगता एटले निवियाता जाणवा, जेदांतरे, एना बीजा घणा जेदो याय ठे. ॥ ३१ ॥ हवे घृतविगइ तथा दहीविगइना पांच पांच निवियाता कद्दे ठे.
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<b>प०मा०</b> स <b>२</b> ४२ ॥	निभ्भंजण–निर्भजण किट्टि-कोटुं करंब-करंबो घोल–घोलेलो वीसंदण-विस्पंदन पकवयं-पाकुं घृत सिद्दरिणी–ज्ञिखंड घोल्ठवडा–घोल्लवडां पकोसद्दितरियपकौषधितरित दद्दिए-दद्दीने विषे सल्वणदद्दि-लवणसहित द्धि	ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম ম
<b>~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~</b>	निष्मंजणवसिंदण, पक्कोसहितरिय किङ्टि पक्वघयं ॥ दहिए करंब सिहरिणि, सलठवणदहि घोल घोलवडा॥३३॥ बन्दार्थः—निभँजनघुत, विस्पंदनघुत, पक्वौषधितरित, कीडुं, अने पाकुं घी. ए पांच निवियाता घी विगइनां जाणवा.	e des cercentes des cerces de
12/33/33/33/33/33/33/33/33/33/33/33/33/33	दहीमां क्रूर मेळवीने कीधेलुं ते करंबो. दहीं खांड नाखी मथन करेलुं ते शिखरिणी. ऌगनां कण नाखीने मयेलुं दहीं ते छ्वणसहित. लुगडांथी छाणेलुं ते घोळेलुं दहीं. दहींना घोळ्युक्त बडां करवां ते घोलवडां. ए पांचनिवियाता दहींना जाणवा. विस्तारार्थः-एक पकान्न तख्या पठी उतर्युं जे बलेलुं घृत तेने निष्नंजण एटले निर्नंजन घृत, पकान्ननुं तलण घृत कहीये, बीजुं दहींनी तरी छाने धान्यनी कणक बेहु एकठा मेलवीने	NB 4000000000000000000000000000000000000

જી આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ	नीपजाव्युं जे द्रव्य विशेष ते कुछरी इति नापा सपादलक्त देश प्रसिद्ध ते विसंदन एटले विस्पंदन कहीये, त्रीज़ुं पक्र्वोषधितरित एटले ठ्योपधिने घृत साथे पचावीये तेनी उपर जे घृतनी तरिका वले ठे, एवुं कूरिया सरिखुं घृत पचीने थाय, ते घीनी उपरखी तरी कहीये, चोथुं घृतनो मेल उतरे तेने घृतनो मेल ते कीटुं कहीये, पाचमुं पाक्टुं घृत ते ठ्योपधिये पचावेक्षुं घृत जाणवुं, क्वयर ठ्यामलादिक ब्राह्मी प्रमुख ठ्योषधिये करी पचाव्युं होय ते जाणवुं एना न्नेदांतर घणा थाय. हवे दहींना पांच निवियाता कहे ठे. प्रथम दहींने विषे उदन एटले कूर एकठुं मेलवीने कीधुं ते दर्धि सीधोरो इत्यादि लोक ज्ञाषाये कहे ठे, तेने करंबो कहीये, बीजुं खांम नांखीने हाथथी मथन करेखुं दहीं तथा खांमयुक्त बांधेखुं दहीं तेने शिखरिणी कहीये, त्रीजुं छुणना ज्या नाखीने मथेखुं वस्त्रे ठ्याणाढ्युं जे दहीं, ते लवण सहित दर्धि कहीये, चोथुं खुगमाथी ठाणेखुं मथेलुं दहीं तेने घोलेखुं दहीं कहीये, पांचमुं दहींना घोलयुक्त वटक करवां कांजीवमां, दहींवमां	<b>ଏହା ପାନ ସ୍ଥାପ ଅନୁକାର ସହାୟର ସହାୟହା ସହାପରେ ଅନି ଅନ୍ୟାନ ହାହାଳେ କାହାନେ କାହାନେ କାହାନେ କାହାନେ କା</b> ହାନ
Part of the second second	नाखीने मथेख़ुं वस्त्रे ऋणगढ्युं जे दहीं, ते लवण सहित दधि कहीये, चोथुं ख़ुगमाथी ढाणेख़ुं मथेलुं दहीं तेने घोलेख़ुं दहीं कहीये, पांचमुं दहींना घोलयुक्त वटक करवां कांजीवमां, दहींवमां तथा दहीं ढाणीने तपावे, पढी मांहे वमां नांखे, तेने घोलवमां कहीये, इहां विवेकीने एटख़ुं	M a la la la la la la la

प॰भाव ॥१४४॥ जष्ण करी नांखीये तेवारे श्रावकने जक्तण करवा योग्य आय, अन्यया घोखवमां वावीझ अज- द्यमां गणाय ते जक्तण करवा योग्य नथी. अकट्टपनीय जाणवां ॥ ३३ ॥	<b>শ</b> ০ মা০
देयमां गणाय ते जक्तण करवा योग्य नथी. व्यकटपनीय जाणवां ॥ ३३ ॥ द्वे तेख तथा गोख विगइना पांच पांच निवीयातां कहे ठे. तिटकुद्दि-तिटवट निभ्भंजण-निर्भजण पकतिल-औषध पक्वतेल तिहामली-तेल्लीमली पाय-ग्रल्नी पांति अधकदिय-अरधो कडेलो पकतिल-औषध पक्वतेल तिहामली-तेल्लीमली पाय-ग्रल्नी पांति इल्खुरसो-जेल्डीनो रस तिलकुद्दि निप्मंजण, पक्कतिल पक्कुसहितरिय तिहामली॥ सिकर गुलवाणय पाय, खंड अधकादिय इख्खुरसो ॥ ३४॥ जब्दार्थ-तिलवट, निर्भजन तेल, औषध पक्तेल, पकौषधितरित तेल, अने तेल्नी मळी ए पांचनीवियाता तेल्ना	11 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2

୧୯୦୦ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	नावियाता तलना जाणवा. एना पण जदातर घणा जदा थाय. इवे गोळनां नीवियातां कहे हे. एक साकर मिश्री, बीजो गोलपाणी तथा रांधेलुं गलमाणुं	ୁନ, ଜୁନାନୁକାର ସହ ସହ ସହ ସହ ସହ ମହାର ସହ ଏହି ବେଳେ କାନ୍ଦ୍ର କାନ୍ଦ୍ର ସହ ସହ ସହ ସହ ସହ
an a		1980-19-19-19-

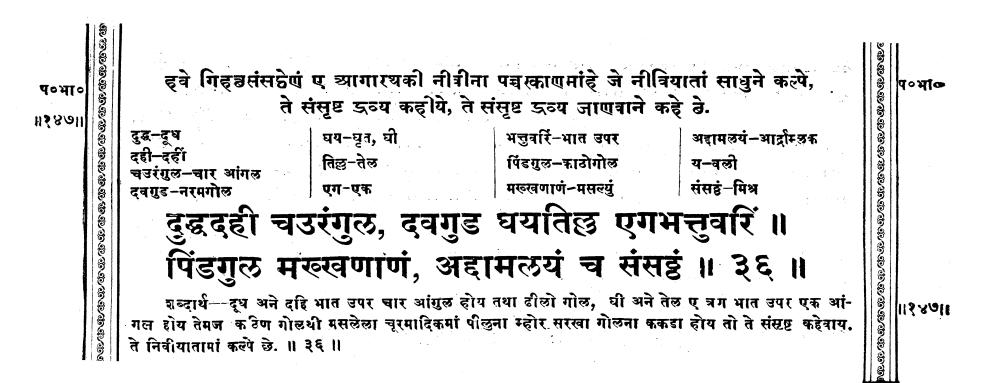


<b>ୢୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄୄ</b>	भाणी, जललापसी अने पोतुं दहने करेलो पुडलो. ए पांच निवीपातां जाणवा. ॥ ३५ ॥ विस्तारार्थः-पूरयो एटखे ढांक्यो सर्व तावको ठे जेऐ एवा पूरुझा उपर बीजो पूरुझो तली काढीये, ते बीजो पूरुखो नीवीपातो जाएवो, एटखे घृतादिके पूरित एवो जे तवो तेने विषे एक पूर्षे करी पूरयो समस्त तवो तेहमां एकवार तजी, वल्ली तेहिज पूर्पिकादिक पर्यटकादिके व्यपू- रित स्नेह एवा तवामां बीजी वार तथा त्रीजी वार द्देग्वीने तली काढीये जे पक्वान, ते निवीयातुं जाएवुं. बीजुं तेथी व्यन्य एटखे त्रए घाए तली काढ्या पठी उपरांत बीजुं घृत द्देपव्युं नथी एवुं जे तवामांहेख़ुं मूलयुं घृत ते मांहे तल्या जे चोथा घाएवा व्यादिक ते सर्व बीजुं नोवीयातुं जाएवुं, तथा त्रीजुं गोलधाएी करवी, ते त्रीजुं निवीयातुं जाएवुं. चोथुं सुक्रुमारिकादिक काढ्या पठी एटखे पक्वाच्न तली काढ्या पठी उध्घृत जे घृतादिक एटखे वधेखुं जे घृतादिक तेले करी खरमेखो जे तवो तेने विषे पाएी साथे रांधो एवी जे खापसो	

म॰ भा० ॥१४६ । ॥१४६ ।	गहूंनुं उरण गोलनुं पाणी घृतादिके जेलीने सीजवे ठे, एने महदेशे प्रसिद्धपणे लापसी तथा लह्गटु कहे ठे, ते जललापसी निवीयातुं जाणवुं. एटले तावमीनी चीकट टालवा साह	त०मा <i>०</i> १०मा०
জারাজ কো কো লো কো কো কো কো ক	माह लाट नॉली पाणी साथे लापसी करीये ते जाणवी. पांचमुं पोतकृत पूमलो ते घृत तेले खरमेला एवा स्नेहदिग्ध तवाने विषे गुमादिकनुं पोतुं आपी गढ्या पुमा करे ठे, एटले पक्वाझ तख्या पठी खरड्या तावमा मांहे गोळादिकनुं पोतुं देइने पुमलो सीजवीये ते निवीयातुं जाणवुं ॥ ए ठ जक्त विगयनां त्रीज्ञ निवीयातां कह्यां. जिहां घी अने तेलमां पाणीनो जाग आवे ते नीवियातां तख्या चणादि सर्व जाणवां.	प०मा० ॥११४६॥
పైగు అందు అందు త	त्र्यने जे कमाइमांहेथी घी तथा तेख उपर फरी वखे नहीं, चिखमिखाट न याय एवुं तळेखुं होय, ते पण विगयातुं नही कहेवाय. इत्यादिक परंपरागत खेवानो विचार बहु प्रकारे ठे, ते गन्नसमाचारीगत प्रसंगथी योगादिकमांहे कख्पाकख्प विज्ञागे खखीये ठैये. खहचूई, पूपिका, पोतकृतपूपक, वेममी, तद्दिनकृत करंब, घोख, फूख, वघारित पूरण, वघा-	NS 1188€¶

रिका, पटीरकी, मथित व्यगलित तकादिक, ' कस्मिन्नपि योगे ' कोइ पण योगने विषे न कल्पे व्यनेरी योग विना निवीमां कल्पे. खहिगटुं, ठोठरा, वघारिक वक्तां, घारवक्तां, साज्यपक्व खीचकी, सेवतिका, वघारित चण- कादिक जत्तराध्ययन योगने विषे व्याचारांग मध्यगत सप्तसप्तकाध्ययनने विषे चमरोद्दशक व्यनुझा यावत् जगवतीयोगने विषे व्याचारांग मध्यगत सप्तसप्तकाध्ययनने विषे चमरोद्दशक व्यनुझा यावत् जगवतीयोगने विषे न कल्पे, बीजा सर्व योगमध्ये कल्पे. व्यने पढोगरी, फ्रंकरणुं, जकलघुं, वाशी करंब, तिखवटी, क्रुख़र, निवीयातां, विगइ, गांठीया ना घारा, दलिया, ग्रंदविना मगीयादि, व्योषधादि, मोदक, पेटक, खंका, सिता, वरसोखां, वासी ग्रम्पाक, ग्रंदपाक, वगर तल्यां कांकरियां, व्यनुत्कालित इद्धरस, दिनत्रयावधि प्रसूत गोडुग्ध, बलहही, व्यंगाराथी जतारी व्याज्यादि मिश्रित पाठला दिवसनी पचावेली तिलवटी, पर्यटकादि, ग्रुमादिके मिश्रित न करेली तिलवटी, इत्यादिक नीवीयातां श्रीव्यावझ्यक, दशवैकालिक, उत्तरा- ध्ययनादि सर्व योगने विषे प्रायः कल्पे. एवो विचार प्रसंगथी जाणवा माटे लख्यो ठे ॥३५॥
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

Jain Education International



3. QQ - Q		3
୩୪୩୫ ୧୫୦୩୫ ୧୦୦୫ ୧୦୦୫ ୧୦୦୫ ୧୦୦୫ ୧୦୦୫ ୧୦୦୫ ୧	विस्तारार्थः-छुग्ध अने दधिमांहे कूर प्रमुख नांखोये एटले इध दहीं मिश्रित कुरादिक	ക്കാക്കന്തായതായതായതായതായതായതായതായതായതായതായതായതായത
13-AB-	होय, ते जो इध तथा दहीं छरयी चार झंगुल जपर चरे तेने संसृष्ट डव्य कहीये, ते नीवियातुं	2000
69	नीवीमां कब्पे एटले जात रोटी उपर इध, दहीं, चार अंगुल प्रमाण उंचुं चमयुं होय, तो	660
(1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)	नीवीप्रमुख मांहे साधुने कब्पे अने चार छंगुलथी अधिक पांच आदिक छंगुलना प्रारंजथी	1000 1000
200	जेवारे उंचुं चमे, तेवारे ते विगइ जाणवुं. माटे ते न कख्पे.	30 AD
୍ଦ୍ଧର	अने ऊव्यगोल एटले ढीलो नरम गोळ अने घृत तथा तेल ए त्रणे ज्यां सुधी जक्त जे जात	55 C
2396	अथवा रोटो ते उपरे एक अंगुल प्रमाण उंचां चट्यां होय त्यां सुधी संसृष्ट डव्य कहेवाय,	50.030 100
્લર્ગ	एटले नीवियातुं कहेवाय, ते लेवुं कढपे अने बीजा अंगुलयो प्रारंत्रीनेउंचा चमता देखाय, तेवारे	22. 22.
(COC)	विक्रत डव्य एटले विगयडव्य जाएवां, ते लेवां कहपे नहीं.	200 A
30.00	पिंगगोल एटले काठा गोल साथे मसब्युं जे चूरमुं प्रमुख तेमांहे आर्डाम्झक	2002
ತ್ಯಾಗ	एटले राण पीलूना महोर ते समान नहाना कणीयाना जेवा प्रमाणवाला एवा गोलना बहु	5
Se	and the second	5 60
		8

www.jainelibrary.org

प०भा० ॥१४८॥	महोटा खंभ गोलना	रहे तो ते विक्रतिगत	कहिये. ते नीवोयातामांहे जाखवा, ते कढपे नहीं ॥ स्वरूप दर्शाववा कांइक वि		इत्र इत्र क्रिड क्र
<b># ? 8 &lt; 11</b>	दब्ब-द्रब्य चोखा ममुखे हय-हणी विगइ-विगइने विगइगयं-निवियातु दुव्वहयविग उद्धरिए त	रुणो-वली तेण-ते गाटे तं-तेने इबंदव्वं-हतद्रव्य इि विगइ-गयं रत्तंमिय, उक्ति	उद्धरिए-उधर्याषछी तत्-ते तम्मय-ते उतर्या पछी उक्तिटदव्वं-उत्कृष्टद्रव्य पुणो तेण तं ह ठ दव्रं इमं चन्ने क्षिरादिक विगइ तथा वर्णिकादि	इगं-एम च-अने अन्ने-अनेरा कहे ले, यं दुव्वं ॥ ॥ ३.७ ॥	©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©©

विगइ ते विक्रुतीगत कहेवाय. वल्ली भात विगेरेथी इण्युं एवं जे विक्रतिगत ते इतद्रव्य कहेवाय. तथा तावडामांथी सुल- डी काढी लीधा पछी वधेळुं टाडुं थयेछं जे घी तेमां नाखेला लोटने इठावीने करीये ते उत्क्रुष्ट द्रव्य कहेवाय एम बीजा आचार्य कहेछे. ॥ २७ ॥ विस्तारार्थः	5000	
दिक विगइ तथा कणिकादिके हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने विकृतिगत एटले नीवियातुं कहीये दिक विगइ तथा कणिकादिके हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने विकृतिगत एटले नीवियातुं कहीये ते कारण माटे वली ते तंदुखादिके हण्युं एवुं जे बिकृतिगत तेने ऊव्य कहीये. पण विगय तथा निविगय न कहीये. तथा सुकुमारिकादि तावका मांहेथी उद्धरया पठी एटले सुकुमारिकादि काहाकी लीधा पठी जगरखुं जे घृत ते टाहाकुं थया पठी तेमां लोट नांखीने हलाविये ते घृत तावको हेठो जतारया पठी जल्कुष्ट ऊव्य कहेवाय एटले निविगय जाणवुं एम अनेरा आवार्य कहे ठे. इति गायार्थ:-	10000000000000000000000000000000000000	
ते कारण माटे वली ते तंदुसादिके इएयुं एवुं जे बिक्ठतिगत तेने ऊव्य कहीये. पण विगय तथा निविगय न कहीये. तथा सुक्रुमारिकादि तावमा मांहेथी उद्धरया पठी एटले सुक्रुमारिकादि काहामी लीधा पठी जगरखुं जे घृत ते टाहाफुं थया पठी तेमां लोट नांखीने हलाविये ते घृत तावमो हेठो जतारया पठी जत्कुष्ट ऊव्य कहेवाय एटले निविगय जाणवुं एम अनेरा आचार्य कहे ठे. इति गायार्थ:-	6	विस्तारार्थः-इव्य जे कलम शाली चोखा प्रमुख तेणे हणी निर्वार्थ करी एवी जे झीरा- दिक विगय तथा कणिकारिके हणी पती के प्रवादिक विगय देने निकलिगत पतने जीविसले जनीने
तावको हेगे जतारया पत्नी उत्कृष्ट इव्य कहेवाय एटले निविगय जाणवुं एम अनेरा आचार्य कहे ते. इति गायार्थः-	9	ते कारण माटे वली ते तंदुसादिके इएयुं एवुं जे बिक्वतिगत तेने ऊव्य कहीये. पण विगय तथा
कहे हे. इति गायार्थः-		काहामी लीधा पठी जगरखुं जे घृत ते टाहारुं थया पठी तेमां लोट नांखीने इलाविये ते घृत
		तविमा हठा उतारया पर्ठ। उत्क्रष्ट डव्य कईवाय एटले निविगय जाणवुं एम अनेरा आचार्य कहे हे. इति गाथार्थः-
		इहां जावार्थ ए वे जे अन्न प्रमुख डब्ये विगइना पुजल हण्या, तेवारे विगयनो स्वाद
	1000000	

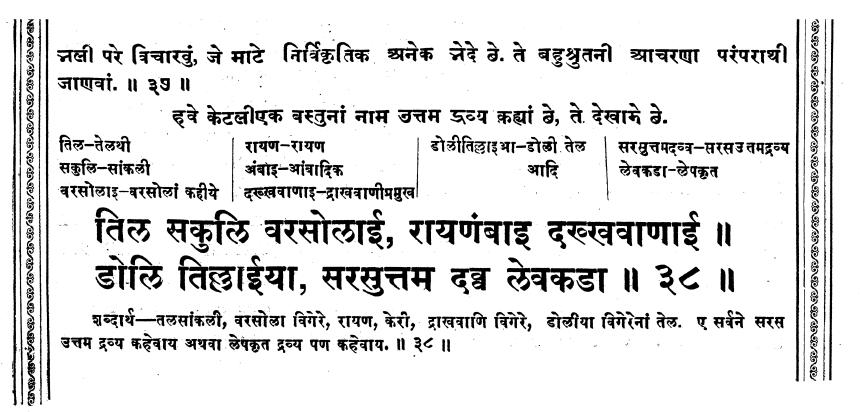
www.jainelibrary.org

i

-----

		2000
प॰भा॰ क्षे	फरी गयो, तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय. परंतु विगइ न कहेवाय, एटला माटे ते नीवीना	क क क क क क क
117800	पचस्काण वालाने लेवी कढपे. अने सुक्रमारिकादिक सुखनीने तावमामांहेथी काढया पठी उगखुं जे घृतादिक तेने विषे	1
ನ್ನಾಯ ನಾಯನಾಯಿನಂ ಲಾನಕಾಯಿನಕಾರು ನಾಯಿ	व्यन सुकुमारिकादिक सुलगान तावनामाइया काढया पठा उगस्तु ज घृतादिक तन विष चुला जपर ठते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे केपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने जस्कृष्ट	֍֎֍֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎֎   \$8 <b>∂</b> !
Nector	द्रव्य कहीये, ते विकृतिगत जाणवुं. ते केम के ? चूरिम पूर्वे कमाह विगइ घइ जग्न कणिका	New We
to as a	कीधी ते ऊष्ण घृत गोल परस्परे डव्य इत यइने पठी ते कणिका केप करी मोदक बांध्या एवुं जे चूरमादिक ते विक्वतिगत जाणवुं, पण विगय समजवी नहि, एनुं नाम उत्क्वष्ट डव्य जाणवुं.	60.20
ক জ্যু	ज चूरमादिक त विक्वतिगत जाखु, पेख विगय समजवा नाइ, एनु नाम उत्कृष्ट द्वव्य जाखु. एम कटलाएक आचार्य कहे हे. नामांतरे गीतार्थानिप्राये तो एम के जो चुल्हाना माथाथी	\$~B
	जतरया पर्व। शीत यया केने जे कणिकादिक द्वेपवीये, ते तथाविध पाकान्नावयो विक्वतिगत	§ 113861
10 A A A	कहीये, छन्यचा परिपक्व विशेष चये डव्यगत कहीये, पण विगइ तचा निर्विकृतिक न कहीये,	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
AB CEL	एवुं व्याख्यान प्रवचनसारोद्धारवृत्तिना अन्निप्रायथी लख्युं हे, पण तिहां एम कह्युं हे, जे सुधिये	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
		S

113

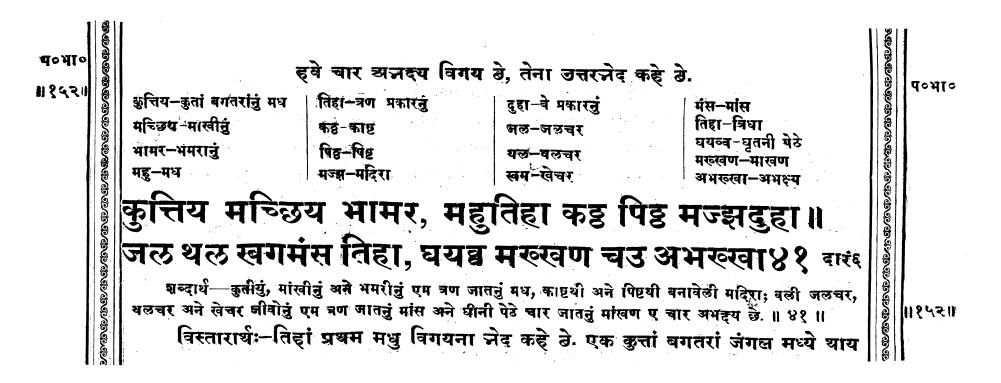


in an an an an an an	विस्तारार्थः-तेलयी नीपनी एवी तिस सांकली तथा खारेक, टोपरां, सिंगोनां प्रमुखना होलीना हारमा तेने वरसोलां कहीये, अने आदिशब्दयकी साकर खांमना विकार साकरीया पापम, नासिकेर, खांम, कातली. पाक, सर्व मेवा प्रमुख, तथा रायण आंवादिक एटले आम्रा- दिक फल सर्व अचित्त करयां पाकादिके नीपजाव्यां मधुकादिकनां, नालिकेरादिकनां, प्राखवाणी प्रमुख, नालेरवाणीप्रमुख मोली, तेल, आदि शब्दयकी नालिकेर, सरसव प्रमुखनुं तेल तथा एरंम प्रमुख तेल जाणवुं. आस्कोमादिक मेवा इखवा प्रमुख ए सर्व सरस उत्तम प्रव्य कहीये तथा एने लेपछत पण कहीये. ए नीवीमां कल्पनीय जाणवां. ॥ ३० ॥	иони чони н е е е е е е е е е е е е е е е е е е
100 C	हवे ए सर्व पदार्थ कारणे खेवां कल्पे, पण सहजपणे रसगुधताये खेवां कल्पे नहीं, ते कहे छे. विगइगया-निविधाता संसदा-संसष्टद्रव्य उत्तमदव्वाइ-उत्तमद्रव्यादिक कारणजायं-कारण	NC 30 CC 30

## विगइगयासंसडा, उत्तम दबाइ निबिगइयंमि ॥ कारणजायं मुत्तुं, कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥ ३९ ॥ शब्दार्थ—विगइथी उत्पन्न थयेला, संसृष्ट अने उत्तम द्रव्यादिक नीवीना पच्चख्खाणमां कारणने मूकीने खावुं न कल्पे अर्थात् कारणे खवाय. कारण कह्युं छे के. ॥ ३९ ॥ विस्तारार्थः-एक विकृतिगता एटले इध प्रमुख विगइथी उत्पन्न थया जे नीवीयाता जे संख्याये त्रीश पूर्वे कह्या हे ते. बीजा संसृष्ट द्रव्य जे करंबादिक, मगदल, पापमी पिंमादिक, त्रीजा उत्तर द्रव्यादिक ते तिलसांकली, सांकर, मेवादिक सरसोत्तम डव्य जे पूर्वे कही आव्या ते ए त्रण प्रकारनी वस्तु ते नीवीना पचस्काणने विषे कोइ कारणजातं एटले पुष्टालंबन विशेष प्रयोजनरूप वातादिक कारण मूकीने, साधुने जोगववुं लेवुं नहीं कब्पे जेने जावजीवा सुधी ठ विगयनां पचरकाण होय, किंवा तथाविध विशेष तपे उजमाल होय, किंवा वैयावच करवाने

प०भा० ॥१५१॥ ह	जजमाल होय, ज्ञानादिकनो जद्यमी होय, तेवारे दारीरे ग्लानादिक निमित्ते औषधादिक कारणे लेवां कब्पे, अन्यया कारणविना लेवां कब्पे नहीं. जेमाटे कह्युं ठे, ते आगली गात्राये	प॰भा०
11 <b>?</b> 4 <b>?</b> 11 11 <b>?</b> 4 <b>?</b> 11 ののののののののののののののののののののののののののののののののののの	कहे छे. ॥ ३ए ॥ विगइं-विगइमत्ये विगइगयं-निवीयाता ग्रंजए-खाय बला-बलात्कारे विगइ-नरकादि माठी गति जो-जे साहू-साधु नेइ-पहोंचाडे भोओ-बीहतो अ-वली विगइसहावा-विक्ठतिस्वभाव	
୧୭୯୭ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦ ୧୦୯୭ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦ ୧୦୦୦	भोओ-बीहतो विगइं विगइ भीओ, विगइगयं जो अ मुंजए साहू ॥ विगई विगइ सहावा, विगई विगई बठानेइं ॥ ४० ॥ भब्दार्थ-विगइने अने विगइमां रहेला क्षीरादिकने नरकादि विरुद्ध गतिथी भय पामतो जे साधु भक्षण करे छे, तो विकार पमाडवाना स्वभाववाली विगइ ते साधिने बळात्कारे माठी गति प्रत्ये पहाँचाडे छे. ॥ ४० ॥	ારલ્ <b>શા</b>

विस्तारार्थः-दूध प्रमुख जे विगइ डे ते प्रत्ये अने विकृति गत जे क्तीरादिक त्रिविध द्रव्य aver ave नीवीयाता कह्या हे ते प्रत्ये विगति एटले विरुद्धगति ते नरक, तिर्यंच, कुदेव, कुमाणसत्वरूप जे माठी गतियो डे तेनायकी जोती राखतो एटले बीइतो अधवा संयम ते गति अने तेनो प्र-तिपक्ती जे व्यसंयम ते विगति जाएवी. तेवी विरुद्धगतियकी बोइतो एवो जे वली साधु ते जुंजे 2000 एटले खाय ते साधुने विगइ ते विगति जे नरकादिकनी विरुद्ध गति तेने विषे बलात्कारे एटले ते साधु जो पण ऊुर्गतिमां जवाने नथी वांठतो तो पण बलात्कारे तेने माठी गति प्रत्ये पहों-चाफे. ते विगइ केहेवी छे ? तो के विक्वति स्वज्ञाव, एटले विकार जपजाववानो छे स्वज्ञाव जेने एवी हे. केम के ए विकृति ते अवइय शब्दादिक कामजोगने वधारे एवी हे, माटे कारण विना विगयादिक न लेवां, अने श्रावकने पण निवी प्रमुखने पचस्काणे कोइ महोटा कारण विना तथा विशेष तप विना नीवियाता लेवा कढपे नहि, एनो विस्तार श्रीआवइयकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी तथा प्रवचनसारोद्धार नीवृत्तिआदिक प्रंथथी जाएवो. अहीं संक्षेप मात्र लख्यो ठे ४०



୪୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦	ठे. तथा वर्षाकाले विशेष थाय ठे, तेइनुं मध, बीजुं माखीनुं मध, अने त्रीजुं जमरानुं मध एवं त्रण प्रकारनुं मधु एटले मध जाणवुं, तथा एक काष्ट ते धाठमी प्रमुख काष्टथी महुमा- दिकथी नीपन्युं मय, बीजुं पिष्ट ते ज्वारप्रमुखना आटादिकथी नीपनी मदिरा ए मद्य एटले मदिरा ते वे प्रकारनी जाणवी. इवे मांसना जेद कहे ठे. एक जलचर जीव जे मत्स्यादिक तेनुं. बीजुं थलचर जीव जे द्विपदचतुष्पदादिक तेनुं, त्रीजुं खेचर जीव जे पक्तीयादिक तेनुं, ए त्रिधा एटले त्रण त्रकारनुं मांस जाणवुं, तथा घृतवत् एटले जेम घृत, गाय जेंष गामरी अने ठाली ए चार प्रकारे कह्युं, तेम माल्लण पण एइज चार प्रकारनुं जाणवुं, पण एटवुं विशेष ठे जे मा- खण ठे, ते सर्व चारे प्रकारनुं व्यज्ञद्दयज ठे. अने घृत जे ठे, ते चारे प्रकारनुं ज्रह्य विगयमां कह्युं ठे, जेमाटे वोज थइ खटासे चलित रसपणुं पामीये एवी एक मदिरा, बीजुं ठासची बाहेर नीकव्टयुं एवुं माखण, त्रीजुं जीवित शरीरथी अलगुं थयुं एवुं मांस, रुधिर तेपण एमज जाणवुं,	ଅଧିକା ସହାସହାସହାର ସହାସହାର ସହାସହା ଅଧିକାର ସହାସହାର ଅ -
5 60 13 60 13 60 13 60 14	किद्युं ठे, जेमाटे वोज थइ खटासे चलित रसपणुं पामीये एवी एक मदिरा, बीजुं ठासथी बाहेर	90 630 630 630 630 630 630 630 630 630 63

कककककक प०भा० ₩?५२॥	जीव उपजे, तेमां मांसपेशी मध्ये तो पक तथा अपक तथा अग्नि उपरे पच्यमान एवो थको पण तेमांहे असंख्य बेंडिय तथा पंचेंडिय तथा निगोद जीव अनंता पण पोते पोतानी मेले उ- पजता कह्या ठे, ते माटे ए चार विगय जे ठे, ते सर्वथा अज्ञद्दय वर्ज्जनीय कही ठे. ए त्रीश निविगइनुं ठठुं ठार पूर्ण थयुं. उत्तर वोल ०० थया ॥ ४१ ॥	and	प॰भावः
ক্র/ক্র ক্র/ক্র	हवे पच्चस्काणना वे न्नांगानुं सातमुं घार कहे ठे. पचस्काणना वे नेदे ठे, एक मूलगुणरूप व्यने बीजुं उत्तर गुणरूप तिहां साधुने मूलगुण ते पांच महाव्रत व्यने उत्तरगुण ते पिंक विग्रुद्ध्यादिक जाणवां, तथा श्रावकने मूलगुण ते पांच व्य-	ನಾ ಪ್ರಾಧಾ ಭಾ ಪ್ರಾಧಾ	
জে জে জে	पांच महाव्रत अन उत्तरगुण ते पिरु विशुद्ध्यादिक जाणवा, तथा आवकन मूलगुण ते पांच अन् णुवत अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्ताव्रत जाणवां, तिहां सर्व पचस्काणादिक तेहना जांगा जे रीते थाय, ते रीते कहे ठे.	Der er er er	
ති හා හා හා හා	तेमां सर्व उत्तरगुण पचस्काण अनागतादिक दश प्रकारे पूर्वे कह्यां, अने देशोत्तर गुण पच स्काण सात प्रकारे-ते त्रण गुणवत अने चार शिक्तावत मखी थाय, तथा वली एक इत्वर अने	ತುತಾತಾತಾ	ારપરા

www.jainelibrary.org

- (A)			
1	वीजुं यावस्कथिक, ए वे ज्ञेदे उत्तरगुण प्रत्याच्यान तेमां साधुने इत्वरगुण पच्चस्काण ते कांड्क	لاهار مار مار	
(-Y-Y-).	अनिमहादिक जाणवां, अने यावस्कथिक ते पिंमविद्युद्धयादिक तथा अनियंत्रितादिक जे छुन्ति		
500	कादिके पण अनग्न होय-नंग न थाय, ने सर्व यावत्कथिक जाणवां, अने आवकने तो इत्वर	્લાર્	
y THAN A	ते चार जिक्ताव्रतादिक वे. अने यावत्कथिक त्रण गुणवतादिक वे. ते आवक वे जेदे वे. एक	1	
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	अविरति सम्यग्दृष्टि ते केवल सम्यग्दर्शन युक्त कृष्ण श्रेणिकादिकनी परे जाणवा, अने वीजा	1960	
じんい	विरति सम्पग्दृष्टि, ने वली बे जेदे एक साजिप्रही छने वीजा निरजिप्रही.		
19.9.V	ते वली विज्ञायमान थका आठ जेदे थाय, ते केवी रीते ? तो के एक डूविध त्रिविध.	સાર્ગ	
39.Q.	बीजो दिविधदिविध, त्रीजो दिविध एकविध, चोथो एकविध त्रिविध, पांचमो एकविध दिविध,	2000	
-90-0 <u>%</u> -	ठठो एकविध एकविध, ए ठ जांगा पांच व्रत आश्रयी थाय, छने कोइएक उत्तरगुए मांहेझुं कोइएक	0.00	
200	वत लीये, ते सातमो जांगो जाणवो, अने आठमो जांगो कोइ नियम मात्र नज लीये ते जा-	690	
649-0	णवो. ए रीते पुर्वोक्त पांच छाणुव्रतादिक तेने ठ जांगे गुणीये तेवारे त्रीश जंग थाय, तेनी साथे	ତ୍ତ୍ତ୍ତ	
S	र गर्म उत्तर में अधुनताकि तम छ जाग उँखाव तवार त्रारा जग थाय, तम साथ	200	

ч.

- -

> 3.4 ÷

Survey Corr

్రా

म०मा० ॥१५४॥ ॥१५४॥	व्रत न लीये, तेनो एव रहित	ज्ञांगो मेखवीये तेवारे व	झ जांगा षाय, तेनी सार बत्रीझ जेदे श्रावक सम्य वक्तव्यता बहु ढे, पण ढे.	प्दर्शनी र्शका कांक्तादि	प०मा <i>०</i>
म०भा० 11 १ ५४॥	मण–मने वयण–वचने काय–कायाए मणवय–मन वचने	मणतणु–मन अने कायाए वयतणु−वचन अने कायाए तिजोगि−त्रण योग सग–सात	सत्त–सात कर–करवा आश्रयी कार−कराववा अणुमइ–अनुमति	दुति जुय-द्विक त्रिक योग तिकाल्रि–त्रणकाल्ठ सीयाल भंग सयं–एककोने सुडतालीज्ञ भांगा	30 60 63 62 AB 68 AB 6
ති අති අති අති අති අති අති අති අති අති අ	मणवयणका करकारणुम	यमणवय, मण इ दुतिजुय, तिव	तणुवयतणुतिज ठालि सीयाल भ	ोगिसठासत्त॥ ांगसयं ॥४२॥	(本)の(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(1)(

Jain Education International

For Personal & Private Use Only

www.jainelibrary.org

00000	शब्दार्थमन, वचन अने कायाः वली मनवचन, मनकाया अने वचनकायाः, तेमज मन, वचन अने काया ए त्रण
80 30 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40 40	योग. ए सात भांगाने करवा, कराववा अने अनुमोदवा. एवा भेदथी एकवीस मेद थाय. बली तेने झीक त्रीक सोग स- हित करी भूत, भविष्य अने वर्त्तमान काले करी गुणतां एकसो सुडतालीस भांगा थाय. ॥ ४२ ॥
00000	विस्तारार्थः एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करं, बीजो वचने करी न करं, त्रीजो
	कायाये करी न करुं, चोथो मन अने वचने करी न करुं. पांचमो मन अने कायाये करी न
	करुं, उठो वचन अने कायाये करी न कहं, सातमो मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगे करी
\$	न करुं, ए एक संयोगी सात जांगा चया.
2002/2002/20	ते सात जांगा करवा आश्रयी जाणवा. तेमज सात जांगा कराववा आश्रयी जाणवा,
	व्यने सात जांगा व्यनुमसि व्यापवाना एटले व्यनुमोदन देवाना पण जाणवा.
8	ते आवी रीते केः-प्राणतिपातादिकने एक मने करी न करावुं, बीजो वचने करी न करावुं,
2000	त्रीजो कायाये करी न करावुं, चोथो मन अने बचने करी न करावुं, पांचमो मन अने कायाये
Š	

२०मा० ॥१ ५५॥		чоню Пони Пони Пони Пони Пони Пони Пони Пони
Jain Education International	For Personal & Private Use Only	www.jaineli

ത്തിന്നത്. പ്രതിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത്തിന്നത	काया, ए त्रएे करी न करुं, न करातुं: ए करवा कराववा आश्री सात जेद कहा. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न अनुमोछुं, चोत्रो वचने करी न करुं, न अनुमोछुं, त्रीजो कायाये करी न करुं, न अनुमोछुं, चोथो मन अने वचने करी न करुं, न अनुमोटुं, पांचमो मन अने कायाये करी न करुं न अनुमोटुं, उठो वचन अने कायाये करी न करुं, न अनुमोटुं, सातमो मन वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न अनुमोटुं, ए सात जंग, न करवा, तथा न अनुमोदवा आश्री कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करावुं, न अनुमोटुं, बीजो वचने करी न करावुं, न अनुमोटुं, त्रीजो कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, चोथो मने करी वचने करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो मने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो मने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो मने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो मने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो मने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोटुं, पांचमो त्र न करावायो करी न करावुं, न अनुमोटुं, उट्टो वचने करी कायाये करी न करावु करावु न अनुमोट् न आश्री तात त्रंग कह्या. एम सात न करवा न कराववा आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न कराववा न	
Server (अपर गरा करा पर गरा गरा ग करावु, न अनुमादु, पायमा मन करा कायाय करा न करावु, न अनुमोदुं, ठद्दो वचने करी कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं, सातमो मन, वचन अने कायाये	
ತ್ರಾಭಾ	करी न करावुं, न अनुमोदुं, ए न कराववा न अनुमोदवा आश्री सात नंग कह्या. एम सात न	
ತಾಲಾಗಾಂಭ	करवा न कराववा आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न कराववा न	

		3) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1
শ৹মাত	हैं अनुमोदवा आश्री. एवं सर्व मली दिकसंयोगे एकवीश जंग थया. तेनी साथे पूर्वोक्त एक संयोगना एकवीश मेखवतां, बहेंतालीश जांगा थया.	e Tonio Tonio
*/୧୯୩	हूँ संयोगना एकवीश मेखवतां, बहेंताखीश जांगा थया.	9000 A
	हूँ द्वे त्रिक संयोगे सात जंग थाय, ते कहे हे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करं,	5000
	हैं न करावुं अने न अनुमोदुं, बीजो वचने करी न करूं, न करावुं अने न अनुमोदुं, त्रीजो कायाये	2000 A
	हैं करी न करूं, न करावुं अने न अनुमोदुं, चोथो मन अने वचने करी न करूं, न करावुं अने न	5
	हैं अनुमोदुं, पांचमो मन, अने कायाये करी न करूं, न करावुं, अने न अनुमोदुं, ठद्दो वचन अने	
	हैं कायाये करी न करुं, न कराबुं अने न अनुमोदुं, सातमो मन, वचन अने कायाये करी न करुं,	5 CO
	हैं न करावुं छने न छनुमोदुं, ए त्रिकसंयोगी सात जांगा थया. ते पूर्वोक्त बहेंतालीइा साथे मेल-	000
	हैं वतां सर्व मली उंगणपचास जांगारूप ते छाणुव्रत, गुणवत खने छजिप्रहादिकना जेद उपजे,	ू ॥१५६ ॥
	हैं तेने त्रण काल ते व्यतीत, व्यनागत व्यने वर्त्तमान, ए त्रण काले करी गुणीये, तेवारे एकशोने	७ ॥२५६॥ ७
	द्व ।त्रक सयाग सात जग थाय, त कह ठ. एक प्राणातिपाता।दकन मन करा न करु, न करावुं अने न अनुमोदुं, बीजो वचने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं, त्रीजो कायाये करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं, चोथो मन अने वचने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं, पांचमो मन, अने कायाये करी न करुं, न करावुं, अने न अनुमोदुं, ठठो वचन अने कायाये करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं, सातमो मन, वचन अने कायाये करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं, ए त्रिकसंयोगी सात ज्ञांगा थया. ते पूर्वोक्त बहेंताली हा साथे मेल- वतां सर्व मली उम्गणपचास ज्ञांगारूप ते अणुत्रत, ग्रुणत्रत अने अजिप्रहादिकना ज्रेद उपजे, तेने त्रण काल ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमान, ए त्रण काले करी गुणीये, तेवारे एकशोने सुम्ताली हा (१४७) ज्ञांगा थाय. माटे जे एटला ज्ञांगा जाणे, ते पचकाणनो क्रुराल कहीये. यदुक्तं ॥	S
1		

આ છે. આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ આ	सीयालं जंगसयं, जस्स विसुद्धिए होइ उवकद्धं ॥ सो खबु पचस्काणे. क्रुसलो सेसा अक्रुसलाय	ಅಡುಕುಡುಡುಡುಕು ಡುತುಗು
ાજા	॥ १ ॥ इति ॥ एना विशेषे जांगा षर्ज्जगीना आवकना व्रत संबंधी थाय ते कहे वे. गाथा ॥	ತಾಂತಾ
2000 C	तेरसकोभी सयाई, चुखसीई जुयाई बारसयलस्ता ॥ सत्तासीइ सहस्ता, दोय सया तह छर	30 S
56-CEO	प्रहिया ॥ १ ॥ तेरसें कोमाकोमी, चोरासी कोमी, बारखाख सत्यासी इजार बसें ने बे थाय. ए-	59.0
B	मज नवर्ज़गीना नवाणुं हजार नवरो ने नवाणुं कोमी, जपर नवाणुं खाख, नवाणुं हजार, नवरों	505/3
to as	ने नवाएं एटला जांगा थाय. एए ए एए एए एए एए एमज एकवीश जंगी तथा उंगए	ಾತ್ರಾತ್ರಾ
Sec.	पचास जंगीना विशेष जांगा थाय, ते सर्व आवइयकवृहद्इतिथी, तथा दीपिकाथी तथा प्रवच-	(S) (S)
०	नसारोद्धारवृत्तिची, तथा श्रावकव्रतनंगप्रकरणवृत्तिची, तथा देवकुखिकाचकी जाणवा. ते पचस्का-	ক্ত ক্য ক্য ক
see~	णनो छराल होय, तेणे विचारवा.	50 A
S.	इवे ए पचस्काणनुंज स्वरूप कहे हे.	5000
জ গুগু হয় হয় জ		୵ଡ଼ୄଡ଼ୄଡ଼ୄ୰
000		81

प०भा०	एयंच-ए वळी मणवयणतणूहिं-मन वचंन अने जाणग जाणग पासि-जाण भंग चडगे-चार भांगाने	ঀ৽৸৻৹
୳ ୧५७)। ତ	एयंच-ए वळी मणवयणतणूहिं-मन वर्चन अने जाणग जाणग पासि-जाण भंग चउगे-चार भांगाने उत्तकाळे-उक्त काळ कायाये करी अजाण्या पासे तिसुअणुण्णात्रग भांगाने सयंच-पोतानो मळे पाल्लणियं-पालवा योग्य ते इत्ति-एम विषे अनुज्ञा	
100 CC	एयं च उत्तकाले, सयं च मण वयण तणुहिं पालणियं॥	
ක්ෂණ නිදී ක්ෂණ නිදී නිදී	जाणगजाणग पासि, त्तिभंग चउगे तिसु अणुण्णा ॥४३॥ दारं ७ शब्दार्थवल्ली ए पचछखाण कहेला काले लेनार धर्णीये पोते मन, वचन अने कायाए करीने पालवा. वल्ली ते प चख्र्याण करनार जाण अथवा अजाग तेमन करावनार जाण अथवा अनाण एम चार भांगा थायके. तेमां मथमना जण	
10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 -		
0.00 (0.00) (0.0	भांगे आज्ञा छे. ॥ ४३ ॥ विस्तारार्थः-ए पूर्वोक्त वली उक्तकाल जे पोरिसीयादिक काल प्रमाण रूप ते पोतानी मेळे	ા ાર્ લ્છા
100 C	विस्ताराथः-ए पूर्वाक्त वला उक्तकाल ज पारिसायादिक काल प्रमाण रूप त पाताना मळ जेवी रीते बोढ्युं होय-यथोक्तरूपे जे जंगादिके लीधुं होय, ते जंगादिके मन, वचन अने का- याये करी पालवा योग्य ते जाण अजाण्या पासे करे एम जंगचतुष्के एटले चार जांगाने विषे	

www.jainelibrary.org

Jain Education International

ବାହରିହାରେ ୨୦୦୦ ଅନେକାର ଜନାବାର ମହିତ ଅନୁମହିତ ଅନୁସହିତ ଅନୁସହିତ ହିନ୍ଦୁ ନାହାରେ ଅନିସହିତ ଅନୁସହିତ ଅନୁସହିତ ଅନୁସହିତ ଅନୁସହି	करे: तेमां पहेला जण जांगाने विषे अनुका एटले आका ठे. एटले ए पद्यस्काणने करवा करा- ववा रूप चउनंगी याय ते कहे ठे. एक पद्यस्कणनो करनार झिष्य पण जाण होय. अने वीजो पद्यम्काण करावनार गुरु पण जाण होय, ए प्रथम जंग शुद्ध जाणवो. वीजो पद्यन्काण कराव- नार गुरु जाण होय अने पद्यस्काण करनार झिष्य अजाण होय, ए वीजो जांगो पण शुद्ध जा- णवो. तीजो पद्यस्प्याण करनार झिष्य अजने पद्यस्वाणनो करावनार गुरु अजाण होय ए त्रीजो जांगो पण शुद्ध जाणवो. चोथो पद्यस्प्याण करनार झिष्य अने पद्यस्काण करावनार गुरु, ए वेट्ट अजाल होय, ते चोथो जांगो अञुद्ध जाणवो. ए रीते चार जांगामांहेथी त्रण जांगे पद्यस्थ्याण करवानी आझा ठे, अने चोथा जांगाने विषे आक्ता नथी॥ ए मूलगुण, उत्तरगुणरूप पद्यस्काणनुं सातमुं द्वार थयुं. उत्तर जेद व्याझी थया ॥ ४३ ॥ हवे पूर्वोक्त जंगादिके विचारीने पण जेम संयसयोग हीन थाय नही, ते रीते पद्यस्वाण कीधुं पर्वरुपण इ प्रकारनी शुद्धिये करी सफल याय, माटे पद्यस्वाणनी ठ विद्युडिनुं आठमुं द्वार कहे ठे.	han na san san san san san san san san sa
--	--	---

3					2 400 40 F	s
শণ্ম[০ ই	 फासिय−फरब्युं	तिरिय–तीर्यु	छ सुद्रं-छ प्रकारे शुद्ध	री उचित वेलाये	P	०भाव
1194611 5	पालिय–पाळ्युं	किट्टिय-कीर्त्यु	1	जंपत्तं-जे माप्त थयुं		
2000	सोहिय-शोभाव्युं	आराहिय-आराध्युं	विहिणोचियकालि-विधिए क-		5	
5 10 10	फासिय पारि	ठेय सोहिय, वि	तेरिय किहिय आरार्गि	हेय छ सुद्धं॥	and an	
๚ร๙๛ ๚ร๙๛ ๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛	पचल्खाणं फासिय, विहिणोचिय कालि जंपत्तं ॥ ४४ ॥					
	हैं। शब्दार्थ-फरस्युं, पाल्युं, शोभान्युं, तीर्युं, कीत्र्युं अने आगाध्युं, ए छ प्रकारे शुद्ध एवुं पचल्लाण फल्न आपनारं					
55-53-5 55-53-5	। याय छे. तेमां प्रयम विधि प्रमाणे योग्य काले जे पत्ररुखाण लीधुं ते फरस्युं कद्देवाय. ॥ ४४ ॥ विस्तारार्थः-एक फासित एटले पच्चख्वाण फरइयुं, बीजुं पालित एटले पच्चस्काण पाढ्युं,					
100 AB	विस्ताराथः-एक फासित एटल पचच्खाण फरइयु, बाजु पालित एटल पचस्काण पाढ्यु, त्रीजुं शोनित एटले पचरुखाण शोनाव्युं, चोथुं तीर्णं एटले पच्चख्खाण तीर्यु, पांचमुं कीर्त्तित एटले पचख्खाण कीर्त्यु, बतुं आराधित एटले पच्चकाण आराध्युं ए ब प्रकारे शुद्धे करी शुद्ध एवुं पचख्खाण, फलदायक होय. हवे ए ब विशुद्धिना अर्थ कहे बे.					2463
	एटले पचरुखाण कीत	र्युं, बतुं आराधित एट	ले पचलाए आराध्युं ए व प्र	कारे द्युद्धे करी शुद्ध	10 CC	
Des la companya de la	एवुं पचच्खाण, फलर	रायक होय. हवे ए ठ	विज्ञुद्विना अर्थ कहे ठे.		505	

	प्राप्त थयुं एटले सूर्योद	यथी पहेलां पचरकाण उ जल लगण प्रहण कखुं	त्रचितकाले जे पाम्युं,	उचितवेलाये जे पचस्काण एटले जे पचस्काण कीधुं, काल लगे पहोंचामवुं तेने की किद्रिय-कीर्ख
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	पालिय-पार्धु पुणपुण-वारंवार सरियं-संभार्धु पालिय पुणपु तिरिय समहि	सोहिय-गोभाव्युं गुरुदत्त-गुर्वादिकने दइने सेस-शेष णसरियं, सोहि य कालो, किहि	तिरिअ-तीर्धु समहियकालो-समधिक व य गुरुदत्त सेर देय भोयण स	भोयणसमय-भोजनना समयने तल सरणा-संभारबुं

प० भा० ॥१५९॥	य्षुं कद्देवाय. धारेला काल्रथी कांइक अधिक काल्र गया पछी पचरूखाण पूर्ण करे ते तीर्यु कहेवाय अने भोजनना अव- सरे करेला पचरूखाणने संभारवुं ते कीर्त्यु कदेवाय. ॥ ४५ ॥ विस्तारार्थः-बीजुं ज्यां लगे पच्चरूखाण पूरुं न याय, तिहां लगे वारंवार जपयोग देइने	के के प०भाव्
ବିହାର୍କ୍ତ ହୋମ୍ବର ହୋଲ	सावधानताये संन्नाखुं जे महारे	949-449-449-449-449-449-449-449-449-449
৯ বহু	त्रीज़ुं शोजित एटले शोजाव्युं, ते आहारादिक लाव्या होइये ते प्रथम गुर्वादिकने निमंत्री आपीने पठी शेष रद्युं होय जे जोजन तेने पोते लेवाथकी एटले पच्चरूलाण कीधुं ठे ते पूरण थया पठी ते वस्तु लावी पहेला गुरुने आपी पठी पोते वावरे ते पचस्काण शोजाव्युं कहीये.	ଏହା
5. - -	चोयुं समधिककाल ते पद्यख्लाणनो काल पूर्ण थया पठी पण योको अधिक काल लगे पक्स्वीने सबुर करीने पठी पद्यख्लाण पारे, तेने पद्यख्लाण तिरित एटखे तीर्युं कहीये. पांचमुं जोजनना समयने विषे जोजननी वेलाये संजारवुं जे फलाणुं अमुक पद्यस्काण हतुं, ते आज महारुं पूर्ण	ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ ଅନ୍ତ

इअ-ए	तु–वली	सदहणा-सदहणा	अणुभासण-अनुभाषण शुद्धि अणुपालण-अनुपालणाशुद्धि
पडिअरिअं−आचर्युं आराहियं−आराध्युं	अहवा-अथवा छ सुद्धि-छ शुद्धि	जाणण–जाणवापणुं विणय−विनय शुद्धि	भावसुद्धत्ति - भावशुद्धि छे एम जाणवुं
इअ पाडआर	ज जारा-ाहय	য়ে অতপা শু যোগ	५ ४५ ५ ४१ ॥
इअ पडिअरि जाणण विणय		ए जहना छ छान् णुपालण भाव र	

¶०मा० ∎। ? द ०॥	विस्तारार्थः-बर्छु ए सर्व प्रकारे करी प्रतिचारतं एटले आचरयुं जे पचच्खाण एटले ए सर्व प्रकारे संपूर्ण निश्राये पमाक्युं निराइांसपणे श्री जिनाक्ता पालन पूर्वक संयमयात्रा निर्वाहक षट्कारण साधनपूर्वक अप्रमादपणे महोटा कर्मक्तयने कारणे ययुं तेने आराधितं एटले आरा कहिये. अथवा प्रकारांतरे करी वली पण पचस्काणनी ब शुद्धि प्रकारांतरे बीजी बे ते कहे बे.	ম ম ০ মা ০ ম
ు చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి చెంటి	प्रथम सम्यग्दर्शनी श्रद्धावंतना मुखयी पच्चरुखाण करवुं, छने निःशंकता छाचारयुक्त शुद्ध सद्दहणा पूर्वक करवुं, एटले करेला पच्चरुखाण उपर शुद्ध जाव होय ते सददणा शुद्धि जाणवी. बीजी पच्चरुखाणने डव्य, केत्र, काल छने जावथी जाणीने तथा मूल उत्तरगुणे जेद जंगादिके जाणीने वली जाणनी पासे पच्चरुखाण करे, ते जाणवापणुं ए बीजो छधिकार शुद्ध जाणवा. त्रोजी सुझानादिक छाचारसंयुक्त छतिचार छविधि रहित गुरुनी पासे वांदणां देवां प्रमुख विनय साचवीने पच्चरुखाण करवुं, ते विनयशुद्धि जाणवी. चोथी गुर्वादिक कहेता होय ते प्रत्ये छा- गारादिकनुं पोते जांखवुं, एटले गुरु पच्चरुखाण करावे, छने पाठलयो पोते छागार	
		P.7.10 40-7.10 40-74

and the second second उच्चरे, ते अनुजाषण शुद्धि जाणवी. पांचमी निराशंसपणे रूमी रीते पाले, जो विषम जय कष्ट त्रावी उपजे तो पण हढ रहे, परंतु पचल्खाण जंग न करे, पच्चल्खाणची चूके नहीं, ते व्यनुपालणा शुद्धि जाणवी. बघी पूर्वोक्त सर्वप्रकारथी निर्क्तरारूप इहलोक परलोकनी वांबार-हितपणे आशंकादि दोषे करी रहित ते जावशुद्धि हे. इति एटले एम जाणवुं. ए ह शुद्धि पण समस्त सर्वे पच्चख्खाणोने विषे जाणवी. एम जंगादि विद्युद्धिना विस्तारनां बीजक ग्रंथांतरथी जाएवां. एटले ए आठमुं ठ शुद्धिनुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल अट्ठाशी थया. ॥ ४६ ॥ the contraction of the contracti हवे पच्चख्खाणनुं फल वे प्रकारे थाय, तेनुं नवमुं घार कहे हे. 2000 पचख्खाणस्स फलं-पचख्खा-परलोके तु–वली दामनगमाइ-दामनकादि णनुं फल होइ–होय इहपरलोएय–इह लोक तथा | दुविह–बे प्रकारनुं इइलोए–आ लोक आश्री परलोए–परलोकने विषे धम्मिछाइ-धम्मिछादि्कनो

બારા રાજ્ય થયું છે. આ ગામ જ	पचख्खाणस्स फलं, इह परलोए य होइ दुविहं तु ॥ इहलोए धम्मिर्छाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७॥व्यस्थ	कक्ष्यक्ष प ्रभा रु
๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛๛	भ्रब्दार्थ-पचस्स्ताणनुं फल आ लोकमां धम्मिन्नकुमारादिनां अने परलोकमां दामनकांदिकनां दृष्टांतथी जाणनुं.।४७ विस्तारार्थः-पच्चरुस्ताणनुं फल ते इह लोक तथा परलोक आश्री वे प्रकारनुं वली होय, तेमां कोइएक प्राणीने इहलोके एज जवमां तुरत फल थाय, छने कोइएकने परलोके एटले परजवे फल थाय, तिहां व्या लोकआश्रयी तो धम्मिलादिकनो दृष्टांत वसुदेवहिँकीग्रंथथी जाणवो, एटले धम्मिल्ले उत्तरगुण पचल्प्लाण चारित्ररूप व महीना पर्यंत आर्यविल प्रमुख तप कर्धु, तेथी तेहीज जवे घणी लब्धि उपनी, रारीरना मल मूत्र सर्व औषधरूप थयां, राजसंपदा जोगवी मोक्तपदवी पाम्यो, अने परलोकने विषे एटले परजवमां दामन्नकादि प्रमुखना एटले दामनक	40410 @@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@

ष०भा० ॥१६१.

	नामे व्यवहारीयानः वेटानो दृष्टांत श्रीत्रावइयक निर्युक्तिप्रमुख प्रंत्रवर्ती जाणवा. एटले पद्य-
	स्ताण फलनुं नवमं द्वार थयुं. उत्तर वोल नेवु थया ॥ ४७ ॥
	एमां आ नव आश्रयी पत्रकाणना फल संवंधी धम्मिल्लकुमारादिकने इटांत कह्यों हे, तेनी
	कथा संकेपथी लखबी जोइये, परंतु ए धम्मिल्लनो राख ठपाइ गयो ठे, तेमां एमनी संपूर्ण कथा
	यणा सजनोने बांचवामां आवी गयेली ठे, माटे आंही लखी नथी, जे सकनोने बांचवानी अ-
ŧ	जिलापा होय तेमणे रास वांची ठेवी.
	अने परनवे दामन्नकादिकने फल चयुं ठे ते दामन्नकनो दृष्टांत संकेष मात्रे जवीये ठेयेः∽
	राजपुर नगरे एक कुलगर रहेतो हतो, तेनो जिनदास धावक मित्र इतो, तेनी संगतयी कोइक
	दिवसे साधु पाले गयो, त्यां मत्स्यना मांसनो नियम लीधो, अनुक्रमे छुर्निक थयुं, तेवारे घण
1	लोक मत्स्याहारी थके शालिकादि पुरुषे वलात्कारे छह समीपे आएयो, तिहां ते जालमां ना
	खेला मत्स्यने जोइने मूकी आपे. एम त्रण दिवस सुधी बलात्कार कराव्यो, तेवारे एक मत्स्यनी
	खला मत्स्यन जाइन मूका आप. एम त्रेण दिवस सुधा बलात्कार कराव्या, तवार एक मत्स्यन

	🐉 पांख त्रूटी देखी बलात्कारे तेथी निवत्यों, पठी अणसण लेइ मरण पामी राजगृह नगरे होठनो	प०भा ०
11? ६२॥	है पुत्र थयो, दामन्नक नाम दीधुं, ते आठ वर्षनो थयो तेवारे तेनुं कुल मरकीना रोगची मरण	
÷	पुत्र थयो, दामन्नक नाम दीधुं, ते ट्याठ वर्षनो थयो तेवारे तेनुं कुल मरकीना रोगथी मरण पाम्युं, उन्निन्न थयुं, तेवारे ते दामन्नक कोइ सागरदत्त व्यवहारीने घरे दुःखित थको रह्यो एकदा साधुनुं युगल जित्काने ट्यथें ते व्यवहारीने घेर ट्याव्युं, तिहां ते बालकने देखीने परस्पर साधू बोल्या जे ए बालक ए घरनो खामी थरो, ते प्रन्नन्नप्रवृत्ति घरना ठ्यधीरो जाणी तेवारे ठ्यम र्षपणे करी ते बालकने मारवा जणी छंत्यजने ठ्याप्यो, तेणे छज्जिज्ञान देखाम्वा निमित्ते तेनी टचली छंगुली न्नेदी परं तेने नीर्विषय जय देखामी परहो काढ्यो, पन्नी ते बालक ठ्यनुक्रमे नानो यको ते रोननुं जिहां गोकुल ने, ते प्रामे ज्याव्यो, तिहां तेगोकुलना स्वामीये तेने स्वरूपवान तथा विनीत देखी पुत्रपणे घाप्यो, योवन पाम्यो. पन्नी ठ्यानुक्रमे केटलाएक वर्षांतरे तिहां सागर दत्त रोठ ट्याव्यो, तेणे तेने देखीने उंलख्यो, ते वारे कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखीने ठ्या प्यो, तेमां रोठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष ठ्यापजो. एवो लेख ठ्यापी पोताने नगरे	
	🖇 एकदा साधुनुं युगल जिक्ताने अर्थे ते व्यवहारीने घेर आव्युं, तिहां ते बालकने देखीने परस्पर	
	है साधू बोख्या जे ए बालक ए घरनो खामी थरो, ते प्रहन्नप्रवृत्ति घरना अधीरो जाणी तेवारे अम	
	है र्षपणे करी ते बालकने मारवा जणी अंत्यजने आप्यो, तेणे अजिज्ञान देखामवा निमित्ते तेनी	
	टचली अंगुली छेदी परं तेने नीर्विषय जय देखाफी परहो काढयो, पठी ते वालक अनुक्रमे नाठो थको ते रोठनुं जिहां गोकुल ठे, ते प्रामे आव्यो, तिहां तेगोकुलना स्वामीये तेने स्वरूपवान तथा विनीत देखी पुत्रपणे थाप्यो, योवन पाम्यो. पठी अनुक्रमे केटलाएक वर्षांतरे तिहां सागर दत्त रोठ आव्यो, तेणे तेने देखीने ठलख्यो, ते वारे कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखीने आ प्यो, तेमां रोठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष आपजो. एवो लेख आपी पोताने नगरे	
	है। शको ते रोजनं जिनां फोकस ने ने पाने जानके जिनां ने ने	
	ु जिना रा राठछ रजहा गाकुल ७, त आम आव्या, तिहा तगाकुलना स्वामाय तन स्वरूपवान् तथा	
	हु विनात देखा पुत्रपेण थाप्या, यावन पाम्या. पठी अनुक्रम केटलाएक वर्षांतरे तिहां सागर	
	है दत्त राव आव्या, तेणे तेने देखीने जैलख्यों, ते वारे कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखीने आ	
	💈 प्यो, तेमां होठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष छापजो. एवो लेख छापी पोताने नगरे	600
	State and the second	

1

मोकख्यो, ते श्रांत थयो थको ज्यानमांहे कामदेवना प्रासादे छावी सूतो, तिहां वरार्थिनी एवी रोठनी पुत्री कामदेव पूजवा आवी, तिहां तेषे तेने सूतो देखी कागखमां पोताना पिताना अ- कर देखी कागल वांच्यो, तेमां विष देवानुं लरूयुं जोइने पोतानुं नाम विषा ठे तेथी तेनी इडक थइ मनमां विचार्युं जे महारा पिताये सुंदर स्वरूपवान् जाणी वर मोकख्यो ठे, पण विष देजो एवुं लरुयुं ठे ते महारा पिता कागल लखतां जुली गया ठे. विषाने स्थानके विष लखाइ गयुं ठे, अने कामदेवे पण महारा जपर प्रसन्न थइने ए वर मुजने आप्यो, माटे कागलमां विष लरुयुं हतुं, तिहां विषा देजो. एम कन्याये अंजन शलाकाये लखीने पाठो ठेख तेने ठेकाणे मूकी दीधो. अनुक्रमे ते घेर आव्यो, तिहां तरत लग्न लेइ कन्या परणावीने जामाता कीधो. एवी वात सांजलीने रोठ घरे आव्यो. कोधायमान थको कहेवा लाग्यो जे मातृपूजन निमित्ते पाणि प्रहण मांगलिक वधाववा जणी जमाइने मोकलो, अने रोठे मारवा सारु अंत्यजने संकेत करा- व्यो हतो. इवे ते मातृपूजन निमित्ते जाय एटलामां विकालवेला जाणी नवपरणीत हतो, माटे

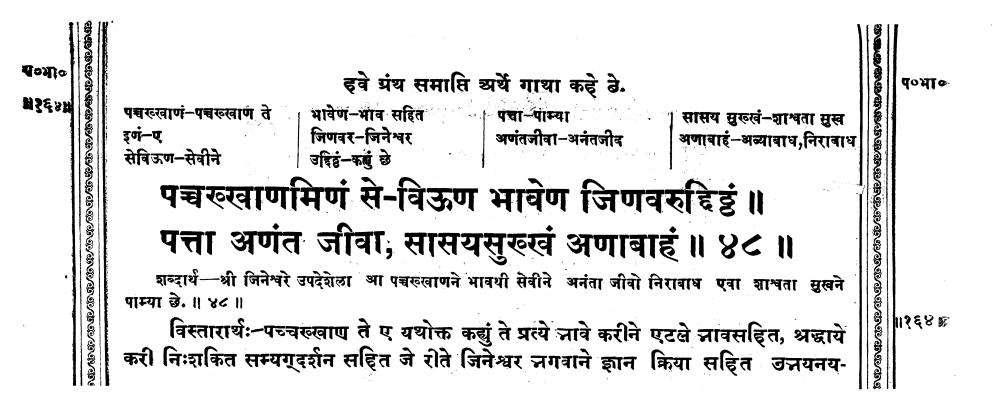
.

A DA		8 8
प॰ भा॰ है	रोठनो पुत्र कहेवा लाग्यो के तमारीवती हुं मातृपूजन करवा जाउंढुं, एम कही ते गयो, एट-	ु प॰मा॰
แรธรม	लामां वच्चे रस्तामां अंत्यजे तेनो संकेत जाणी ते शेठना पुत्रने जमाइ समजी मारी नांख्यो.	2000
(The second s	जवितव्यताथी बलवत्तर कोइ नथी. पडी ते पुत्रमरणनुं वृत्तांत सांजलीने हृदयस्फोट थइ होठ	204
100 H	पण मरण पाम्यो. अनुक्रमे घरनो स्वामी दामन्नक थयो. रुषिन्नाषित वचन अन्यथा न थाय.	None I
100 m	व्यनुक्रमे एकदा पाढले पहोरे पाहरी देतो हतो तेणे एक संगल पाठक गाया कही. तद्यथा॥	See.
Sec.	छाषुपुंखमावहंतावि, छन्नज्ञा तस्स बहुगुणा हुंति ॥ सुद्द छस्ककम्म फुमंतो, जस्स कयंतो वह्इ	N300
100 A	परकं ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ सांत्रली एक लक्त्तुं दान दीधुं, एम त्रण वार गाथा सांत्रली त्रण	1200 A
(Car)	लक्त दान दीधुं. राजाये ते वात सांजलीने पोतानी पासे तेमाव्यो. पत्नी सर्व वीतक वात राजा	200 C
1999 - 19	आगल कही, राजा हर्ष पाम्यो थको तेने नगररोठनी पदवीये स्थाप्यो. एकदा गुरु आव्या	\$ 11?€₹11
100 m	सांजली वांदवा गयो, तिहां धर्मदेशना सांजली अने पुरातन जव मत्स्य मांस पच्चल्लाणादिक	200
an	सर्व सांजर्युं, बोधिलाज पाम्यो, धर्मानुष्ठान साचवी देवलोके गयो. तिहांथी महाविदेहमां सुक्रु-	4°¥ Ι ∽ ₩ΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦΦ 11? € ₹11

लमां उपजरो, तिहां वोधिलाज पामी चारित्र लही केवज्ञज्ञान पामी परंपराये मोक्सुसुख पामरो, ठ्यने केटलाएक तेहीज जवे सिद्धि पामे. ए वे प्रकारे फलनुं नवमुं फ्रार थयुं. ॥ एटले सर्व मुलयुण प्रत्याख्यान सर्व उत्तरयुण प्रत्याख्यान तथा अजिम्रहादिक देश उत्तरयुण पण होय, ठ्यने आवकने देश मूलयुण प्रत्याख्यान ते ठ्याण्रवत तथा देश उत्तर युण प्रत्याख्यान ते युणव्रत ठ्यने शिक्ताव्रत जाणवां. ते वली वे वे जेदे. एक इत्वर ते ठ्याह्याति ज्ञाना गतादि पच्चख्खाण मूल उत्तर युण पच्चख्खाण ठ्यने देश उत्तरयुण पच्चख्खाण ते शिक्ताव्रतादि तथा देशे मूलयुण पच्चख्खाण ठ्यने सर्वेची उत्तरयुण पच्चख्खाण ठा ते शिक्ताव्रतादि तथा देशे मूलयुण पच्चख्खाण ठा सर्वेची उत्तरयुण पच्चख्खाण ठा ते शिक्ताव्रतादि तथा देशे मूलयुण पच्चख्खाण ठा सर्वेची उत्तरयुण पच्चख्खाण जा ने मूलयुण कियारूपे एउं पच्चख्खाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चख्खाणना जंग विकब्दप घणा ठे, ते युरुना विनयथी जाणीये, माटे यथागृहीत जंगे पच्चख्खाण ठाराधवां, तेनुं गमन संपूर्णघाराये कहे ठे. ॥ ४९ ॥

.

. *



www.jainelibrary.org

सम्मत कह्युं हे, प्रकाइयुं हे ते प्रकारे एवा गुणधारणरूप पच्चख्खाणने सेवीने, आदरीने, पालीने त्रिकालापेक्ताये अनंत जीव जव्यप्राणी ते शाश्वतां सुख अनावाध अव्यावाध निरावाध, arananana a एटले नथी कोइ बाधा जिहां एवुं जे मोक्तस्थानक ते प्रत्ये पाम्या, पामे ठे, अने पामरो ॥ ४०॥ ॥ इति प्रत्याख्यानजाष्यं संपूर्णम् ॥ ॥ इति जाष्यत्रयं बालावबोधसहितं समाप्तम् ॥

C 0	आ पुस्तक प्रसिद्व करवामां गुरूणीजी महाराज श्री श्री श्री सरूपश्रीजी तथा गुरूणीजी साहेब श्री शणगारश्रीजोनी शिष्या साधवीजी महाराज श्री जिनश्रीजी तथा कमऌश्रीजीना उपदेशथी	પ્રકાર્ભક્રાય	৽৸৻৹
nan en an	मास्तर हठीशंग फ़ूलचंद हस्तक नीचे लखेला मानवंता जाइयो तथा बेनो तरफथी नीचे लखेली मदद मली ठे ते मोटा उपकार साथे स्वीकारीए ठीए. रुपीआ. सहाय्यकोनां नाम. १० शेठ. केश्ररामजी सीतारामजी हींमतमल ग्रु. शीवगंज १५ बाइ इस्तु शा. माणेक्चंदजी ऊपाजी ग्रु. अंकल्लेखर	ara araa araa araa	
୬୦୫୦୧୬୦୧୬୦୧୬୦୧୬ ବ୍ୟୁତ୍ତି	१५० झेठ. खुशालचंदजी भूबुतमलजी मु. देलदर ५० बाइ वनीबाइ मु. धणीवाळा. २५ बाइ सोनीबाइ शा. परतापजीनी विधवा. मु नोवी. २० शा. कीक्र्नाजी जोधाजी मु. मुरत. १० शा. परतापजीनी विधवा. मु नोवी. २० शा. कीक्र्नाजी जोधाजी मु. मुरत.	1. 1. 1.	१૬५॥

ঀ৽৸৽ ॥१९६५॥